बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के छात्र|छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पाश्र्वदृश्य का अध्ययन


BUNDELKHAND UNIVERSITY
CENTRAL LIBRARY
Acc No t.56
Date
JHANSI

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

से

"शिक्षा शास्त्र" में विद्या वारिधि (पी०एच०डी०) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध -- प्रबन्ध



निर्देशक :

डॉ० आर०पी० पाण्डेय,
सीनियर प्रवक्ता, बी० एड० विभाग,
बुन्देलखण्ड कालिज, झांसी।

शोधकर्ता :

अशोककुमार
एम०ए०, एम०एड०
प्रवक्ता, गौ० इ०
कालिज, गैराहा, झांसी।

मार्च, १९९३

प्रमाण - पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री अशोक कुमार त्रिवेदी ने "बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वचित्र का अध्ययन" विषय पर निर्धारित अवधि तक उपस्थित रहकर मेरे निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण किया । यह शोध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय , झाँसी के शोध नियमों का अनुपालन करते हुये पूरा किया गया है । इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष शोधकर्ता के अपने मौलिक तथा क्षेत्रीयता पर आधारित हैं तथा उनका उल्लेख शोध प्रबन्ध में उचित् तारतम्य में किया गया है ।

मैं इस शोध प्रबन्ध के परीक्षण की संस्तुति करता हूँ ।

(डॉ० आर० पी० पाण्डेय)
सीनियर प्रवक्ता,
बी० एड० विभाग ,
बुन्देलखण्ड कॉलिज , झाँसी ।

आ मु ख

भारतीय मनीषियों ने शिक्षक व्यक्तित्व को ईश्वर से भी महान् माना है । इसीलिये विद्यालय ईंट और गारे की बनी हुई इमारत नहीं है , जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र और शिक्षक होते हैं बल्कि उसमें शिक्षक के जीवन के निजी आदर्श , सत्संग , स्वभाव निर्माण सार , मूल्यों की धरोहर तथा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का परिष्कार शिक्षण क्रिया के द्वारा प्रस्फुटित होता रहता है । अतः शिक्षक का महत्व सिर्फ छात्रों को ज्ञान देना ही नहीं होता है बल्कि स्वयं को जानना भी है ।

वर्तमान शिक्षक का महत्व व्यावसायिक शिक्षा की देन मात्र है । महात्मा गाँधी की "नई तालीम" ने व्यावसायिक शिक्षा में अधिक महत्व प्रदान किया । आजादी के बाद अनेक जिलों में बहुउद्देश्यीय स्कूलों की स्थापना की गई , लेकिन ये प्रयोग अधिक सफल नहीं रहे । सातवीं पंच-वर्षीय योजना से थोड़ा पहले , विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने व्यावसायिक कॉलिजों की स्थापना की । आज 1993-94 से "आदर्श पाठ्यक्रम" लागू करके और अधिक वित्तीय निवेश के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा को फिर से सुदृढ़ बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं । शोधकर्ता इस प्रयास की सफलता "तकनीकी प्रशिक्षकों" की सृजनात्मकता को मानता है । अतः शिक्षक-प्रशिक्षण के द्वारा ही नागरिक , समाज और राष्ट्र को विकासोन्मुखी बनाया जा सकता है ।

"माध्यमिक शिक्षा आयोग ; शिक्षा आयोग ; विश्वविद्यालय आयोग ; तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि" ने शिक्षक के महत्व को मानव

विकास के लिये स्वीकार किया है । महान् शिक्षा शास्त्री डॉ० राधा कृष्णनन् का मत है - "शिक्षक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है । वह मानवीय पीढ़ियों में बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करता है । प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है । वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखाता है , बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करता है ।"

आज अन्य प्रकार के व्यवसाय प्रशिक्षणों की तरह से शिक्षक-प्रशिक्षण को भी एक व्यवसाय बना दिया गया है । इसके द्वारा तैयार शिक्षक अपने परिवार का भरण-पोषण ही नहीं करते हैं बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी अहं भूमिका निभाते हैं । अतः शिक्षक जन्म नहीं लेता है बल्कि तैयार किया जाता है , पूर्ण रूप से चरितार्थ हो रहा है । इसी विचार को मस्तिष्क में स्थापित करके शोधकर्ता ने प्रशिक्षणरत छात्राध्यापकों §पुरुष/स्त्री§ के व्यक्तित्त्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन करना आवश्यक माना । इस प्रकार से राष्ट्र को उपयुक्त शिक्षक प्राप्त होंगे और नागरिकों में शाश्वत् मूल्यों की स्थापना होती रहेगी।

आज "व्यक्तित्त्व" शब्द का प्रयोग गत्यात्मकता के रूप में प्रयोग किया जाता है । नेता व्यक्तित्व, खिलाड़ी व्यक्तित्त्व , हीरो व्यक्तित्व, प्रशासनिक व्यक्ति तथा अध्यापक व्यक्ति आदि अधिक प्रसिद्ध हो रहे हैं । इसीलिये अध्यापक व्यक्तित्त्व का अध्ययन करने की कोशिश की गई है । यह कार्य शिक्षक-प्रशिक्षण के प्रसिद्ध विद्वानों तथा प्रभावशाली व्यक्तित्त्वों के सहयोग से सम्भव हो पाया है । अतः शोधकर्ता का यह परम् कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इनके सहयोग के प्रति आभार प्रदर्शित करे ।

प्रथमतः मैं आदरणीय डॉ० आर० पी० पाण्डेय, सीनियर प्रवक्ता, बुन्देलखण्ड कॉलिज, झाँसी का परम् आभारी और चिरऋणी रहूँगा , क्योंकि उनकी कृपा से तथा परम सहयोग से ही शोधकार्य पूर्णता को प्राप्त कर सका। साथ ही शोधकर्ता अपने प्राचार्य श्री रामगोपाल जी पटैरिया एवं प्रबन्धक श्री रोशन सिंह जी आर्य कुमार का हृदय से आभार प्रगट करता है कि उनके सामयिक प्रोत्साहन से मेरी क्रियाशीलता बनी रही । साथ ही शिक्षक-प्रशिक्षण कॉलिजों (झाँसी , उरई , बाँदा , और अतर्रा) के प्राचार्यों तथा अध्यक्षों का मैं आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय तथा सहयोग प्रदान किया ।

अन्त में , मैं अपने परिवारीजनों तथा मित्रों का आभारी रहूँगा , जिनकी प्रेरणा से तथा उत्साहवर्द्धन से मेरा शोधकार्य पूर्ण हो सका ।

अशोक कुमार त्रिवेदी

(अशोक कुमार त्रिवेदी)

झाँसी

मार्च , 1993

विषय - सूची

.§§§.

शोध कार्य में प्रयुक्त तालिका सूची

xXXXx

शोध कार्य में प्रयुक्त रेखाचित्र

xxXXXxx

अध्याय – प्रथम

प्रस्तावना

(अ) समस्या की पृष्ठ-भूमि

(ब) समस्या का आभास

(स) समस्या की व्याख्या

(द) व्यक्तित्व स्वरूप एवं सिद्धान्त

(य) समस्या की आवश्यकता

(र) समस्या के उद्देश्य एवं परिकल्पनायें

(ल) समस्या की परिसीमायें

(व) अध्ययन योजना एवं संगठन

प्रस्तावना

राष्ट्र का विकास मानवीय सत्ता में परिष्कार के द्वारा होता है । यह परिष्कार दक्ष शिक्षकों के द्वारा किया जाता है । परिष्कार की प्रवृत्ति सामाजिक क्षेत्र में सभ्यता और आंतरिक क्षेत्र में संस्कृति कहलाती है । शिक्षक एक कलाकार की तरह से सजीव मूर्तियों को सुगढ़ बनाता है । इसका यह श्रम और मनोयोग का नियोजन सृजनात्मक प्रयोजनों के लिये होता है । जिससे नागरिकों की कुसंस्कारिता, असामाजिकता, विकृत चिन्तन, अदिग्नता, आदि विकारों में शनैः शनैः परिवर्तन होता है । वह समाज की संस्कृति एवं परम्पराओं की सामयिक व्याख्या, रक्षा और प्रसार करता है । शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम् से राज्य और समाज के बीच संतुलन स्थापित करता है । किसी राष्ट्र की गरिमा उसकी शिक्षा पद्धति के ऊपर निर्भर करती है । और शिक्षा पद्धति उसके गुणी शिक्षकों पर । शिक्षक राष्ट्र रूपी गाड़ी में पहिये की धुरी के समान कार्य करता है । इसीलिये मानव विकास से लेकर आज तक मानव समाज उसका ऋणी बना हुआ है । "माध्यमिक शिक्षा आयोग" (1952) में वर्णित है", शिक्षा के पुनरनिर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है । अतः उसकी व्यक्तिगत विशेषतायें, शैक्षिक योग्यतायें, व्यवसायिक प्रशिक्षण और विद्यालय तथा समाज में उसके द्वारा प्राप्त किया गया स्थान सभी अत्यंत महत्वपूर्ण है ।" कोठारी आयोग (1968, पृष्ठ 46) के शब्दों में "इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षा के स्तर और राष्ट्रीय विकास के योगदान में जितनी भी बातें प्रभावित करती हैं, उनमें शिक्षकों के गुण, क्षमता और चरित्र सबसे महत्वपूर्ण है"। शिक्षकों के महत्व एवं गरिमा को डा0 राधा कृष्णनन ने स्पष्ट किया है, "शिक्षक का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान है । वह मानवीय पीढ़ियों में

बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करता है । प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है । वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखाता है, बल्कि सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करता है"।

1- अध्ययन की पृष्ठभूमि :- वर्तमान समय में शिक्षक प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा स्तरों पर राष्ट्र के नागरिकों को शिक्षा देने में लगा हुआ है । वह जानता है कि आज का छात्र कल का राष्ट्र निर्माता होता है । यह शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया, छात्र निपुणता और सामाजिक आवश्यकता के प्रति स्वंय को समर्पित करते रहते हैं । ये लोग अपरिग्रह में विश्वास करते हैं और अपने जीवन को नियंत्रित करते हुये वर्तमान की समस्याओं का समाधान स्थापित करके शिक्षा देने में मग्न रहते हैं । इस अपरिग्रह को सामान्यजन निर्धनता मान सकता है, लेकिन यही उसकी सामर्थ्य होता है ।

व्यक्ति तथा समाज के निर्माण एवं विकास के सन्दर्भ में शिक्षक द्वारा किये गयेअमूल्य योगदान के कारण ही, समाज ने सदैव ही शिक्षक की पूजा की है । इसीलिये यह कहा गया है कि अच्छे राष्ट्र का निर्माण एवं विकास अच्छे शिक्षकों द्वारा ही किया जाता है । इतिहास का कथन सबसे उत्तम लगता है कि देश में परिवर्तनता शिक्षक के माध्यम् से ही ॥अहिंसा॥ लाई जाती है । अतः शिक्षक की गरिमा राष्ट्र के विकास पर प्रतिबिम्बित होती रहती है । भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है । देव संस्कृति में इसको "बृह्मा, विष्णु, महेश" की तरह धरित्री जी के भी तीन देवता माने गये हैं- माता, पिता एवं गुरु । इनकी तुलना तीनों देवों से की गई है । माता को बृह्मा माना गया है क्योंकि वह सबको जन्म एवं पालन-पोषण करती है । पिता विष्णु माने जाते हैं क्योंकि वह बालक को सामाजिक, व्यवहारिक और व्यवसायिक शिक्षा के द्वारा आत्म निर्भर बनाते हैं । गुरु- को "महेश" के समतुल्य माना गया है।

इनकी स्तुति विष्णु एवं ब्रह्मा दोनों देव करते हैं क्योंकि गुरु आत्मा में, व्यक्तित्व में सुसंस्कारिता का आरोपण करके आत्मिक क्षेत्र का परिशोधन एवं परिष्कार करता है ।

शिक्षक को समाज में गरिमामय स्थान बनाये रखने के लिये तथा राष्ट्र को सुयोग्य नागरिक दे सकने और देश की सभ्यता एवं संस्कृति को जीवित बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि वह अपना कार्य सफल ढंग से सम्पादित कर सके । वर्तमान समय की भौतिकतावादी मान्यताओं ने यह प्रश्न खड़ा कर दिया है कि शिक्षक अपने कार्य को सफलतापूर्वक कैसे सम्पन्न कर सकता है । इस परिप्रेक्ष्य में दो मत सामने आते हैं । प्रथम - शिक्षक जन्मजात होते हैं । यानी जो जन्म से प्रतिभा सम्पन्न, बुद्धिमान, होते हैं, वे अच्छा शिक्षण कर सकते हैं जैसे - गुरु चाणक्य, रामदास, दयानन्द, विवेकानन्द, अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, डॉ० राधाकृष्णनन्, आदि । द्वितीय मत के अनुसार जन्मजात प्रतिभा शिक्षक बनने का एक मात्र कारक हो सकती है, पूर्ण शिक्षक नहीं । अतः शिक्षा देने की कला, बालक को समझने का गुण, परिस्थिति के साथ समायोजन क्षमता, आदि का प्रशिक्षण किसी को भी शिक्षक आकार में ढाल सकता है । इसी विचारधारा के व्यवहारिक बनाने के लिये शोधकर्ता ने इस विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है ।

यथार्थरूप में शिक्षक ही एक मात्र राष्ट्र का भाग्यविधाता होता है, जिसको वह अपने छात्रों के व्यक्तित्व में निखार एवं परिष्कार लाकर करता है । जैसा कि श्रीमन् नारायण (1968 पृ० 8) ने लिखा है, "किसी राष्ट्र की महानता उसकी भव्य अट्टालिकाओं, वृहद, विकास योजनाओं, महान सेनाओं से नहीं आँकी जाती है, बल्कि उनके नागरिकों के गुणों के द्वारा मूल्यांकित की

जाती है । "इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि शिक्षक अपने पवित्र कर्तव्यों की लौ में छात्रों को पकाकर सही नागरिक गुणों का विकास करता है । बाद में यही नागरिक अपनी सकारात्मक सोच, और आत्मिक उदय के द्वारा अपने राष्ट्र के भविष्य को सुनहरा रूप देते हैं ।

उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि शिक्षक वह केन्द्रीय स्थल है जिसके चारों तरफ सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया घूमती रहती है । वह सिर्फ छात्र वर्ग में गुणों का विकास ही नहीं करता है, बल्कि शैक्षिक पर्यावरण में परिष्कार भी करता है । छात्र वर्ग, शिक्षक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं क्योंकि वही ऐसा व्यक्तित्व है जिसमें सभी अच्छाइयाँ विद्यमान रहती हैं । जब किसी छात्र से विद्यालय के प्रथम दिन के अनुभवों को वर्णन करने को कहा जाता है तो वह प्राथमिकता अपने शिक्षक को ही देता है । वह उसमें अपने भविष्य की कल्पना की उड़ान को देखता है, अपने व्यक्तित्व में उसी प्रकार की गत्यात्मकता लाना चाहता है । वह उसके लिये सम्मान संकेत का कार्य करता है । इसका प्रमुख कारण शिक्षक का बाह्य व्यक्तित्व न होकर उसके ज्ञान की गहनता, शिक्षण का तरीका, छात्र सहयोग, आदि क्रियायें होती हैं । इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्यापक की दक्षता (प्रशिक्षण) शिक्षा प्रदान करने के लिये आवश्यक है । प्रशिक्षित शिक्षक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों में मानवीय गुणों का विकास स्वतः ही करते रहते हैं जो उन्हें संकलित व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं ।

मानव जाति का "व्यक्तित्व" के बारे में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा प्राचीन समय से ही रही है । प्राचीन गीतों में, कहानियों में, प्रथाओं, विश्वासों और गलत धारणाओं, आदि में व्यक्तित्व के बारे में

भ्रमात्मक धारणायें फैलायी जाती रहीं, जो विज्ञान के द्वारा प्रदत्त कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं । मानवीय विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व के स्वरूप के विभिन्न मत विकसित होते रहे हैं, जिनमें एक व्यक्ति की अनुक्रियाओं के द्वारा उत्पन्न व्यवहारों का एकीकरण किसी उद्दीपक के प्रति स्थापित किया गया है । वर्तमान युग विज्ञान का युग है । संसार का प्रत्येक कण विज्ञान के प्रभाव से प्रभावित हो रहा है । मानवीय जीवन की आवश्यकतायें भोजन, कपड़ा और मकान के अलावा व्यक्तित्व का अपना अलग स्थान है ।

शिक्षक व्यक्तित्व के सम्बन्ध में एक कहावत "शिक्षक जन्म लेता है, बनाया नहीं जा सकता है"। प्रचलित है । वैज्ञानिक प्रशिक्षण ने इस कहावत की उपादेयता को गलत सिद्ध कर दिया है । महान् व्यवहार मनोवैज्ञानिक "वाटसन" का विश्वास प्रशिक्षण के द्वारा मन-चाहा व्यक्तित्व विकसित करने में था । वर्तमान शिक्षकों की असफलता का कारण सही चयन का न होना है । विद्यालय एक तीर्थस्थान है जिसमें शिक्षक एक पुजारी । पुजारी की सफलता उसके अपरिग्रहों एवं मनोभावों से होती है । वह अन्तर्मुखी होता जाता है क्योंकि उसको उन समस्याओं का हल खोजना होता है सामाजिक होती है । आज का नवयुवक शिक्षक बनने में न रूचि रखता है, न लक्ष्य स्थापित कर पाता है, फिर भी प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश ले लेता है ताकि वह अपनी बेरोजगारी से लड़ सके । अतः शिक्षक प्रशिक्षण, मात्र, रोजी-रोटी का साधन रह गया है ।

शोधकर्ता इस तथ्य को अच्छी तरह से जानता है कि शिक्षण एक मात्र व्यवसाय बन गया है, जिसके द्वारा शिक्षक अपने परिवार का मात्र भरण-पोषण करता है । इसी विचार को मस्तिष्क में स्थापित करके शोधकर्ता ने शिक्षणरत छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन करना उत्तम माना ताकि राष्ट्र को अच्छे, उपयुक्त शिक्षक दिये जायें जो स्वयं में साधन सम्पन्न, समुन्नत

हों और छात्र पीढ़ी को राष्ट्रीय आवश्यकतानुसार तैयार करें । इससे राष्ट्र का उत्थान, नागरिक निर्माण और मानवीय मूल्यों की स्थापना स्वतः ही होती रहेगी ।

2- समस्या का आभास :- भारत एक समाजवादी प्रजातांत्रिक राष्ट्र है । इसका उद्देश्य अपने नागरिकों को शिक्षा के द्वारा मानवीय गुणों से परिपूरित करना है । यह कार्य दक्ष शिक्षकों के द्वारा ही सम्भव हो सकता है । वर्तमान समय में यह स्पष्ट हो रहा है कि जब व्यक्ति अन्य किसी पद या व्यवसाय में नहीं जा पाता है तो वह शिक्षक बनने के लिये बी0एड0 कक्षा में प्रवेश ले लेता है । शोधकर्ता एक शिक्षक है । उसके समक्ष तमाम ऐसे छात्र आते हैं, जो शिक्षक नहीं बनना चाहते हैं , लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण लेने लगते हैं । कई ऐसे छात्र/छात्राओं को जानता है जो बी0एड0 करते हुये या करने के पश्चात् शिक्षक न बनकर एक बैंक या रेल्वे-क्लर्क बन गये । उसके मौखिक वार्तालाप से स्पष्ट हुआ कि वे शिक्षक से एक क्लर्क का जीवन ॥भौतिक सम्पन्नता॥ अच्छा मानते हैं । लेकिन, शोधकर्ता का इससे भिन्न विचार है कि वे शिक्षक दायित्व को समझते ही नहीं हैं । शिक्षक में समर्पण होता है, लगाव होता है, कर्तव्य होता है, अधिकार नहीं । अतः सभी शिक्षक बन जायें, यह सम्भव नहीं हो पाता है ।

आज उत्तर प्रदेश सरकार ने "ट्यूशन" करने पर रोक लगा दी है । जो शिक्षक किसी भी विद्यालय में शिक्षक का कार्य करते हैं, न अपने घर पर न छात्र के घर पर और न किसी कोचिंग स्थल पर ट्यूशन कर सकते हैं । साथ ही केन्द्र सरकार भी इस बात पर रोक लगाने के लिये तैयार हो रही है कि शिक्षालयों में किसी भी प्रकार की परीक्षाओं में नकल न हो और शिक्षक ट्यूशन न करें । इसका कारण शिक्षा में आये दिन आने वाले ह्रास एवं गुणात्मक गिरावट माना गया है । इस बात से स्पष्ट हो रहा है कि शिक्षक अपने कार्य

के प्रति उन्मुख नहीं रहा या देश को सही शिक्षक प्राप्त नहीं हो रहे हैं । इस स्थिति को राष्ट्र एवं नागरिकों का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है । इसके लिये शिक्षक चयन प्रणाली में परिवर्तन लाना, शिक्षकों को अन्य लाभ दिलवाना, उनके परिवार को भी वही सुविधायें मिलें, जो अन्य नौकरियों में उपलब्ध हैं ताकि उनका भौतिकवादी पक्ष भी सकारात्मक बन सके ।

शिक्षक और समाज का एक घनिष्ठ नाता है । शिक्षक अपनी खोजों के द्वारा समाज में परिवर्तन लाता है । सामाजिक पूर्ववत्ता और सन्तान की आधुनिकता के बीच एक कड़ी का कार्य करता है । इससे समाज में असन्तुलन उत्पन्ननहीं हो पाता है । शिक्षक होने के नाते मन में यह प्रश्न उठता है कि शिक्षा के ह्रास में शिक्षक कितना उत्तरदायी है ? शिक्षक की भूमिका स्वप्रेरित है या अन्य किसी कारण से कि वह छात्रों की अवहेलना करता है, अपने पाठ्यक्रम को पूरा नहीं करता, केन्द्रीय मूल्यांकन में सही कार्य नहीं करता । यह सब तथ्य स्पष्ट करते हैं कि शिक्षक व्यक्तित्व की अनोखी भूमिका है । वह कक्षा में सफलता नहीं पाता, बल्कि समाज में सफल होता है । वह किस प्रकार से स्वयं को संतुष्ट करता है ? कैसे अपने जीवन लक्ष्य को पाता है ? या क्या प्राप्त करना चाहता है ? इन सभी को विचारों में रखकर शोधकर्ता ने प्रशिक्षणरत छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन करने की योजना बनाई ।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता ने प्रशिक्षण महाविद्यालयों, कालेजों, एवं विभागों का अध्ययन किया वहाँ पर सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप से प्रशिक्षण दिया जाता है । साथ ही सम्बन्धित साहित्य, जनरल्स, पुस्तकें और विज्ञापन आदि को भी अध्ययन का क्षेत्र बनाया ताकि शोधकर्ता का अध्ययन विचार सशक्त बन सके । शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान छात्र का वंशानुक्रम, पर्यावरण §शिक्षा अवधि§

और प्रशिक्षण का तरीका आदि में साम्य स्थापित करना ही एक शिक्षक का निर्माण करना होता है । प्रशिक्षण दौरान उसमें समर्पण के भाव, अध्ययन-अध्यापन में रुचि, छात्र अध्ययन, आदि के सन्दर्भ में स्थायी भाव विकसित किया जाये । व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन शिक्षा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का अध्ययन कराता है जिससे वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयारी करके प्रशिक्षण में जुट जाता है, ताकि वह निश्चित ध्येय को प्राप्त कर सके । इसके साथ ही व्यवहारिक शिक्षण (शिक्षण दौरान) में वह अपनी कमियों को दूर करता है और सही तरीकों का प्रयोग समझता है । इस प्रकार से प्रत्येक बी०एड० का छात्र/छात्रा, प्रशिक्षण के पश्चात् अपने शिक्षक गुणों का प्रदर्शन सफलतापूर्वक करता है ।

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण का विकास

महाभारत के समान प्राचीन ग्रन्थों में शिक्षक के गुणों एवं सफल शिक्षण विधियों का वर्णन तो मिलता है, परन्तु शिक्षक प्रशिक्षण का कोई उल्लेख नहीं मिलता । किन्तु इसका अभिप्राय कदापि नहीं है कि प्राचीन भारत में शिक्षक प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था थी ही नहीं ।[1] वस्तुतः उस सुदूर अतीत में भी शिक्षक प्रशिक्षण की पद्धति प्रचलित थी । प्राचीन साहित्यों में यह स्पष्ट है कि उन दिनों न केवल शिक्षण की तकनीकी ही विकसित थी बल्कि पठन-पाठन का कार्य मौखिक रूप में चलता था जो उन दिनों की परिस्थितियों एवं प्रभावी धार्मिक ग्रन्थों के अनुरूप था । जैसा कि तारकलंकार पृष्ठ 299-301 में उल्लेख है कि धार्मिक सत्य को समझने के पाँच पदों का अनुसरण किया जाता था, जिसका अभिप्राय निम्न है- (क)- अध्यापन (सुनकर शब्दों का अध्ययन),

§ख§- शब्द §भावों को समझना§, §ग§- उहा §सामान्यीकरण हेतु, तर्क करना§, §घ§- सुहृद प्राप्ति §मित्रों एवं शिक्षकों द्वारा पुष्टिकरण§, §ङ§- दान §प्रयोग§ ।[2] उन दिनों में पाठ्य वस्तु का उच्चारण सुरताल के साथ बड़े ही व्यवस्थित रूप में परिश्रम के साथ प्रस्तुत किये जाते थे । इसके शिक्षण क्रमबद्ध ढ़ग से मनोवैज्ञानिकआधार पर होते थे तथा छात्रों को सम्पूर्ण शिक्षा शिक्षकों के व्यक्तिगत निर्देशन में होती थी । जिस शिक्षक के पास अधिक छात्र होते थे वे अग्रिम तथा योग्यतम छात्रों को निम्न वर्ग के छात्रों को पढ़ाने का कार्य सौंपते थे जिन्हें पित्ती आचार्य[3] कहा जाता था । उदाहरण के रूप में शिल्म के शिष्य पान्डू एवं द्रोना तथा कुरु के प्रिन्स सुतासम को उद्धृत किया जा सकता है । इसी तरह के उदाहरण अपस्थाया धम सूत्र §11,7,28§ तथा मनु 11, 208 में पाये जाते हैं । ये पित्ती आचार्य अपने गुरु के आदेशों के अनुसार निम्न कक्षाओं के छात्रों को शिक्षा देते थे और उनकी प्रगति एवं व्यवहार के सम्बन्ध में समय-समय पर गुरु को सूचना देते थे । उच्च कक्षाओं के अग्रिम छात्रों या नामकों §मानीटर§ द्वारा निम्न कक्षाओं के छात्रों को शिक्षा देने की यह प्रणाली, "कक्ष नामकीय पद्धति" §मानीटेरियल सिस्टम§ कहलाती थी । इस पद्धति में शिक्षा सिद्धान्त नामक विषय का कोई स्थान नहीं था । किन्तु जिन नामकों को शिक्षण कार्य सौंपा जाता था, उनको कुछ समय के पश्चात् शिक्षण विधियों एवं विद्यालय संचालन का पर्याप्त व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता था । अतः उन्हें स्वतन्त्र रूप से शिक्षण कार्य करने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता था । इससे स्पष्ट था कि प्राचीन काल में "शिक्षण प्रशिक्षण" का कार्य होता था परन्तु इसमें किसी सैद्धान्तिक ज्ञान का स्थान नहीं था, बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण ही प्रधान था और "करके सीखना" विधि को अपनाया जाता था । प्राचीन भारत में इसी को "शिक्षण प्रशिक्षण" का अप्रत्यक्ष आरम्भ माना जाता है । इस प्रकार से

प्रशिक्षण विद्यालयों के अभाव में भी शिक्षकों की दक्षता में कोई कमी नहीं थी ।

मध्यकालीन युग एवं मुस्लिम काल में भी "कक्षा नामकीय पद्धति" ही प्रचलित थी । जैसा कि जाफर §1936§ ने लिखा है कि 1000 से 1800 ए०डी० में सभी पाठशालों, मकतबों एवं मदरसों में शिक्षण की व्यावहारिक पद्धति ही प्रयोग की जाती थी जिसके अन्तर्गत वरिष्ठ छात्र अपने गुरुओं के कार्यों में सहयोग प्रदान करते थे । परिणाम स्वरूप उन्हें शिक्षण कार्य का अच्छा व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता था । इस तरह से ये छात्र अन्य सहपाठी छात्रों से वरिष्ठ, अग्रिम तथा योग्य माने जाते थे । भारत में मुस्लिम काल को शैक्षणिक अन्धकार का युग माना जाता है । इस काल में अकबर के अतिरिक्त और किसी भी मुसलमान शासक ने शिक्षा में विशेष रुचि की अभिव्यक्ति नहीं की । वस्तुतः भारत में वैदिक काल से लेकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक शिक्षण प्रशिक्षण की यदि कोई विधि थी, तो वह "कक्षा नामकीय पद्धति" थी, जिसे "छात्राध्यापक पद्धति" भी कहा जाता है ।

भारत में शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में डेनमिशनरियों ने पथ प्रदर्शन का काम किया । उन्होंने सन् 1716 ट्रावनकोर में शिक्षक प्रशिक्षण हेतु सर्वप्रथम नार्मल स्कूल स्थापित किया, जहाँ के प्रशिक्षित शिक्षकों को प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्त किया जाता था । तुपरान्त उन्होंने सन् 1793 में सीरामपुर में एक और नार्मल स्कूल की स्थापना की । उनके उत्कृष्ट उदाहरण से प्रभावित होकर बम्बई, मद्रास, कलकत्ता की शिक्षा परिषदों के प्राथमिक शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया, जिसमें छात्राध्यापक पद्धति का प्रयोग होता था । इसी अवधि में डॉ० एन्ड्रूबेल 1787 में अँग्रेजों द्वारा संचालित "मद्रास सैनिक अनाथालय" की स्थापना की जिसमें "कक्षा नामकीय" §छात्राध्यापक§ पद्धति अपनायी गई थी । इस पद्धति के अनेक नाम दिये गये हैं जैसे- मद्रास पद्धति,

लकास्ट्रीयन पद्धति, ग्लासगों पद्धति तथा पेस्तालजी पद्धति आदि ।

ब्रिटिश काल 1801-1882 तक गैर सरकारी संगठनों ने शिक्षक प्रशिक्षण के लिये सराहनीय कार्य किया, परन्तु उनका यह कार्य प्राथमिक विद्यालयों के लिये शिक्षकों के प्रशिक्षण तक ही सीमित था । सन् 1815 में बम्बई की देशी शिक्षा परिषद ने 24 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया और उनको प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षण स्तर को ऊँचा उठाने के लिये प्रान्त के विभिन्न भागों में संगठन हेतु भेजा । सन् 1819 में बंगाल में "कलकत्ता विद्यालय परिषद" का निर्माण हुआ । इस परिषद में "छात्राध्यापक पद्धति" के अनुसार शिक्षण प्रशिक्षण का कार्य आरम्भ किया । इस तरह से भारत में इंग्लैण्ड के सामान्तर शिक्षक प्रशिक्षण का विकास हुआ इसी क्रम में सन् 1823 में बम्बई में "नेटिभ स्कूल बुक" एवं "स्कूल सोसाइटी" की स्थापना हुई, जो आगे चलकर लकास्ट्रीयन पद्धति द्वारा प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य करने लगा । सन् 1825 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के संचालकों ने "कलकत्ता विद्यालय परिषद" के कार्य को बल प्रदान करने के लिये पाँच सौ रूपये प्रतिमाह सहायता अनुदान देने की घोषणा की । सन् 1826 से सर थामस मुनरों के प्रस्ताव से प्रशिक्षण हेतु मद्रास नगर में केन्द्रीय स्कूल की सृष्टि की गई । उक्त अवधि में गैर सरकारी संगठनों के कार्य से अनुप्राणित होकर "ईस्ट इण्डिया कम्पनी" ने भी शिक्षकों के प्रशिक्षण की दिशा में "नार्मल कक्षायें" प्रारम्भ कीं, जो बम्बई 1845, कलकत्ता 1849, आगरा 1852, मेरठ 1856 और बनारस 1857 में थीं । "वुड के आदेश पत्र" 1854 में प्रत्येक प्रान्त में ट्रेनिंग स्कूल एवं कक्षायें खोलने का सुझाव दिया गया था, परन्तु तात्कालिक शासकों द्वारा उसका उचित् अनुपालन नहीं किया गया, जिसके सन्दर्भ में भारत में सचिव लार्ड स्टैनले 1859 ने अपने आदेश पत्र में लिखा- "कम्पनी के संचालकों ने जिस सीमा तक प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना का

विचार प्रकट किया था, उस सीमा तक यह कार्य नहीं किया गया है"। "अतः लार्ड स्टैनले ने अपने" आदेश पत्र में शिक्षक प्रशिक्षण की सुविधाओं का विस्तार करने और शिक्षण संस्थाओं को सहायता अनुदान दिये जाने का आदेश दिया । जिसके फलस्वरूप 1881-82 तक सम्पूर्ण देश में 106 नार्मल स्कूलों की स्थापना की गयी । इन स्कूलों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों की संख्या 3,886 थी और इसका वार्षिक व्यय लगभग 4 लाख रूपये था । हण्टर कमीशन रिपोर्ट पेरा §34§ । 1801-1882 तक स्थापित की जाने वाली प्रशिक्षण संस्थायें केवल प्राथमिक शिक्षकों तक ही सीमित थीं । माध्यमिक स्कूलों के लिये उक्त अवधि तक सम्पूर्ण देश में मात्र दो प्रशिक्षण संस्थाओं का शिलान्यास हुआ, जो क्रमशः मद्रास §1856§ एवं लाहौर §1880§ में थे ।

सन् 1882-1947 के ब्रिटिश काल में 1882 के पहले शिक्षकों को किसी प्रकार का वास्तविक प्रशिक्षण नहीं प्राप्त होता था, क्योंकि उन्हें शिक्षण का कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिलता था । शिक्षक प्रशिक्षण की वास्तविक आवश्यकता का अनुभव "हण्टर कमीशन" की सिफारिशों के फलस्वरूप हुआ । "हण्टर कमीशन" 1882 के सुझावों के परिणामस्वरूप नार्मल स्कूलों, ट्रेनिंग स्कूलों और ट्रेनिंग कालेजों की आशातीत वृद्धि हुई । साथ ही सभी स्तरों के शिक्षकों के प्रशिक्षण का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आ गया । इस तरह से 18वीं शताब्दी के अन्त तक 133 नार्मल स्कूल, 50 ट्रेनिंग स्कूल, और 6 ट्रेनिंग कालेज §मद्रास, लाहौर, कुरसांग, जबलपुर, इलाहाबाद और राजमुन्दरी§[3] खुल गये थे । हण्टर कमीशन के उपरान्त 1904 से 1913 के सरकारी प्रस्तावों ने शिक्षक प्रशिक्षण के विषय में नवीन एवं उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये, जिनके फलस्वरूप शिक्षक प्रशिक्षण का उत्तरोत्तार विकास होता चला गया । शिक्षा नीति सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव 1913 ने सरकारी प्रस्ताव

के माध्यम् से नीति निर्धारित करते हुये प्रशिक्षण के विकास में अतिशय योग देते हुये कहा है कि "शिक्षा की आधुनिक प्रणाली में किसी भी शिक्षक को उस समय तक शिक्षण कार्य करने की अनुमति प्रदान न की जब तक कि उसके पास तत्सम्बन्धी प्रमाण-पत्र न हों ।[4]

सन् 1917 में "कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग" सैडलर कमीशन ने भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षण के विषय में सुझाव देकर उसकी विकास प्रक्रिया को तीव्रता प्रदान की, जिसके अनुसार प्रत्येक विश्वविद्यालय में "शिक्षा विभाग" खोलने की सिफारिश की गयी । जिसका अभिप्राय सिर्फ शिक्षकों को प्रशिक्षण देना ही न होकर बल्कि उसी क्षेत्र में प्रयोग एवं अनुसंधान करना भी था । सन् 1921-22 में शिक्षा प्रान्तीय सरकारों के उत्तरदायित्व के अन्तर्गत आ गया । जिससे शिक्षकों की आवश्यकतानुसार अध्यापक प्रशिक्षण में भी व्यापक विस्तार हुआ । इस तरह से सभी प्रशिक्षण संस्थाओं में स्त्री एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की संख्या में वृद्धि होने लगी तथा अधिकाँश विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान एवं उसका प्रयोग, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, सहायक सामग्रियों के प्रयोग आदि सभी का समावेश करते हुये शिक्षा विभाग खोले, जो नये शिक्षण प्रशिक्षण व्यवहार को जन्म दिये । इन सब प्रयास के बावजूद प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या में वाँछित वृद्धि नहीं हुई । सन् 1926-27 तक उत्तर प्रदेश में 44 प्रतिशत पुरुष तथा 22 प्रतिशत महिला अध्यापक ही प्रशिक्षित हो सके । सन् 1935-48 के बीच उत्तर प्रदेश में आचार्य नरेन्द्रदेव समिति की सिफारिश एवं व्यक्तिगत संस्थायें खोलने की अनुमति दिये जाने के कारण प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या में काफी वृद्धि हुई ।

इस प्रकार आयोगों के प्रस्तावों एवं सुझावों के परिणाम स्वरूप शिक्षक प्रशिक्षण की दशा एवं सुविधाओं में क्रमशः उन्नति होती चली गयी और 1947 तक देश में -《क》 नार्मल स्कूल ,《ख》 माध्यमिक प्रशिक्षण विद्यालय,《ग》 प्रशिक्षण महाविद्यालय, ये तीन तरह की प्रशिक्षण संस्थायें थीं ।

स्वतन्त्र भारत में शिक्षक प्रशिक्षण

स्वतन्त्र भारत में शिक्षक शिक्षा अपने विकास मार्ग पर अतिद्रुत गति से अग्रसर हुई । फलतः शिक्षा के अनेकों क्षेत्रों के लिये प्रशिक्षित अध्यापकों की माँग में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई । इसीलिये शिक्षा की पुनर्रचना में शिक्षक प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया । उनकी कमियों को दूर करने में एवं उनमें गुणात्मक उन्नति के उपायों को इंगित करने के लिये शिक्षा आयोगों की नियुक्ति की गयी । जिनमें प्रमुख निम्न है :-

1- राधाकृष्णनन आयोग ।

2- मुदालियर आयोग ।

3- कोठारी आयोग ।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948-49 ने एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण संस्थाओं की दक्षता में अन्तर पाया और प्रशिक्षण की संरचना को पुनः इस प्रकार प्रारूपित करने की सिफारिश की कि विद्यालयों में प्रशिक्षण की अवधि एवं छात्रों की व्यवहारिक उपलब्धियों को विशेष महत्व दिया जाये ।[5]

सन् 1950 से देश में अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार एवं समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किये गये जिसके अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर पर प्रशिक्षण विद्यालयों की संगोष्ठी क्रमशः बड़ौदा एवं मैसूर में आयोजित की गयी ।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 ने उस समय अध्यापक प्रशिक्षण की संचालित तीन तरह की संस्थाओं को कम करके दो तरह के प्रशिक्षण विद्यालयों की संस्तुति की । प्रथम ट्रेनिंग कालेज, द्वितीय ट्रेनिंग स्कूल/ट्रेनिंग कालेजों को विश्वविद्यालय

प्रथम सिफारिश को तो अनेक विश्वविद्यालयों ने क्रियान्वित कर दिया परन्तु द्वित्तीय सिफारिश पर कोई विशेष ध्यान नही दिया गया ।

तत्पश्चात् माध्यमिक एवं प्राथमिक स्तर पर प्रशिक्षण हेतु सुझाव देने के लिये अनेक समितियों का गठन किया गया जिनमें से प्रमुख निम्न हैं :-

1- माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों एवं पाठ्यक्रमों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन दल 1954 ।

2- अंग्रेजी भाषा केन्द्रीय संस्थान हैदराबाद 1958 ।

3- भारत में प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षा 1961 ।

सन् 1960 के बाद देश में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हेतु अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये जिसके तहत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद तथा राज्य शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गयी । अध्यापक प्रशिक्षण में शोध कार्य करने, प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार करने एवं अन्य समस्याओं के निराकरण हेतु चार "क्षेत्रीय महाविद्यालयों" अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर एवं मैसूर की स्थापना की गयी । कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में भी चार वर्षीय समन्वित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम लागू किया । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से एम0 एस0 विश्वविद्यालय बड़ौदा में अध्यापक शिक्षा में शोध एवं सुधार हेतु सी ए एस ई डिपार्टमेन्ट खोला गया । अखिल भारतीय शिक्षक प्रशिक्षक परिषद ने जून 1964 में अपनी सातवीं विचार गोष्ठी में यह सुझाव दिया कि प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के बीच अन्तर को कम करने हेतु एक विस्तृत प्रशिक्षण कालेज की स्थापना की जाये शिक्षा आयोग 1964-66 ने भी अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं गुणात्मक सुधार हेतु विशेष ध्यान एवं सुझाव दिया । जिसके परिणाम स्वरूप अलीगढ़, कुरुक्षेत्र एवं कानपुर विश्वविद्यालयों ने एम0 ए0 स्तर पर शिक्षा शास्त्र पाठ्यक्रम शुरु किया । कुछ विश्वविद्यालयों ने अध्यापक शिक्षा के प्रसार हेतु ग्रीष्मकालीन एवं पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये ।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों एवं राज्यों के प्रशिक्षण कालेजों ने अप्रशिक्षित अध्यापकों को प्रशिक्षित करके उनकी संख्या में कमी कर दी । अध्यापक शिक्षा की समस्याओं के निराकरण हेतु अनेक राज्यों ने अध्यापक शिक्षा को विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभाग से सम्बद्ध कर दिया । परिणामस्वरूप योजना आयोग के निर्देशों का अनुपालन करते हुये चौथी पंचवर्षीय योजना 1969-74 में शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण कार्य हुआ, जिसके कारण देश में वर्ष 1968-69 तक प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों का प्रतिशत 77 प्रतिशत हो गया । उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित अध्यापकों का वर्ष 1968-69 में प्रतिशत 73 प्रतिशत था । चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम चरणों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम में सुधार करके 10+2+3 पद्धति लागू किया, जिसके फलस्वरूप विज्ञान शिक्षकों की माँग बढ़ गई । इसलिये प्रशिक्षण विद्यालयों में 50 प्रतिशत स्थान विज्ञान स्नातकों एवं परास्नातकों के लिये कर दिये गये । वर्ष 1973-74 तक भारत वर्ष में ट्रेनिंग स्कूल एवं ट्रेनिंग कालेजों की संख्या क्रमशः 446 एवं 1120 थी तथा प्राथमिक, मिडिल तथा माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों का प्रतिशत क्रमशः 82-6, 84.9 तथा 80.4 था ।[6]

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अनुसार 1950-83 की अवधि में शिक्षकों की कुल संख्या 7.5 लाख से बढ़कर 32 लाख से भी अधिक हो गयी जो प्रतिवर्ष 4.6 प्रतिशत की वृद्धि बताती है । जहाँ प्राथमिक स्कूली शिक्षकों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि की दर 3 प्रतिशत रही, वहीं सबसे अधिक वृद्धि मिडिल स्कूल के शिक्षकों में 7.5 प्रतिशत बताई गयी । शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पुरूष शिक्षकों की संख्या की तुलना में महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि अपेक्षाकृत ज्यादा थी । प्रशिक्षित शिक्षकों की प्रतिशतता 1949-50 में बढ़कर 1982-83 में 88.4 प्रतिशत हो गयी ।[7] आँकड़ों से पता चलता है कि प्राथमिक स्कूलों केकस्तर पर 1971-72 से 1982-83 के दौरान शिक्षक शिष्य अनुपात में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं हुआ था । मिडिल स्कूलों में शिक्षक

शिष्य अनुपात कुछ कम हो गया ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है उनकी की गई सिफारिशें हैं :-

किसी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उसकी साँस्कृतिक-सामाजिक दृष्टि का पता लगता है । कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता । सरकार और समाज को ऐसी परिस्थितियाँ बनानी चाहिये जिनसे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले । अध्यापकों को इस बात की आजादी होनी चाहिये कि वे नये प्रयोग कर सकें और संप्रेषण की उपयुक्त विधियाँ और अपने समुदाय की समस्याओं और क्षमताओं के अनुरूप नये उपाय निकाल सकें ।

अध्यापकों को भर्ती करने की प्रणाली में इस प्रकार परिवर्तन किया जायेगा कि उनका चयन उनकी योग्यता के आधार पर व्यक्ति-निरपेक्ष रूप से और उनके कार्य की अपेक्षाओं के अनुरूप हो सके । शिक्षकों का वेतन और सेवा की शर्तें उनके सामाजिक और व्यावसायिक दायित्व के अनुरूप हों और ऐसी हों जिनसे प्रतिभाशाली व्यक्ति शिक्षक-व्यवसाय की ओर आकृष्ट हों । यह प्रयत्न किया जायेगा कि पूरे देश में वेतन में, सेवा शर्तों में और शिकायतें दूर करने की व्यवस्था में समानता का वाँछनीय उद्देश्य प्राप्त किया जा सके । अध्यापकों की तैनाती और तबादले में व्यक्ति-निरपेक्षता लाने के लिये निर्देशक सिद्धान्त बनाये जायेंगे । उनके मूल्याँकन की एक पद्धति तय की जायेगी जो प्रकट होगी, आँकड़ों एवं तथ्यों पर आधारित होगी और जिसमें सबका योगदान होगा । ऊपर के ग्रेड में तरक्की के लिये शिक्षकों को उचित अवसर दिये जायेंगे । जबाब-देही के मानक तय किये जायेंगे । अच्छे कार्य को प्रोत्साहित किया जायेगा और निष्क्रियता को निरुत्साहित । शैक्षिक कार्यक्रमों के बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका बनी रहेगी ।

व्यावसायिक प्रामाणिकता की हिमायत करने, शिक्षक की प्रतिष्ठा को बढ़ाने और व्यावसायिक दुर्व्यवहार को रोकने में शिक्षक-संघों को अहम् भूमिका निभानी चाहिये । शिक्षकों के राष्ट्रीय संघ शिक्षकों के लिये एक व्यावसायिक आचार-संहिता बना सकते हैं और उसका अनुपालन करा सकते हैं ।

अध्यापकों की शिक्षा :

1- अध्यापकों की शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसके सेवापूर्व और सेवाकालीन अंशों को अलग नहीं किया जा सकता है । पहले कदम के रूप में अध्यापकों की शिक्षा की प्रणाली को आमूल बदला जायेगा ।

2- अध्यापकों की शिक्षा के नये कार्यक्रम में सतत शिक्षा पर और इस शिक्षा-नीति की नई दिशाओं के अनुसार आगे बढ़ने की आवश्यकता पर बल होगा ।

3- "जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान" स्थापित किये जायेंगे जिनमें प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की और अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी । इन संस्थानों की स्थापना के साथ बहुत सी घटिया प्रशिक्षण संस्थाओं को बन्द किया जायेगा । कुछ चुने हुये माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षण कालेजों का दर्जा बढ़ाया जायेगा ताकि वे राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थानों के पूरक के रूप में काम कर सकें । राष्ट्रीय अध्यापक-शिक्षा परिषद को सामर्थ्य और साधन दिये जायेंगे जिससे यह परिषद अध्यापक-शिक्षा की संस्थाओं को मान्यता देने के लिये अधिकारिक हो और उनके शिक्षाक्रम और पद्धतियों के बारे में मार्ग-दर्शन कर सकें । अध्यापक-शिक्षा की संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों में आपस में मिलकर काम करने की व्यवस्था की जायेगी ।

इस प्रकार से शोधकर्ता ने शिक्षा के क्षेत्र के स्वअनुभव, अध्यापकों के व्यवहारों के अध्ययन, साहित्य में शिक्षक-शिक्षण वर्णन एवं भारत में शिक्षक प्रशिक्षण, आदि पक्षों का

विस्तृत अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि शिक्षक व्यक्तित्व अमूल्य है, जिसे सजाना और सवारना प्रत्येक राष्ट्र का उत्तर दायित्व होना चाहिये । इन सभी तथ्यों से प्रभावित होकर शोधकर्ता ने अध्यापन व्यवसाय को उत्तमता प्रदान करने के लिये अध्ययन में रुचि जागृत करने के लिये, छात्र/छात्रा का विकास करने के लिये, शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग करने के लिये, अध्यापक दक्षता एवं कौशल विकास करने के लिये, प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षक के शिक्षण में भिन्नता स्थापित करने के लिये तथा शिक्षक के स्वास्थ्य को सामान्य बनाये रखने के लिये, इस समस्या का शोध कार्य हेतु चयन किया ।

3- समस्याओं की व्याख्या :- वर्तमान समय के जीवन मूल्य, शास्वत मूल्य और परिवर्तित मूल्य दो भागों में बँट चुके हैं । शिक्षा के द्वारा मूल्यों का सही निरूपण न हो पाना वर्तमान आक्रोश एवं अशाँति का कारण है । इस प्रकार के वातावरण में छात्र वर्ग को निर्देशित करना आसान कार्य नहीं है । इस कार्य को एक शिक्षक अपनी बुद्धि , धैर्य , प्यार और शाँन्ति के द्वारा राष्ट्र हित को ध्यान में रखकर पूरा करता है ।

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का आँकलन 16 पी॰ एफ॰ के द्वारा किया गया है । जिसका हिन्दी में निर्माण व विकास डॉ0 कपूर §1970§ ने हिन्दी भाषा में किया है इसका आधार "आर॰ बी॰ कैटिल" §फार्म ए§ है । व्यक्तित्व माँपन में कुछ प्रमुख परिवर्तियों के सम्बन्धों का माँपन भी किया गया है । व्यक्तित्व माँपन में कुछ प्रमुख इन परिवर्तियों में "यौन , आयु , शिक्षण अनुभव परिवर्ती, सामाजिक आर्थिक परिवर्ती मुख्य हैं । इसीलिये शोधकर्ता ने अपनी अध्ययन समस्या "बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के छात्र-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन" को स्थापित किया है ।

वर्तमान शोध का क्षेत्र सिर्फ झाँसी मण्डल है जिसमें बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा देने का कार्य करता है । इसके झाँसी , बाँदा , ललितपुर , हमीरपुर और जालौन पाँच जिले हैं । [illegible]

विस्तृत अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि शिक्षक व्यक्तित्व अमूल्य है, जिसे सजाना और सवारना प्रत्येक राष्ट्र का उदार दायित्व होना चाहिये । इन सभी तथ्यों से प्रभावित होकर शोधकर्ता ने अध्यापन व्यवसाय को उत्तमता प्रदान करने के लिये अध्ययन में रुचि जागृत करने के लिये, छात्र/छात्रा का विकास करने के लिये, शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग करने के लिये, अध्यापक दक्षता एवं कौशल विकास करने के लिये, प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षक के शिक्षण में भिन्नता स्थापित करने के लिये तथा शिक्षक के स्वास्थ्य को सामान्य बनाये रखने के लिये, इस समस्या का शोध कार्य हेतु चयन किया ।

3- <u>समस्याओं की व्याख्या</u> :- वर्तमान समय के जीवन मूल्य, शास्वत मूल्य और परिवर्तित मूल्य दो भागों में बँट चुके हैं । शिक्षा के द्वारा मूल्यों का सही निरूपण न हो पाना वर्तमान आक्रोश एवं अशाँति का कारण है । इस प्रकार के वातावरण में छात्र वर्ग को निर्देशित करना आसान कार्य नहीं है । इस कार्य को एक शिक्षक अपनी बुद्धि , धैर्य , प्यार और शाँन्ति के द्वारा राष्ट्र हित को ध्यान में रखकर पूरा करता है ।

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वचित्रय का आँकलन 16 पी० एफ० के द्वारा किया गया है । जिसका हिन्दी में निर्माण व विकास डॉ० कपूर ॥1970॥ ने हिन्दी भाषा में किया है इसका आधार "आर० बी० कैटिल" ॥फार्म ए॥ है । व्यक्तित्व माँपन में कुछ प्रमुख परिवर्तियों के सम्बन्धों का माँपन भी किया गया है । व्यक्तित्व माँपन में कुछ प्रमुख इन परिवर्तियों में "यौन , आयु , शिक्षण अनुभव परिवर्ती, सामाजिक आर्थिक परिवर्ती मुख्य हैं । इसीलिये शोधकर्ता ने अपनी अध्ययन समस्या "बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के छात्र-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वचित्रय का अध्ययन" को स्थापित किया है ।

वर्तमान शोध का क्षेत्र सिर्फ झाँसी मण्डल है जिसमें बुन्देलखण्ड विश्वविधालय उच्च शिक्षा देने का कार्य करता है । इसके झाँसी , बाँदा , ललितपुर , हमीरपुर और जालौन पाँच जिले है । इनमें बी० एड० की शिक्षा देने वाले पाँच महाविधालयों को अध्ययन हेतु चुना गया है । इन महाविधालयों से प्रशिक्षण लेने वाले छात्र/छात्रा का

व्यक्तित्व निर्माण ऐसा हो जो तात्कालिक राष्ट्रीय एवं सामाजिक आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं की पूर्ति कर सके । इस हेतु "व्यक्तित्व" से सम्बन्धित कुछ सिद्धान्तों की व्याख्या करना अनिवार्य हो जाता है ताकि व्यक्तित्व के स्वरूप विकास और संगठन आदि के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाये ।

५- <u>व्यक्तित्व सिद्धान्त</u> :- अभी तक व्यक्तित्व सम्बन्धी अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिये व्यक्तित्व का कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं है , जिसको सभी विद्वान एकमत से स्वीकार करते हों । इसका कारण यह है कि कोई सिद्धान्त व्यक्तित्व के किसी पक्ष पर बल देता है तो कोई किसी अन्य पक्ष पर , इसका परिणाम यह है कि एक सिद्धान्त महत्वपूर्ण होने पर भी व्यक्तित्व की व्याख्या करने में असमर्थ रहता है । इतना अवश्य मानना पड़ता है कि कुछ सिद्धान्तों के अन्दर जो परिकल्पनायें मिलती हैं उनका प्रयोगात्मक परीक्षण काफी मात्रा में हुआ है ।

व्यक्तित्व सिद्धान्तों ने मानवीय व्यवहार को केन्द्र माना है । अतः शोधकर्ता को संक्षेप में प्रत्येक व्यक्तित्व सिद्धान्त का वर्णन करना है । वर्तमान शोध में व्यक्तित्व मापन के लिये कैटिल के द्वारा विकसित प्रश्नावली की हिन्दी रूपान्तरित का प्रयोग किया गया है , अतः व्यक्तित्व का लक्षण सिद्धान्त मुख्य रूप से प्रस्तुत किया जायेगा , जो अध्ययन का आधार है । इसी सिद्धान्त पर छात्र-अध्यापक के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य की पहचान एवं आँकलन का आधार बनाया गया है । अतः व्यक्तित्व सिद्धान्तों को मुख्य रूप से निम्न भागों में अध्ययन किया जाता है :-

क- <u>व्यक्तित्व का प्रकार सिद्धान्त</u> :- व्यक्तित्व अध्ययन के प्रारम्भिक दिनों में व्यक्तित्व को "प्रकार" रूप में जानने की कोशिश की गई थी । आज के शिक्षाशास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक इसको कोई महत्व नहीं देते हैं । फिर भी इसने व्यक्तित्व अध्ययनों में शारीरिक बनावट, स्वभाव की प्रकृति और जैवरसायनों के

महत्व को स्पष्ट कर दिया है । इसके साथ ही प्रकार सिद्धान्त इस अवलोकन पर आश्रित हैं कि कुछ लोग तो कम से कम ऐसे होते हैं जिनके व्यक्तित्व कुछ प्रमुख लक्षणों के आसपास होते हैं , जैसे- महत्वाकाँक्षा , गर्व , साहस , शारीरिक सुख । अतः विद्वानों ने मनुष्यों को व्यक्तित्व प्रकार के रूप में वर्गीकृत किया है ।

"क्रैश्मर" (1925) महोदय ने व्यक्तित्व का एक सिद्धान्त शारीरिक बनावट एवं गठन के आधार पर विकसित किया । यह सिद्धान्त काफी पुराना है । फिर भी , विद्वान इस बात पर विश्वास करते हैं कि शारीरिक संगठन , स्वास्थ्य तथा बल व्यक्तित्व की अभिव्यक्तियों को निर्धारित करते हैं । आपने एंस्थनिक , एथलेटिक , और पिकनिक आदि शारीरिक बनावट के आधार पर मनुष्यों के व्यक्तित्व को माना है । क्रैश्मर , का यह सिद्धान्त आनुभविक प्रमाणों के आधार पर विकसित नहीं किया गया है , अतः यह प्रभावशाली न हो सका ।

इसके पश्चात् "शल्डन , स्टीवन्स तथा टेकरः (1940) ने व्यक्तित्व को लेकर एक पुस्तक "द वेराइटीज ऑफ ह्यूमन फिजिक्स" लिखी , जिसमें शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व को विकसित करने के प्रयत्न किये गये हैं । आपने व्यक्तियों को तीन अवयों - एण्डोमार्फी , कैसोमर्फी , तथा एक्टोमार्फी में विभक्त किया है । एण्डोमार्फी व्यक्ति में आंत तथा अन्य आँतराँग की प्रधानता रहती है । स्थूलकाय व्यक्ति में इस अवयव की विशेष मात्रा पाई जाती है । कसोमार्फिक व्यक्ति में हड्डी एवं पेशी की प्रधानता रहती है । ऐसे व्यक्ति पहलवान , सिपाही , खिलाड़ी आदि होते हैं । एकटोमार्फी व्यक्ति संवेदी तंत्रिकातन्त्र पर निर्भर होते हैं ऐसे व्यक्ति , लम्बे , दुबले-पतले , और झुके हुये कन्धों वाले होते हैं ।

व्यक्तित्व का आधार शरीर रसायन को भी माना गया है । इसका प्रतिपादन "विलियम्स" (1956) ने किया है । प्राचीन यूनान में भी व्यक्तियों के चार प्रकार - सनग्वियन , फ्लग्मैटिक , मैलिनकोलिक , तथा कोलरिक आदि बतायें गये थे जो शरीर रसायनों पर ही आधारित थे । विलियम्स महोदय ने स्वभाव का

आधार शरीर-रसायन को माना है । प्रत्येक मनुष्य के अन्दर एक प्रकार की ही अन्तः स्त्रावी , ग्रन्थियाँ होती हैं , किन्तु उनका आकार भिन्न-भिन्न होता है । इसीलिये व्यक्तित्व भिन्नता भी पाई जाती है । इससे यह निष्कर्ष निकला कि प्रत्येक व्यक्ति में अन्तःस्त्रावी क्रिया का अपना एक विशिष्ट प्रकार होता है ।

व्यक्तित्व प्रकार के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने के लिये शरीर गठन , शरीर क्रियात्मकता के साथ-साथ व्यवहार प्रकार भी प्रमुखता रखता है । मनोवैज्ञानिक "जुंग" §1923§ ने व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिये मनोवैज्ञानिक प्रकार के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया । आपने व्यक्तित्व को अन्तर्मुखी , वहिर्मुखी और उभयमुखी रूपों में विभाजित किया है । "जुंग" महोदय ने लिखा है , "अन्तर्मुखी व्यक्ति की रुचि आत्मगत होती है । इसका परिणाम यह होता है कि वह आत्म निष्ठ रूप में अपनी शक्तियों को काम में लाता है । वह अपने एकान्त जीवन में मग्न रहता है । वह कम बोलने वाला होता है । वह अपने भावों को अन्य लोगों के सामने व्यक्त करने में असफल रहता है । वह दूसरों के समक्ष सहानुभूति भी प्रगट नहीं कर पाता है । वह शर्मिला होता है और एकान्त में कार्य करने में आनन्द लेता है । दूसरों के साथ कार्य करने में उसका मन नहीं लगता है । इसके विपरीत वहिर्मुखी व्यक्ति सामाजप्रिय तथा प्रसन्नचित्त रहता है । उसका समय मित्रों के बीच में व्यतीत होता है । वह उदार हृदय का होता है । वह ऐसे कार्य करने में रुचि लेता है जिससे अन्य लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित हो सके । कभी-कभी वह अच्छे कपड़े पहनकर घूमता है और पुराने विचारों का होता है ।

ख- <u>विकास का मनो-विश्लेषणात्मक सिद्धान्त</u> :- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के दो पक्ष हैं -

एक विकासात्मक तथा दूसरा अन्योन्यक्रियात्मक ।

अभिप्राय यह है कि एक तो व्यक्ति के शैशव का उसके विकास क्रम से इतना सम्बन्ध है और दूसरा किसी विशेष स्थिति में घटित होने वाले उसके अभिप्रेरणात्मक

संघर्षों और संकटकालीन अवस्थाओं से । यहाँ हम मुख्यतः इस सिद्धान्त के विकासात्मक पक्ष पर विचार करेंगे और इसके बाद आगे चलकर अन्योन्यक्रियात्मक §गतिशील§ पक्ष पर । मनोविश्लेषण की दृष्टि से वृद्धि में एक धारावाहिक निरन्तरता पाई जाती है और वह शैशव काल से ही प्रारम्भ हो जाती है । रचना की प्रक्रिया चलती रहती है , जिसकी परिणति सापेक्ष स्थायी व्यक्तित्व-संरचना में होती है । यह कार्य धीरे-धीरे होता रहता है और अन्त में परिपक्वता आ जाती है ।

संस्थापित मनोविश्लेषण के अनुसार विकास की आधारभूत परिपक्वता की रूपरेखा कुछ रूपान्तरणों के साथ काम-आवेगों का ही प्रकाशन है । इस विकास की रूपरेखा में जब तक व्यक्ति भिन्न लिंगी सामान्य काम-सम्बन्धों की परिपक्व लैंगिक अवस्था तक पहुँचता है तब तक अनेक अवस्थायें आती हैं । यहाँ काम का बड़ा व्यापक अर्थ लिया गया है । प्रारम्भिक तीन अवस्थायें हैं - मुखीय , गुदीय तथा लैंगिक जिनको एक साथ पूर्वजनन अवस्था कहा जाता है । इनका प्रजनन का उद्देश्य नहीं होता है । ये केवल उद्दीपन के द्वारा सुख प्रदान करने के स्त्रोत हैं । एक अर्थ में ये परिपक्व यौन सुख के साधन है ।

मुखीय अवस्था लगभग एक वर्ष रहती है । सुख के स्त्रोत हैं होंठ , मुख , चूषण खाना , अंगुष्ठ-चूषण । जब शिशु के दाँत आ जाते हैं तब उसको काटने के द्वारा सुख मिलने लगता है । गुदीय अवस्था लगभग दूसरे वर्ष में रहती है । सुख के स्त्रोत मल धारण तथा मल विसर्जन , तथा पेशीय नियन्त्रण होते हैं । लैंगिक अवस्था तीसरी वर्ष से पाँचवीं वर्ष तक रहती है । इसको ईडिपस अवस्था भी कहा जा सकता है । इस अवस्था में सुख जननेन्द्रिय के उद्दीपन से मिलता है । लड़का अपनी माँ से प्रेम करने लगता है और अपने प्रतिद्वन्दी पिता से ईर्ष्या करने लगता है । लड़की अपने पिता से प्यार करने लगती है और माँ की प्रतिद्विन्दी हो जाती है । इस स्थिति को ईडिपस ग्रन्थि कहा जाता है ।

प्रत्येक अवस्था के व्यक्तित्व सम्बन्धी विकास का महत्त्व विभिन्न प्रकार से रूपान्तरित होने वाले प्रारम्भिक अनुभवों की वृत्ति पर आश्रित रहता है, विशेष रूप से विस्थापन[1] के द्वारा । उदाहरणार्थ , मल को रोकने का सुख किसी भी मूल्यवान वस्तु पर अधिकार रखने के सुख में बदल जाता है । यह विस्थापन की प्रक्रिया कहलाती है , क्योंकि सुख का एक पदार्थ दूसरे को विस्थापित कर देता है। दूसरा उदाहरण भी दिया जा सकता है जिससे विस्थापकों का क्रम स्पष्ट हो सकता है । इस उदाहरण से पता चलता है कि एक के बाद एक आने वाला विकल्प मौलिक वरण से क्रमशः कम तादात्म्य रखता है । किसी लड़के का प्रथम प्रेम-पात्र साधारणतया उसकी माता होती है । सर्वप्रथम उसको आदर्श स्त्री के रूप में देखा जाता है । लड़का यह समझ लेता है कि वह उस पर अपना पूर्ण अधिकार नहीं जमा सकता है । और बाद में वह उसमें अपूर्णता भी देखता है । फलतः वह किसी ऐसे पात्र की तलाश में रहता है जिसको वह पूर्ण रूपेण प्राप्त कर सके तथा वह पूर्ण भी हो । उसके चुनाव का पात्र कोई पड़ोसी या कोई चाची-मामी हो सकती है । वे तब तक उसके वरण के पात्र बने रहते हैं जब तक वह यह नहीं जानता कि वे ही अप्राप्य तथा दोषपूर्ण है । आगे चलकर वह अपने से किसी अधिक आयु वाली लड़की से प्रेम करने लगता है जो सम्भवतः बड़ी बहिन व बड़े भाई की सखी होती है । अन्त में ये वरण उसको रुद्ध-मार्ग के समान प्रतीत होते हैं । वह कभी किसी आदर्श स्त्री के सम्बन्ध में दिवास्वप्न देखने लगता है या उसको चलचित्रों अथवा पुस्तकों में पाने का प्रयास करने लगता है । यदि वह प्रतिभाशाली होता है तो वह उसके सम्बन्ध में कविता करता है या ऐसे चित्र बनाता है जिनमें उसकी कल्पना साकार होती हो । एक समय आता है जब वह किसी वास्तविक स्त्री पर स्थिर हो जाता है । ऐसी स्त्री उसकी माँ से मिलती जुलती हो सकती है । माता के स्थानापन्नों की खोज में विस्थापन के बाद विस्थापन का ऐसा ढेर लगता जाता है , जिस पर पात्र-वरण का जाल सा बिछ जाता है । अवरुद्ध वरण से प्राप्त ऊर्जा अनेक क्रियाओं में इस प्रकार विभक्त हो जाती है मानो एक रुकी हुई नदी अनेक धाराओं में प्रवाहित हो गई हो ।[1]

यद्यपि विश्लेषणात्मक सिद्धान्त को विकसित हुये अर्द्ध-शताब्दी से कुछ ही समय अधिक हुआ है , फिर भी यह काफी विख्यात हो गया है । जिस रूप में इस सिद्धान्त की स्थापना हुई थी , उससे इसमें काफी परिवर्तन आ गया है और अब भी यह परिवर्तन की अवस्था में है अपने संस्थापित रूप में इस सिद्धान्त ने एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन पर बल दिया है जिस पर जैव परिपक्वता का विशेष प्रभाव था और सामाजिक एवं वातावरण का प्रभाव अत्यन्त न्यून । अनेक आलोचकों का कहना है कि यह स्कीम सर्वसामान्य बिल्कुल नहीं है , किन्तु पाश्चात्य संस्कृति में पले हुये बच्चों के लिये यह सत्य सी प्रतीत होती है । एक व्यक्ति के विकास की अवस्थाओं का अवलोकन करने से पता लगता है कि विकसित होने वाले अन्त-वैयक्तिक सम्बन्ध बराबर मिलते हैं । मुखीय अवस्था में शिशु का प्रथम सम्बन्ध माता के साथ होता है , जिसका सामाजिक परिणाम यह होगा कि समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ बच्चा या तो अपने को सुरक्षित अनुभव करेगा या असुरक्षित । गुदीय अवस्था में दूसरा सम्बन्ध उन व्यक्तियों से होता है जो शिशु को शौच का प्रशिक्षण देते हैं । इस काल के दण्ड और पुरस्कार आगामी सामाजिक अन्योन्यक्रिया में दिखाई पड़ सकते हैं । उपर्युक्त दोनों अवस्थाओं में दूसरे व्यक्ति के साथ शिशु की अन्योन्यक्रिया होती है । लैंगिक ईडिपस अवस्था विशेष महत्वपूर्ण होती है , क्योंकि इसमें बच्चों को सामाजिक सम्बन्धों का ज्ञान हो जाता है । इसमें एक ही समय में दो से अधिक व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध रहता है , कम से कम माता , पिता और बच्चा एवं दूसरे सहोदर भी हो सकते हैं । ऐसा कहा जाता है कि ईडिपस ईर्ष्या इसलिये उत्पन्न होती है कि माता और पिता में एक-दूसरे के प्रति जो विशेष सम्बन्ध होता है , उसको बच्चा भाँप लेता है किन्तु वह उससे वंचित रहता है । ईडिपस समाधान बच्चे को इस बात का ज्ञान कराने से होता है कि सम्बन्ध अनेक प्रकार के होते हैं तथा माता और पिता में परस्पर विशेष सम्बन्ध होने मात्र से बच्चा तिरस्कृत नहीं हो जाता है । माता और पिता के साथ जो तादात्म्य होता है उसमें बड़ी जटिलता होती है और बच्चा, माता-पिता का अनुसरण भी करता है । विकास की इस

अवस्था में जो समस्यायें उठती हैं , उनका बच्चे के आगामी जीवन में बहुत अच्छा समाधान हो जाता है ।

काम-प्रसुप्ति काल पाँच वर्ष से प्रौढ़ावस्था तक रहता है । संस्थापित मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त काम-प्रसुप्ति काल की समस्याओं को ठीक तरह से सुलझा नहीं सका , क्योंकि इसमें बच्चे द्वारा बाल्यावस्था में सीखी हुई महत्वपूर्ण बातों की बहुत कुछ उपेक्षा कर दी गई थी तथा उस समय की बच्चे की संतुष्टियों की व्याख्या इस प्रकार की गई कि वे उसके यौन सुख की स्थापन्न हैं , जबकि यौन इच्छायें बच्चे द्वारा दमित कर दी गई थी । प्रौढ़ावस्था में ईडिपस संघर्ष अस्थायी रूप में पुनः उभर आते हैं , माता-पिता के लिये उनके अन्दर ईर्ष्या का भाव नये सिरे से प्रकट हो जाता है और यदि सब ठीक रहा तो वह माता-पिता से मुक्ति प्राप्त कर लेता है और अपनी अवस्था के किसी ऐसे पात्र को ढूँढ लेता है , जिसके साथ उसकी काम-वासना की तृप्ति हो सके ।

एरिक्सन ने मानोविश्लेषण के अन्तर्गत संस्थापित सिद्धान्त की कमियों को सुधारने एवं विकास की हर एक अवस्था पर जो वातावरण सम्बन्धी और सामाजिक समायोजन की आवश्यकता होती है , उसे लाने का प्रयत्न किया । उन्होंने परिपक्वता की एक ऐसी स्कीम तैयार की , जिसमें मनोलैंगिक अवस्थाओं को कुछ तरमीम करके दिया है , किन्तु हर एक अवस्था के साथ वे मन सामाजिक संकटों की एकरूपता करते हैं । यदि उनका सामना सफलता से किया गया , तो मनो-वैज्ञानिक विकास की परिपक्वता आ जाती है और यदि उनका सामना असफलता से किया गया तो वे मनस्तापीय अवशेष छोड़ जाते हैं । उनकी स्कीम अगले पृष्ठ पर दी गई है ।

एरिक्सन की इस स्कीम को देखने से पता चलता है कि हर एक मनोसामाजिक संकट शब्दों के युग्मों में दिखाया गया है जिसमें से एक शब्द अनुकूल परिणाम का द्योतक है और दूसरा प्रतिकूल परिणाम का । यह सिद्धान्त प्रतिपादित करता है कि हमारे सम्पूर्ण जीवन में एक संकट के हर एक प्रारम्भिक वियोजन के परिणाम अपने

सीखो रहते हैं । इसका अन्तिम परिणाम यह होता है कि इन विकास के परिवर्तनों के द्वारा व्यक्तित्व संरचना का जो निर्माण होता है , वह अद्वितीय होता है ।

हिलगार्ड के अनुसार एरिक्सन की उक्त स्कीम संस्थापित मनोलैंगिक विकास प्रतिरूप की पूरक है । फलतः यह बड़ी प्रभावशाली सिद्ध हुई है । इसमें कुछ शब्द एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं , जैसे विश्वास बनाम अविश्वास । कुछ शब्दों को सर्वथा भिन्न संदर्भों से लिया गया है , जैसे स्वायत्तता बनाम लज्जा तथा शंका । हिलगार्ड का कहना है कि एरिक्सन की उपर्युक्त स्कीम वैज्ञानिक सिद्धान्त का भाग नहीं बन सकती , जब तक कि इसको एक सुन्दर क्रम में न रखा जाये ।

यह बात कि संकट का सामना करने के पूर्वकालीन ढंग वर्तमान स्थिति में भी बने रहते हैं , स्थिरीकरण के मनोविश्लेषणात्मक प्रत्यय में भी बताई गई है । स्थिरीकरण से तात्पर्य अवरूद्ध विकास से है । यह सम्भव है कि एक व्यक्ति विकास की किसी अवस्था पर स्थिरीकरण द्वारा अपरिपक्व रह गया हो , जिससे उसके प्रौढ़ जीवन के व्यवहार में उस अवस्था की अतिशय अभिव्यक्ति होती रहती है । इस प्रकार का अवरूद्ध विकास केवल आँशिक होता है , किन्तु ऐसा व्यक्ति दूसरे अर्थ में पूर्णरूपेण विकसित हो सकता है । स्थिरीकरण से चरित्र संरचना के रूपों का विकास होता है अथवा व्यक्तित्व संरचना विकसित होती है , जो कि उस अवस्था से सम्बन्धित होती है , जिस पर व्यक्ति का स्थिरीकरण होता है । व्यक्तित्व संरचना के दो रूप , जिनका विस्तृत अध्ययन हुआ है , मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या करने के लिये उपस्थित किये जा सकते हैं और वे हैं : बाध्य व्यक्तित्व तथा सत्तावादी व्यक्तित्व ।

बाध्य व्यक्तित्व में अतिशय स्वच्छता , व्यवस्था , हठ तथा कृपणता पाई जाती है । कुछ बातों में उसका व्यवहार पुनरावृत्ति तथा कर्मकांडपरक हो जाता है । मनोविश्लेषकों का यह विश्वास था कि ऐसी व्यक्तित्व संरचना इस कारण हुई थी कि प्रारम्भिक शैशव काल में उसको अतिशय सफाई में रखा जाता था , अतः उन्होंने विकास की उस अवस्था के बाद उसको गुदीय चरित्र कहना प्रारम्भ कर दिया । इस

दृष्टि से यदि गुदीय अवस्था से सम्बन्धित संकटों का नियोजन सफलतापूर्वक नहीं होता तो अब शेष स्थिरीकरणों की अवस्था आ जाती है , अर्थात इस अवस्था के अतिशय अवशेष उसके प्रौढ़ावस्था के व्यवहार को प्रभावित करते रहते हैं । बाद के अनुसंधानकर्ताओं ने इस प्रकार के व्यक्तित्व के प्रतिरूप के सरलीकरण पर आपत्ति उठाई है , यद्यपि उन्होंने इसकी सत्ता को स्वीकार नहीं किया है । उनका कहना है कि जो माता-पिता अपने बच्चों को अतिशय स्वच्छता का प्रशिक्षण देते हैं । वे ही प्रारम्भिक शैशवकाल के बाद उनसे अनुरूपता , समय की पाबन्दी आदि की आशा कर सकते हैं । हिलगार्ड इस बात को मानते हैं कि यदि बच्चे को निरन्तर प्रशिक्षण दिया जाये , तो उसकी इस प्रकार की भी व्यक्तित्व संरचना बन सकती है ।[1]

सत्तावादी व्यक्तित्व एक दूसरी ही व्यक्तित्व संरचना है , जिसके विषय में अनेक अध्ययन हो चुके हैं । ऐसा कहा जाता है कि जब माता-पिता बच्चे को अत्यन्त तिरस्कृत कर देते हैं या उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं, जिससे उसकी शत्रुता दमित हो जाती है , तब सत्तावादी व्यक्तित्व की उत्पत्ति होती है । अपनी प्रौढ़ावस्था में छोटे-छोटे समूहों पर प्रहार करने में यह शत्रुता प्रकट होती है । इस प्रकार के व्यक्तित्व प्रतिरूप में रूढ़ व्यवहार , अन्ध-विश्वास , विध्वसंकता , दोषानुसन्धान , शक्तिशाली होने की इच्छा तथा कामवासना सम्मिलित है ।

अधिगम सिद्धान्त-अधिगम सिद्धान्त भी इस बात को मानता है कि एक व्यक्ति अपने बाद के जीवन में जिस प्रकार समस्या-समाधान करता है उसका उसके प्रारम्भिक विकासात्मक अनुभवों तथा प्रारम्भिक अनुभव के अवशेषों से सम्बन्ध होता है । अतः यह कहना गलत न होगा कि ये सिद्धान्त मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों के साथ परस्पर व्यापी है । इन दोनों प्रकार के सिद्धान्तों में भेद यह है कि अधिगम सिद्धान्तों के समर्थक यह मानते हैं कि दण्ड और पुरस्कार के विशिष्ट अनुभव व्यक्तित्व के विकास की रचना करते हैं किन्तु संस्थापित मनोविश्लेषक यह मानते हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में जो सर्वसामान्य प्रतिरूप पाये जाते हैं उनका विकास

पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता । ये दोनों सिद्धान्त जहाँ तक वास्तविकता का वर्णन करते हैं वहाँ तक उनमें परस्परव्याप्ति पायी जाती है ।

अधिगम सिद्धान्तों के कुछ ऐसे समर्थक भी हैं जिन्होंने फ्रॉइड के सिद्धान्तों को बहुत कुछ माना हैकिन्तु उनको अधिगम के रूप में ढालने का प्रयत्न किया है । यह बात "डोलार्ड तथा मिलर " एवं "व्हाइटिंग तथा चाइल्ड" दोनों के सम्बन्ध में कहीं जा सकती है ।

'डौलार्ड तथा मिलर' का कहना है कि अधिगम की प्रक्रिया में चार महत्त्व पूर्ण प्रयत्न हैं - चालना , संकेत , अनुक्रिया तथा पुनर्बलन ।

चालना इतना तीव्र उद्दीपक होती है जिससे व्यक्ति कार्य करने के लिये प्रेरित हो जाता है । यह व्यक्ति के व्यवहार को शक्ति प्रदान करती है किन्तु यह स्वयं उसको दिशा नहीं दिखाती । यदि कोई उद्दीपक विशेष तीव्र हो जाता है तो वह चालना का रूप धारण कर सकता है । कुछ चालनाओं को जन्मजात अथवा मुख्य चालनायें कहा जाता है , और इनका प्रायः शरीर क्रियात्मक प्रक्रियाओं से सम्बन्ध होता है । इनके उदाहरण पीड़ा , भूख , प्यास तथा काम है । मुख्य चालनाओं के अतिरिक्त गौण चालनायें भी होती है । अपने विकास के क्रम में एक व्यक्ति अनेक प्रकार की गौण चालनायें विकसित कर लेता है ।

अनुक्रिया एक स्थिति में एक व्यक्ति का व्यवहार होती है । वह पेशीय होती है । जैसे नृत्य करना ; मौखिक होती है , जैसे भाषा सीखना तथा संवेगात्मक भी होती है , जैसे किसी वस्तु को देखकर त्रस्त होना । कोई व्यक्ति अनुक्रियायें तब तक नहीं सीखता जब तक उसको पुरस्कार के द्वारा सन्तोष नहीं मिलता । पुरस्कार मिलने पर , उसकी अनुक्रिया का पुनबर्लन हो जाता है । जब उसका लगातार पुनर्बलन होतारहता है । तब वे पुनर्बलन एकीकृत आदत उत्पन्न कर देते हैं । यदि पुरस्कार के स्थान पर व्यक्ति को दण्ड मिलता है तो वह अनुक्रिया नहीं करता ।

संकेत-ऐसा उद्दीपक है जो प्राणी की अनुक्रिया का मार्ग प्रदर्शन करता है ।

चालना-उद्दीपक प्राणी को क्रियाशील बना देते हैं किन्तु संकेत अनुक्रिया का वास्तविक स्वरूप निर्धारित करते हैं । "संकेत निर्धारित करते हैं कि वह अनुक्रिया कब करेगा , वह अनुक्रिया कहाँ करेगा और वह कौन सी अनुक्रिया करेगा" ।[1]

डोलार्ड तथा मिलर ने अधिगम तथा विकास की प्रक्रिया में विशेष रुचि ली है । अतः यह स्वाभाविक है कि उन्होंने व्यक्तित्व की संरचना में कम रुचि दिखाई है । इतना अवश्य कहा है कि व्यक्तित्व के संरचनात्मक पक्षों में आदत का प्रमुख स्थान है । आदत उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच एक संन्धि है । यद्यपि व्यक्तित्व आदतों का बना होता है फिर भी उनकी विशेष संरचना उन अद्वितीय घटनाओं पर निर्भर रहेगी जिनमें व्यक्ति को रहना पड़ता है ।[2]

व्यक्तित्व की गत्यात्मकता व्यक्ति की चालनाओं से प्रकट होती है । व्यक्तित्व की संरचना तथा गत्यात्मकता के अतिरिक्त व्यक्तित्व के विकास का भी प्रश्न आता है । इसमें अधिगम की प्रक्रिया का विशेष महत्व है । अधिगम की प्रक्रिया में जो महत्वपूर्ण प्रत्यय सम्मिलित है उनका वर्णन हम अभी कर चुके हैं ।

'व्हाइटिंग तथा चाइल्ड' ने अभिप्रेरणात्मक प्रणालियों का विशेष अध्ययन किया है । उन्होंने देखा है कि पोषण , शौच , प्रशिक्षण , काम , आक्रमण , तथा परिनिर्भरता के क्या परिणाम होते हैं। व्हाइटिंग तथा चाइल्ड के दृष्टिकोण से इनमें से व्यवहार का प्रत्येक पक्ष समाजीकरण का क्षेत्र है किन्तु एक मनोविश्लेषण के लिये इनमें से प्रत्येक मनोलैंगिक विकास का भी क्षेत्र है ।

यह प्रश्न हो सकता है कि अधिगम सिद्धान्तों तथा मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों में समानता और अन्तर किस सीमा तक है , संस्थापित मनोविश्लेषण काम तथा आक्रमण को आधारभूत चालनायें मानता है किन्तु अधिगम सिद्धान्ती उनमें भूख , प्यास तथा पीड़ा भी सम्मिलित करता है । विकास की जिन अवस्थाओं को मनोविश्लेषक मनोलैंगिक कहता है उनको अधिगम सिद्धान्ती भी मानते हैं किन्तु उनकी दृष्टि से वे केवल काम पर आश्रित न रहकर परिपक्वता के अन्य पक्षों पर भी निर्भर रहते हैं । इसके साथ यह बात भी है कि एक विशेष संस्कृति में माता-पिता द्वारा

बच्चे को जो दण्ड और पुरस्कार दिये जाते हैं उनका उसकी आदत के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रभाव रहता है । चेतन तथा अचेतन का भेद ऐसा ही है जैसा कि किसी वस्तु का नाम रख सकता है और उसके सम्बन्ध में कुछ बात कर सकता है तो उस अनुभव को चेतन कहा जाता है और यदि वह उसके सम्बन्ध में अस्पष्ट ज्ञान रखता है , उसका नाम नहीं रख सकता और उसके विषय में बात नहीं कर सकता , तो उसके प्रभाव अचेतन रूप से पड़ते हैं । नाम रखना सीख लेना स्वयं एक आदत की घटना है ।[1]

अधिगम तथा मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों में जो समानता है वह यह है कि वे वर्तमान की व्याख्या अतीत के माध्यम् करते हैं । एक व्यक्ति का अतीत स्मृतियों तथा अनुभवों का अवशेष प्रदान करता है । जिनका उपयोग वह वर्तमान में समस्या आने पर कर सकता है । यह कहना अनुचित न होगा कि हमारे व्यक्तित्व का विकास अतीत काल के अनुभवों द्वारा ही हुआ है । हम आज की समस्याओं का सामना उसी प्रकार करने का प्रयत्न करते हैं जिस प्रकार कि हम उनका सामना अपने अतीत में करते रहे हैं ।

<u>कार्य सिद्धान्त</u> :- कार्य सिद्धान्त यह प्रतिपादन करते हैं कि व्यक्तियों के जिस प्रकार के कार्य होते हैं , उसी प्रकार से वे समाज की आशाओं को पूरा करते हैं । कार्य अनेक प्रकार के होते हैं , जैसे बच्चे का कार्य , माता-पिता का कार्य , मनुष्य का कार्य , स्त्री का कार्य , तथा एक नागरिक का कार्य । ये सिद्धान्त अधिगम सिद्धान्तों से इस अर्थ में मिलते-जुलते हैं कि एक जैव व्यक्ति विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये अपने को अनुकूल बना लेता है । यह स्पष्ट है कि उसको अपनी संस्कृति में अनुभव द्वारा अपना कार्य-व्यवहार अर्जित करना पड़ता है । इन दोनों सिद्धान्तों में भेद यह है कि अधिगम सिद्धान्तों के दृष्टिकोण से व्यक्ति के व्यवहार में जो सातत्य पाया जाता है वह मुख्य रूप से आदत के कारण होता है किन्तु कार्य सिद्धान्तों के अनुसार यह सातत्य बहुत कुछ इसलिये होता है कि उसमें कार्य की स्थिरता पाई जाती है । अतः जितना समाज का स्थाई होना महत्वपूर्ण है उतना ही व्यक्ति की आदतों का स्थाई रहना आवश्यक है ।[2]

यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि कार्य व्यवहार समाज द्वारा स्थापित कार्य स्थानों पर निर्भर रहता है । अभिप्राय यह है कि अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने के कुछ ढंग उनके विभिन्न प्रकार के स्थानों द्वारा निर्धारित होते हैं । लिंटन के अनुसार सरलतम समाज में भी पाँच प्रकार के स्थान पाये जाते हैं : §1§- आयु-लिंग स्थान , §2§- व्यावसायिक स्थान , §3§- सम्मान स्थान , §4§- परिवार , गोत्र अथवा घरेलू स्थान , तथा §5§- अनुकूलता अथवा सामान्य रुचियों पर आधारित संस्था समूहों में स्थान ।[3] इन पाँचों के उदाहरण आसानी से दिये जा सकते हैं । आयु-लिंग स्थान प्रायः सब समाजों में पाये जाते हैं । इनमें से सात को स्पष्ट रूप से जान लिया गया है । जैसे - शिशु का स्थान , लड़के का स्थान , लड़की का स्थान , नवयुवक का स्थान , नवयुवती का स्थान , वृद्ध पुरूष का स्थान , तथा वृद्धा का स्थान । व्यावसायिक स्थान कम से कम हर समाज में मिलते हैं , जैसे - दर्जी , व्यापारी । सम्मान स्थान भी अनेक होते हैं, जैसे- मुखिया या सेवक । परिवार , गोत्र अथवा घरेलू स्थान का उदाहरण , चतुर्वेदी परिवार का एक सदस्य हो सकता है । अनुकूलता अथवा सामान्य रुचियों पर आधारित संस्था समूहों में स्थान के उदाहरण रुचि समूहों की सदस्यता अथवा विरोधी दल आदि है ।

समाज में जिसको जैसा स्थान मिला हुआ है उसको वैसा ही कार्य करना चाहिये । कुछ व्यवहार विहित व्यवहार कहलाते हैं , कुछ अनुमोदित होते हैं तथा कुछ निषिद्ध होते हैं । उदाहरणार्थ , माता-पिता को अपना कार्य पूरा करने के लिये यह अनिवार्य है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करें तथा उनको परेशान न करें । इसी प्रकार एक वैद्य के कार्य का यह आवश्यक अंग है कि वह अपने रोगियों का इलाज ठीक प्रकार से करें । हमारे समाज में पगड़ी पहनना अनुमोदित है किन्तु यह आवश्यक नहीं कि एक व्यक्ति पगड़ी पहने । अतः विहित तथा अनुमोदित व्यवहार में अन्तर है । इन दोनों से निषिद्ध व्यवहार भिन्न है , जैसे एक वैद्य का यह व्यवहार नहीं होना चाहिये कि वह अपने रोगियों को जहर दे । यह निषिद्ध कार्य है ।

कार्य-व्यवहार के द्वारा व्यक्तित्व को अध्ययन करने की सम्भावना आंशिक

रूप से उपयुक्त ही है क्योंकि अध्ययन करने योग्य व्यवहार के जो प्रतिचयन हैं वे कुछ सीमा तक कार्य द्वारा विशेषीकृत होते हैं । उदाहरणार्थ , माता का जो व्यवहार अपने बच्चे के प्रति होता है , स्त्री का जो व्यवहार पति के साथ होता है तथा स्वामी का जो व्यवहार सेवक के प्रति होता है वह संगत ही है ।

व्यक्तित्व विकास का कर्ता सिद्धान्त संक्षेप में इस प्रकार है । शिशु कुछ पूर्व-व्यवस्थित स्थितियों में जन्म लेता है । जैसे - परिवार , लिंग तथा राष्ट्रीयता । उसकी स्वतन्त्रता इन स्थितियों द्वारा सीमित हो जाती है क्योंकि उसकी बहुत सी इच्छायें जन्म लेने से पहले ही निर्धारित हो जाती है , जैसे वह कहाँ रहेगा , उसकी कौन सी भाषा सीखनी होगी आदि । जब वह उन पर निर्भर रहता है तब उसके माता-पिता उसको इन पूर्व स्थापित स्थितियों के अनुकूल व्यवहार सिखाने के लिये बाध्य हो जाते हैं । समाज में उसका जन्म हुआ है उसके आश्रित होने से उसको अपनी स्थितियों का चयन करना पड़ता है , जैसे- उसे संगीत सीखना चाहिये अथवा नहीं , उसे व्यायाम के कार्यों में भाग लेना चाहिये अथवा नहीं , तथा उसे अपने जीवन में क्या व्यवसाय करना चाहिये । इन क्षेत्रों में भी उसके सामाजिक वातावरण से ऐसे बड़े-बड़े दबाव पड़ सकते हैं जो उसकी इच्छाओं को सीमित कर देते हैं किन्तु वह प्रत्येक कार्य में अपनी उस स्थिति की छाप लगा देता है जिसमे वह व्यवहार करता है । सारांश यह है कि उसका व्यक्तित्व उसके कार्य-व्यवहार का संगत रूप है ।[1]

विकासात्मक सिद्धान्तों का यह प्रतिपादन उचित लगता है कि व्यक्ति जिस संस्कृति में रहता है उसमें सीखता है । फलतः यह कहना गलत न होगा कि कोई भी प्रौढ़ व्यक्ति अपने विकास का परिणाम होता है । इससे समस्या का समाधान नहीं होता । कुछ बातें अभी ऐसी हैं जिनका हल नहीं हो सका है । वे हैं :-

1- बचपन के उत्तरकालीन वर्षों की तुलना में प्रारम्भिक वर्षों का महत्व क्या है ? मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (कुछ अधिगम सिद्धान्त भी) इस बात पर बल देते हैं कि व्यक्तित्व के निर्माण में प्रारम्भिक वर्षों का विशेष प्रभाव पड़ता

है । हम यह नहीं कह सकते कि प्रभाव किस प्रकार प्रतिवर्ती है ।

2- अधिगम की अपेक्षा शरीर गठन की देन का सापेक्ष महत्व क्या है ? इस बात का जितना महत्व बुद्धि के क्षेत्र में है उतना ही व्यक्तित्व के अध्ययन में भी है । यदि कुछ लोगों के कहने के अनुसार यह मान भी लिया जाये कि शरीर रचना तथा अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियो का सन्तुलन महत्वपूर्ण है , तो यह प्रश्न होता है कि वे किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं ।

3- क्या विकास में ऐसी सातत्य प्रक्रिया है जिसमें क्रमिक परिपक्वता, क्रमिक अर्जित आदतो के साथ अन्योन्य-क्रिया करती रहती है , अथवा क्या विकास मे निश्चित परिपक्वता की अवस्थाओं के साथ असातत्य पाया जाताहै । जैसा कि मनोलैंगिक विकास के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त से विदित है ।

4- वैयक्तिक आदतों के सातत्य की तुलना मे सामाजिक संरचना की स्थिरता द्वारा व्यक्तित्व का सातत्य किस सीमा तक बना रह सकता है ? अधिगम तथा कार्य सिद्धान्तों में यह विवाद का विषय है ।

5- विकासात्मक सिद्धान्त में व्यक्तित्व का उचित मूल्यांकन किस प्रकार किया जा सकता है ?

ग- <u>व्यक्तित्व-गत्यात्मकता के सिद्धान्त</u> :- व्यक्तित्व को एक दूसरे ढंग से भी देखा जा सकता है । एक व्यक्ति वर्तमान काल में जो व्यवहार करता है वह उसकी अनेक प्रवृत्तियों की अन्योन्यक्रिया का परिणाम होता है और वे प्रायः संघर्ष करती रहती है । यह संघर्ष सदैव वर्तमान काल में ही होते हैं , भले ही उनका अतीत का स्त्रोत कुछ रहा हो । व्यक्तित्व-गत्यात्मकता के सिद्धान्त व्यक्ति के वर्तमान काल के संघर्षों के साथ सम्बन्ध रखते हैं । वे विकासात्मक सिद्धान्त न होकर अन्योन्य-क्रियात्मक सिद्धान्त है । इस बात से हमारे सामने एक समस्या खड़ी हो जाती है । क्योंकि ऐसे अनेक सिद्धान्त हैं जो एक दृष्टिकोण से विकासात्मक हैं किन्तु दूसरे दृष्टिकोण से उनका सम्बन्ध व्यक्तित्व-गत्यात्मकता से है । यह बात मनो-

विश्लेषण तथा अधिगम सिद्धान्तों के सम्बन्ध मे सत्य है । जो भी हो , यहाँ हम उन सिद्धान्तों का विवेचन करेंगे जो व्यक्तित्व की गत्यात्मकता से सम्बन्धित है ।[2]

<u>व्यक्तित्व-गत्यात्मकता का विश्लेषणात्मक सिद्धान्त</u> :- फ्रॉयड का विश्लेषणात्मक सिद्धान्त मुख्यतः गत्यात्मक है । इसका एक रूप विकासात्मक भी है जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है । व्यक्तित्व-गत्यात्मकता का सिद्धान्त समकालीन व्यक्तित्व संगठन तथा कार्य के रूप के साथ भी सम्बन्ध रखता है जबकि विकास का विश्लेषणात्मक सिद्धान्त व्यक्तित्व के ऐतिहासिक स्त्रोत से सम्बन्धित है ।

फ्रॉयड ने मनुष्य को शक्तियों की गत्यात्मक व्यवस्था माना है । व्यक्तित्व तीन मुख्य व्यवस्थाओं का बना होता है - इड , अहं तथा पराहं ।[1] मनोवैज्ञानिक बलो की तीन व्यवस्थाये गत्यात्मक रूप से परस्पर क्रिया करके , व्यक्ति का व्यवहार उत्पन्न करती है ।

यद्यपि इनमें से प्रत्येक व्यक्तित्व का अंश है और प्रत्येक का अपना-अपना विकासात्मक इतिहास है फिर भी यहाँ हम उन अन्योन्यक्रियाओं से सम्बन्धित हैं जो प्रौढ़ व्यक्तित्व में हुआ करती है । इड पूर्णरूप से अचेतन होता है । यह प्रमुखतः चालना द्वारा निर्मित होता है और जन्मजात होता है । इसका बाह-पर्यावरणसे सीधा सम्बन्ध नहीं होता और यह उससे पृथक रहता है , इसके न इन्द्रियाँ होती हैं , और न पेशियाँ । यह कुछ नहीं जानता और न अपने आप कुछ कर सकता है । यह एक प्रकार की काम वासना है जिसकी न कोई संरचना होती है और न कोई व्यवस्था । इड कभी नहीं बदलता और सुख के नियम का पालन करता है । इसका केवल एक विकास है और वह अहं है , जो प्रारम्भ में अविकसित होता है और इड को बाहर आने से नहीं रोकता । जब अहं अनुभव द्वारा सीख जाता है तब वह इड पर शासन करने लगता है । इसका कार्य यथा सम्भव इड से मूल-प्रवृत्तियों को ग्रहण करना है । और उन्हें वास्तविक नियम के अनुरूप कर देना है । जब यह इड की इच्छा का दमन करता है , तब यह दमित

इच्छा अन्दर चली जाती है और इड से जुड़ जाती है । इसका परिणाम यह होता है कि इड पहले से भी ज्यादा दुखदायी हो जाता है ।

वस्तुतः अहं हमारे सामान्य सामाजिक अहं का प्रतिरूप है । जो कि संसार में क्रियाशील रहता है । यथासम्भव विवेकशील होने के कारण दूसरे लोगों के साथ अनुकूलता कर लेता है । यह वास्तविकता - नियम का पालन करता है ।

अभी हमने तृतीय अवयव पराहं का विवेचन नहीं किया है । सामाजिक वास्तविकता के साथ अहं के जो अनुभव होते हैं उनमें पराहं का विकास होता है पराहं अन्तरात्मा का समानार्थक है । पराहं यह कहता है कि "ऐसा किया जायेगा और ऐसा न किया जायेगा" किन्तु ऐसा करने का कारण नहीं बता सकता । प्रारम्भिक बचपन के उत्पन्न अहं के आदर्श के अनुसार यह हमसे कार्य कराता रहता है , विशेषतः माता-पिता के निषेधों के द्वारा ।

व्यक्तित्व की गत्यात्मक व्याख्या की दृष्टि से मूल विचार यह है कि व्यक्तित्व के ये तीनों अनुमित अवयव प्रायः कलह की अवस्था में रहते हैं ।अहं उन सन्तुष्टियों को टालता रहता है जिसकी तुष्टि इड तुरन्त चाहता है । पराहं, इड तथा अहं दोनोंसे विरोध करता है क्योंकि उनका नैतिक स्तर इतना ऊँचा नहीं होता जितना पराहं का । व्यक्तित्व के इन तीन अवयवों के विषय में यह कहते हुये कुछ शंका होती है कि एक व्यक्ति के अन्दर तीन व्यक्तियों का विरोध चलता रहता है किन्तु अधिक क्या कहें व्यक्तित्व का इन तीन भागों में वर्गीकरण उन विरोधी प्रवृत्तियों की ओर ध्यान आकर्षित करता है , जो एक ही व्यक्ति में सामान्य रूप से पाई जाती है ।

व्यक्तित्व के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि फ्रॉयड के विचारों का उस पर विशेष प्रभाव पड़ा । उनके सिद्धान्त ने जैव निर्धारकों तथा सामाजिक निर्धारकों को एक स्थान दिया है । इसी सिद्धान्त से एडलर , यंग तथा अन्य मनोविज्ञानियों ने प्रेरणा ली ।

<u>लैविन का क्षेत्र सिद्धान्त</u> :- व्यक्तित्व-गत्यात्मकता का दूसरा सिद्धान्त लैविन का है जिसके दृष्टिकोण से एक व्यक्ति के लिये उसका अतीत इतना महत्वपूर्ण नहीं जितनी उसकी समकालीन स्थिति । लैविन ने अपने "स्थान-मनोविज्ञान" में क्षेत्र सिद्धान्त पर बल दिया है । इस प्रकार उन्होंने इस प्रत्यय का मनोविज्ञान में प्रयोग किया । क्षेत्र सिद्धान्त यह प्रतिपादन करता है कि एक क्षेत्र के किसी भाग का व्यवहार उस सम्पूर्ण क्षेत्र से प्रभावित रहता है जिसमें उसका भाग होता है । दूसरे शब्दों में , इस सिद्धान्त के अनुसार , जिन स्थितियों में एक व्यक्ति होता है वे सदैव ऐसी जटिल पूर्ण होती है , जिनका व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण करता है और अपने लिये उनकी व्याख्या करता है ।

लैविन व्यक्ति अथवा जीनोटाइप को महत्त्व देते हैं , न कि उस पद्धति को जिसमें साँख्यिकीय औसत अथवा फीनोटाइप को बल दिया जाता है । उनका सूत्र इस प्रकार है :- बी = एफ (पी ई) जिसमें बी , व्यवहार के लिये है , एफ , कार्य के लिये , पी , व्यक्ति के लिये तथा ई , पूर्ण पर्यावरण सम्बन्धी स्थिति के लिये ।

लैविन ने क्षेत्र सिद्धान्त का समर्थन किया है किन्तु वर्ग-सिद्धान्त की आलोचना की है जिसके अनुसार किसी वस्तु का व्यवहार इस बात से निर्धारित होता है कि वह किस वर्ग की है । वर्ग-सिद्धान्त अरस्तू के विचार के अनुरूप है क्योंकि उनका यह मत था कि वस्तु नीचे इस कारण गिरती थी कि वह "भारी" वर्ग से सम्बन्धित थी । उन्होंने अरस्तू के इस विचार को गैलीलियो के विचार के विरुद्ध बताया है जिसके अनुसार एक वस्तु विभिन्न बलों के कारण नीचे गिरती थी , न कि इसलिये कि उसमें कुछ आन्तरिक तत्व पाये जाते थे । लैविन के दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति की व्याख्या उसके लक्षणों के आधार पर करना सदोषी वर्ग विचार का उदाहरण है । उन्होंने व्यक्ति तथा उसकी स्थिति का अध्ययन करना उपयुक्त समझा ।

अस्थायी स्थिति जिसमें व्यक्ति होता है उसको लैविन ने जीवन-स्थान माना है । जीवन-स्थान में पर्यावरण की वे स्थितियाँ सम्मिलित होती हैं जिनके प्रति व्यक्ति प्रतिक्रिया करता है , जैसे वे व्यक्ति जिससे वह मिलता है , वे वस्तुयें जिनको वह प्रत्यक्ष करता है , तथा उसके निजी विचार एवं कल्पनायें । अभिप्राय यह है कि जीवन-स्थान मनोवैज्ञानिक संसार को कहते हैं , यह सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक वास्तविकता होती है । इसमें वे सब तथ्य सम्मिलित होते हैं , जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करते हैं । लैविन की दृष्टि से गत्यात्मक मनोविज्ञान का कार्य यह है कि जीवन-स्थान में स्थित सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक तथ्यों से व्यक्ति के व्यवहार को ज्ञात करें ।[1] कभी-कभी व्यक्ति को ऐसा बिन्दु जाना जाता है जो जीवन-स्थान में भ्रमण करता है । और वहाँ पर जो बल होते हैं उनसे प्रभावित रहता है । इस प्रकार व्यक्ति उन कार्यों से घृणा करता है जिनको वह नहीं चाहता , उनकी ओर आकर्षित होता है जिनको वह चाहता है , रोधों का सामना करता है , इत्यादि । ये कथन जीवन-स्थान में "गति" को निर्दिष्ट करते हैं । यहाँ पर गति की व्याख्या करना आवश्यक है ।

गति से तात्पर्य किसी व्यक्ति का कार्य में जुट जाना है जिससे तनाव दूर हो सके और सन्तुलन प्राप्त हो । लैविन ने कहा है कि व्यवहार परिवर्तन का द्योतक है और यह परिवर्तन व्यक्ति में तब होता है , जब उसके मनोवैज्ञानिक पर्यावरण के साथ असन्तुलन पैदा हो जाता है । असन्तुलन आ जाने से तनाव पैदा हो जाता है जो सन्तुलन प्राप्त करने के लिये गति उत्पन्न कर देता है । उदाहरणार्थ - हम उस व्यक्ति की ओर देखने लगते हैं , जो सुन्दर होता है किन्तु हम अपनी आँखें कुरुप आदमी की ओर से फेर लेते हैं । जब हम यह सोचते हैं कि कल हमें क्या करना है तब हमारा जीवन-स्थान वह कमरा नहीं होता, जिसमें हम बैठे होते हैं , अपितु वह स्थान हमारे मन में आ जाता है जहाँ हम कल पहुँचना चाहते हैं और हमारी गति उसी ओर होने लगती है ।

एक व्यक्ति की अपनी संरचना भी होती है जिसका ज्यामिति के रूप में निरूपण किया जा सकता है । इस चित्र में उन कर्मवाहक तथा प्रत्यक्षात्मक प्रदेशों को सतह पर दिखाया है जो पर्यावरण के साथ अन्योन्यक्रिया करते हैं और आन्तारिक वैयक्तिक प्रदेश को अन्दर रखा है । आन्तरिक वैयक्तिक प्रदेश प्रत्यक्षात्मक कार्यवाहक क्षेत्र से घिरा हुआ है और न इसका उस सीमा से कोई सीधा सम्बन्ध है जो सीमा तथा व्यक्ति को पृथक करती है ।

इसके बाद आन्तारिक वैयक्तिक प्रदेश को कोशिकाओं में विभाजित करना होता है । जो कोशिकायें प्रत्यक्षात्मक कर्मवाहक प्रदेश के समीप हैं उनको परिधि कोशिकायें कहते हैं और जो वृत्त के केन्द्र में हैं उनको केन्द्रीय कोशिकायें ।

लैविन ने इस बात का स्पष्टीकरण नहीं किया है कि प्रत्यक्षात्मक कार्य वाहक क्षेत्र को छोटे-छोटे प्रदेशों में भेदीकृत किया जाये । उनका विचार था कि कर्मवाहक व्यवस्था इकाई के रूप में कार्य करती है क्योंकि यह सामान्यतः एक समय में एक ही कार्य करती है । इसी प्रकार प्रत्यक्षात्मक व्यवस्था भी इकाई के रूप में कार्य करती है क्योंकि एक व्यक्ति एक समय में एक वस्तु की ओर ध्यान दे सकता है और उसका प्रत्यक्ष कर सकता है । यहाँ यह कहना आवश्यक है कि कर्मवाहक व्यवस्था को प्रत्यक्षात्मक व्यवस्था से अलग रखना चाहिये क्योंकि वे स्वतन्त्र व्यवस्थायें हैं ।

इस प्रकार हमने व्यक्ति की संरचना का प्रत्यक्षात्मक निरूपण किया है । व्यक्ति की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है कि वह जीवन-स्थान में भेदीकृत प्रदेश हैं ।

समय सापेक्ष पूर्ण के अन्दर छोटे-छोटे प्रदेशों का जो भेदीकरण हो जाता है उसका व्यक्तित्व विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है । लैविन के व्यक्तित्व आरेख में प्रदेशों का जो निरूपण किया गया है उनका सीमाओं के द्वारा अन्तः सम्बन्ध होता है । सीमायें पारगम्य होती है अथवा अपारगम्य । अभिप्राय यह कि

पारगम्यता , सीमा का गुण होता है । अभी हम कह चुके हैं कि प्रदेशों में अन्तः सम्बन्ध होता है इस कारण एक प्रदेश में जो तथ्य[1] होता है वह दूसरे प्रदेश के तथ्य को प्रभावित करता है । जब तथ्यों में इस प्रकार का प्रभाव पाया जाता है तब उसकी घटना कहा जाता है । उदाहरणार्थ , एक कुर्सी अथवा एक व्यक्ति प्रत्येक तथ्य हैं किन्तु कुर्सी पर बैठा हुआ व्यक्ति एक घटना है ।[39]

जीवन-स्थान का भेदीकरण इस बात पर निर्भर है कि अपने विकास के क्रम में एक व्यक्ति को कितने अनुभव हुये हैं । बच्चे के व्यक्तित्व में बहुत कम भेदीकरण होता है । अभिप्राय यह कि एक बच्चा अपने तथा पर्यावरण के बीच स्पष्ट रूप से भेद नहीं कर पाता , और इसके अतिरिक्त उसके व्यक्तित्व में विभिन्न प्रकार के जो प्रदेश होते हैं वे इतने जटिल नहीं होते जितने कि वे उसके वृद्ध होने पर हो जायेंगे । दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि एक सुशिक्षित व्यक्ति का जीवन-स्थान अच्छी तरह से भेदीकृत होता है । अतः एक नवजात शिशु का जीवन-स्थान केवल एक खाली वृत्त द्वारा दिखाया जा सकता है , किन्तु एक विकसित व्यक्ति का नहीं । भेदीकरण की प्रक्रिया ऐसे विशेष जटिल व्यक्तित्व संगठन को उत्पन्न कर देती है । जिसको हम सामान्यतया व्यक्तित्व संरचना का नाम देते हैं ।

यद्यपि लैविन का सिद्धान्त गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का प्रकारान्तर है जो पूर्णता तथा एकत्व पर बल देता है , फिर भी लैविन ने यह स्पष्ट रूप से बताया था कि प्रौढ़ के भेदीकृत व्यक्तित्व में अनेक प्रकार की तनाव व्यवस्थायें होती हैं जो सापेक्षतया पृथक्कृत होती है । तो भी , इन व्यवस्थाओं में स्वतन्त्रता की एक माप पाई जाती है , जिसके कारण शक्ति एक तनाव व्यवस्था से दूसरी को जा सकती है । प्रतिबल की चरम सीमा में तनाव व्यवस्थाओं का पृथक्करण नहीं होता, शक्ति के स्तर समान हो जाते हैं और छोटे बच्चे के आदिम संगठन की ओर अभेदीकरण हो जाता है ।

लैविन - जैसा गत्यात्मक सिद्धान्त जो वर्तमान पर विशेष बल देता है, स्वाभाविक रूप से संघर्ष की समस्याओं तथा संघर्ष वियोजन के साथ सम्बन्धित हो जाता है, क्योंकि ये ढंग ऐसे हैं जिनमें समकालीन व्यक्तित्व समस्यायें अपने को अभिव्यक्त करती है ।[1]

व्यक्तित्व गत्यात्मकता के आजकल के जितने भी सिद्धान्त हैं उनमें से किसी ने भी ऐसा मार्ग नहीं निकाला है जिससे सर्वसामान्य-स्कीम के अनुरूप सब प्रकार के व्यक्तित्वों का विशिष्टीकरण हो सके ।

घ- लक्षण सिद्धान्त :- व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धान्त, विकासात्मक सिद्धान्त और गतिशीलता सिद्धान्त के पश्चात् लक्षण सिद्धान्त का वर्णन करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापक {प्रशिक्षणार्थियों} के व्यक्तित्व लक्षणों को निर्धारित करने की कोशिश की जा रही है । यह सिद्धान्त व्यक्तित्व का वर्णन लक्षणों की संख्या के आधार पर करता है । यानी जिस व्यक्ति में जैसी मात्रा लक्षणों की होती है, वह उसी प्रकार का होता है और अन्य से भिन्न भी होता है । अतः शोधकर्ता व्यक्तित्व लक्षणों के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है ।

"आलपोर्ट" {1937} ने व्यक्तित्व विज्ञान की विवेचना अपने लक्षण सिद्धान्त के आधार पर की है । आपकी राय में "लक्षण" कुछ प्रकार के उद्दीपकों के प्रति संगत तथा अनुकूली ढंग से अनुक्रिया करने की चिरस्थायी पूर्ववृत्ति होता है । इस प्रकार से आपने लक्षण का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है । आपने लक्षणों को निम्न भेदों में विभक्त किया है :-

प्रथम भेद के अन्तर्गत, वे सामान्य लक्षणों तथा व्यक्तिगत वृत्तियों में भेद बताते हैं । सामान्य लक्षण वे होते हैं जिनकी व्यक्तियों में तुलना की जा सकती है । इनका माँपना भी लक्षण स्केलों के द्वारा सम्भव होता है । इस प्रकार से 1960

में मूल्यों को मापने का स्केल विकसित किया था , जो सामान्य लक्षणों का मूल्यांकन करता है । इसके द्वारा प्रतिपादित मूल्यों, राजनैतिक , आर्थिक , सामाजिक , सौन्दर्यात्मक , सैद्धान्तिक , धार्मिक के आधार पर एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के साथ तुलना की जा सकती है । यथार्थ लक्षणों को वे व्यक्तित्व वृत्तियाँ मानते हैं और वे व्यक्ति के लिये अपूर्व होती है । अतः एक व्यक्ति की तुलना दूसरे से करने पर उनका सही प्रयोग नहीं किया जा सकता है । इस प्रकार से सामान्य लक्षण , यथार्थ लक्षण कदापि नहीं हो सकता है , किन्तु वह व्यक्तिगत वृत्तियों को माप करने योग्य ऐसा पक्ष है जो प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होता है ।

द्वित्तीय मत से वृत्तियाँ सोपान क्रम में व्यवस्थित होती हैं । इनमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण होती है और कुछ कम । इस प्रकार इन आधारों पर आपने लक्षणों के तीन भेद किये हैं :- मुख्य §कार्डिनल§ , केन्द्रीय §सेन्ट्रल§ तथा गौण §सेकेन्डरी§ । इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व एक ही मुख्य लक्षण की विशिष्टता के कारण हुये हैं । मुख्य लक्षण युक्त व्यक्ति बहुत ही कम होते हैं , लेकिन केन्द्रीय लक्षण युक्त व्यक्ति अधिक होते हैं , जिनके आधार पर उनके व्यक्तित्व का वर्णन किया जा सकता है ।

अल्फेंड महोदय के अनुसार व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिये उस व्यक्ति के मुख्य , केन्द्रीय तथा गौण लक्षणों का अध्ययन करके ही किया जा सकता है , क्योंकि ये लक्षण व्यक्तिगत वृत्तियाँ होती हैं ।

शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में कैटिल द्वारा विकसित 16 पी0 एफ0 का प्रयोग किया है । अतः जब तक कैटिल के लक्षण सिद्धान्त का वर्णन नहीं किया जाता, तब तक विषय की स्पष्टता नहीं हो पाती है । कैटिल §1945§ ने व्यक्तित्व लक्षणों के सिद्धान्त को साँख्यिकी विधि के आधार पर वर्णन किया है । उनका मत है कि जब तक लक्षणों को क्रम में नहीं लाया जाता तब तक व्यक्तित्व के सामान्य

लक्षणों का सिद्धान्त केवल वर्णन मात्र है । आपने साँख्यिकी विधि द्वारा उन गुणों का पता लगाया जो साथ-साथ चलते हैं । इस प्रकार से गुणों का पुंज उस लक्षण की व्यवस्था करता है , जिसका व्यापक अर्थ होता है । इसलिये व्यक्तित्व लक्षणों को विद्वानों ने विशेषताओं के पुंज के रूप में परिभाषित किया है । कैटिल ने लक्षणों के दो भाग किये - सतही लक्षण , और स्त्रोत लक्षण । सतही लक्षणों <सरफेस ट्रेटस> से तात्पर्य उन लक्षणों से है जिनकी अभि-व्यक्ति व्यक्तियों के कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से होती है और जिनकी चेष्टाओं को प्रत्यक्ष रूप से तुरन्त देखा जा सकता है । स्त्रोत लक्षण <सोर्स ट्रेटस><अप्रत्यक्ष> रूप से क्रियाशील रहते हैं । इनकी अभिव्यक्ति सतही लक्षणों के माध्यम् से ही होती हैं स्वतन्त्र रूप से नहीं । इनका विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों ही पक्षों से माना गया है । स्त्रोत लक्षणों का मूल्यांकन जीवन वृत्त , सेल्फ रेटिंग और वस्तुनिष्ट परीक्षणों के माध्यम् से किया जाता है । इनके द्वारा मानव के व्यवहार के विभिन्न पहलुओं का आँकलन आसानी से किया जा सकता है । इन लक्षणों को तीन रूपों में जाना जा सकता है :-

<u>गत्यात्मक लक्षण</u> :- गत्यात्मक लक्षण का प्रयोग उस समय देखने को मिलता है जब एक व्यक्ति अपने लक्ष्य के प्रति क्रियाशील होता है । इनके अन्तर्गत-चालनायें , मनोवृत्तियाँ , स्थायीभाव , भावना ग्रन्थियाँ , पराअहं और अहं आदि मानव की वृत्तियाँ सम्मिलित रहती हैं ।

<u>योग्यता लक्षण</u> :- इन लक्षणों के अन्तर्गत व्यक्ति की उस क्षमता का प्रदर्शन होता है । जिसके द्वारा वह उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति जीवन को सुन्दर बनाने के लिये करता है ।

<u>प्रकृतिरूप लक्षण</u> :- इन लक्षणों का सम्बन्ध व्यक्ति के कान्स्टिटीट्यूसनल पक्ष से होता है जिसके द्वारा वह अनुक्रिया करने की तीव्रता , शक्ति , संवेगात्मक क्रियाशीलता का प्रदर्शन करता है ।

इस प्रकार से शोधकर्ता को स्पष्ट हो जाता हो कि व्यक्तित्व का मापन करना आसान कार्य नहीं है । व्यक्तित्व लक्षणों के बारे में आल्पोर्ट ने प्रेरकों के कार्यात्मक स्वातन्त्र्य पर बल दिया है , जबकि आइजेनिक ने अनुक्रिया की आदत पर । इसके विपरीत कैटिल ने सतही लक्षण एवं स्त्रोत लक्षणों को व्यक्तित्व का आधार माना है । इस प्रकार से सतही लक्षण एवं स्त्रोत लक्षणों को व्यक्तित्व का आधार माना है । इस प्रकार से सतही लक्षण ही व्यक्तित्व विकास में क्रियाशील रहते हैं । अतः स्पष्ट होता है कि सतही लक्षणों के द्वारा ही व्यक्तित्व के गत्यात्मक परिवर्तनों का विकास होता है जिसका अनुभव व्यक्ति को क्षण-क्षण में होता रहता है ।

5- <u>समस्या की आवश्यकता</u> :- "रंग एवं ब्रुदर्स" (1956 , पृ0 72) ने शिक्षा के विकासात्मक कार्यों पर बल दिया है । शिक्षक अपने प्रशिक्षण के द्वारा बच्चों में सामाजिक मूल्य , रीतियाँ , व्यवहारिक कुशलता , आदि का विकास उनकी क्षमताओं के आधार पर करता है । साथ ही साथ वह पुराने मूल्यों के साथ नवीन मूल्यों का संतुलन भी स्थापित करता है । इस प्रकार से समाज का उत्तरदायित्व और निष्ठा नागरिक हित में बना रहता है , अतः शिक्षा के द्वारा शिक्षक अपने छात्र/छात्राओं में उन जीवन मूल्यों और जीवन आदर्शों का विकास करता है जिन को समाज चाहता है (फ्लैमिंग , 1957 पृ0 57) ।

शोधकर्ता स्वयं एक शिक्षक पद पर कार्यरत है । वह अपने मन में सोचता है - शिक्षक क्या है ? शिक्षक कैसा होना चाहिये ? शिक्षक क्यों बनना चाहिये ? इन प्रश्नों के उत्तर वह आज तक प्राप्त नहीं कर पाया है । अतः उसने स्वयं इनका समाधान खोजने के लिये छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना उपयुक्त समझा। आज इसकी आवश्यकता निम्न क्षेत्रों में है :-

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है या अध्यवसाय है , जिसमें मानव समाज के अधिक परिपक्व लोग , न्यून परिपक्व व्यक्तियों की अधिकाधिक परिपक्वता के लिये प्रयास करते हैं , तथा इस प्रकार से मानव जीवन को अच्छा बनाने में योगदान

करते हैं ॥विटलर , 1951 , पृ0 10 ॥ । इस कथन से स्पष्ट होता है कि समाज के अधिक परिपक्व लोग शिक्षक होते हैं , जो अपने द्वारा नई पीढ़ी को तैयार करते हैं । भारतीय शिक्षक - प्रशिक्षण विभाग कई प्रकार के शिक्षकों को तैयार करता है । शिक्षा विभाग ने माध्यमिक स्तर तक ॥कक्षा -12॥ शिक्षा देने वाले शिक्षक को दक्ष होना उपयुक्त माना है । इसको वरीयता एवं सुविधा भी प्राप्त होती है । इनके लिये सही नियम , नीति , पाठ्यचर्या , प्रशिक्षण पर्यावरण , प्रयोगशालायें , आदि की भी व्यवस्था की जाती है , जिसके स्वरूप का निर्धारण शिक्षा विभाग को ही करना होता है । यह अध्ययन शिक्षा विभाग को बी0एड0 प्रशासन सही नीति निर्धारण , सही चयन करना , एवं अतिरिक्त धन की व्यवस्था करना आदि में भी सहायक सिद्ध होगा ।

देश एवं प्रदेश में विभिन्न प्रशिक्षण संस्थायें शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य कर रहीं हैं । इन संस्थानों की अपनी-अपनी पहचान है । यह पहचान वहाँ पर शिक्षा-दीक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों की योग्यता एवं क्रियाशीलता के कारण है , न कि भव्य इमारत और साधनों से । इनका एक निश्चित कार्यक्रम संस्थान की गरिमा को आगे बढ़ाता है । अतः प्रस्तुत अध्ययन इस ओर भी कार्य करेगा कि प्रशिक्षण संस्थानों को अपने कार्योंको कैसा रूप प्रदान करना चाहिये ताकि राष्ट्रीय आवश्यकतानुसार शिक्षक तैयार हो सकें । किसी प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना करना आसान है , लेकिन उसको सही दिशा देना एक अलग बात होती है । महाविद्यालय का प्रशासन , पाठ्यचर्या , निर्धारण , शिक्षण क्रिया का संचालन , पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था , सिद्धान्त एवं व्यवहार का ज्ञान देना , छात्र मूल्याँकन की शिक्षा व्यवस्था , साहचर्यपूर्ण पर्यावरण स्थापित करना , शिक्षकों में समर्पण का भाव विकसित करना , सहायक सामग्री का विषयों के अनुसार व्यवस्था एवं प्रयोग करना , प्रयोगशाला एवं डार्करूम का उपयोग व व्यवस्था करना आदि की सुव्यवस्था हो । यह विशेषतायें तभी सम्भव हो पायेंगी , जब शिक्षक सही प्रशिक्षण दे रहे हों और प्रशिक्षण का सही ज्ञान रखते हों ।

प्रस्तुत शोधकार्य का महत्व बी०एड० के प्राध्यापकों के लिये भी है । प्रशिक्षक अपनी सही तकनीक का सामयिक उपयोग करके प्रशिक्षणरत छात्र/छात्राओं में सुषुप्त रुचियों को जागृत करता है , दिशा निर्देश देता है । शिक्षक के समक्ष यह समस्या है कि उपयुक्त अध्यापक का चयन कैसे किया जाये और कौन सही शिक्षक बन सकता है । इसके लिये यह अध्ययन चयन किये गये बी०एड० छात्र/ छात्राओं के गुणों को स्पष्ट करेगा ताकि शिक्षक में शिक्षण प्रभाविकता विकसित हो सके । जैसा कि "विमला राघवन एवं रीना भट्टाचार्या" §1987 , पृ0 161-67§ ने लिखा है , "शिक्षक प्रभाविकता का सम्बन्ध , विशेषतः शिक्षक के सम्पूर्ण गुणों एवं शिक्षक व्यवसाय से होता है । प्रभावशाली शिक्षक वे हैं , जो न केवल अपने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अच्छे एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं , बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करते हुये अधिकतम शैक्षिक सम्प्राप्ति सम्भव बनाते हैं ।"

आज यह कहा जा रहा है कि प्रशिक्षण विभागों को प्राध्यापक कम शिक्षण कार्य करते हैं , और धन अधिक व्यय होता है । इस भ्रम को भी यह अध्ययन दूर करने में उपयोगी सिद्ध होगा । क्योंकि शिक्षा आयोग §1964-66 , पृ0 75-79§ का मत है , " शिक्षकों के प्रशिक्षण पर किये गये व्यय का प्रतिफल सचमुच काफी मूल्यावान होगा , क्योंकि उसके परिणाम स्वरूप लाखों छात्रों की शिक्षा में जितना सुधार होगा , उसकी तुलना में व्यय की मात्रा बहुत कम होगी । अतः स्पष्ट है कि शिक्षा के विकास में उच्च कोटि के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय बहुत बड़ा सहयोग दे सकते हैं ।

प्रस्तुत शोध की आवश्यकता प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राध्यापकों के लिये भी है । भारतीय ग्रन्थों में "एकलव्य" का उदाहरण धनुर्विद्या" में विशिष्टता पाने के लिये मिलता है । उसने अपनी अन्तर्दृष्टि के द्वारा , सही तकनीक , लगन और विश्वास के सहारे धनुर्विद्या में विशिष्टता प्राप्त कर ली

थी । इसी प्रकार से आज का प्रशिक्षणरत अध्यापक को अपने व्यक्तित्व का विकास करना होगा । इसके लिये स्वयं को जागृत करके , प्रशिक्षण को जीवन एवं व्यवहार में लागू करके , तथा शिक्षक सम्मान सर्वोपरि है , के भाव को धारण करके कर्मक्षेत्र में उतरना होगा । यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करेगा कि अच्छा शिक्षक कैसे बना जा सकता है , उसके लिये व्यक्तित्व में किन-किन विशेषताओं को विकसित करना होगा ।

शिक्षकों की उपादेयता तभी होती है , जब उनको सामाजिक सम्मान प्राप्त हो । भारतीय समाज ने शिक्षक को ईश्वर के बाद स्थान प्रदान किया है । अतः प्रस्तुत अध्ययन की उपयोगिता समाज , माता-पिता के लिये भी है । क्योंकि शिक्षक के द्वारा ही परिवर्तन सम्भव होता है । शिक्षक बच्चों की आवश्यकता, समाज की आवश्यकता का बारीकी से अध्ययन करता है । फिर शिक्षा के द्वारा दोनों में समायोजन स्थापित करके शनैः शनैः समाज में परिवर्तन लाता है । वह भविष्यद्रष्टा होता है , वह भरसुक्त होता है , वह अपरिग्रही होता है । माता-पिता , शिक्षा की अनिवार्यता , शिक्षक का महत्व जब समझ जाते हैं तो अपने बच्चों का भविष्य भी निश्चित कर लेते हैं । आज शिक्षक-संरक्षक सम्मेलन सप्ताहान्त में किया जाता है । इसके परिणाम से बच्चों में बहुर्मुखी विकास के अवसर स्पष्ट होते हैं । अतः माता-पिता अपने बच्चों में "शिष्यत्व" के भाव को विकसित करने में सफल हो रहे हैं । इस प्रकार से बच्चों में नियम , संयम , प्रशिक्षण आदि पर माता-पिता थोड़ा सा भी ध्यान दे लेते हैं , तो बच्चों का विकास जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होगा" और बच्चे बहिर्मुखी व्यक्तित्व §जुंग , 1923§ में विकसित होंगे । अतः शिक्षक गुणों के अध्ययन से भारतीय समाज भी प्रभावित होगा , गर्व महसूस करेगा और बच्चों को सभ्य नागरिक बनने के अवसर भी प्राप्त होंगे ।

किसी भी अध्ययन की उपयोगिता तभी मानी जाती है जब उसके प्रभाव से जन सामान्य को लाभ हो । बी०एड० में प्रशिक्षणरत छात्र/छात्राध्यापक के पूर्ण व्यक्तित्व का अध्ययन तथ्य को स्पष्ट करेगा कि राष्ट्रके भविष्य को बनाने वाले

नागरिकों को कैसे शिक्षक की आवश्यकता है । इतिहास शाक्षी है कि "चाणक्य" जैसे एक शिक्षक ने नंदवंश का अंत करवाकर चन्द्रगुप्त को सिंहासनारुढ़ करवाकर राष्ट्रीय एकता स्थापित की थी । वर्तमान को भी ऐसे ही शिक्षकों की आवश्यकता है जो देश से गरीबी , ऊँच-नीच , जातिवाद , प्रान्तवाद , भाषावाद , आतंकवाद और अलगावाद आदि विकारों को समाप्त करने के लिये नागरिकों को तैयार करें । इस प्रकार से डॉ० राधाकृष्णनन §1976 , पृ० 159§ का यह कथन खरा साबित होता है , "अध्यापक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है । वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं का हस्तांतरण करता है , प्राविधिक कुशलता बनाये रखता है और सभ्यता के दीप को आलोकित करता है । वह केवल व्यक्ति को मार्ग ही नहीं दिखलाता , बल्कि सारे राष्ट्र का मार्ग निर्देशन करता है ।"

उपर्युक्त उपदेयता से स्पष्ट होता है कि शिक्षक बनाने वाले महाविद्यालयों को चयनपद्धति , पाठ्यचर्या निर्माण तथा शिक्षण दक्षता का विकास करने के लिये नये आयाम प्राप्त होते हैं । शिक्षकों में विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व लक्षण पाये जाते हैं , उनकी उपादेयता कैसे और किस रूप में की जाये ताकि वर्तमान माँग को पूरा किया जा सके । इस प्रकार से एक "सच्चा शिक्षक" तैयार किया जा सकता है , जो राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है । ऐसे शिक्षक ही देश से अनुशासनहीनता, और बैकारी की समस्या को नागरिक वर्ग से दूर करने में समर्थ होगे ।

6- <u>अध्ययन के उद्देश्य</u> :- मानविकी विषयों में "व्यक्तित्व" को गत्यात्मक स्वरूप प्रदान किया गया है । इसका अध्ययन विभिन्न रूपों में किया जा चुका है । लेकिन छात्र-अध्यापक के रूप में व्यक्तित्व का अध्ययन बहुत ही कम देखने में आया है । वही अध्ययन उपयोगी होता है जिसका दृष्टि कोण वैज्ञानिक होता है । बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना इस क्षेत्र की शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिये हुई है । इस तथ्य का समाधान अच्छे अध्यापकों के द्वारा ही सम्भव हो सकता है । इसलिये शोधकर्ता ने यहाँ के अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का अध्ययन किया ,

ताकि इनके ऊपर , व्यापक , वैज्ञानिक और क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके । इस क्षेत्र पर किसी भी शोधकर्ता ने अब तक प्रशिक्षणरत छात्र/छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व के शीलगुणों का अध्ययन नहीं किया है । अतः शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में चार परिवर्तियों को लेकर छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व का आँकलन एवं खोज को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । अतः अध्ययन के उद्देश्य निम्न रूप में प्रस्तुत हैं :-

1- सामान्य रूप से बी0एड0 छात्र/छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वचित्र को तैयार करने वाले शीलगुणों को जानना ।

2- छात्र-अध्यापक एवं छात्रा-अध्यापिका के व्यक्तित्व पार्श्वचित्र में अन्तर स्थापित करना ।

3- आयु भिन्नता के प्रभाव का व्यक्तित्व पार्श्वचित्र पर अध्ययन करना ।

4- शिक्षण अनुभव के प्रभाव का व्यक्तित्व पार्श्वचित्र पर अध्ययन करना ।

5- व्यक्तित्व गठन पर सामाजिक-आर्थिक स्तर की भिन्नता के प्रभाव को जानना ।

7- <u>अध्ययन की परिकल्पनायें</u> :- प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये कुछ परिकल्पनायें शोधकर्ता ने निर्मित की , ताकि अध्ययन की योजना स्पष्ट एवं सही दिशा प्राप्त कर सके । इन परिकल्पनाओं का गठन शोधकार्य से पहले किया जाता है , और इनका परीक्षण बाद में किया जाता है । शोध कार्य में परिकल्पनाओं का सबसे अधिक महत्व होता है { कोहेन एवं नागेल , 1934 } । कोई भी शोधकर्ता परिकल्पनाओं को बनाये बिना सही दिशा में खोज कार्य नहीं कर सकता है । इन परिकल्पनाओं का जन्म विषयवस्तु , पूर्व अनुभव , जिज्ञासा प्रवृत्ति ,आदि के आधार पर होता है । यह आशा की जाती है कि शिक्षक व्यक्तित्व पर यौन भिन्नता , अनुभव , आयु और सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि का शिक्षक प्रशिक्षण का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है ।

यानी व्यक्तित्व गठन में कोई भिन्नता नहीं स्थापित होती है । अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न लिखित परिकल्पनाओं का गठन किया गया है :-

1- छात्र-अध्यापक एवं छात्रा-अध्यापिका व्यक्तित्व पार्श्वचित्र विशेषताओं में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

2- प्रशिक्षणरत अध्यापकों की आयु भिन्नता , व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अंतर नहीं रखती हैं ।

3- प्रशिक्षणरत अध्यापकों का शिक्षण अनुभव उनके व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

4- सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रशिक्षणरत अध्यापकों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

8- <u>अध्ययन की परिसीमायें</u> :- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिये स्त्री/पुरुष दोनों ही बी०एड० प्रशिक्षार्थियों को शोध हेतु चुना है । अतः अध्ययन का शोध न्यादर्श , क्षेत्र प्रविधियाँ जिनका प्रयोग प्रदत्त , संकलन एवं विश्लेषण के लिये किया गया है , की परिसीमाओं का निश्चयीकरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है :-

1- न्यादर्श :- §अ§ प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के क्षेत्र में आने वाले प्रशिक्षण महाविद्यालयों तक ही सीमित है ।

§ब§ बी०एड० प्रशिक्षणरत छात्र-अध्यापकों को आयु एवं अनुभव के आधार पर वर्गीकृत करके अध्ययन किया गया है ।

§स§ बी०एड० प्रशिक्षणरत छात्रा-अध्यापिकाओं को भी आयु एवं अनुभव के आधार पर वर्गीकृत करके अध्ययन किया गया है ।

2- अध्ययन क्षेत्र :- छात्र/छात्रा-अध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषताओं को जानने के लिये डॉ० कपूर (1970) द्वारा हिन्दी रूपान्तरित 16 पी०एफ० का प्रयोग किया गया है जिसमें निम्नलिखित व्यक्तित्व लक्षणों का आँकलन किया गया है :-

व्यक्तित्व	निम्नस्तरीय सीमा	उच्चस्तरीय सीमा
ए	सिजायाइमिया : गंभीर , शांत , चतुर अलगाव ।	एफेक्टोथाइमियाँ : बहिर्मुखीय , अति-स्नेही , सरलता , प्रतिस्पर्धी ।
बी	लोअर मेंटल कैपेसिटी : कमबुद्धि वास्तविक चिंतन ।	हायर मैंटल कैपेसिटी : उच्चबुद्धि , भावात्मक चिंतन , बौद्धिक तीव्रता ।
सी	लोअर इगो स्ट्रेन्थ : भावनामय , संवेग रहित , स्थायी नैराश्यता ।	हायर ईगो स्ट्रेन्थ : संवेग स्थिरता, सत्य पालक , शांत ,परिपक्व ।
ई	सबमिसिवनैस : विनम्र , कोमल उपकारी , निश्चयवान ।	डामीनैन्स : निश्चित वार्तालाप , स्वतन्त्र , आक्रामक ,प्रतिस्पर्धी, हठी ।
एफ	डैसरजैन्सी : मर्यादाशील ,मितव्ययी, गंभीर , अल्पभाषी ।	सरजैन्सी : आनंदित , स्वेच्छा पसंद , उत्साही ।
जी	वीकर सुपर ईगो स्ट्रेन्थ : उपयुक्त , नियम विरोधी , आभारी ।	स्ट्राँगर सुपर ईगो स्ट्रेन्थ : पुण्य कार्य करने वाला ,उद्यमी , गंभीर , नियम पालक ।

एच	थैक्टिया : शर्मीला , सीमाबद्ध , कायर , लज्जाशील ।	पारनियाँ : साहसिक , सार्वजनिक , हृदी , क्रियाशील , स्वेच्छाचारी ।
आई	हारिया : मस्तिष्क दृढ़ता , स्वाविवेकी , यथार्थवादी , अर्थहीन , वाचाल ।	प्रेन्सिया : कमजोर मस्तिष्क , निर्भर , अतिसुरक्षित , भावनात्मक ।
एल	स्लेक्शन : विश्वस्त् , योग्य , ईर्षालू , सामूहिकता ।	प्रोटेन्सन : सन्देही , स्वराय निर्माणक असामूहिकता ।
एम	प्रेकजरनिया : व्यवहारिक , सचेत , रुढ़िगत , उपयुक्त , यथार्थवादी ।	आइटिया : काल्पनिक , आँतरिक आकांक्षी , विरोधी , कम याददास्त, अव्यवहारिक ।
एन	आर्टलैसनेस : अग्रगामी , स्वाभाविक अकलात्मकता , भावनामय ।	श्रुडनैस : चतुर , गणक , सांसारिक , मर्मज्ञ ।
ओ	अनट्रबुल्ड एडीकवेसी : गंभीर , प्रसन्नचित्त, विश्वासी , निर्मल , स्वविवेकी ।	गिल्ट प्रोननैस : विचारशील , चिन्तित दम्भी , विघ्न वाला ।
क्यू1	कन्जरवेटिज्म : रुढ़िवादी , सम्मानीय, विचार , प्रथाओं की समस्या समाधान ।	रेडिकलिज्म : प्रायोगिक , विषम , सहृदय , विश्लेषक , स्वतन्त्र विचार ।
क्यू2	ग्रुप अढेरेन्स : समूह निर्भरता , एकता , विश्वासपात्र ।	सैल्फ एफीसियेन्सी : स्वनिर्मित , स्वनिर्णय , क्षमता वाला ।
क्यू3	लो इन्टीगरेसन : अनियंत्रित , स्व-विरोधी , सलाह न मानना, इन्द्रियग्राही ।	सैल्फ इमेज : नियंत्रित , समाजप्रिय , स्वाभिमानी ।

(Q4) अनफ्रस्ट्रेटेड : जड़ , आरामतलब, क्षोभरहित , आशावान ।

फ्रस्ट्रेटेड (डाइफरफिकटैन्सन) : चिन्तित , निराशायुक्त , परिश्रमी , गतिशील ।

3- शोध प्रविधियाँ :-

(अ) व्यक्तित्व लक्षणों के प्रदत्तों को स्टैन्स में परिवर्तित करके उनका विश्लेषण एवं व्याख्या करना तथा सार्थकता की विवेचना करना ।

(ब) स्त्री/पुरुष , आयुभिन्नता , अनुभवभिन्नता में पाये गये लक्षणों का सामाजिक आर्थिक स्तर पर सम्बन्ध स्थापित कर विवेचना करना ।

9- अध्ययन योजना एवं संगठन :- प्रस्तुत अध्ययन को सही रूप देने के लिये पाँच अध्यायों का विस्तार किया गया है । प्रथम अध्याय में शिक्षण-प्रशिक्षण की वर्तमान दशा का अवलोकन करते हुये विकास पर एक दृष्टि डाली गई है । इसके साथ ही व्यक्तित्व परिवर्तों को स्पष्ट करने के लिये उससे सम्बन्धित सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है । अध्ययन को सही दिशा देने के लिये एवं वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिये शोध के अउद्देश्य एवं परिकल्पनाओं का गठन किया गया । शोधकार्य का औचित्य स्पष्ट करने के लिये उपयोगिता पर विशेष बल दिया गया है ताकि अध्ययन की सार्थकता स्पष्ट हो सके ।

अध्ययन के द्वित्तीय अध्याय में साहित्य के पुनरावलोकन को एकत्रित किया गया है । शोध शीर्षक से सम्बन्धित साहित्य की उपयोगिता को स्पष्ट किया गया है । प्रथमतः व्यक्तित्व (सामान्य) के संदर्भ में जो कार्य हुआ है , उससे व्यक्तित्व के स्वरूप के बारे में अभिधारणा की व्याख्या प्रगट होती है । द्वितीय रूप में अध्यापक व्यक्तित्व से सम्बन्धित कार्यों का अध्ययन किया गया ताकि सामान्य व्यक्ति के व्यक्तित्व से अध्यापकीय व्यक्तित्व को कैसे भिन्न स्थापित किया जाये।

तृतीय रूप में शिक्षक बनने के लिये प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा अध्यापकों के बारे में जानकारी हासिल की गई । इस अध्याय के अध्ययन करने से शोधकर्ता अपने मस्तिष्क में यह स्पष्ट करता है कि क्या हो चुका है [, क्या करना है [, और कैसे करना है [इसी के आधार बनाकर वह शोध की एक निश्चित रूपरेखा तैयार करता है ।

शोधकर्ता ने अध्ययन के तृतीय अध्याय में शोध प्रविधि को स्पष्ट किया है । प्रतिविध से तात्पर्य किसी शोध को क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करना । इसमें शोध क्षेत्र , निर्देशन , तथा संकलन के लिये प्रयुक्त उपकरणों , आदि का वर्णन होता है । तथ्यों के एकत्रित हो जाने पर साँख्यिकीय विश्लेषण कैसे किया जायेगा। प्रस्तुत शोध डॉ0 कपूर द्वारा 16 पी0एफ0 का प्रयोग करके तथ्य एकत्रित किये गये ताकि छात्राध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषताओं का आँकलन किया जा सके । इसके साथ ही सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी §श्रीवास्तव , 1978§ के द्वारा तथ्य एकत्रित किये गये । इसमें पाँच परिवर्तियों से सम्बन्धित सूचनायें एकत्रित की गई §शिक्षा , व्यवसाय , आय , साँस्कृतिक स्तर , सामाजिक भागीदारी § । इस प्रकार से शोधकर्ता ने तथ्यों का संकलन किया ।

अध्ययन का चतुर्थ अध्याय तथ्य विश्लेषण , व्याख्या एवं विवेचन रख गया है । व्यक्तित्व के तथ्यों का विश्लेषण "स्टेन्स" बनाकर किया जायेगा , ताकि शिक्षक व्यक्तित्व की समस्त विशेषतायें अपने पूर्ण रूप से परिभाषित हो सकें और पार्श्वदृश्य स्थापित हो सके । व्यक्तित्व पर सामाजिक-आर्थिक स्तर , का क्या प्रभाव पड़ता है , इसका विश्लेषण "टी" टैस्ट के द्वारा किया जायेगा । इसमें शिक्षा , व्यवसाय , आमदनी , साँस्कृतिक स्तर , और सामाजिक भागीदारी के प्रभाव को व्यक्तित्व गुणों के सन्दर्भ में आंकलित किया जायेगा ।

शोध के पंचम अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष सामान्य रूप से क्या निकले हैं , का वर्णन किया गया है । इसके पश्चात् प्रमुख निष्कर्ष क्या हैं जो अध्ययन

की मौलिकता और उपादेयता को स्पष्ट करते हैं , का वर्णन किया गया है । इसके पश्चात् सुझाव , प्रशासन हेतु , शिक्षाविदों हेतु दिये जायेंगे ताकि शोध की व्यवहारिक उपयोगिता स्पष्ट बनी रहे । साथ ही साथ यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस शोध ने अन्य अध्ययन क्षेत्र कौन-कौन से स्पष्ट किये , जिन पर आने वाले शोधकर्ता अपने कार्य को करके वर्तमान क्षेत्र की समस्याओं का समाधान कर सकें ।

अन्त में परिशिष्ट को दिया गया है जिसमें 16 पी0एफ0 प्रश्नावली , उत्तर पत्रिका , तथा श्रीवास्तवजी द्वारा प्रतिपादित सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी की प्रश्नावली , उत्तर पत्रिका आदि संलग्न है । इसके साथ ही शोध सहायक ग्रन्थ , शोध कार्य , शोध पत्र , पत्रिकायें §सामयिक§ , आदि की सूची भी संलग्न है ।

-=-=-=-=-=-

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

१- छात्र/छात्रा व्यक्तित्व का अध्ययन

२- अध्यापक/अध्यापिकाओं का अध्ययन

३- छात्र/छात्रा अध्यापक के व्यक्तित्व का अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा , विगत समय में छात्र , अध्यापक एवं छात्र-अध्यापक के विभिन्न आयामों एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित हुये अध्ययनों को प्रस्तुत करता है ; ताकि शोधकर्ता को अपने लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से हो सके । वर्तमान युग वैज्ञानिकता के स्वरूप को धारण किये हुये हैं । आज "व्यक्तित्व" शब्द भी वैज्ञानिक मौलिकता से परिपूर्ण माना जाने लगा है । विद्वानों ने व्यक्तित्व को गूढ़ अर्थ वाला माना है । इसके विस्तार के सिद्धान्त भी भिन्न-भिन्न हैं , फिर भी मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को वैयक्तिक तत्वों की अन्तः प्रक्रिया और उनका अपूर्व संगठन माना है , जो व्यक्ति के विशिष्ट समायोजन के तरीकों को उसके पर्यावरण के साथ निश्चित करता है । व्यक्तित्व लक्षण , व्यक्तित्व के सम्पूर्ण संगठन को प्रभावित करते हैं , जिसका प्रभाव रचना-शास्त्र , शरीरशास्त्र , व्यवहारिकता , प्रेरणा , अभिवृत्ति आदि क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । वे सभी लक्षण छात्राध्यापक के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य को बनाते हैं, जिनके द्वारा वह विभिन्न प्रकार के व्यवहारों में अन्तर स्थापित करता है ।

शिक्षा के क्षेत्र में अब तक हुये अध्ययनों को छात्र व्यक्तित्व , अध्यापक व्यक्तित्व एवं छात्राध्यापक व्यक्तित्व , आदि श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है । अतः शोधकर्ता यहाँ पर भारत में हुये अध्ययनों एवं विदेशों में हुये अध्ययनों को संक्षिप में प्रस्तुत करता है ।

छात्र-व्यक्तित्व का अध्ययन

स्टैगनर §1933§ महोदय ने व्यक्तित्व एवं निष्पादन का अध्ययन किया और उनमें निम्न सहसम्बन्ध पाया । उच्च निष्पादित छात्रों में अन्तःमुखी ,

अधिकारीकरण और आत्म तुष्टि आदि के भाव पाये गये । साथ ही स्टैगनर महोदय ने §1935, 1948§ में पाया कि जो छात्र सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर गरीब हैं उनमें निराशा, कमजोरी, संवेगात्मकता, अन्तःर्मुखी, सामाजिक निर्भरता आदि व्यक्तित्व के लक्षण पाये गये थे ।

वलाउस्नर §1953§ महोदय ने पाया कि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले छात्रों में व्यक्तित्व के लक्षण-असुरक्षा, निम्नता का भाव आदि अधिकतर पाये जाते हैं । इसी प्रकार का समर्थन "गफ" §1949, 1953§ ने भी किया था । आपने पाया कि उच्च निष्पादन वालों में अधिक दृढ़ता, समझ एवं रुढ़िवादिता होती है, अपेक्षाकृत निम्न निष्पादन वालों के ।

फरनैक्स §1956§ ने विश्वविद्यालय के अन्तर्मुखी छात्रों के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययन किया । उन्होंने पाया कि अन्तर्मुखी प्रवृत्ति बच्चों की परीक्षा निष्पादन को प्रभावित करती है । इसके साथ ही "पेप्स एवं पिजियन" §1957§ ने ग्यारवीं कक्षा की छात्रायें एवं छात्रों का अध्ययन किया और पाया कि परीक्षा परिणामों में छात्रायें उत्तम हैं अपेक्षाकृत छात्रों के साथ ही छात्राओं में सैद्धान्तिक वर्णन की क्षमता छात्रों से अधिक पाई गई ।

स्टीफन §1958§ महोदय ने मस्तिष्क आघात से पीड़ित छात्रों का उनके शैक्षिक निष्पादन के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि वे निम्न स्तरीय शैक्षिक निष्पादित छात्र रहे ।

आइजेनिक §1959§ महोदय ने अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया है कि छात्रायें अधिकतर अन्तर्मुखी लक्षण से ग्रसित होती हैं अपेक्षाकृत छात्र वर्ग के ।

लायन §1959§ एवं बैन्डिग §1960§ के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय के छात्रों के न्यूरोटिसिज्म और शैक्षिक निष्पादन में धनात्मक सहसम्बन्धक पाया गया । साथ ही अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा विश्वविद्यालयी छात्रों में अधिक न्यूरोटिसिज्म के लक्षण पाये गये ।

हालैन्ड §1960§ महोदय ने अपने अध्ययन से स्पष्ट किया कि सुपरइगो , परिसिस्टैंस एवं ग्रेटिफिकेशन तत्व छात्रों के शैक्षिक निष्पादन को समझने एवं प्रगट करने में सहायक होते हैं ।

एन्डरसन §1961§ महोदय ने पाया कि अच्छे अध्ययनकर्ता अन्तर्मुखी होते हैं । उनमें संवेगीभाव , आत्मतुष्टि , लचीलापन एवं कम सद्इच्छा पाई जाती है अपेक्षाकृत विश्वविद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले छात्रों के ।

हैलर एवं थामस §1962§ महोदय ने अपने अध्ययनों में पाया कि व्यक्तित्व और सामाजिक-आर्थिक स्तरों के बीच सकारात्मक सम्बन्ध होता है ।

बैंज्जामिन §1965§ अपने अध्ययनों के निष्कर्षों से स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति के जीवन में धन का बहुत महत्व है । साथ ही धन का अभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को भी प्रभावित करता है ।

फैविन्जर §1966§ ने अपने निष्कर्षों में पाया है कि जो छात्र शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन में रत हैं उनमें दृष्टिकोण की वृहदता , उच्च मानसिकता, संवेग नियन्त्रण , प्रभावशाली , साहसी , विश्वसनीय , आत्म-तुष्टि , शान्तिप्रिय एवं उच्च निष्पादन आदि लक्षण स्पष्ट हुये । साथ ही जो छात्र शिक्षा मनोविज्ञान के नहीं थे उनमें निष्क्रीयता , संवेगात्मक अस्थिरता , अन्तरमुखी , कमजोर , शकी , रुढ़िवादी असुरक्षित , तनाव एवं शैक्षिक निष्पादन की कमी आदि व्यक्तित्व विशेषतायें पाई गई ।

रस्टोन (1966) का मत है कि जो छात्र उच्च समायोजित एवं बहिर्मुखी होते हैं उनकी शैक्षिक निष्पादन की प्रवृत्ति उत्तम होती है । साथ ही उनमें संवेगात्मक परिपक्वता और आराम से कार्य करने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है ।

राईडिंग (1967) महोदय ने अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया कि छात्रायें अँग्रेजी विषय के प्रति अधिक स्नायुविक एवं बहिर्मुखी होती है , जिसका प्रभाव उनके उच्च निष्पादन पर पड़ता है । यही तथ्य छात्रा वर्ग में (निम्न निष्पादन) गणित विषय में भी देखने को मिला है ।

मिलर (1970) महोदय ने एक ही कक्षा के उच्च , मध्यम एवं निम्न स्तर के छात्रों के शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन किया और पाया कि उच्च स्तर के बच्चों का शैक्षिक निष्पादन अच्छा था , अपेक्षाकृत मध्यम दर्जे तथा निम्न दर्जे के छात्र स्तर के ।

गोयडर (1972) महोदय ने अपने अध्ययनों में पाया कि धर्म प्रजाति , जाति , समूह , आदि विभिन्न तत्व व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं । फिर भी , इन सबसे प्रभावशाली तत्व सामाजिक-आर्थिक स्तर ही है ।

औरैपेन (1976) महोदय ने काले व गोरे छात्रों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया और पाया कि आयु एक प्रभावशाली मापक है जो व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है ।

शेड (1979) महोदय ने व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन किया और कहा कि यदि भौगौलिक विभिन्नताओं को माना जाये तो सामाजिक-आर्थिक स्तर , आयु , यौन भिन्नता , रंग भिन्नता आदि का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व के व्यवहारिक निश्चायकों के लिये कम आवश्यक होते हैं ।

<u>जैन</u> §1934§ महोदया ने इलाहाबाद में स्थित छात्रा महाविद्यालयों की किशोरियों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया और पाया कि उनमें दिवा-स्वप्नता, काल्पनिकता, अंतर्मुखी, आत्मविश्वास और सामाजिक रूप से सुसमायोजन आदि व्यक्तित्व लक्षण अध्ययन के समय पाये गये ।

<u>शर्मा</u> §1959§ ने अपने अध्ययनों में पाया कि किशोरों के विद्यालय निष्पादन को उनके पारिवारिक सामाजिक स्तर सदैव प्रभावित करता रहता है ।

<u>कौर</u> §1961§ ने सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक निष्पादन के मध्य उच्च सकारात्मक सह सम्बन्ध पाया । अपने निष्कर्षों में आपने पाया कि उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों का शैक्षिक निष्पादन कम रहा, अपेक्षाकृत मध्यम वर्ग के छात्रों के शैक्षिक निष्पादन के ।

<u>राव</u> §1965§ एवं गुप्ता §1967§ महोदय ने वातावरणीय तत्वों का शैक्षिक निष्पादन के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक पर्यावरण एवं छात्रों की बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर में सकारात्मक सम्बन्ध है ।

<u>पौल</u> §1966§ महोदय ने शिक्षारत माता-पिताओं एवं अन्य व्यवसायी माता-पिताओं का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षा व्यवसाय में संलग्न माता-पिताओं के बच्चे शिक्षा के प्रति सकारात्मक प्रत्यय को अधिक विकसित करने में समर्थ होते हैं, अपेक्षाकृत अन्य व्यवसाओं के बच्चों के ।

<u>चतुर्वेदी</u> §1970§ महोदय ने अपने अध्ययनो में व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभावों में पड़ौसी एवं विद्यालय तत्वों को प्रमुख माना है । पड़ौस का प्रभाव और विद्यालय का प्रभाव दोनों ही अध्यापक एवं छात्र के व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करते हैं ।

शर्मा §1971§ ने अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया कि खुला एवं निश्छन्द पर्यावरण बच्चों के उच्च शैक्षिक निष्पादन में सहायक होता है जबकि बनावटी और नियंत्रित पर्यावरण शैक्षिक निष्पादन पर विपरीत प्रभाव डालते हैं ।

निगम §1973§ का मत है कि छात्र वर्ग शैक्षिक निष्पादन के प्रति अधिक उत्साही , जागरूक , चिन्तित और शंकालु प्रकृति के होते हैं जबकि उनकी सहपाठिनें इतनी उत्साही , जागरूक , सन्देही एवं चिन्तित नहीं होती हैं ।

मैनन §1973§ महोदय ने पाया कि उच्च निष्पादित छात्र समूह में सामाजिकता की कमी एवं पुरुषत्व की कमी होती है , जबकि उच्च निष्पादित छात्राओं में शौन्दर्यबोध , सामाजिक एवं मैकेनिकल क्रियाओं के भाव की अधिकता तथा बाह्य व्यवहार , आत्मसुख , तथा लिपिकीय क्रियाओं के भावों की कमी होती है ।

सूरी §1973§ महोदय ने बौद्धिक रूप से उच्च , औसत एवं औसत से कम छात्रों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन किया और पाया कि बुद्धि लब्धि के बर्गीकरण के आधार पर ही प्रत्येक छात्र में व्यक्तित्व लक्षण पाये जाते हैं ।

पिल्लई §1973§ महोदय ने खुले वातावरण वाले विद्यालयों के शैक्षिक निष्पादन का अन्य वातावरण वाले विद्यालयों के शैक्षिक निष्पादन के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि खुला वातावरण बच्चों में कम समय में अधिक ग्राह्यशीलता का विकास करते हैं :, जो उनके शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करता है ।

जयगोपाल §1974§ महोदय ने शैक्षिक निष्पादन एवं व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन किया । आपने पाया कि व्यक्तित्व तत्व बी, सी , ई , एफ , जी , एच , आई , ओ , क्यू2 , क्यू3 और क्यू4 आदि उच्च निष्पादन छात्रों में सार्थकता पा गये हैं जबकि निम्न निष्पादन में व्यक्तित्व लक्षण – ए , बी , सी , ई , एफ , जी , आई , क्यू2 , क्यू3 और क्यू4 आदि का सहसम्बन्ध सार्थक नहीं पाया गया ।

सिंह §1974§ ने छात्र नेताओं के व्यक्तित्व गुणों का अध्ययन किया और पाया कि उनमें सतर्कता,सामाजिकता , संवेग परिपक्वता , स्थिरता , प्रशासनिकता , उच्च भाव , साहसिकता , जटिल , वास्तविकता , व्यवहारिकता, आत्मविश्वासी , सुरक्षित , प्रसन्नता , राजनैतिक जागरूकता §राजनैतिक क्रियाओं में भाग लेना , जैल जाना§ आदि व्यक्तित्व गुण निम्न स्तर की आर्थिक दशा वालों से अधिक तीव्र पाये गये ।

श्रीवास्तव §1974§ महोदय ने अपराधी जनजातियों के बच्चों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन किया । इनके बच्चों में औसत से कम बुद्धि , विश्वास , सामाजिक अन्त:क्रिया में शर्माना , धर्म में विश्वास न रखना , भविष्य की चिन्ता न करना और संवेगों पर नियन्त्रण आदि व्यक्तित्व विशेषतायें पाई जाती हैं ।

गोपाल §1975§ महोदय ने रचनात्मक विज्ञान छात्रों और अरचनात्मक विज्ञान छात्रों का अध्ययन किया । निष्कर्षो में पाया कि रचनात्मक विज्ञान छात्रों में व्यक्तित्व लक्षण–गम्भीरता , संवेगात्मक , स्थिरता , निश्चित बात करने वाला , नियंत्रित , उपयुक्त , साहसिक , सन्देही , काल्पनिक , चतुर , व्यवहारिक , आत्म निर्भर और आरामतलबी आदि तीव्र मात्रा में पाये जाते हैं, जो कि अरचनात्मक विज्ञान छात्रों में कम मात्रा में पाये जाते हैं ।

शर्मा §1975§ महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि सामाजिक आर्थिक स्तर का सकारात्मक सम्बन्ध व्यक्तित्व के गुण-योग्यता , सामाजिकता, चिन्तनशीलता एवं राजनैतिक जागरूकता आदि के साथ हैं ।

सिंह §1975§ महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि सम्पूर्ण भारत के चिकित्सा कालिज अधिक अच्छा वातावरण प्रस्तुत करके उनका व्यक्तित्व विकास करते हैं , अपेक्षाकृत क्षेत्रीय चिकित्सा कालिजों के ।

श्रीवास्तव §1976§ महोदय ने अध्ययन में पाया कि कला समूह के उच्च निष्पादित , छात्रों के व्यक्तित्व लक्षण ए-, बी+, ई-, एच+, जे+, एवं क्यू+ आदि रूपों में पाये गये हैं ।

तिवारी §1977§ महोदय ने व्यक्तित्व लक्षणों का छात्र/छात्रा समूह पर अध्ययन किया और पाया कि शहर के छात्र/छात्रा अधिक समायोजित , व्यवसायी , सामाजिक अपेक्षाकृत देहाती छात्र/छात्रा के होते हैं ।

शर्मा §1978§ ने अपने अध्ययन में पाया कि कला समूह के उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं सामाजिकता , संवेग स्थिरता , चिन्तनशीलता एवं कम स्त्री भाव पाया जाता है , अपेक्षाकृत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर छात्राओं के ।

गौर §1980§ महोदय ने पाया कि शैक्षिक सफलता के लिये शहरी एवं ग्रामीण बच्चों के व्यक्तित्व लक्षणों का मुख्य प्रभाव पड़ता है ।

सिंह §1981§ महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि कला समूह के छात्रों की उच्च सार्थकता व्यक्तित्व के लक्षणों - ए , एफ , एम में होती है और निम्न सार्थकता तत्व क्यू3 में । साथ ही विज्ञान समूह के छात्र तत्व बी ,

सी , एफ एवं क्यू4 में सामान्य से भिन्नता रखते हैं तथा कला समूह के छात्र व्यक्तित्व तत्व बी , सी , एफ , एवं एल में सामान्य छात्रों से विलगता रखते हैं ।

अध्यापक - व्यक्तित्व

मैकनी §1940§ महोदय ने अध्यापकीय व्यवहार का अध्ययन किया और पाया कि एक अध्यापक की चिन्ताशीलता और संवेगात्मक कुसमायोजन का सार्थक प्रभाव कक्षा के बच्चों पर पड़ता है ।

रेयान्स §1960§ महोदय ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि एक अध्यापक की रुचियाँ , मनोवृत्तियाँ , मूल्य और संकलित व्यक्तित्व आदि तत्वों का प्रभाव कक्षा पर पड़ता है जो सामान्य व्यक्ति से भिन्नता स्थापित रखते हैं ।

ऐन्डरसन §1961§ महोदय ने क्रास सैक्सनल अध्ययन के द्वारा अध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षणों का मापन किया और पाया कि कैटेल महोदय के 16 पी0एफ0 के तत्व §6§ अनुभवी स्त्री/पुरुष अध्यापकों में भिन्नता स्थापित करते हैं ।

बार §1961§ महोदय ने अध्यापन सफलता के लिये अध्यापक में व्यक्तित्व तत्व जी+ , ओ+ , और एम- को आवश्यक माना है ।

फोक्स §1966§ महोदय ने स्पष्ट किया है कि शिक्षण के प्रति अध्यापक मनोवृत्ति स्वयं के पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्तर से प्रभावित रहती है । उसका परिवार एवं समाज जिसका कि वह अंग या सदस्य होता है ।

स्टार्ट §1966, 1968§ महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रधान-अध्यापक की शिक्षण कुशलता की सार्थकता व्यक्तित्व तत्व- ए- , बी+ , सी-, ई+ , एच+ , एल- , एम+ , क्यू+ एवं क्यू3+ आदि के साथ सम्बन्धित होती है।

मैकलैन §1968§ महोदय ने अध्यापकों सफलता का अध्ययन किया और पाया कि सफल पुरुष अध्यापकों में व्यक्तित्व तत्व - ए+ , बी+, सी- , ई-, जी+ , एच- , आई- , एल- , एम- , एन+ , ओ+ , क्यू1+ , क्यू2+ ,एवं क्यू4+ आदि पाये गये जबकि सफल स्त्री अध्यापिकाओं में व्यक्तित्व तत्व - ए+ , बी+ , ई+ , एफ- , जी+ , एच- , आई+ , एल+ , एम- , एन- , ओ+ , क्यू1-, क्यू2- , क्यू3+ , एवं क्यू4- आदि सम्बन्धित पाये गये ।

मैटसन §1968§ महोदय ने शिक्षण योग्यता को जानने के लिये अध्यापकों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया और पाया कि व्यक्तित्व तत्व "जी" सकारात्मक रूप से सफल शिक्षण योग्यता से सम्बन्धित है । आपने जूनियर हाई-स्कूल स्तर के अध्यापकों का अध्ययन किया और शिक्षण सफलता के लिये "जी" तत्व को प्रभावशाली पाया ।

कैटिल §1970§ महोदय ने अध्यापिकाओं की व्यक्तित्व विशेषताओं को जानने के लिये अध्ययन किया । प्राथमिक स्कूल की अध्यापिकाओं में बुद्धिमत्ता , संवेदनशीलता, स्वभाव विकास में तत्परता आदि विशेषतायें पाई गई । हाई-स्कूल अध्यापिकाओं में अधिक प्रभावपूर्णता , चतुरता , कम उत्सुकता एवं अधिक स्वतन्त्र भाव आदि व्यक्तित्व विशेषतायें अपेक्षाकृत पुरुष प्राथमिक अध्यापकों एवं हाई-स्कूल अध्यापकों के पाई गई हैं ।

नैप §1971§ महोदय ने उच्च प्रभावशाली अध्यापकों और निष्प्रभावशाली अध्यापकों के मनोभावों , आवश्यकताओं , व्यक्तित्व लक्षणों और शिक्षण अनुभवों आदि में सार्थक भिन्नता पाई । शिक्षण में सफलता पाने के लिये अध्यापक मनोवृत्ति, आवश्यकता , रुचि और शिक्षण अनुभव अति आवश्यक हैं अपेक्षाकृत व्यक्तित्व लक्षणों के ।

सक्सेना §1957§ महोदय ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापक व्यक्तित्व एवं उसकी शैक्षिक योग्यता के साथ आर्थिक स्तर का सार्थक सम्बन्ध नहीं था ।

नेगी §1962§ महोदय का निष्कर्ष है कि अध्यापक पर उसकी संवेगात्मक , सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के प्रभाव पड़ते हैं , जिसके फलस्वरूप वह शिक्षा के क्षेत्र में अपने कर्त्तव्यों को अच्छी तरह से पूरा नहीं कर पाता है ।

अन्जेन्यूलू §1968§ ने कमेटी स्कूल तथा अन्य स्कूलों के अध्यापकों का अध्ययन किया और पाया कि कमेटी स्कूल अध्यापक अधिक सन्तुष्ट पाये गये अपेक्षाकृत अन्य प्रबन्ध-तन्त्रों के अध्यापकों के ।

सक्सेना §1969§ महोदय ने शिक्षण के क्षेत्र में सफलता के लिये किये अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि कम प्रभावशाली अध्यापकों में तत्व "एच" का उच्च स्तर पाया गया है जबकि सफल अध्यापकों में तत्व "एच" का सामान्य स्तर पाया गया ।

एन0सी0आर0ई0टी0 §1971§ ने एक अध्ययन अध्यापक मनोवृत्ति को जानने के लिये किया । उन्होंने पाया कि विभिन्न प्रबन्धतन्त्रों के तहत कार्यरत अध्यापकों की शैक्षिक मनोवृत्ति भी भिन्न होती है । साथ ही नये अध्यापक अपने शिक्षण के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं , अपेक्षाकृत पुराने एवं अनुभवी अध्यापकों के ।

त्रिपाठी §1972§ महोदय ने अनुभवी अध्यापकों और नये अध्यापकों के शिक्षण की तुलना का अध्ययन किया और पाया कि अनुभवी अध्यापकों में व्यक्तित्व तत्व - ए, ई , एफ , जी , आई , एल , एन , एवं क्यू4 आदि स्थापित थे

जबकि नये अध्यापकों में व्यक्तित्व तत्व - एच, और एल ही स्थापित थे ।

कुरैशी §1972§ महोदय ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि अध्यापक व्यक्तित्व लक्षण एवं उसके कक्षा व्यवहार के मध्य कम सम्बन्ध पाया गया जिससे यह प्रगट होता है कि अध्यापक व्यक्तित्व शिक्षण कार्य को प्रभावित नहीं करता है ।

कौल §1973§ महोदय ने पाया कि जो प्रसिद्ध अध्यापक हैं उनमें व्यक्तित्व तत्व- ए , बी , सी , जी , एच , एन , एवं क्यू3 पाये गये जबकि तत्व- एफ , आई , ओ , क्यू4 आदि उन अध्यापकों में पाये गये जो प्रसिद्ध नहीं थे ।

छाया §1974§ के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रभावशाली अध्यापकों में शिक्षण के प्रति अधिक व्यक्तित्व समायोजन , अधिक सहायक मनोवृत्ति , संवेगात्मक स्थिरता , अधिकारिता , बहिर्मुखी आदि विशेषतायें अकुशल अध्यापकों की अपेक्षा तीव्र पाई जाती है ।

सिंह §1974§ के शोध कार्य से स्पष्ट होता है कि विवाहित तथा अविवाहित अध्यापिकायें अधिक व्यवहारिक , जटिल , उदार , विश्लेषणात्मक , गम्भीर , निष्पक्ष , शाँत आदि विशेषताओं से युक्त रहती हैं जबकि सामान्य स्त्रियाँ कम रहती हैं ।

श्रीवास्तव §1974§ महोदय ने प्रशिक्षित अध्यापकों और प्यूपिल टीचर्स का अध्ययन किया और पाया कि प्रशिक्षित एवं अनुभवी अध्यापक सामान्य से व्यक्तित्व तत्व - ए , ई , एफ , जी , आई , एल , एन एवं क्यू4 आदि में भिन्नता रखते हैं जबकि प्यूपिल टीचर्स व्यक्तित्व तत्व एच , और एल में सामान्य से भिन्नता स्थापित करते हैं ।

गुप्ता §1976§ महोदय ने अपने निष्कर्षों में पाया कि सामान्य अध्यापकों की अपेक्षा कुशल अध्यापक अधिक बुद्धिमान , संवेगात्मक स्थिरता , उपयुक्त , चेतनात्मक , साहसिक , लचीला , उच्च आत्मनियन्त्रण , संन्देहरहित, कम प्रयोगी , कम आत्मसंश्लेषी , तनावमुक्त , कम निराशावादी होते हैं । उच्च कुशल अध्यापक सामान्य की अपेक्षा तत्व - ए+ , बी+ , सी+ , एफ+ , क्यू3 , एल- , ओ- , एवं क्यू1- में सार्थक भिन्नता स्थापित करते हैं । इसके साथ ही कम प्रभावशाली अध्यापक व्यक्तित्व तत्व बी- एवं क्यू3- में सामान्य की अपेक्षा सार्थक भिन्नता में पाये गये हैं ।

गनेशन §1977§ के अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि संगठनात्मक पर्यावरण और आवश्यकता तुष्टि व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित नहीं होते हैं । यानी व्यक्तित्व विकास को प्रभावित नहीं करते हैं ।

गुप्ता §1977§ महोदय के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि अधिक सफल अध्यापक और कम सफल अध्यापकों मे व्यक्तित्व विशेषताओं के आधार पर भिंन्नता होती है । उन्होंने पाया कि व्यक्तित्व तत्व - ए , बी , सी , एफ , जी , एच , आई , एल , एन , ओ , क्यू3 एवं क्यू4 आदि सफल शिक्षण के लिये उपयोगी होते हैं ।

गुप्ता §1977§ महोदय ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि प्राइमरी शिक्षकों में सहयोगी भाव , नियन्त्रित एवं अंतरदर्शन , दिवास्वप्नी मर्यादायुक्त , विनम्र , लचीलापन , अग्रगामी एवं नियंत्रित व्यवहार आदि तत्व पाये गये हैं क्योंकि समाज द्वारा उन्हें उपेक्षित व अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संघर्षशील माना जाता है ।

रेड्डी §1978§ महोदय ने सरकारी प्रबन्धतन्त्र के अध्यापकों और गैर-सरकारी प्रबन्धतन्त्र के अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि गैर सरकारी प्रबन्धतन्त्र में नौकरी करने वाले अध्यापक अधिक सुखी एवं सन्तुष्ट होते हैं ।

मिश्रा §1979§ महोदय के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि उच्च प्रभावशाली अध्यापकों में निम्न प्रभावशाली अध्यापकों की अपेक्षा व्यक्तित्व तत्व संवेगात्मक परिपक्वता , निश्चित बात करने वाला , आत्मविश्वासी , प्रशासन के प्रति असम्मान , कर्त्तव्य निष्ठता , नवीन ज्ञान की ग्राह्यता , विवरण के प्रति उदासीन , अविश्वासी , स्वदर्शन को मानने वाला आदि पाये गये ।

मिश्रा §1980§ महोदय ने विज्ञान वर्ग के अध्यापकों के तत्वों में पाया कि उच्च विज्ञान अध्यापक अधिक बुद्धिमान , निश्चित बात करने वाला, सामान्य काल्पनिक एवं बहिर्मुखी होते हैं , अपेक्षाकृत निम्न-स्तरी विज्ञान अध्यापकों के ।

शर्मा §1980§ महोदय ने अध्यापकीय नेतृत्व एवं अध्यापक नेता गुणों का अध्ययन किया , तथा उनमें स्वागत प्रियता , सहकारिता , ग्राहयशीलता , उच्च अध्ययन वृत्ति , उच्च आदर्श , व्यवहार कुशल , मूडी , प्रयोगवादी , वर्णनात्मक , उपयुक्त तनावशीलता आदि व्यक्तित्व गुण पाये गये ।

बैंकटा एवं नायडू §1983§ के अध्ययन में पाया गया कि सरकारी प्रबन्धतन्त्र के अध्यापक अधिक संन्तुष्ट पाये गये अपेक्षाकृत दूसरे प्रायवेट प्रबन्धतन्त्र के अध्यापकों के ।

पाण्डेय §1984§ महोदय ने सरकारी प्रबन्धतन्त्र §यू0पी0 सरकार§ , केन्द्रीय विद्यालय प्रबन्धतन्त्र तथा सामान्य प्रबन्धतन्त्र अध्यापकों का अध्ययन किया और पाया कि तीनों श्रेणी के अध्यापकीय व्यक्तित्वों के विकास में भिन्नता स्थापित थी ।

छात्र-अध्यापकों का व्यक्तित्व

गफ एवं पैक्वरटन §1932§ महोदय ने शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व प्रतिभावों का अध्ययन किया । आपने एम , एन , पी , आई का प्रयोग करके उच्च , सामान्य और निम्न स्तरीय छात्राध्यापिकों के प्रतिभावों का विश्लेषण किया , जिसमें सार्थक भिन्नता स्थापित हुई ।

हाडले §1953§ महोदय ने अमेरिका के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व प्रतिभावों का अध्ययन किया । निष्कर्षों में आपने पाया कि छात्राध्यापकों की शिक्षण में सफलता का सम्बन्ध व्यक्तित्व के तत्व – जी , एफ- , एन- , क्यू+ , एवं सी- आदि से था ।

तारपे §1963§ महोदय ने इंग्लैण्ड के एक प्रशिक्षण कालिज के 128 छात्राध्यापकों को अपने अध्ययन हेतु चुना । उनके अध्ययन का उद्देश्य "छात्राध्यापकों के चयन में व्यक्तित्व तत्वों के प्रभावों का अध्ययन" था । आपने उनके व्यक्तित्व तत्वों में अपूर्व भिन्नता पाई । ये छात्राध्यापक व्यक्तित्व तत्व – सी , एफ , आदि में उच्चता तत्व – ए , जी , ओ में सामान्यता धारण किये हुये पाये गये । जबकि तत्व – एल , एन , एवं क्यू। में निम्न स्तर प्रगट करते हुये पाये गये ।

बारबरटन §1963§ महोदय ने छात्राध्यापकों की शिक्षण में सफलता का अध्ययन किया । आपने बारह हफ्तों तक उनकी कक्षा क्रियाओं का विभिन्न परिवेक्षकों द्वारा निरीक्षित करवाया । शोधकर्ता ने व्यक्तित्व तत्व – जी , आई , क्यू3 आदि के साथ सार्थकता लिये हुये धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जबकि कम सहसम्बन्ध व्यक्तित्व तत्व – सी , और एम के साथ पाया ।

सोलोमन §1965§ महोदय ने छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व तत्व और मनोवृत्तियों का अध्यापक प्रशिक्षण सफलता के सन्दर्भ में अध्ययन किया । आपने यार्कशायर के प्रशिक्षण कालिज के 155 छात्राध्यापकों को इस कार्य हेतु चयन किया । आपने व्यक्तित्व तत्व विश्लेषण में पाया कि महिला छात्राध्यापिकायें शिक्षण में अधिक सफल रहीं जबकि बच्चों की विभिन्न आवश्यकता पूर्ति के प्रति वे चिन्तित दिखाई दीं । उनके व्यक्तित्व में तत्व-स्नेही , समाजप्रियता , प्रसन्नता आदि का प्रगटीकरण हुआ । उनका व्यक्तित्व बहिर्मुखी होने के नाते तत्व-स्वाभाविकता , सरलता , प्रगतिशीलता एवं आलोच्य विचार आदि उसी प्रकार से सार्थक पाये गये जैसे बुद्धि सार्थक होती है ।

सी. ए . एस . ई §1968§ के द्वारा किये गये शोध में व्यक्तित्व तत्व और मनोवृत्ति का शिक्षण प्र प्रभाव का मूल्यांकन था । आपके शोध में विवाहित स्त्रियों और अविवाहित प्रौढ़ स्त्रियों §अध्यापिकाओं§ को प्रयुक्त किया गया था । आपके तुलनात्मक निष्कर्षों में पाया गया कि विवाहित परिपक्व प्रौढ़ महिला अध्यापिकायें अपने शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के प्रति दृढ़ निश्चयी एवं इच्छुक प्रतीत हुई जबकि नई अध्यापिकायें जो परिवीक्षाकाल पर थीं , वे इतनी उत्साही प्रतीत नहीं हुई । दोनों ही समूह उच्च स्तरीय व्यवसायिक संतुष्टि और शिक्षण व्यवसाय के प्रति गहन रुचि प्रगट करने वाले पाये गये ।

अरनोल्ड महोदय ने 78 छात्राध्यापिकों पर कैटिल महोदय के 16 पी0एफ0 का प्रयोग किया । आपने उनके व्यक्तित्व प्रतिमानों का अध्ययन अच्छे अध्यापक की विशेषताओं को जानने के लिये किया । आपने पाया कि शिक्षण सफलता के लिये व्यक्तित्व तत्व - सी , एफ , ए, जी , ओ आदि प्रमुखता लिये हुये थे ।

बर्क §1969§ महोदय ने 85 महिला छात्राध्यापक एवं शिक्षण पर्यविक्षकों के समूह को अपने अध्ययन का क्षेत्र बनाया । इन समूहों में अधिक सफल समूहों में तत्व - सुरक्षा भाव , आत्मतुष्टि , स्वतन्त्रता आदि का निम्न स्तर रहा , अपेक्षाकृत शिक्षण पर्यविक्षकों के । शिक्षण पर्यविक्षकों के समान छात्राध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषतायें - प्रशासन , अहंभाव , चिन्ता आदि रही । इनमें से कुछ महिला छात्राध्यापिकाओं में तत्व - आई , क्यू2 आदि उच्च पाये गये , अपेक्षाकृत उनके पर्यविक्षकों के ।

डैविस एवं सैटर्ले §1969§ महोदय ने छात्राध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषताओं का उच्च एवं निम्न स्तरों पर तुलनात्मक अध्ययन किया । आपने कैटिल महोदय के व्यक्तित्व परीक्षण को दो बार प्रयोग किया । आपने प्रथम प्रयोग उस समय किया जब छात्राध्यापकों ने प्रशिक्षण विभाग में प्रवेश लिया , और दूसरी बार तब प्रयोग किया , जब फायनल शिक्षण कार्य चल रहा था । दोनों ही बार में व्यक्तित्व विशेषता तत्व - जी , आई , ओ , क्यू4 आदि दोनों ही समूहों में सार्थकता लिये हुये पाये गये । कम निष्पादन व्यक्तित्व तत्व - आई+ , ओ+ , क्यू4+ आदि में पाया गया ।

गैलप §1969§ महोदय ने बी0एड0 छात्रों पर 16 पी0एफ0 के द्वारा व्यक्तित्व विशेषताओं का मापन किया , और पाया कि बी0एड0 छात्र सामान्य स्तर से तत्व - क्यू1 में भिन्नता रखते हैं और छात्राओं के व्यक्तित्व तत्व - एम एवं जी में भिन्नता रखते हैं । आपने पाया कि पुरुष छात्राध्यापकों में अधिक मुलायमियत और स्वतन्त्र चिन्तन तत्व पाये जाते हैं , जबकि महिला छात्राध्यापिकाओं में इनका प्रभाव कम पाया गया । साथ ही महिलाओं में काल्पनिकता और रचनात्मकता तत्व अधिक पाये गये ।

<u>ब्रिकनर</u> §1970§ महोदय ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि छात्राध्यापकों के संकलित व्यक्तित्व और आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्व विशेषताओं में सार्थक भिन्नता नहीं होती है । आपने अपने अध्ययन का आधार 16 पी0 एफ0 कैटिल के परीक्षण को बनाया था । इसके आधार पर छात्राध्यापिकाओं के व्यक्तित्व प्रतिमानों का अध्ययन किया और सार्थक भिन्नता नहीं पाई ।

<u>ब्राउन</u> §1971§ महोदय ने सर्टीफिकेट छात्राध्यापकों का अध्ययन किया । आपने पाया कि सर्टीफिकेट पास छात्र डिग्री कोर्स के नये छात्रों की अपेक्षा अधिक योग्य थे , लेकिन वे व्यक्तित्व तत्व बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं रखते थे ।

<u>फियर ब्रादर</u> §1977§ ने विज्ञान अध्यापकों के व्यक्तित्व जानने के लिये कार्य किया । आपने व्यक्तित्व मापन के द्वारा अच्छे विज्ञान अध्यापक और कमजोर विज्ञान अध्यापकों का पता लगाया । आपने एक समूह §विज्ञान अध्यापकों§ और द्वितीय समूह §विज्ञान छात्राध्यापिकों§ का लिया । निष्कर्षों में पाया कि दोनों की समूहों में कुछ लोग अच्छे विज्ञान अध्यापक के गुण रखते हैं । अच्छे विज्ञान अध्यापकों के व्यक्तित्व प्रतिमानों में कुछ - कुछ समानता थी , जो उनके व्यक्तित्व पर अन्य प्रभावों को दर्शाती है ।

<u>अदावल</u> §1952§ महोदय ने प्रभावशाली अध्यापक और अप्रभावशाली अध्यापकों का गुणात्मक अध्ययन किया । आपने पाया कि प्रभावशाली और सफल अध्यापक संतुलित व्यक्तित्व वाला होता है और वह "क्या है" और "क्या करता है" में भिन्नता नहीं करता , बल्कि समरसता का ही पालन करता है ।

<u>शर्मा</u> §1963§ महोदय ने पुरुष/महिला छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में संवेगात्मक समायोजन एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया ।

निष्कर्षों में पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले पुरुष एवं महिला छात्राध्यापक संवेगात्मक समायोजन में अधिक अस्थिर थे । साथ ही साथ उच्च आर्थिक स्थिति वाले पुरुष छात्राध्यापक और निम्न आर्थिक वाली महिला छात्राध्यापिकायें अधिक अंतर्मुखी पाई गईं ।

पोनाम्बलम एवं विश्वेशबलम §1966§ महोदय ने एक बेसिक प्रशिक्षण विद्यालय के छात्राध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी मनोवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है , का अध्ययन किया । निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षिणार्थियों की "कुल मनोवृत्ति" प्रभाव की सार्थकता सम्बन्ध शिक्षा स्तर , व्यवसाय स्तर और आर्थिक स्तर आदि पर प्रगट नहीं हुये हैं ।

जार्ज एवं नायर §1968§ महोदय ने छात्राध्यापकों की शैक्षिक प्रगति एवं निष्पादन का व्यक्तित्व के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक निष्पादन और व्यक्तित्व तत्व के बीच सकारात्मक सम्बन्ध था । साथ ही उन्होंनें पाया कि जो छात्राध्यापक किसी कारण से संवेगात्मक रूप से अस्थिर थे उनका निष्पादन प्रैक्टिकल परीक्षा पर खराब पड़ा ।

पौल §1968§ महोदय ने इंजीनियरिंग , कानून , मेडिकल और शिक्षक आदि व्यवसायिक ट्रेनीज के व्यक्तित्व प्रतिमानों का अध्ययन किया । आपने निष्कर्षों में पाया कि कानून और शिक्षण के प्रशिक्षणार्थी सामाजिक पर्यावरण के प्रति संवेगात्मक रूप से अधिक उत्तरदायी महसूस करते हैं , अपेक्षाकृत मेडिकल और इंजीनियरिंग के प्रशिक्षणार्थियों के ।

बंगलौर विश्वविद्यालय §1974§ बंगलौर विश्वविद्यालय के पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों ने छात्राध्यापकों की आकांक्षाओं और उनकी प्रशिक्षण के समय की भूमिका को जानने का अध्ययन किया । शोध हेतु 350 छात्राध्यापकों का चुनाव किया गया , उनमें से 124 अनुभवी प्रशिक्षणार्थी पुरुष/महिला भी थे । इस कार्य की

मुख्य बात यह थी , कि महिला प्रशिक्षणार्थी शिक्षण के प्रति अधिक समर्पित थीं , अपेक्षाकृत पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के । नवीन प्रवेशार्थियों में शैक्षिक मनोवृत्ति सकारात्मक पाई गई अपेक्षाकृत अनुभवी छात्राध्यापकों के । अनुभवी शिक्षकों की भूमिका ने शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित नहीं किया । नवीन छात्राध्यापकों ने शिक्षण के प्रति उच्च स्तरीय लगाव दर्शाया ।

<u>गुप्ता</u> §1974§ महोदय ने छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व के मापने का प्रयास किया । आपने कैटिल के 16 पी0एफ0 का प्रयोग किया । आपने छात्राध्यापकों में व्यक्तित्व लक्षणों को सामान्य रूप से पाया । व्यक्तित्व तत्व "एफ" में प्रशिक्षणार्थियों ने निम्न स्तर पाया , फिर भी तत्व-मर्यादा , नियन्त्रित, और निर्भरता आदि का सामान्य स्तर पाया गया ।

<u>श्रीवास्तव एवं सिंह</u> §1975§ महोदय ने शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों पर निष्पत्ति अभिप्रेरकों का यौन , सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक पृष्ठभूमि आदि के सन्दर्भ में अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि 91.3% छात्राध्यापक उच्च स्तर और उच्च-मध्यम स्तर से सम्बन्धित थे , जबकि 71.8% पुरूष छात्राध्यापक उच्च-मध्यम स्तर और निम्न मध्यम स्तर के बीच स्थित थे । जबकि, निष्पत्ति प्रेरक से सम्बन्धित सार्थक भिन्नता पुरूष एवं महिला छात्राध्यापिकाओं में स्पष्ट रूप से प्रगट हुई ।

<u>गुप्ता</u> §1976§ महोदय ने विज्ञान शिक्षकों और अन्य शिक्षकों के व्यक्तित्व प्रतिमानों का तुलनात्मक अध्ययन किया । निष्कर्ष में पाया कि विज्ञान शिक्षक अधिक गंभीर , शर्मीले , उपयुक्त , दृढ़ निश्चयी , व्यवहारिक बुद्धिमान , प्रसन्नचित्त , आत्मसंतोषी आदि गुणों से युक्त होते हैं जबकि सामान्य छात्राध्यापक नहीं । इससे स्पष्ट होता है कि विज्ञान के अध्यापक अमूर्त

चिन्तन और कार्य को सम्पन्नता में स्वत: ही लगे रहते हैं , उन्हें किसी की आवश्यकता नहीं होती है ।

प्रतिभा §1983§ ने छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व प्रतिमानों और सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन किया । आपने विश्वविद्यालय प्रबन्ध तन्त्र, सरकारी प्रबन्ध तन्त्र , सेना प्रबन्ध तन्त्र और सामान्य प्रबन्ध तन्त्र द्वारा नियन्त्रित पुरुष/महिला प्रशिक्षण महाविद्यालयों के यौन भिन्नता , आयु भिन्नता, शिक्षण अनुभव , प्रत्यक्ष विभागीय , तथा सामाजिक-आर्थिक भिन्नता आदि के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि सामान्य लोगों के व्यक्तित्व प्रतिमानों के साथ प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व तत्व साम्यता रखते हैं । साथ ही नये प्रशिक्षणार्थियों में स्वतन्त्रता , क्रोध , प्रशान्ति , सामाजिक कठोर , स्वच्छंद आदि विशेषतायें उच्च मात्रा में देखने को मिली ।

विभिन्न शिक्षाविदों के विचार से शिक्षण प्रक्रिया स्थानीय परिस्थिति, वातावरण , शिक्षक एवं छात्र अंत:क्रियाओं आदि पर निर्भर करती है । इनमें शिक्षक की दक्षता का सबसे अधिक महत्त्व माना जाता है जो प्रशिक्षण के द्वारा ही प्राप्त होता है । यद्यपि पिछले पृष्ठों में वर्णित विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्ष से सार्थक परिणाम सामने आये हैं , फिर भी एक विशेष एवं पिछड़ें क्षेत्र का सर्वेक्षण करने से क्या भिन्न परिणाम हो सकता है ? यह जानना भी एक शोधकर्ता के लिये आवश्यक है । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति की गई है ।

x§§§x

अध्याय - तृतीय

शोध - प्रविधि

१- अध्ययन की रूपरेखा

२- शोध न्यादर्श

३- उपकरण

४- प्रदत्त संकलन विधियां

प्रदत्त विश्लेषण विधियां

अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तुत शोध कार्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विभिन्न प्रशिक्षण ⁅अध्यापक⁆ महाविद्यालयों में अध्ययनरत ⁅बी0एड0⁆ प्रशिक्षणार्थी अध्यापक और अध्यापिकाओं पर किया जायेगा । अस्तु शोध कार्य हेतु अध्यापक प्रशिक्षण के पाँच महाविद्यालयों के सन् 1990-1991 सत्र के छात्राध्यापिकों ⁅पुरुष/स्त्री⁆ को लिया गया है । इन छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन करके एवं सामाजिक और आर्थिक स्तर का मापन करके व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का विश्लेषण किया जायेगा । इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये 16 पी0एफ0 , जिसका निर्माण एवं विकास डाँ0 कपूर ⁅1970 , हिन्दी रूपान्तर⁆ के द्वारा किया गया है । साथ ही सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को जानने के लिये"सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी" ⁅शहर⁆ के द्वारा लक्ष्य संकलन किया जायेगा ; जिसका विकास एवं निर्माण डाँ0 जी0पी0 श्रीवास्तवा ने 1978 में किया था । प्रस्तुत परीक्षण विश्वसनीय है और इसका प्रयोग छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व आयामों के मापने में किया जा चुका है । इस प्रकार अध्ययन के द्वारा उपयुक्त अध्यापकों का चयन, शिक्षा के प्रति समर्पित व्यक्तित्वों का गठन एवं शिक्षा को अधिक लाभकारी बनाने , बच्चों का सर्वांगीण विकास करने आदि परिवर्तियों की विश्लेषणात्मक व्याख्या की जायेगी ।

न्यादर्श या सैम्पल

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत सरकार ने प्रशासन की सुविधा के लिये सभी विषयों को तीन सूचियों में विभक्त किया है :-

1- केन्द्रीय : विषय सूची के अन्तर्गत आने वाले सभी विषयों पर केन्द्रीय सरकार का पूर्ण अधिकार होता है । 2- राज्य सूची के अन्तर्गत आने वाले विषयों पर राज्य सरकार का पूर्ण अधिकार होता है । 3- समवर्ती सूची में आने वाले विषयों पर केन्द्र एवं राज्य दोनों का तो अधिकार होता है , लेकिन व्यवहार में केन्द्र सरकार के नियन्त्रण को प्रमुख माना गया है । भारत में शिक्षा विषय को "समवर्ती" सूची में रखा गया है । इस प्रकार से शिक्षा का विकास व सम्बर्द्धन दोनों ही सरकारों के द्वारा किया जाता है ।

विश्वविद्यालयों के द्वारा प्रदत्त शिक्षा उच्च शिक्षा के अन्तर्गत आती है , जिसका प्रबन्ध प्रशासनिक रूप से केन्द्र व राज्य सरकारें ही करतीं हैं । वित्त व्यवस्था और पाठ्यचर्या का उत्तरदायित्व केन्द्र द्वारा गठित अनुदान आयोग व राष्ट्रीय शिक्षा परिषद §एन0सी0ई0आर0टी0§ के द्वारा किया जाता है । जबकि प्रशासनिक व्यवस्था राज्यों में स्थापित "उच्च शिक्षा" विभाग के द्वारा होती है । भारत देश में केन्द्रीय विश्वविद्यालय , राज्ययी विश्वविद्यालय और अनुदानिक विश्वविद्यालय प्रचलित हैं । इनके द्वारा विभिन्न प्रकार की शिक्षा-दीक्षा राष्ट्र के नागरिकों को प्रदान की जाती है ।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय का जन्म उत्तर प्रदेश शासन शिक्षा अनुभाग-10, संख्या- 4981/15-60/33/74 लखनऊ , दिनाँक 26, अगस्त , 1975 के आदेशानुसार हुई । अधिसूचना में लिखा है -

"उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम , 1973 की धारा - 4 की उपधारा §1-क§ के अधीन शक्ति का प्रयोग करके राज्यपाल 26 अगस्त 1975 को ऐसी दिनाँक निश्चित करते हैं , जबसे उक्त अधिनियम की अनुसूची में विनिर्दिष्ट सम्बद्ध क्षेत्रों के लिये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी स्थापित किया जायेगा।"

उक्त अधिनियम की धारा-4 की उपधारा §1-ख§ के अधीन शक्ति का प्रयोग करके राज्यपाल उपर्युक्त विश्वविद्यालय की आंतरिक कार्य परिषद भी गठित करते हैं , जिसमें निम्नलिखित 14 सदस्य होंगे :-

अध्यक्ष कुलपति , सात विभिन्न कालिजों के प्राचार्य , सचिव शिक्षा विभाग, प्रसिद्ध राजनैतिक एवं सामाजिक व्यक्ति , एम0पी0 एवं एम0एल0ए0 आदि । सचिव शिक्षा विभाग स्वयं उपस्थित होने के बजाये किसी ऐसे अधिकारी को जो उपसचिव के पद से नीचे का न हो , अन्तरिम कार्य परिषद की किसी बैठक में उपस्थित होने के लिये नाम निर्दिष्ट कर सकता है । यह अधिकारी बैठक में भाग लेगा और मत भी देगा ।

उक्त अधिनियम की धारा-4 की उपधारा §1-ख§ के अधीन शक्ति का प्रयोग करके राज्यपाल यह भी निर्देश देते हैं कि उपर्युक्त अन्तरिम कार्य परिषद उक्त अधिनियम के अधीन उक्त विश्वविद्यालय की सभा , शक्तियों और कर्तव्यों का प्रयोग तथा निर्वहन भी करेगी ।

साथ ही उक्त विश्वविद्यालय के लिये उक्त अधिनियम की धारा -50 की उपधारा §1§ के अधीन प्रथम परिनियम और धारा 52 की उपधारा §2§ के अधीन प्रथम अध्यादेश न बना दिये जायें , तब तक कानपुर विश्वविद्यालय के परिनियम , अध्यादेश तथा विनियम आवश्यक परिवर्तन सहित बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय के कार्यकलापों को नियन्त्रित करेंगे ।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के परिनियमों, अध्यादेशों तथा विनियमों में ऐसे संशोधन करने के लिये , जो उस अधिसूचना के उपबंधों के कार्यान्वित करने के लिये आवश्यक हो, तथा उक्त अधिनियम की धारा-4 की उपधारा §6§ के खण्ड §क§ , §ख§ और §ग§ में निर्दिष्ट अन्य विषयों के सम्बन्ध में , राज्य सरकार समय-समय पर गजट में अधिसूचना द्वारा अग्रसर उपबन्ध बना सकती है§बु0 विश्व0 स्टेच्यूडस , 1975-76§ ।

व्यवहारिक रुप में जब अनुसंधानकर्ता को कुछ समस्याओं का समाधान करना होता है , तो उसके सामने यह प्रश्न उठता है कि वह किस जनसंख्या का प्रयोग करें । जनसंख्या के निर्धारित हो जाने पर शोधकर्ता सभी सदस्यों पर अपने अभिकरणो का प्रयोग नहीं कर पाता है क्योंकि समय , धन , शक्ति का अभाव रहता है । अतः शोधकर्ता एक निश्चित न्यादर्श का चुनाव करता है । इसलिये न्यादर्श एक समिष्ट का वह अंश होता है जिसमें अपनी पापूलेशन की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिविम्ब रहता है । न्यादर्श के चयन के लिये शोधकर्ता ने निम्न बातों पर ध्यान रखा :- §क§ सम्भाव्यता के नियमों का पालन §ख§ समिष्ट के सभी स्तरों का समावेश §ग§ पर्याप्त आकार §घ§ समिष्ट का प्रतिनिधित्व §च§ सामान्यीकरण §छ§ अभिनति विहीनता §ज§ विश्वसनीयता ।

सामाजिक या व्यवहार सम्बन्धी विज्ञानों में जिन समिष्टीओं का अध्ययन किया जाता है , वे प्रायः अपरिमित होती है । वे संभागी और एक सूत्र में बंधी न होकर बहुलांगी तथा कई उपसमूहों में बटी होती है । उपसमूहः- आयु , लिंग , जाति , अर्थ , धर्म आदि आधारों पर बटे होते हैं । इन्हीं आधारों को उपसमूहों का गुण धर्म भी माना जाता है । जब समिष्ट का स्वरुप सजातीय होता है ; जब न्यादर्श चयन में कोई कठिनाई नहीं आती ; परन्तु जब समिष्ट का स्वरुप विषम होता है तो न्यादर्श की इकाइयों के चयन के लिये सैम्पलिंग प्रक्रिया का प्रयोग करना पड़ता है । शोधकर्ता को सैम्पलिंग करते समय निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिये : §1§ प्रत्येक इकाई का प्रतिनिधित्व §2§ मूल जनसंख्या के सभी गुण होने चाहिये §3§ न्यादर्श की इकाइयों की जनसंख्या उपयुक्त होनी चाहिये §4§ अभिनति से मुक्त होना चाहिये §मखीजा , 1986§ । जब शोधकर्ता इन बातों पर ध्यान देकर अपने प्रतिचयन का चुनाव करता है तो समय , धन और शक्ति की बचत होती है , अध्ययन में गहनता आती है , प्रशासन में सुविधा होती है , विश्वसनीयता , अध्ययन में उपयुक्तता एवं बोधगम्यता आदि लाभ प्राप्त होते हैं ।

प्रतिचयन के चुनाव मे समष्टि के स्वरूप का ध्यान मे रखा जाता है । और उसी के अनुरूप विधि का प्रयोग किया जाता है । "सिंह" (1988, पृष्ठ 225) ने न्यादर्श चयन के लिये दो विधियों को मान्यता दी है :

(क)- सम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि (प्रोबेबिलिटी सैम्पलिंग) ।

(ख)- असम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि (नोन प्रोबेबिलिटी सैम्पलिंग) ।

सम्भाव्यता प्रतिदर्श वह प्रतिदर्श योजना है जिसमें शोधकर्ता यह सम्भावना करता है कि चुने हुये प्रतिदर्श में मूल जनसंख्या की सभी विशेषतायें विद्यमान हैं । इसमें जनसंख्या की प्रत्येक इकाई के चुने जाने की समान सम्भावना अथवा कोई न कोई सम्भावना अवश्य होती है । इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनने हेतु तीन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है :-

1- सरल अनियत प्रतिदर्श (सिम्पल रैन्डम सैम्पलिंग)

2- वर्गबद्ध अनियत प्रतिदर्श (स्ट्रैटीफायड रैन्डम सैम्पलिंग)

3- समूह प्रतिदर्श (क्लस्टर सैम्पलिंग)

सरल अनियत प्रतिदर्श में इस बात की संकल्पना होती है कि प्रत्येक इकाई में सम्पूर्ण वर्ग की सभी विशेषतायें तथा गुण होते हैं तथा प्रतिचयन में प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिदर्श में चुने जाने की सम्भावना समान होती है । इसमें चुनाव के लिये लाटरी विधि, टिपिट अंक विधि, निश्चित क्रम विधि, तथा ग्रिड विधि का प्रयोग किया जाता है । प्रायः इस विधि द्वारा चयन किये गये प्रतिदर्श को प्रतिनिधित्वकारी मान लिया जाता है परन्तु ऐसी भी संभावना हो सकती है कि चुने हुये प्रतिदर्श में भिन्न-भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में एवं मूल जनसंख्या के भिन्न-भिन्न विशेषकों वाले व्यक्तियों के अनुपात में अन्तर हो ।

अतः इस अन्तर को समाप्त करने के लिये वर्गबद्ध प्रतिदर्श §स्ट्रैटीफाइड सैम्पलिंग§ का प्रयोग किया जाता है । इसका अर्थ होता है , "समिष्ट के सभी सदस्यों में से किसी भी सदस्य को लिये जाने की प्राथमिकता का समान होना । अर्थात् समिष्ट से किसी दूसरे प्रतिदर्श के लिये जाने की प्राथमिकता वहीं है जो प्राथमिकता पहले प्रतिदर्श के लिये जाने की थी ।"

समूह प्रतिदर्श :- जब कभी जनसंख्या अत्यधिक विस्तृत और व्यापक होती है एवं दूर-दूर तक फैली हुई होती है , तब सुविधापूर्वक अध्ययन करने के लिये जनसंख्या का समूह प्रतिदर्श विधि से अध्ययन करने के लिये क्षेत्रीय इकाइयों में विभाजित करके जनसंख्या में विद्यमान विशेषकों के अनुसार बड़े-बड़े समूह बना लेते हैं । ऐसा करने से अध्ययन में समय व धन की भी बचत होती है , ये बड़े समूह या गुच्छे साधारण अनियत विधि या वर्गबद्ध अनियत विधि द्वारा बनाये जाते हैं । इसके बाद बड़े समूहों में से छोटे प्रतिदर्श का चयन किया जाता है ।

असम्भाव्यता प्रतिदर्श के लिये कहा गया है कि समिष्ट के किसी या प्रत्येक तत्व के प्रति चयन में सम्मिलित होने की कोई निश्चितता नहीं होती है । इसका प्रयोग तीन रूपों में किया जाता है :-

1- अकस्मिक न्यादर्शन §एक्सीडैन्टल सैम्पलिंग§
2- अंश न्यादर्शन §कोटा सैम्पलिंग§
3- उद्देश्यीय न्यादर्शन §परपजिब सैम्पलिंग§

समय एवं धन की कमी के कारण प्रस्तुत शोधकार्य में सम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि का प्रयोग नहीं किया जा सका । अतः असम्भाव्यता प्रतिदर्श विधि का प्रयोग शोधकार्य की उपादेयता को सामने रखते हुये किया गया जो वर्तमान कार्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा करती है । अतः शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य हेतु न्यादर्श के चुनाव हेतु §परपजिब सैम्पलिंग§ का प्रयोग किया।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता छात्र/छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का निर्माण यौन-भिन्नता और सामाजिक-आर्थिक स्तर भिन्नता को ध्यान में रखकर करेगा , जिस हेतु उद्देश्यीय न्यादर्श §परपजिब सैम्पलिंग प्रविधि§ उपयुक्त एवं संतोषजनक मानी गई है ।

उद्देश्यीय न्यादर्श §परपजिब सैम्पलिंग§ के द्वारा अध्ययन को आवश्यकतानुसार विशिष्ट तत्वों का चयन समिष्ट में से किया जाता है । इस प्रकार के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्य को सामने रखकर , जान-बूझकर किया जाता है ताकि एक बड़े समूह की सभी विशेषतायें न्यादर्श में आ सके । अतः उद्देश्यीय न्यादर्श §परपजिब सैम्पलिंग§ को ही अध्ययन हेतु उपयुक्त माना गया जो बी0एड0 के छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का निर्माण यौन भिन्नता आयु-अनुभव और सामाजिक-आर्थिक स्तर भिन्नता के सन्दर्भ में करने के लिये उपयुक्त प्रतीत होता है । सत्र 1990-91 के उन सभी बी0एड0 के छात्र अध्यापक एवं छात्रा अध्यापिकाओं को शोध हेतु चुना गया है जो बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध पाँच महाविद्यालयों में अध्ययनरत रह चुके थे :-

§अ§- अतर्रा कालिज , अतर्रा , जिला बाँदा ।

§ब§- बुन्देलखण्ड कालिज , झाँसी, जिला झाँसी ।

§स§- दयानन्द वैदिक कालिज, उरई , जिला जालौन ।

§द§- गाँधी महाविद्यालय , उरई , जिला जालौन ।

§य§- पं0 नेहरु कालिज , बाँदा , जिला बाँदा ।

उपर्युक्त पाँच महाविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले सभी छात्र/छात्रा अध्यापकों को न्यादर्श हेतु चुना गया था । इस न्यादर्श को सत्र 1990-1991 के प्रशिक्षार्थियों पर ही लागू किया गया था । न्यादर्श में प्रयुक्त न्यादर्श में प्रयुक्त प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 500 रखी गई । बी0एड0 में प्रशिक्षण प्राप्त/छात्र/ छात्राओं को 16 पी0एफ0 और सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी आदि उपकरणों को भरने हेतु दे दिया गया । परीक्षण प्रशासन में उपयुक्त एवं सही पाये गये छात्र/छात्रा अध्यापकों को ही शोध हेतु माना गया और अन्य को छोड़ दिया

गया । अतः न्यादर्श का अंतिम रूप निम्न प्रकार से रहा :-

न्यादर्श निर्देशित तालिका

परिवर्ती		कक्षा संख्या		न्यादर्श में प्रयुक्त	
1- यौन भिन्नता : पुरुष	-	350	800	250	500
स्त्री	-	450		250	
2- आयु भिन्नता : §20-30§	-	450	550	400	480
§31-40§	-	100		80	
3- शिक्षण अनुभव : §पाँच वर्ष से कम§		50	100	45	85
§पाँच वर्ष से ऊपर§		50		40	
4- सामाजिक-आर्थिक स्तर :		350	800		
		450			
उच्च स्तर		-		100	500
मध्यम स्तर		-		250	
निम्न स्तर		-		150	

शोध उपकरण चयन :

सामान्य तौर पर शोधकर्ता आंकड़े एकत्रित करने के लिये सूचनापत्रक , निरीक्षण पत्रक , साक्षात्कार पत्रक , प्रश्नावली पत्रक एवं अन्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं । प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने डाँ० कपूर द्वारा विकसित §हिन्दी भाषा§ , 16 पी० एफ० परीक्षण का प्रयोग आंकड़ों को एकत्र करने हेतु किया ।

उपकरण चयन :

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोधकर्ता ने निम्नलिखित व्यक्तित्व परीक्षणों की जानकारी हासिल की :-

1- माडस्ले व्यक्तित्व परीक्षण {आयजेनिक , 1953} ।
2- मिनी सोटा बहुपक्षीय सूची {हाथवे एवं मैकीनले , 1951} ।
3- कैलिफोर्नैया व्यक्तित्व सूची {गफ , 1957} ।
4- एडवर्डस परसनल प्रीफरेन्स अनुसूची {एडवर्डस , 1954} ।
5- 16 पी0 एफ0 सूची {कैटिल एवं एबर , 1957} ।

बी0 एड0 के छात्र एवं छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का निर्माण करने के लिये शोधकर्ता ने 16 पी0 एफ0 का चुनाव निम्नलिखित उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया :-

1- व्यक्तित्व का सबसे उत्तम मापक 16 पी0 एफ0 को माना गया है , क्योंकि इसका विकास फैक्टर एनालैसिस के आधार पर किया गया है ।

2- इस परीक्षण के द्वारा व्यक्तित्व के 16 शील गुणों का पता एक ही परीक्षा काल में लगाया जाता है ।

3- प्रस्तुत परीक्षण की व्यापकता का पता इस बात से लगता है कि यह व्यक्तित्व के प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के लक्षणों का मूल्यांकन गहराई से करता है । यही लक्षण व्यक्तित्व की सफलता के आधार बनते हैं । यह 16 शील गुण आपस में स्वतन्त्र हैं और व्यक्ति की नई विशेषता का पता लगाते हैं । इस प्रकार की व्यापकता किसी अन्य बहुउद्देश्यीय व्यक्तित्व परीक्षण में नहीं पाई जाती है ।

4- प्रस्तुत परीक्षण के निर्माणकर्ता ने इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के न्यादर्शों पर किया और भिन्न-भिन्न मानक भी बनाये थे ।

5- शिक्षण-प्रशिक्षण क्षेत्र में इस परीक्षण का प्रयोग अनेको शोधकर्ताओं द्वारा किया जा चुका है ।

6- वर्तमान स्थिति में इसका प्रयोग अत्यधिक लाभदायक होगा क्योंकि यह क्रास कल्चरल तुलना प्रस्तुत करता है ।

7- परीक्षण का प्रशासन सरल है । इसके द्वारा एक ही बार में एक व्यक्ति या समूह का तथ्य संकलन , आयु वर्ग 15 से ऊपर तक का आसानी से किया जा सकता है ।

8- प्रस्तुत परीक्षण में प्रयुक्त शब्दावली दैनिक समाचार में प्रयुक्त सामान्य स्तर की है । निर्देश एवं अभ्यास प्रश्न मुख्य पृष्ठ पर अंकित हैं जो प्रयोग मे सरलीकरण बताते हैं ।

9- परीक्षण का कोई समय निश्चित नहीं है , फिर भी अनुसंधानकर्ताओं और प्रशासनकर्ताओं ने फार्म "ए" का समय 50-60 मिनट के लगभग बताया है । इसमें 187 प्रश्न हैं जिनके उत्तर उनके सामने दिये गये तीन उत्तरों में से किसी एक उत्तर को गुणित §×§ चिन्ह से अंकित करके देना होता है ।

10- इस परीक्षण की विश्वसनीयता 0.71 से लेकर 0.93 तक है ।

11- इस परीक्षण की वैधता विद्वानों द्वारा निश्चित की गई है जो 0.84 से लेकर 0.96 तक है ।

12- 16 पी0 एफ0 का भारतीकरण हिन्दी भाषा में डॉ0 कपूर द्वारा §1970§ में किया गया । इस प्रकार से राष्ट्रीय भाषा द्वारा इस परीक्षण का प्रयोग अत्यधिक होने लगा है ।

13- हिन्दी रूपान्तरण परीक्षण की वैधता को भी निश्चित किया गया है , जो 0.70 से लेकर 0.91 तक पाई गई है ।

14- हिन्दी रूपान्तरित परीक्षण की विश्वसनीयता 0.49 से लेकर 0.83 तक है ।

परीक्षण का विवरण :-
-=-=-=-=-=-=-=-

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य व्यक्तित्व लक्षणों को मापने वाले ऐसे उपकरण का चुनाव करना है जिसके द्वारा प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व का पूर्ण वर्णन हो सके । व्यक्तित्व मापने हेतु शोधकर्ता ने 16 पी0 एफ0 परीक्षण का चुनाव किया जो संसार भर में प्रसिद्ध है । इस परीक्षण का भारत देश में प्रयोग श्रीवास्तव §1953§ , जलौटा §1957§ , त्यागी §1960§,कपूर §1963 , 1964§ , उत्पल §1971§ , मैथ्यू §1971§ , कक्कड़ §1972§ , गोयल §1973§ , पाल §1976§ , छिद्दा §1977§ , गुप्ता §1978§ , पाण्डेया §1983§ , डाँ §1990§ आदि विद्वानों ने किया और अपने-अपने निष्कर्षों में सफलता प्राप्त की ।

सोलह व्यक्तित्व तत्व प्रश्नावली को उसके संक्षिप्त नाम 16 पी0 एफ0 के नाम से जाना जाता है , जिसके द्वारा बहुआयामी व्यक्तित्व विशेषताओं का मापन किया जाता है । इस परीक्षण का निर्माण आसान परिस्थितियों में किया गया , जिससे व्यक्तियो की सूचनाओ को आसानी से एकत्रित किया जा सके । यह परीक्षण 16 प्राथमिक आयामों के अलावा आठ शब्दोत्पत्ति रूप से भी वर्णन करता है ।

16 पी०एफ० परीक्षण के छः समानान्तर प्रकार है 》पाँच प्रकाशित एवं एक प्रायोगिक है《 प्रत्येक परीक्षण 16 प्रकार के व्यक्तित्व लक्षणों का मापँन करने में समर्थ हैं । जो निम्न तालिका से स्पष्ट है :-

फार्म	प्रश्न संख्या	प्रयोग वर्ग	अधिकतम समय
अ	187	सामान्य वग जो अखबार पढ़ सकता है ।	50 मिनट
ब	187	सामान्य प्रौढ़ जो अखबार पढ़ सकता है ।	50 मिनट
स	105	अ एवं ब की आयु से कम शब्दावली जानने वाले ।	30-40 मिनट
द	105	अ एवं ब की आयु से कम शब्दावली जानने वाले ।	30-40 मिनट
य	128	कम साक्षर , जो सरल शब्दावली जानते हों ।	30-40 मिनट
र	128	कम साक्षर , जो कम शब्दावली जानते हों ।	30-40 मिनट

प्रस्तुत परीक्षण प्रकार तालिका से स्पष्ट होता है कि इसमें तीन जोड़ें परीक्षण हेतु बनत हैं । इसमें प्रथम एवं द्वितीय परीक्षण का जोड़ा व्यक्तित्व मापँन हेतु सबसे अधिक प्रसिद्ध है ।

मनोवैज्ञानिकों ने भी 16 पी० एफ० के प्रयोग को उत्तम माना है , क्योंकि इसक द्वारा प्राप्त निष्कर्ष पूर्ण व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं । मनोवैज्ञानिकों ने इसकी प्रथम विशेषता व्यापकता मानी है । यह परीक्षण असाधारण रूप से व्यापक है , जो व्यक्तित्व के सभी आयामों को प्रभावित करता है । इस परीक्षण का द्वितीय गुण व्यवहारिकता है । यह मापँनी का नवीनीकरण

अपने स्वाभाविक रूप से करता है । यानी इसका प्रयोग वैयक्तिकता के प्रभाव , पक्षपात से दूर रखता है तथा व्यक्तित्व के स्वाभाविक विकास का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है । इसका तृतीय गुण व्यक्तित्व के प्रारम्भिक प्रत्यय से सम्बन्ध रखता है जिसका व्यापक प्रयोग हमें नैदानिक क्षेत्र , शिक्षा क्षेत्र , औद्योगिक क्षेत्र और प्राथमिक शोध क्षेत्र आदि में देखने को मिलता है ।

स्थिरता एवं विश्वसनीयता :-

कैटेल (1970) ने अपनी 16 पी0एफ0 , हैन्डबुक (1961-62) , और (1967-68) , में परीक्षण की स्थिरता एवं विश्वसनीयता का वर्णन किया है । आपने 146 अमेरिकन व्यक्तियों पर एक सप्ताह के अंतराल पर टैस्ट-रिटैस्ट विधि से निष्कर्ष ज्ञात किये । उसमें 16 पी0एफ0 फार्म "अ" का आश्रित सहसम्बन्ध (0.58 से 0.83) तथा फार्म "ब" का आश्रित सहसम्बन्ध (0.54 से 0.89) तक रहा ।

इसके विपरीत लार्फोज (1962) ने 44 व्यक्तियों का अध्ययन किया और फार्म "अ" का सहसम्बन्ध 0.36 से लेकर 0.85 तक पाया । इसके दो माह बाद टैस्ट-रिटैस्ट विधि द्वारा सहसम्बन्ध ज्ञात किया तो पाया कि तत्व-बी , एन , क्यू3 का न्यूनतम और ए , एच , आई तत्वों का उच्च सहसम्बन्ध है ।

16 पी0एफ0 का (1967-68) में 6476 व्यक्तियों पर अध्ययन किया गया , जिसमें फार्म "अ" और "ब" मे सहसम्बन्ध समान पाया गया । इसका सहसम्बन्ध विस्तार 0.21 से लेकर 0.71 तक रहा । एच , एफ और क्यू4 तत्वों का सहसम्बन्ध (0.61 से लकर 0.71) तक उच्च स्तर पर था और एल , एन , क्यू1 तत्वों का सहसम्बन्ध (0.21 से 0.37) निम्न स्तर पर था ।

बैधता :-

कैटेल महोदय ने 16 पी0एफ0 के फार्म "अ" और फार्म "ब" परीक्षणों की विस्तृत जानकारी §1970§ में प्रस्तुत की §आपने परीक्षण बैधता का आधार §1967-68§ में प्रशासित परीक्षण के निष्कर्षों को बनाया । फार्म "अ" और "ब" की मिली जुली बैधता 0.53 से लेकर 0.94 ज्ञात की गई । इस हेतु न्यादर्श 958 व्यक्तियों को माना गया था । एक अन्य अध्ययन में फार्म "अ" और "ब" की बैधता ज्ञात की गई , जिसका विस्तार 0.35 से लेकर 0.92 तक रहा । फार्म "अ" में "ए" , एफ , एच , एवं ओ तत्वों का उच्च सहसम्बन्ध बैधता विस्तार 0.71 से लेकर 0.92 थी और बी , एम , एन आदि तत्वों का निम्न सहसम्बन्ध बैधता विस्तार 0.35 से लेकर 0.44 तक थी । इसी तरह से फार्म "ब" मे ए , एफ , एच , ओ तत्वों में उच्च सहसम्बन्ध बैधता विस्तार 0.78 से लेकर 0.87 तक थी , और बी , एन , क्यू1 एवं क्यू4 तत्वों का निम्न सहसम्बन्ध बैधता विस्तार 0.44 से लेकर 0.60 तक थी । अत: 16 पी0एफ0 की बैधता पर्याप्त उच्च स्तरीय मानी गई है ।

16 पी0 एफ0 द्वारा मापे जाने वाले तत्व

1- कारक "ए" §सीजोथायां/अफेक्टोथायमियां§ :-

कारक "ए" के अन्तर्गत सिजोथायमियां ऋणात्मक स्तर और अफेक्टोथायमियां धनात्मक स्तर , दो लक्षण आते हैं । सिजोथायमियां के अन्तर्गत गंभीरता , पृथकता , चतुरता और शाँतप्रियता आदि व्यक्तित्व विशेषतायें पाई जाती हैं । इन विशेषताओं से युक्त व्यक्ति एकांतप्रिय और कठोर स्वभाव वाला होता है । इसके विपरीत बहिर्मुखी , अति-स्नेही , सरल , प्रतिस्पर्धी आदि विशेषतायें अफेक्टोथायमियां प्रकार के व्यक्तित्व मे पाई जाती है । ऐसा व्यक्ति मिलजुलकर कार्य करना , समाजप्रिय , आलोचना पसंद एवं प्यार से लोगों को पसंद करता है ।

2- कारक "बी" §लोअर स्कोलास्टिक मेण्टल कैपेसिटी/हायर स्कोलास्टिक मेण्टल कैपेसिटी§ :-

कारक "बी" के अन्तर्गत भी दो लक्षण स्कोलास्टिक मेण्टल कैपेसिटी लोअर और हायर के रूप में आते हैं । इसमें लोअर के अन्तर्गत कम बुद्धिमान , सत्यचिन्तन, आदि व्यक्तित्व की विशेषताये आती हैं । ऐसे लोग पढ़ने और समझने में सुस्त होते हैं । इनके व्यवहार से कम बुद्धिमानी प्रदर्शित होती रहती है । इसके विपरीत हायर के अन्तर्गत तीव्रता , भावात्मक-चिन्तन और प्रखर बुद्धि का प्रदर्शन होता है । ऐसे लोग पढ़ने मे और समझने में काफी बुद्धिमानी दिखलाते हैं । इनमें अधिक क्रियाशीलता , सतर्कता और संस्कृति के प्रति लगाव रहता है ।

3- कारक "सी" §लोअर ईगोस्ट्रैन्थ/हायर ईगोस्ट्रैन्थ§ :-

कारक "सी" के अन्तर्गत भी लोअर और हायर ईगो स्ट्रैन्थ दो प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं । प्रथम के अन्तर्गत भावना प्रधान , संवेग रहित , स्थाई , नैराश्य आदि विशेषताये होती हैं । इस प्रकार के व्यक्ति में परिवर्तन और परिवर्तनीय दशाओं के प्रति निराशा , थकान महसूस करना , संवेगात्मक रूप से असंतोष और भयभीत होना , नींद न आना एवं मानसिक तनाव आदि लक्षण पाये जाते हैं । इसके विपरीत हायर ईगो स्ट्रैन्थ में संवेगो में स्थायित्व , सत्य का पालन , शांत स्थिति , परिपक्वता आदि विशेषता पाइ जाती है । इस प्रकार के व्यक्तित्व में शारीरिक और मानसिक रूप में परिपक्वता पाई जाती है । वह अपने कार्यों का सम्पादन , समायोजन , नैतिकता और शक्ति के आधार पर करता है ।

4- कारक "ई" §सबमिसिवनैस/डामीनैन्स§ :-

कारक "ई" को सबमिसिवनैस और डामीनैन्स दो भागों में विभक्त किया गया है । सबमिसिवनैस के अन्तर्गत विनम्र , कोमल , उपकारी और

निष्ठावान् आदि विशेषतायें आती हैं । डॉमीनैन्स के अन्तर्गत निश्चयवान् , स्वतन्त्र , आक्रामक , हठी और प्रतिस्पर्धा आदि विशेषतायें होती हैं । सबमिसिवनैस व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों के प्रति सहृदयता होती है । वह किसी भी व्यक्ति के लिये अपना कार्य त्याग देता है , गल्तियों में सुधार लाता है, और कभी-कभी अन्य लोगों पर निर्भर भी होता रहता है । इसके विपरीत डॉमीनैन्स में व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार कार्य करता है । वह स्वयं ही कानून होता है और वह अपने प्रबन्धकों का अनादर या उपकार भी करता है ।

5- कारक "एफ" §डेसरजेन्सी/सरजेन्सी§ :-

कारक "एफ" को डेसरजेन्सी और सीजेन्सी दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया गया है । डेसरजेन्सी में मर्यादायुक्त , मितव्ययी , गंभीर और अल्प भाषी विशेषतायें होतीं हैं । इस प्रकार के व्यक्ति अर्न्तदर्शन में माहिर होते हैं । ये दब्बू प्रकार के और ईश्वरीधीन और कम बोलने में विश्वास रखने वाले होते हैं । इसके विपरीत सरजेन्सी में आनन्दित रहना , स्वेच्छा पसन्द , उत्साही आदि विशेषतायें होतीं हैं । ऐसे व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहते हैं । वार्तालाप में रुचि दिखाते हैं , सतर्कता से कार्य करते हैं और उन्हें चिन्तारहित जीवन पसंन्द होता है । इनको अगर नेता बना दिया जाये , क्रियाशील कार्यों में लगा दिया जाये तो अधिक प्रसन्न रहते हैं ।

6- कारक "जी" §वीकर सुपरईगो स्ट्रैन्थ/स्ट्रॉंगर सुपरईगो स्ट्रैन्थ§ :-

कारक"जी" को वीकर और स्ट्रॉंगर सुपरईगो स्ट्रैन्थ दो रूपों में प्रस्तुत किया गया है । उपयुक्तता , नियमों से भागना और आभारी आदि विशेषतायें वीकर सुपरईगों स्ट्रैन्थ में आती है । ऐसा व्यक्ति अपने कार्य में सतर्क नहीं रहता है । वह सामूहिक या साँस्कृतिक स्वरूप की अवहेलना करता है । ये लोग कभी-कभी समाज विरोधी क्रियायें भी करते हैं , लेकिन सक्रियता में विश्वास रखते हैं । इसके

विपरीत "स्ट्रॉगर सुपरईगो स्ट्रैन्थ" में पुण्यात्मा , उद्यमी , गँभीर , नियम पालक आदि विशेषतायें होतीं हैं । इस प्रकार के व्यक्ति में चरित्रवान , कर्त्तव्य पालन , उत्तरदायित्व , साफगोई , नैतिकता , मेहनती आदि गुण विद्यमान होते हैं , जिससे उनके अहं का सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है ।

7- कारक - "एच" §थ्रेक्टियाँ/पारमियाँ§ :-

कारक "एच" भी दो भागों में विभक्त किया गया है । थ्रेक्टियाँ के अन्तर्गत शर्मीलापन, सीमाबन्धन , लज्जाशील , कायरता आदि विशेषतायें आतीं हैं । जिस व्यक्ति में ये कारक कम स्तर पर होता है , उसमें निम्नता के भाव , व्यवसाय के चुनाव मे अरूचि , बातचीत में असफल सामाजिकता के स्थान पर एक या दो मित्रों में विश्वास आदि विशेषताये होती हैं । इसके विपरीत "पारमियाँ" मे साहस , सामाजिक दृढ़ी , क्रियाशीलता , स्वेच्छाचारी आदि विशेषतायें होती हैं । इस कारक के अन्तर्गत जो व्यक्ति उच्च स्तर पर होता है , उसमें सामाजिकता हठी , नवीन वस्तुओं को करना , स्वेच्छाचारी , संवेगात्मक प्रतिचारों में हाजिर जबाबी आदि विशेषतायें होती हैं । इसका मजबूत शरीर स्वावलम्बीपन की विशेषता रखता है । ये व्यक्ति वार्तालाप में समय लगाते हैं , व्यापकता का विरोध एवं खतरों को भूल जाते हैं और विरोधी लिंग में रुचि दिखाते हैं ।

8- कारक - "आई" §हारिया/प्रेम्सिया§ :-

इस कारक को "हारिया और प्रेम्सिया" दो भागों में विभक्त किया गया है । "हारिया" के अन्तर्गत मस्तिष्कीय क्षमता , स्वविवेकी , यथार्थवादी और अर्थहीनता आदि विशेषतायें आती हैं । फैक्टर "आई" में लो स्कोर पाने

वाले व्यक्ति में व्यवहारिकता , वास्तविकता , स्वतन्त्रता , पौरूषता , उत्तरदायित्व आदि विशेषतायें होती हैं । ये कभी-कभी कठोर , अपरिवर्तित , शनकी भी महसूस होते हैं । इसके विपरीत "प्रेम्सिया" में कमजोर मानसिक क्षमता , निर्भरता , अतिसुरक्षा , और भावात्मकता आदि विशेषतायें होती हैं । इस कारक में जो व्यक्ति उच्च स्कोर प्राप्त करते हैं , उनमें कमजोर मानसिक क्षमता , दिवास्वप्न , कलात्मकता , फैशनपरस्त आदि स्त्रीत्व गुण पाये जाते हैं । कभी-कभी ये लोग सहायता माँगते , अशांत रहते , निर्भरता और अव्यवहारिक भी होते है । ये कठोर व्यक्तियों और उनके व्यवसाय को पसन्द नहीं करते हैं ।

9- कारक - "एल" §अलेक्सिया/प्रोटेन्सिया§ :-

प्रस्तुत कारक को भी अलेक्सिया और प्रोटेन्सिया दो रूपों में प्रयुक्त किया गया है । "अलेक्सिया" में विश्वासी , योग्य , ईर्ष्यामुक्ति और टीम सहयोग आदि विशेषताये आती हैं । इसमे जो व्यक्ति आते हैं , उनमें ईर्ष्या का अभाव होता है । प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करते हैं । किसी के साथ प्रतिस्पर्धा नही रखते और अपनी टीम के सहयोगी बनते हैं । "प्रोटेन्सिया" में सन्देह करना , स्वास्थ्य निर्माण और टीम विलगता आदि विशेषतायें आती हैं । ऐसे व्यक्ति सन्देहास्पद होते हैं । ये हमेशा मानसिक और आन्तरिक जीवन में विश्वास रखते हैं , ये स्वयं में मस्त रहते हैं , अन्य की चिन्ता नहीं करते हैं । अतः इनको समूह , समुदाय से कोई सरोकार नही रहता है ।

10- कारक "एम" §प्रक्जरनिया/औटिया§ :-

इस कारक को भी दो भागों में बाँटा गया है । प्रथम भाग

"प्रेक्जरनिया" में व्यवहारिकता , चेतनता , रुढ़िगत , उपयुक्तता , यथार्थवादिता आदि गुण आते हैं । इसमें व्यक्ति सही कार्य करता हैं , व्यवहारिकता पर बल देता है और वह क्या सम्भव है पर प्रकाश डालता है । वह विस्तृत मे विश्वास करता है और अकाल्पनिक होताहैइसके विपरीत "औटिया" में काल्पनिक , आन्तारिक आकांक्षाओं को ढँकना , व्यवहारिकता की अवहेलना और मस्तिष्कीय अव्यवस्था आदि विशेषतायें होती हैं । कारक "एम" में जो व्यक्ति उच्च स्कोर पाते हैं वे ही इसके अन्तर्गत आते हैं । ऐसे व्यक्ति रीत-रिवाज विरोधी , रोजनना के कार्यों से बेखबर , स्वप्रेरित , काल्पनिक और आवश्यक वस्तुओं से ही सम्बन्ध रखने वाले होते हैं । कभी-कभी आंतरिक रुचियें इनकी अवास्तविक परिस्थितियों की ओर निर्देशित करती हैं , जिससे सामूहिक क्रियाओं की अवहेलना होती है ।

11- कारक "एन" ¤आर्टलैसनैस/श्रुरूडनैस¤ :-

कारक "एन" को निम्न स्तरीय स्कोर और उच्च स्तरीय स्कोर के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है । जब कोई व्यक्ति अग्रगामी , स्वाभाविक , साधारण , भावनापूर्ण आदि विशेषताओं को संग्रहीत करके निम्न स्कोर लाता है तो वह "आर्टलैसनैस" के अन्तर्गत आता है । ऐसा व्यक्ति बनावट से दूर , और भावनापूर्ण होता है । कभी-कभी वह जालिम और बुरा लगने वाला भी , लेकिन थोड़ी देर में ही प्रसन्न होकर सही बात पर आता है और स्वाभाविक व स्वतन्त्र प्रकृति वाला बन जाता है । इसके विपरीत "श्रुरूडनैस" के अन्तर्गत चतुर , गणनायोग्य , सांसारिक , मर्मज्ञ आदि विशेषतायें होतीं हैं । इस प्रकार के व्यक्ति में साफ सुथरा व्यवहार , अनुभवी सांसारिक , चतुर आदि गुण पाये जाते हैं । वह कभी-कभी विश्लेषणकर्ता और कठिन क्षमता वाला हो जाता है । वह बौद्धिक , भावनारहित होकर परिस्थिति का सामना करता है ।

12- कारक "ओ" §अनट्रबुल्ड एडीकैवसी/गिल्ट प्रोननैस§ :-
-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-:-

कारक "ओ" को दो भागों में बाँटा गया है । "अनट्रबुल्ड एडीकैवसी" के अन्तर्गत गंभीर , स्वविश्वासी , संतोषी और निर्मलता आदि विशेषतायें आती हैं । इस प्रकार का व्यक्ति , गंभीर और स्वयं में परिपक्वता रखकर क्षमतापूर्वक वस्तुओं के साथ क्रिया एवं प्रतिक्रिया करता है । वह स्थिर रहता है , बल्कि जब सामूहिकता का अभाव हो जाता है तो वह उत्तेजित होकर अविश्वास भी प्रकट करता है । विरोध रूप में गिल्टप्रोननैस आता है जिसमें विचारशीलता , चिन्तित रहना , दंभी , विघ्न बाधाओं में व्यस्त रहने वाला आदि विशेषतायें आती हैं । यह उच्च स्कोरीय व्यक्ति होता है जो स्वगुणों के कारण घमण्डी बन जाता है । कठिनाइयों में यह बच्चों जैसी क्रियायें करता है । यह स्वयं को समूह के साथ रहने को स्वतन्त्र महसूस नहीं करता है । अत: ऐसे व्यक्ति सैद्धान्तिक समूहो में अधिक पाये जाते हैं ।

13- कारक "क्यू-1" §कन्जरवेटिज्म/रेडिकलिज्म§ :-
-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-=-

कारक "क्यू-1" को भी दो भागों में विभक्त किया गया है । "कन्जरवेटिज्म" के अन्तर्गत वे व्यक्ति आते हैं जो निम्न स्कोर अर्जित करते हैं । उनमें रूढ़िवादिता , स्थिर आदर्श-विचार , प्रथाओं की समस्याओं को सहना आदि विशेषतायें होती हैं । ऐसा व्यक्ति जो सोचता है वही करता है । वह नवीन आदर्शों या विचारों के साथ समझौता करता है । यदि वह समझौता सही नहीं मालूम देता तो उसका विरोध करके अपनी प्रथा के साथ ही चलता है । वह अपने धर्म और राजनीति में रूढ़िवादी होता है । इसीलिये बौद्धिकता में अरूचि प्रदर्शितकरता रहता है । जबकि "रेडिकलिज्म" में प्रायोगिकता , विषमता , सहृदयता , विश्लेषणता , स्वतन्त्र विचार जैसे गुण पाये जाते हैं । इसमें व्यक्ति बौद्धिक कार्यों में रूचि लेता है और सिद्धान्तों में परिवर्तन चाहता है । वह हमेशा

नवीन और पुराने विचारों के साथ जानकारी हाशिल करता रहता है ताकि जीवन से सम्बन्धित प्रयोग परिवर्तनशील हों ।

14- कारक "क्यू-2" §ग्रुप अधेरेन्स/सैल्फ सफीसियेन्सी§ :-

कारक "क्यू-2" का मापन निम्न और उच्च स्कोर के रूप में किया जाता है । जब व्यक्ति को निम्न स्कोर प्राप्त होता है तो उसमें समूह निर्भरता , एकता और विश्वासपात्रता आदि विशेषतायें पाई जाती हैं ।. वह स्वयं निर्णय नहीं लेता है बल्कि अन्य व्यक्तियों के ऊपर निर्भर करता है ताकि उसकी समाज में प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त हो सके । वह स्वयं के स्थान पर समूह के साथ रहना चाहता है । वास्तव में उसकी पसन्द सामूहिक नहीं होती है , फिर भी वह समूह की सहायता को आवश्यक समझता है । इसी प्रकार से "सैल्फ सफीसियेन्सी" के अन्तार्गत स्वपर्याप्त , स्वनिर्णयी , ताकतवर आदि विशेषतायें पाई जाती हैं । इसकारक में जो व्यक्ति उच्च स्कोर प्राप्त करता है वह स्वतन्त्र , स्वनिर्गत पथानुगामी , कार्य और निर्णयों में आत्मनिर्भर होता है । यह सदैव दूसरों के निर्णयों को ग्रहण नहीं करता है बल्कि अपने निर्णयों को अन्य लोगों पर थोपता भी नहीं है । यह अन्य व्यक्तियों को पसन्द नहीं करता है और न उनकी सहायता एवं सहयोग को चाहता है ।

15- कारक "क्यू-3" §लो इन्टीगरेसन/हाई सैल्फ कान्सेप्ट कन्ट्रोल§ :-

कारक "क्यू-3" में अनियान्त्रित , स्वविरोधी , मशविरा में लापरवाही, इन्द्रियग्राही आदि विशेषताये "लो इन्टीगरेसन" के अन्तर्गत आती है । ऐसा व्यक्ति समाज के नियन्त्रण , सम्मान और आवश्यकताओं के प्रति चिन्तित नहीं रहता है । यह कभी भी सतर्क या कष्टों को बहन करने वाला नहीं होता है । वह कभी-कभी

कुसमायोजित महसूस करने लगता है , लेकिन परानोइड नहीं होता है । इसके विपरीत "हाई सैल्फ कान्सेप्ट कन्ट्रोल" के अन्तर्गत नियन्त्रित , समाजप्रिय , स्वाभिमानी आदि विशेषतायें आती हैं । इस कारक में उच्च स्कोर वाला व्यक्ति संवेगों पर नियन्त्रण रखता है , व्यवहारिक होता है और सामाजिक चिन्ताओं में लिप्त रहने वाला होता है ।

16- कारक "क्यू-4" §लो इरजिकटेन्सन/हाई इरजिकटेन्सन§ :-

कारक "क्यू-4" को दो भागों में विभक्त किया गया है । "लो इरजिकटेन्सन" भाग में आरामतलब , क्षोभरहित , जड़ता , उत्साही आदि विशेषतायें होती हैं । ऐसा व्यक्ति समाज में सन्तुष्ट रहता है उसे कोई चिन्ता नहीं रहती है । कभी-कभी इतनी सन्तुष्टि व्यक्ति को निकम्मा बना देती है , जिससे क्रियाशीलता में गिरावट आने लगती है । उच्च संवेगात्मकता , या उत्तेजना उसके विद्यालय-कार्य और क्रियाशीलता में अवनति उत्पन्न करती है । इसके विपरीत में "हाई इरजिक टैन्सन§ के अन्तर्गत निराशा, परिश्रमी , और संगठन आदि व्यक्तित्व विशेषतायें आती हैं । उच्च स्तरीय सीमा के अन्तर्गत व्यक्ति में तनाव , थकावट और अशांति दिखाई पड़ती है । वह थकान से भरा रहने पर भी उद्यम को नहीं छोड़ता है । वह समूह की एकता , अनुशासन और नेतृत्व को अच्छा नहीं समझता है । उसकी नैराश्यता उच्च उत्तेजना को प्रगट करती है , फिर भी वह कभी भी इसमें सफल नहीं होता है ।

बी0एड0 में प्रशिक्षणरत छात्र अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व लक्षणों का मापन करने के लिये प्रयोग किया गया परीक्षण सभी प्रकार से उपयुक्त है । सर्वप्रथम छात्राध्यापकों §स्त्री/पुरुष§ को परीक्षण से सम्बन्धित निर्देश हिन्दी में , फिर अँग्रेजी में देते थे ताकि सभी अच्छी तरह से परीक्षण विधि को समझ लें

और परीक्षण के प्रसारण में पूर्ण सहयोग दें । परीक्षण निर्माता द्वारा दिये गये सुझाव एवं निर्देशों को शोधकर्ता ने निम्न रूप से प्रयोग किया :-

परीक्षण का प्रशासन शान्त वातावरण में कक्षा के अन्दर सही रूप से बिठाकर किया गया । व्यक्तित्व परीक्षण करने से पहले शोधकर्ता ने विषय की उपयोगिता , उद्देश्य आदि पर पूर्ण प्रकाश डाला । तत्पश्चात् उनको बताया कि प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षा के क्षेत्र में शोध हेतु किया जा रहा है , अतः आप लोग निःसंकोच होकर प्रश्नावली को भरें । आपके द्वारा प्राप्त उत्तरों को , निष्कर्षों को गुप्त रखा जायेगा और सामूहिक रूप से प्रयोग किया जायेगा । इसके पश्चात परीक्षण पुस्तिका और उत्तर पत्र बाँट दिये जाते थे । उनको यह भी कहा जाता था कि प्रश्नों के उत्तर , उत्तर पत्र पर ही अंकित करें , परीक्षण पत्रिका पर नहीं । जब प्रथम पृष्ठ पर दी गई सूचनाओं को छात्राध्यापक भर लेते थे और उसी पर अंकित निर्देशों को पढ़ लेते थे , तक शोधकर्ता निम्न आदेश देता था :-

"प्रथम पृष्ठ को पलटिये । अपने उत्तर पत्र को परीक्षण पत्रिका के साथ रखिये । प्रत्येक प्रश्न को ध्यान से पढ़िये और उत्तर पत्र पर गुणन {×} का निशान लगाइये । "परीक्षण का कोई भी समय निश्चित नहीं है , फिर तेजी से कार्य करने को कहा गया । व्यक्तित्व और सामूहिक परीक्षण के प्रशासन में भिन्नता होती है । क्योंकि कोई तेजी से कार्य करता है और कोई धीमें से । शोधकर्ता कक्षा में घूम-घूम कर देखता रहा , और ही "अच्छा कार्य चल रहा है" कहकर उत्साह प्रदान करता रहा । फिर भी हमारे परीक्षार्थियों ने 45 मिनट से लेकर 60 मिनट के अन्दर अपने कार्य को समाप्त कर दिया जो मैनुअल में दिये गये समय के अनुसार रहा । उत्तर पुस्तिका को एकत्रित करते समय परीक्षार्थी का नाम और एक प्रश्न का एक ही उत्तर दिया गया है , अच्छी तरह से जाँच लिया गया ।

इस परीक्षण के बाद शोधकर्ता ने उन्ही छात्राध्यापकों पर "सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी" का प्रयोग किया । इस मापनी का विकास डॉ0 ज्ञानेन्द्र पी0 श्रीवास्तवा ने 1978 में किया , जो मिथिला विश्वविद्यालय में "मनोविज्ञान" विभाग में कार्यरत हैं । सामाजिक- आर्थिक स्तर के मापन का इतिहास लगभग 50 वर्षों का रहा है । इस मापनी की आवश्यकता शोधकर्ताओं द्वारा विभिन्न संकायों में महसूस की जाती रही है । इस मापनी का प्रयोग शोधकर्ताओं द्वारा मूल्य मापन , अभिवृत्ति मापन , बाल विकास मापन शैक्षिक निष्पत्ति मापन , संवेगात्मक स्थिरता मापन , आक्रामकता एवं प्रभुत्वता मापन , मौखिक व्यवहार मापन आदि के सन्दर्भ में किया जाता रहा है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के निर्माण एवं विकास के प्रयत्न देश और विदेशों में काफी दिनों से चल रहे है । 1928 में "तावसिंग" महोदय ने "आमदनी§ को व्यक्ति के सामाजिक स्तरीकरण का आधार माना था । इसी तरह से "कैटिल" §1942§ ने व्यवसाय को सामाजिक-आर्थिक स्तर का आधार माना । "हालिंग रौड" §1959§ ने सामाजिक स्तर को व्यवसाय एवं शैक्षिक स्तर के द्वारा निश्चित करना माना है । इसी प्रकार से सामाजिक-आर्थिक स्तर की मापनी के विकास हेतु चैपिन §1928§ , चैम्पैन एवं सिम्स §1925§, स्वैल §1950§ , शी §1936§ , वार्नेर §1949§ आदि विद्वानों ने कार्य किये ।

भारतीय परिस्थितियों से मापनी का विकास बहुत ही देरी से प्रारम्भ हुआ । विकासशील देशों में सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का विकास सामाजिक समस्याओं के समाधान , समायोजन , योजनायें आदि के सन्दर्भ में होता रहा । दुर्भाग्यवश , भारतीय परिस्थिति में सामाजिक-आर्थिक स्तर के मापने के लिये कोई भी मापनी न विकसित हो सकी । लुईस एवं ढिल्लन §1959§ ने एक सामाजिक-आर्थिक मापनी का प्रयोग ग्रामीण परिवार के वर्गीकरण हेतु किया । फ्रीमैन §1961§ महोदय ने उत्तर प्रदेश के

तीन गाँवों क व्यक्तियों के आर्थिक स्तर को मापने हेतु मापनी का उपयोग किया । त्रिवेदी एवं पारीख §1964§ ने ग्रामीण जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक स्तर को जानने के लिये मापनी का विकास किया ।

उपर्युक्त वर्णित सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनीयों में कुप्पू स्वामी §1959§ द्वारा मापनी अधिक प्रसिद्ध रही । इस मापनी के द्वारा शिक्षा, व्यवसाय, और आमदनी आदि तीन परिवर्तियों का मापन किया जाता है । लेकिन आज शैक्षिक मूल्य, व्यवसाय प्रकृति एव आमदनी के स्तरों आदि में परिवर्तन से उपयुक्त मापन सम्भव नहीं हो पाता है । वर्मा §1969§ महोदय ने शहरी एवं ग्रामीण दोनो के आर्थिक एवं सामाजिक स्तरों की मापनी का विकास किया । इस मापनी का उद्देश्य एक परिवार की मनोवृत्ति का सामाजिक साँस्कृतिक रूप में अध्ययन करना है । इसका प्रयोग वस्तुनिष्ठ न होने से समय की बर्बादी भी है । इसी के साथ पाण्डेय §1971§ ने "सामाजिक वर्ग विकास प्रश्नावली" का विकास किया । इसमें सिर्फ जाति प्रणाली को ही महत्व दिया गया है । अत: सिर्फ शहरी छात्रों ने सामाजिक-आर्थिक स्तर को उपयुक्त रूप से मापने हेतु डा0 ज्ञानेन्द्र §1978§ द्वारा विकसित, भारतीय स्थितियों पर निर्पद मापनी का प्रयोग शोधकर्ता ने किया ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी :-

डा0 ज्ञानेन्द्र पी0 श्रीवास्तवा §1978§ ने इस मापनी का विकास किया । आपने अपनी मापनी को अंन्तिम रूप 370 उत्तरों के आधार पर किया। आपने सर्वप्रथम सामाजिक-आर्थिक स्तर मापने हेतु आयटम विश्लेषण का प्रयोग किया । इसकी प्रकृति वस्तुनिष्ठ एवं प्रायोगिक है । इस परीक्षण को उदासीनता, थकान और समय खर्चीला आदि निषेधात्मक तत्वों से पूर्ण सुरक्षित रखा गया है ।

मापनी के परिवर्ती एवं अंक गणना

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के द्वारा निम्नांकित पाँच परिवर्तियों से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त की जाती हैं :-

1- शिक्षा

2- व्यवसाय

3- आय

4- साँस्कृतिक स्तर

5- सामाजिक भागीदारी ।

1- शिक्षा :-

शिक्षा परिवर्ती के अन्तर्गत उसकी पारिवारिक शिक्षा का मूल्यांकन किया जाता है । इसमें शिक्षा को आठ भागों में बाँटा गया है और प्रत्येक भाग के अंक प्रदान किये गये हैं , जो निम्न तालिका से स्पष्ट होते हैं :-

क्रमांक	उप विभाग	मानक प्रदत्त अंक
1-	डाक्टरेट डिग्री	8
2-	पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री	7
3-	ग्रेजुएट डिग्री	6
4-	इण्टरमीडिएट	5
5-	हाई-स्कूल	4
6-	मिडिल स्कूल	2
7-	प्राइमरी स्कूल	1
8-	अशिक्षित	0

2- व्यवसाय :-

व्यवसाय का वर्गीकरण सात भागो मे किया गया है और उसके समक्ष अंक प्रदान कियो गये हैं । अंक गणना के लिये शोधकर्ता ने 10 , 7 , 5 , 4 , 3 , 2 और । को आधार माना है । क्योंकि व्यवसाय की उच्चता से लेकर निम्नता तक का वर्गीकरण माना गया है जो मानक अंकों में विभक्त है ।

3- आय :-

सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी में आमदनी को जानने के लिये प्रस्तुत मापनी में आय को छः उपभागों में बाँटा गया है :-

क्रमाँक	आय उप-भाग	मानक प्रदत्त अंक
1-	रु0 1700 से ऊपर	12
2-	रु0 1000 - 1700	9
3-	रु0 500 - 999	5
4-	रु0 200 - 499	3
5-	रु0 100 - 199	2
6-	रु0 100 से कम आय	1

4- साँस्कृतिक स्तर :-

साँस्कृतिक स्तर का मूल्याँकन पद नं0 4 , 5 , 6 के द्वारा किया जाता है जैसे :-

पद नं0-4 :-

यह पद अखबारों से ज्ञान प्राप्त करने से सम्बन्धित कारक है । इसमें

करते है ।

पद नं0-5 :-

यह पद मैगजीन को खरीद कर ज्ञान प्राप्त करने से सम्बन्धित है । इसको चार उप-विभागों में बाँटा गया है जिसके अंक 3 , 2 , 1 , 0 क्रमशः माने गये हैं ।

पद नं0-6 :-

बच्चों को जेब खर्च के मिलने का मूल्यांकन इस पद के द्वारा होता है । इसमें "हाँ"को 2 अंक एवं "नहीं" को 0 अंक दिया जाता है ।

सामाजिक भागीदारी :-

इसका मूल्यांकन करने के लिये पद संख्या 7 और 8 को रखा गया है ।

प्रदत्त संकलन की विधि

शोधकर्ता का प्रमुख कार्य किसी परीक्षण का प्रयोग करके प्रदत्त संकलन करना होता है । इसके लिये इसे प्रदत्त संकलन की विभिन्न विधियों में से किसी एक को आधार बनाना होता है । प्रयोगकर्ता जब किसी विधि का चुनाव करता है । तो प्रमापीकृत एवं कम से कम त्रुटि वाली विधि का चुनाव करता है । अतः प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधकर्ता ने मानक सर्वेक्षण विधि को प्रदत्त संकलन हेतु चुना ।

1- मानक सर्वेक्षण विधि :-

प्राकृतिक परिवर्तन मानव व्यवहार एवं क्रियाओं में परिवर्तन लाते हैं । मानव संस्कृति परिवर्तन की आधार शिला होती है , जिसके द्वारा किसी अपूर्व उद्देश्य को पूरा किया माना जाता है । जब मनुष्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये व्यवहार के तरीकों में परिवर्तन लाता है , तो वह वर्तमान के साथ सुख प्राप्त करता है । इससे भूतकाल का मूल्यांकन एवं भविष्य के बारे में व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है । अतः भविष्य का अनुमान और वर्तमान की क्रियायें-मानव प्रगति का आधार बनती हैं , जिससे आने वाली पीढ़ी के स्तर में उन्नति होती रहती है । लेकिन नवीन योजना या कार्यक्रम ग्रहण करने से पहले "समूह , सामाजिक संस्थाओं के वर्तमान स्तर के प्रति विश्लेषण , व्याख्या और निष्कर्ष के रूप में संगठित और सुनियाजित प्रयास होना चाहिये §एफ , विटनी , 1956 , पृष्ठ 167§ । समस्या क समाधान में "प्रथमपद या क्रिया के रूप में सुनियोजित विश्लेषण होना चाहिये ताकि वर्तमान दशा या अवस्था स्पष्ट हो जाये §बेस्ट , 1963 , पृष्ठ 105§ । इस समस्या के समाधान हेतु शिक्षा शास्त्रियों, समाजशास्त्रियों और अन्य विज्ञान-वेत्ताओं ने "नारमेटिव सर्वे मैथड" का विकास किया । इसका उद्देश्य वर्तमान स्थिति के आधार पर समूहों का वर्गीकरण करना , सामान्यीकरण करना , और प्रदत्तों की व्याख्या सामयिक तथा भविष्य की उपयोगिता को ध्यान में रखकर करना होता है §एफ0, विटनी , 1956 , पृष्ठ 161§ । "नारमेटिव" शब्द का अर्थ सामान्य या विशिष्ट परिस्थिति से लगाया जाता है , और "सर्वे" का अर्थ वस्तु के प्रति "वर्तमान राय" या "मत" को एकत्रित करने से माना जाता है ।

मानक सर्वेक्षण विधि का , आज , प्रयोग सामाजिक विज्ञानो के विभिन्न अध्ययनों में किया जा रहा है । "शिक्षा-शास्त्र" के क्षेत्र में "वर्णनात्मक शोध" का महत्व इसी प्रवृधि के विकास ने प्रायः समाप्त सा कर दिया है ।

जब हम वृहद समूह §पापूलेसन§ का अध्ययन करना चाहते हैं , तो इसी प्रतिधि का सहारा लेतेहैं :-

"यह विधि किसी भी निर्देशन पर उपयुक्त रहती है । इसके द्वारा एकत्रित प्रदत्तो पर किसी भी प्रकार का अविश्वास नहीं होता है । इसकी विश्वसनीयता एवं वैधता पर किसी ने भी शंका नहीं की है । इसमें प्रयुक्त तकनीक , प्रश्न पूँछने , प्रश्नावली तैयार करना , साक्षात्कार करना , विषय सूची विश्लेषण , और प्रदत्त प्रसार आदि के बारे में उपयुक्त एवं सही राय प्रस्तुत करती है । इससे क्षेत्र विशेष में किये गये तथ्य संकलन के द्वारा विस्तृत और सही ज्ञान प्राप्त होता है §एफ0 वी0 विटनी , 1960 , पृष्ठ 1450§ । इस प्रविधि को प्रयोग करते समय निम्न पदों पर क्रमानुसार चलना होता है :-

अ- प्रथमत: शोधकर्ता अपनी समस्या को प्रस्तुत करता है , उसके उद्देश्यों एवं लक्ष्यो को निर्धारित करता है और अपने शोध कार्य की उपयुक्त योजना तैयार करता है । इस योजना से वर्तमान समय की आवश्यकता का गत्यात्मक पक्ष स्पष्ट होता है । "मानवीय अभिरूचियों के सन्दर्भ में , शोध कर्ता उद्देश्य और मूल्यों को निश्चित करता है , ताकि शोध तथ्य उभर कर सामने आयें और समस्या सन्दर्भ में मानसिक दशा , चिन्तन , आदि को व्यवहारिक रूप प्रदान करें "गुड एवं स्कैटस , 1954 , पृष्ठ 551§ ।

ब- शोधकर्ता वर्तमान समय की स्थिति के आधार पर प्रदत्त संकलन करते हैं । "जबसे "समग्र" के एक हिस्से को "निर्देशन" मानकर समस्या का अध्ययन किया जाने लगा है , मानक सर्वेक्षण का महत्त्व बढ़ गया है

§गुड एवं स्कैटस , 1954 , पृष्ठ 598§ । सामान्य तौर पर निदर्शन का चुनाव काल्पनिक आधार पर किया जाता है । इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को "समग्र" के आधार पर निदर्शन में आने का समान और पर्याप्त अवसर मिलता है §गुड एवं स्कैटस , 1954 पृष्ठ 601§ ।

स- व्यक्तिगत विशेषताओं पर यह विधि कोई निष्कर्ष नहीं निकालती है । इसके द्वारा निदर्शन के माध्यम से सम्पूर्ण समूह का अध्ययन करके "समग्र" के बारे में सांख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं । आज सांख्यकीय निष्कर्ष ही वैध और विश्वसनीय माने जाते हैं । इस प्रविधि का प्रयोग किसी वैज्ञानिक नियम या सिद्धान्त के प्रयोग हेतु नहीं किया जाता है बल्कि "सर्वेक्षण विधि के द्वारा उपयोगी एवं लाभकारी सूचनायें एकत्रित करके स्थानीय समस्याओं का हल खोजा जाता है §ट्रैवर्स , 1964 , पृष्ठ - 284§। प्रदत्त संकलन में विस्तार वस्तुनिष्ठता का वर्तमान में स्थित स्थायी सम्बन्धों और व्यवहार को स्पष्टता प्रदान करने के लिये किया जाता है । इसमें समूह की मनोवृत्तियों , अभिरूचियों और कार्य करने के तरीके आदि का विकास भी निहित रहता है । "सर्वेक्षण के द्वारा किये गये अध्ययनों का सम्बन्ध क्या उपलब्ध है [, से होता है , न कि उसके अन्य रूपों से §ट्रैवर्स , 1964 , पृष्ठ 283§" ।

द- हम शोध की उपकल्पनाओं को परीक्षित करने के लिये विभिन्न उपकरणों एवं यंत्रों के द्वारा प्रदत्त संकलन करते हैं । "इनमें सूची , प्रश्नावली , मत या राय , निरीक्षण , चैकलिस्ट , क्रम निर्धारण मापनी , स्कोर बोर्ड , हस्त पाण्डुलिपियाँ , साक्षात्कार , मनोवैज्ञानिक परीक्षण और रिक्त स्थान पूर्ति आदि उपकरण विशेष रूप से

प्रयोग में लाये जाते हैं §वेस्ट , 1963 , पृष्ठ 184§ । "उपकरण के विभिन्न श्रोतों में से शोधकर्ता समस्या की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्रदत्त संकलन के लिये किसी एक का चुनाव करता है । यही उपकरण समस्या का समाधान उपयुक्त एवं प्रभावशाली सूचनाओं को एकत्र करके करता है §वेस्ट , 1963, पृष्ठ 184§।" शोधकर्ता अपने प्रदत्तों का संकलन-वर्गीकरण , तुलना , मूल्याँकन , व्याख्या और सामान्यीकरण , स्वनिरीक्षित व्यवहार एवं क्रियाओ के आधार पर करते हैं । "शोध प्रक्रिया का प्रभाव क्या है ?" के वर्णन करने या व्याख्या करने से नही होता है §वैस्ट , 1963 , पृष्ठ 103§ । जबकि शोध प्रक्रिया शोधकर्ता को निर्देशित करती है कि वह अपनी उपकल्पनाओं के प्रति सचेत रहकर निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये क्रियाशील रहे।

र- सर्वेक्षण विधि के द्वारा हम समस्या का समाधान करने वाले निश्चित निष्कर्षों पर पहुँचते हैं और भविष्य की योजनाओ के क्रियान्वित करने के लिये और सुधार लाने के लिये निष्कर्ष प्राप्त करते हैं।

ल- इस प्रविधि के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष हमें नवीन समस्याओं के प्रति शोधकार्य की योजना बनाने में नये आयाम नये व्यवहार के प्रति शोध कार्य करने के लिये मार्ग दर्शन प्राप्त करते हैं । इस प्रकार से मानव आवश्यकता की पूर्ति समय पर होती रहती है ।

तथ्य संकलन की प्रविधि

प्रस्तुत शोध समस्या के तथ्य संकलन के लिये शोधकर्ता ने दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया है :-

1- छात्र-अध्यापकों एवं छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व को मापने के लिये डॉ0 कपूर द्वारा विकसित 16 पी0एफ0 का प्रयोग किया गया । इसमें 16 व्यक्तित्व विशेषताओं का वर्णन ए , बी , सी , ई , एफ , जी , एच , आई, एल , एम , एन , ओ , क्यू1 , क्यू2 , क्यू3 और क्यू4 आदि रूपों में किया गया है । इनका मूल्यांकन बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्राओं पर किया गया ताकि उनके व्यक्तित्व पाश्र्व दृश्य को जाना जा सके ।

2- इसके साथ ही साथ इनकी सामाजिक-आर्थिक स्तर को जानने के लिये डॉ0 श्रीवास्तव जी द्वारा निर्मित एस0 ई0 एस0 एस0 मापनी का प्रयोग किया गया । इसके द्वारा शोध समूह के पाँच परिवर्तिओं का मूल्यांकन किया गया :-

(अ)- शिक्षा

(ब)- व्यवसाय

(स)- आय

(द)- साँस्कृतिक स्तर

(य)- सामाजिक भागीदारी ।

इस प्रकार से शोधकर्ता द्वारा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के परिक्षेत्र में शिक्षण-प्रशिक्षण-रत छात्र/छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन उनकी सामाजिक-आर्थिक दशा के सन्दर्भ में किया जायेगा ताकि अध्यापक व्यक्तित्व के विकास के सभी अवसरों का अध्ययन किया जा सके ।

प्रदत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ

साँख्यिकी का ज्ञान शोधकर्ता के लिये अत्यन्त आवश्यक होता है । इसी ज्ञान के फलस्वरूप वह अपने तथ्यों एवं निष्कर्षों को प्रमाणीकृत बनाता है । आज के वैज्ञानिक युग में बिना साँख्यिकी ज्ञान या प्रयोग के शोधकर्ता विश्वसनीय निष्कर्षों पर नहीं पहुँच पाता है । साँख्यिकी विधियों के प्रयोग से शोध कार्य

में वस्तुनिष्ठता , सत्यता , वृहदता और स्पष्टता आदि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है । इन प्रविधियों के प्रयोग से समस्या के प्रदत्तों के विश्लेषण और निष्कर्षों में सरलता प्राप्त होती है । इन साँख्यिकी विधियों का प्रयोग एक सामान्य शोधकर्ता भी आसानी से कर सकता है ।

इस प्रकार से शोध कार्य में विभिन्न प्रकार की साँख्यिकी का प्रयोग होता है । इसमें से मध्यमान , प्रमाण विचलन , की गणना शोध कर्ता ने 16 पी0एफ0 के द्वारा एकत्रित प्रदत्तों पर की । इन प्रदत्तों को शोधकर्ता ने स्टैन्स में परिवर्तित किया ताकि व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का निर्माण सही तरीके से हो सके । "स्टैन्स" के अन्तर्गत किसी प्रदत्त को दस सम भागों में वर्गीकृत करना होता है । जैसे 1 से 10 सम भागों में बाँटकर उसके मध्यमान को स्टैन 5.5 मानते हैं । इस मध्यमान को स्टैन 5 से लेकर 6 तक माना जाता है । इस प्रकार से शोधकर्ता ने 16 पी0एफ0 मैनुअल को आधार मानकर स्टैन्स का प्रयोग निम्न प्रकार से किया :-

स्टैन्स 5 , 6 को औसत रूप माना गया है ;
स्टैन्स 4 , या 7 को निम्न और उच्च स्तर हेतु कुछ विचलन ;
स्टैन्स 2 , 3 , 8 , 9 को अत्यधिक निम्न एवं उच्च विचलन हेतु ;
स्टैन्स 1 या 10 को निम्नतर एवं उच्चतर विचलन हेतु ।

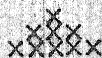
इसी माँपक को आधार मानकर शोधकर्ता बी0एड0 छात्र/छात्रा अध्यापको का व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य तैयार करेगा । तथ्य संकलन के पश्चात् 16 पी0एफ0 कैटिल प्रश्नावली एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर माँपनी की तथ्य गणना दो प्रकार से की गई । 16 पी0एफ0 प्रश्नावली की गणना कैटिल द्वारा

प्रस्तुत उत्तर पत्रिका §की§ द्वारा एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी की गणना डॉ0 श्रीवास्तव जी द्वारा "मानक अंक" आधार पर की गई । फिर शोधकर्ता ने डॉ0 कपूर द्वारा विकसित 16 पी0एफ0 प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त अंकों को स्टैंस में परिवर्तित किया । इन्हीं 16 व्यक्तित्व तत्वों या विशेषताओं के स्टैन्स तैयार किये गये और फिर उनके पार्श्वदृश्य भी बनाये गये । इसके पश्चात् सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी की अंक गणना सिर्फ तीन परिवर्तियों - शिक्षा , व्यवसाय और आमदनी आदि में ही की गई । इस मापनी में विषय का नाम , शिक्षा , यौन , घर का पता , व्यवसाय और आमदनी आदि सूचनायें दी हुई हैं । इस मापनी की अंक गणना मैनुअल के आधार पर "स्कोरिंग की" के प्रयोग द्वारा की गई । प्रस्तुत परिवर्ती का विभाजन पाँच स्तरों पर किया गया है । इनको उच्चस्तर, उच्च मध्यम स्तर , निम्न मध्यम स्तर , निम्न स्तर और निम्नतम स्तर आदि में विभाजित करके अध्ययन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के अन्तर्गत प्रयुक्त वर्गीकरण स्तर तालिका के पाँचवे स्तर पर कोई भी विषय नहीं आया। यानी बी0एड0 के छात्र-अध्यापक निम्न स्तर पर कोई भी नहीं आया , अतः शोधकर्ता ने सिर्फ चार स्तरों पर ही व्यक्तित्व का मापन किया है । इस प्रकार से 16 पी0एफ0 और सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के द्वारा एकत्रित तथ्य संकलन का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया :-

अ- बी0एड0 छात्र/छात्रा अध्यापकों के 16 व्यक्तित्व लक्षणों का विश्लेषण स्टैन्स के द्वारा किया गया । साथ ही व्यक्तित्व लक्षणों की सार्थक भिन्नता की सीमा का मूल्यांकन भी स्थापित किया गया ।

ब- सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के चार स्तरों की तुलना व्यक्तित्व के 16 लक्षणों के साथ अलग-अलग रूप से की गई । साथ ही इन स्तरों (ग्रेडस) की तुलना आपस में भी की गई । अतः शोधकर्ता ने भिन्नता की सार्थकता (सिगनीफिकेन्स आफ डिफरेन्स) की गणना "टी" टैस्ट के द्वारा की, ताकि परिवर्तियों के मध्यमानों के बीच सम्बन्धों का पता जाना जा सके ।



चतुर्थ -- अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

१- तथ्यों का संकलन

२- तथ्यों का विश्लेषण स्टेन्स द्वारा

(अ) स्त्री—पुरुष समूह

(ब) आयु समूह

(स) अध्यापन अनुभव समूह

(द) सामाजिक-आर्थिक स्तर समूह

३- छात्र/छात्रा अध्यापक व्यक्तित्व विशेषताओं की व्याख्या

(अ) स्त्री-पुरुष समूह

(ब) आयु समूह

(स) अनुभव समूह

(द) सामाजिक-आर्थिक स्तर समूह

तथ्य संकलन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के परिक्षेत्र में बी0एड0 शिक्षा-दीक्षा देने वाले महाविद्यालयों को रखा गया है । सभी महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा अध्यापकों को तथ्य संकलन हेतु चुना गया है । बी0 एड0 संकाय में अभ्यर्थियों का चुनाव कम्प्यूटरायज्ड परीक्षण द्वारा किया जाता है , अतः शैक्षिक अभिरूचि रखने वालों का ही चुनाव होता है । इनके व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं का मूल्याँकन 16 पी0एफ0 §डॉ0 कपूर§ के द्वारा किया गया है । शिक्षक व्यक्तित्व किसी भी भाषा , धर्म , जाति , सम्प्रदाय , आदि के बन्धन में जकड़ा हुआ नहीं होता है , वह तो सिर्फ अपने शिक्षण कौशल के बल पर अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ाता है । वह किसी समूह से प्रभावित नहीं होता है , बल्कि स्वयं की विशिष्टता का विकास करके शिक्षण के प्रति समर्पित होने के भाव को प्रगट करता है ।

प्रस्तुत शोध का तथ्य संकलन सामूहिक रूप से किया गया है । शोधकर्ता प्रत्येक महाविद्यालय गया । वहाँ के प्राचार्य से अनुमति लेकर विभागाध्यक्ष से मिला और अपनी समस्या उनके सामने प्रस्तुत की । उन्होंने एक कमरे में छात्र/छात्रा §बी0एड0कक्षा§ को एकत्रित करके निर्देश दिये । फिर शोधकर्ता कक्षा में गया और 16 पी0एफ0 प्रश्नावली पुस्तिका को बाँट दिया । तत्पश्चात् कुछ सम्बन्धित निर्देश देकर कार्य प्रारम्भ करने को कहा । इसके पश्चात् जब कार्य सम्पन्न हो गया तो उनसे पुस्तिकायें एकत्रित कर लेते थे । इसके पश्चात् चाय-पान की व्यवस्था सीट पर ही की गई ताकि वे थकान को दूर कर लें और उन पर सामाजिक-आर्थिक स्तर प्रश्नावली का

भी तथ्य संकलन किया जा सके । 16 पी0 एफ0 की तरह से ही सामाजिक-आर्थिक स्तर प्रश्नावली को भी भरवाया गया । अतः कुल तथ्य संकलन में शोधकर्ता ने स्त्री/पुरूष दोनों ही समूहों में से सही 500 उत्तर पत्रिकाओं को चयनित कर लिया । साथ ही गलत और अपूर्ण पत्रिकाओं को नष्ट कर दिया गया । इसके पश्चात् 16 पी0 एफ0 की स्कोरिंग उसके मैनुअल के आधार पर की । इसी के साथ सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी की स्कोरिंग भी उसके मैनुअल के आधार पर की गई । अतः 16 पी0 एफ0 का तथ्य संकलन 500 छात्र/छात्रा अध्यापकों पर किया गया जिनमें 250 पुरूष एवं 250 स्त्री अध्यापक थे । इसके साथ ही आयु वर्ग 20 वर्ष - 30 वर्ष के अन्तर्गत 400 अध्यापक एवं आयु वर्ग 31 वर्ष से 40 वर्ष के अन्तर्गत 80 अध्यापकों पर तथ्य संकलन किया गया । शिक्षण अनुभव 5 वर्ष तक 45 तथा पाँच वर्ष से ऊपर 40 अध्यापक/अध्यापिकायें प्राप्त हुई । इसके साथ ही सामाजिक-आर्थिक स्तर पर प्रथम श्रेणी में ॥35॥ , द्वितीय श्रेणी में ॥25॥ , तृतीय श्रेणी में ॥180॥ , तथा चतुर्थ श्रेणी में ॥160॥ अध्यापक/अध्यापिकाओं पर तथ्य संकलन करके , स्कोरिंग मैनुअल के आधार पर किया गया । इसी को शोध कार्य का निदर्शन माना गया था ।

तथ्यों का वर्गीकरण :-

तथ्यों का संकलन करने और स्कोरिंग करने के पश्चात् शोधकर्ता ने विभिन्न प्रकार से तथ्यों का वर्गीकरण किया । अंकों का प्रथम रूप उस समय समाप्त हो जाता है जब उन्हें एकत्रित , या संग्रहीत कर लिया जाता है । इस रूप में वे इतने अधिक होते हैं कि उनको समझना , प्रयोग में लाना , एवं उनसे कोई निष्कर्ष निकालना बहुत ही जटिल होता है । इस विशाल अंक समूह या तथ्य

समूह को ऐसे ढंग से छाँटा जाता है , या रूप अथवा वर्गों में रखा जाता है कि उनका स्पष्ट आशय या अर्थ प्रगट हो जाये । इस प्रकार से सभी एकत्रित तथ्यों को अधिक सरल एवं बोधगम्य "साँख्यिकी वर्गीकरण" के द्वारा बनाया जाता है ।

विद्वतवर्ग ने वर्गीकरण को वस्तुओं की, उनकी सहायताओं और सम्बन्धों के अनुसार समूहों और वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया के रूप में माना है । ये इकाइयों की भिन्नता के बीच पाई जाने वाली एकता को प्रगट करता है ।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि तथ्य वर्गीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा फैली हुई सामग्री को व्यवस्थित किया जाताहै । इस व्यवस्था के आधार पर सम्पूर्ण सामग्री कुछ विशेष वर्गों में विभाजित कर ली जाती है । इसमें प्रत्येक वर्ग का विस्तार समान होता है । अतः समान वर्ग विस्तार के आधार पर विस्तृत सामग्री को संक्षिप्त रूप दे देना ही वर्गीकरण होता है । इसके द्वारा दो उद्दीपकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन को सरल बनाया जा सकता है । शोधकर्ता इसका प्रयोग साँख्यकीय विवेचना के लिये सुव्यवस्थित , सरल तथा निश्चित रूप से स्पष्ट करने के लिये करते हैं । इस तरह से तथ्यों का सही एवं उपयुक्त प्रयोग उद्देश्य पूर्ति हेतु किया जाता है ।

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्ता ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण देने वाले {छात्र/छात्रा} महाविद्यालयों का चयन किया; ताकि शोध कार्य में सामान्यीकरण स्थापित हो सके । इन महाविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र/छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षणों, यौन, आयु, अनुभव और सामाजिक-आर्थिक स्तर भिन्नता आदि परिवर्तियों का मूल्यांकन

किया गया है । इस प्रकार से शोधकर्ता जब तथ्यों का वर्गीकरण कर लेता है, तो फिर साँख्यकीय विश्लेषण प्रारम्भ करता है ।

तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या :-

प्रस्तुत अध्याय मुख्य रूप से बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में अध्यापक प्रशिक्षण देने वाले महाविद्यालयों के 500 छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षणों के अध्ययन हेतु एकत्रित किये गये तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या से सम्बन्ध रखता है । इसमें व्यक्तित्व लक्षणों का मापन डॉ० कपूर द्वारा विकसित 16 पी०एफ० प्रश्नावली द्वारा , एवं सामाजिक-आर्थिक स्तर का मापन डॉ० श्रीवास्तवा द्वारा विकसित प्रश्नावली के द्वारा किया गया है । इस प्रकार से तथ्य संकलन वैधता और विश्वसनीयता की ओर अग्रसर हो सका । शोध कार्य की वैज्ञानिकता सिर्फ तथ्य संकलन तक ही सीमित नहीं होती है, बल्कि तथ्यों के विश्लेषण की उद्देश्य परायणता एवं परिकल्पनाओं को परीक्षण क्षमता की पूर्णता पर निर्भर करता है ।

एक अध्यापक की सफलता उसके द्वारा सोचे गये तर्क एवं रुचि द्वारा किये गये शिक्षण पर निर्भर करती है । इसके लिये साँख्यकीय ज्ञान और इसका शिक्षा में प्रयोग जानना अति आवश्यक माना गया है । आज के वैज्ञानिक युग में कोई भी शोध कार्य साँख्यकीय ज्ञान के बिना संभव नहीं हो पाता है, क्योंकि इन विधियों के द्वारा कार्य में शुद्धता, निर्पेक्षता और सहीपन आसानी से लाया जा सकता है । "वोल्फ" महोदय के विचार में "प्राकृतिक घटनाओं में उसकी जटिलता तथा ऊपरी स्पष्टता के बावजूद, किसी नियम की खोज, विवेचना तथा समन्वय के द्वारा ही सम्भव है ।"

अतः साँख्यकी विधियाँ व्याख्या करने में और आसानी से निष्कर्ष निकालने में सहायता प्रदान करती है । शोधकर्ता को यह स्पष्ट करने में कोई शंका प्रतीत नहीं होती है कि साँख्यकी विधियों का प्रयोग किये बिना कोई भी प्रयोग कार्य एवं शोध कार्य नितान्त असम्भव होते हैं, और यदि सम्भव भी हुये तो उनमें वैज्ञानिक विशेषताओं का पूर्ण अभाव रहेगा ।

सामान्यतः शोधकर्ता प्रस्तुत अध्याय को चार उप-विभागों में बाँट कर अध्ययन करते हैं:- प्रथम-उप-विभाग के अन्तर्गत तथ्यों का संकलन तथा स्कोरिंग उपयुक्त परीक्षणों द्वारा किया जाता है, का वर्णन करते हैं । द्वितीय-उप-विभाग के अन्तर्गत वर्णनात्मक साँख्यकी के प्रयोग द्वारा तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या करते हैं । तृतीय-उप-विभाग के अन्तर्गत शोध में प्रयुक्त परिवर्तियों के बीच भिन्नता को जानने के लिये यूनिवैरिएट एनालैसिस ऑफ वैरियन्स का प्रयोग करके परिवर्तियों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है । चतुर्थ-उप-विभाग के अन्तर्गत शोध प्रयुक्त परिवर्तियों के बीच सम्बंध जानने के लिये स्त्री/पुरुष व्यक्तित्व विशेषताओं का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है ।

मध्यमान :-
-=-=-=-

शोधकर्ता तथ्यों का संग्रह करके, उनका समान वर्गों में वर्गीकरण करके तथा साँख्यकी में प्रस्तुत करके सरल बना लिया जाता है । इसके पश्चात इन अंकों के आधार पर एक ऐसा अंक मालूम कर लिया जाता है जो समस्त अंकमाला का प्रतिनिधि अंक कहलाता है । समान्यतः यह अंक माला के बीच में स्थित होता है, और इस अंक के आस-पास ही माला के अधिक अंक

रहते हैं । यह अंक समस्त पदों का सार होता है, और इसीलिये इसे माला का प्रतिनिधि माना जाता है । इसी को मध्यमान कहा जाता है ।

प्रमाणिक विचलन:-

वर्णनात्मक साँख्यिकी की एक माँप प्रमाणिक विचलन भी है । इसको प्राय: प्रमाप विचलन, मानक विचलन , प्रमाणिक विचलन और एस0 डी0, आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है । इसको विद्वान सर्वश्रेष्ठ विचलन माँप मानकर प्रयोग करते हैं । साँख्यिकी गणनाओं में इसका प्रयोग वर्ग की समजातीयता और विषम जातीयता को जानने के लिये किया जाता है । शोध कार्यों में और अन्य उच्च गणनाओं में इसका प्रयोग किया जाता है । इसीलिये शोधकर्ता मध्यमान की गणना करके माला के केन्द्रीय अंक का पता लगाता है और फिर वह प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके मध्यमान से माला के अंकों या तथ्यों के बिखराव या विस्तार अथवा फैलाव का पता लगाते हैं । इस प्रकार से प्रमाणिक विचलन किसी श्रेणी में विभिन्न पदों के समानान्तर मध्यमान से विचलन के वर्गों के योग का वर्गमूल होता है । इसका प्रतीकात्मक स्वरूप §6§ सिगमा भी प्रयोग में लाया जाता है ।

मानक त्रुटि :-

साँख्यिकी प्रविधियों की माँपों में कुछ न कुछ त्रुटि पाई जाती हैं । इस त्रुटि का आधार प्रतिचयन का आकार होता है । प्रतिचयन का आकार यह निश्चित करता है कि त्रुटि कम होगी या अधिक । यानी यदि प्रतिचयन का आकार छोटा होता है तो त्रुटि अधिक होगी और प्रतिचयन का आकार बड़ा होता है तो त्रुटि कम होगी । इस प्रकार से "त्रुटि से हमारा तात्पर्य यह है

कि माँप उस मूल्य से कुछ भिन्न होती है जो हम प्रतिचयन, समग्र की यथार्थ माँप से प्राप्त करते हैं ।" प्रत्येक प्रतिचयन का गठन एक समान पापूलेशन से लिया गया होता है, अतः हम आशा कर सकते हैं कि समस्त मध्यमान एक समान होंगे । माँपों में त्रुटि का कुछ अंश सदैव प्रवेश कर जाता है, जिस कारण, क्रमिक प्रतिचयनों के मध्यमान एक समान नहीं होते हैं । प्रतिचयन वितरण में इस प्रकार की त्रुटि को "सैम्पलिंग त्रुटि" कहा जाता है । साँख्यिकी विद्वानों ने निदर्शन त्रुटि को ज्ञात करने के लिये कुछ सूत्रों का निर्माण किया है । इनमें से एक सूत्र मानक त्रुटि का है । यह एक ऐसा प्रतिदर्शक है जो न्यादर्श से प्राप्त मध्यमान की विश्वसनीयता का प्राक्कलन करता है । इससे यह ज्ञात होता है कि सम्भावित कितनी मात्रा में न्यादर्श, समग्र के मध्यमान के प्रतिनिधिक है । अर्थात यदि हम न्यादर्श के मध्यमान को समग्र के मध्यमान के समान माने तो त्रुटि की कहाँ तक सम्भावना रहती है ।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य तैयार करना है । इसलिये इसमें तथ्य विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, और मानक त्रुटि , आदि का प्रयोग उपयुक्त नहीं जान पड़ा । इसका तथ्य विश्लेषण शोध कर्ता ने स्टैन्स के द्वारा किया है । प्रथमतः सभी तथ्यों को एकत्रित कर लिया, फिर स्टैन्स तालिका का प्रयोग करके प्रत्येक तथ्य को स्टैन्स में परिवर्तित कर लिया । फिर प्रत्येक व्यक्तित्व विशेषता के स्टैन्स का मध्यमान ज्ञात कर लिया और इस प्रकार से जो तथ्य सामने आये उनसे पार्श्वदृश्य ऀप्रोफायलऀ तैयार किये गये । इस प्रकार से शोधकार्य का उद्देश्य भी पूरा हुआ । जैसा कि विश्लेषण द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है :-

व्यक्तित्व विशेषताओं का विश्लेषण

शोधकर्ता ने बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य

TABLE: 4.1 Students-Teachers(General) on cattels 16 P.F. and their categories:

16 P.F.	DESCRIPTION	STUDENT-TEACHERS	
		Stens	Categories
A	Reserved v/s outgoing.	5.3	Average
B	Less intelligent v/s more intelligent	4.2-	Slt. Devt.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	4.3-	Slt. Devt.
E	Humble v/s assertive.	5.7	Average
F	Sober v/s happy go lucky.	3.9-	Stg. Devt.
G	Expedient v/s conscientious.	6.7	Slt. Devt.
H	Shy v/s venturesome	6.4+	Slt. Devt.
I	Tough minded v/s Tender minded.	3.2	Stg. Deviant
L	Trusting v/s Suspicious.	7.5	Stg. Deviant
M	Practical v/s Imaginative.	7.8	Stg. Deviant
N	Forthright v/s shrewd.	5.6	Average
O	Placid v/s Apprehensive.	5.2	Average
Q1	Conservative v/s experimenting.	8.2	Stg. Dviant
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.7	Average
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.8+	Slt. Devt.
Q4	Relaxed v/s tense	8.2	Stg. Deviant

AV. = Average

SLT.DEVT. = Slightly deviaent.

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

(+) Indicates above average

(-) Indicates below average

को जानने के लिये डॉ0 कपूर द्वारा प्रतिपादित 16 पी0एफ0 का प्रयोग करके व्यक्तित्व विशेषताओं से सम्बन्धित तथ्यों का एकत्रीकरण किया । इन तथ्यों § रा स्कोर्स§ को स्टैन्स टेबिल का प्रयोग करके स्टैन्स में परिवर्तित किया । इस प्रकार से प्रत्येक प्रकार की व्यक्तित्व विशेषताओं की स्थित का आँकलन करने के लिये 16 तत्वों के स्टैन्स का मध्यमान ज्ञात किया । यह स्टैन्स 1 से लेकर 10 तक समान अंतराल में फैले हुये हैं । इनमें स्टैन्स 5 व 6 को औसत माना जाता है , 4 से 7 तक कम विचलन तथा 2, 3, 8 और 9 को उच्च विचलन तथा 1 या 10 को उच्चतम विचलन के रूप में माना जाता है ।.

प्रस्तुत कार्य में व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य जानने के लिये शोधकर्ता द्वारा बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापकों की विशेषताओं का तथ्य विश्लेषण यौन, आयु, अध्यापन अनुभव और सामाजिक-आर्थिक स्तर,आदि परिवर्तियों के रूप में प्रस्तुत करता है :-

स्टैन्स तालिका 4.1 में बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापक और अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है । तालिका से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व विशेषता तत्व "ए", "ई", "एन", "ओ" और "क्यू2" आदि सामान्य रहे हैं । तत्व "क्यू1" और "क्यू4" में सबसे अधिक विचलन रहा है । तत्व बी,सी,एफ, आई, में ऋणात्मक तथा तत्व जी, एच, एल, एम, और क्यू3 में धनात्मक विचलन पाया गया है ।

बी0एड0 प्रशिक्षणरत सभी छात्र/छात्रायें सामान्य रूप में व्यक्तित्व विशेषताओं में सामान्य स्तर पर रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपनी मानसिक सोच को स्थिर बनाकर अध्यापन को व्यवसाय के रूप में ग्रहण किया है । इसके साथ ही उन्होंने अध्यापन अभिरुचि परीक्षण को भी अच्छे नम्बरों से पास किया है ।

स्टैन §5.3§ स्पष्ट करता है कि ये लोग शिक्षण व्यवसाय को गम्भीरता से ले रहे हैं ताकि एक सफल अध्यापक की भूमिका में स्वयं को पूर्ण रूप से स्थापित कर सकें । अतः व्यक्तित्व तत्व "ए"औसत रूप में रहा है । व्यक्तित्व तत्व "ई" §5.7§ स्टैन्स पर औसत पर ही रहा है । इसका मुख्य कारण है अध्यापक के स्वभाव में विनम्रता , कोमलता का होना तथा प्रभुत्व के भाव को स्थापित करना।इन दोनों ही विशेषताओं से वह कक्षा को मार्गदर्शन प्रदान करता है और पारिवारिक वातावरण प्रदान करता है । अतः दोनों ही विशेषतायें समान तत्व स्थापित कर रही है । तत्व "एन" जिसको "आर्टलिसनैस बनाम् श्रुरुडनैस" कहा गया है, भी औसत रूप से पाया गया है । इसका स्टैन्स §5.6§ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणरत अध्यापक/अध्यापिकायें भावनात्मक तथा व्यवहारिक पक्षों वाली होते हैं । इस प्रकार से वे समय-समय पर अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी व्यवहार बच्चों के साथ करते हैं ताकि कक्षा का सही विकास हो और शिक्षा विभाग के नियमों का पालन भी हो । ऐसा ही मत "जुंग" §1923§ का भी है । तत्व "ओ" का स्टैन्स §5.2§ रहा है जो सामान्य स्तर पर रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक के अन्दर प्रसन्न-चित्तता और विचारशीलता का समावेश होना चाहिये , ताकि वह कक्षा की समस्याओं पर सामान्य रूप से विचार कर सके और छात्रों को उस पर पूर्ण विश्वास स्थापित हो । तत्व "क्यू2" का स्टैन्स §5.7§ रहा है अध्यापकों की सामान्य स्थिति को दर्शाता है । इसका मुख्य कारण समूह निर्भरता बनाम आत्मनिर्भरता है । एक अध्यापक के लिये यह अति आवश्यक होता है कि वह समाज एवं राष्ट्र का हित देखते हुये कार्य करें और अपने अन्दर ऐसी विशेषताओं का विकास करें कि सभी लोग उसका महत्व समझें । इस प्रकार से अध्यापकों में आम नागरिक की विशेषताओं के साथ-साथ व्यवसायिक विशेषतायें भी हों ताकि उसे सभी पहचान सकें या वह उस क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दे सके ।

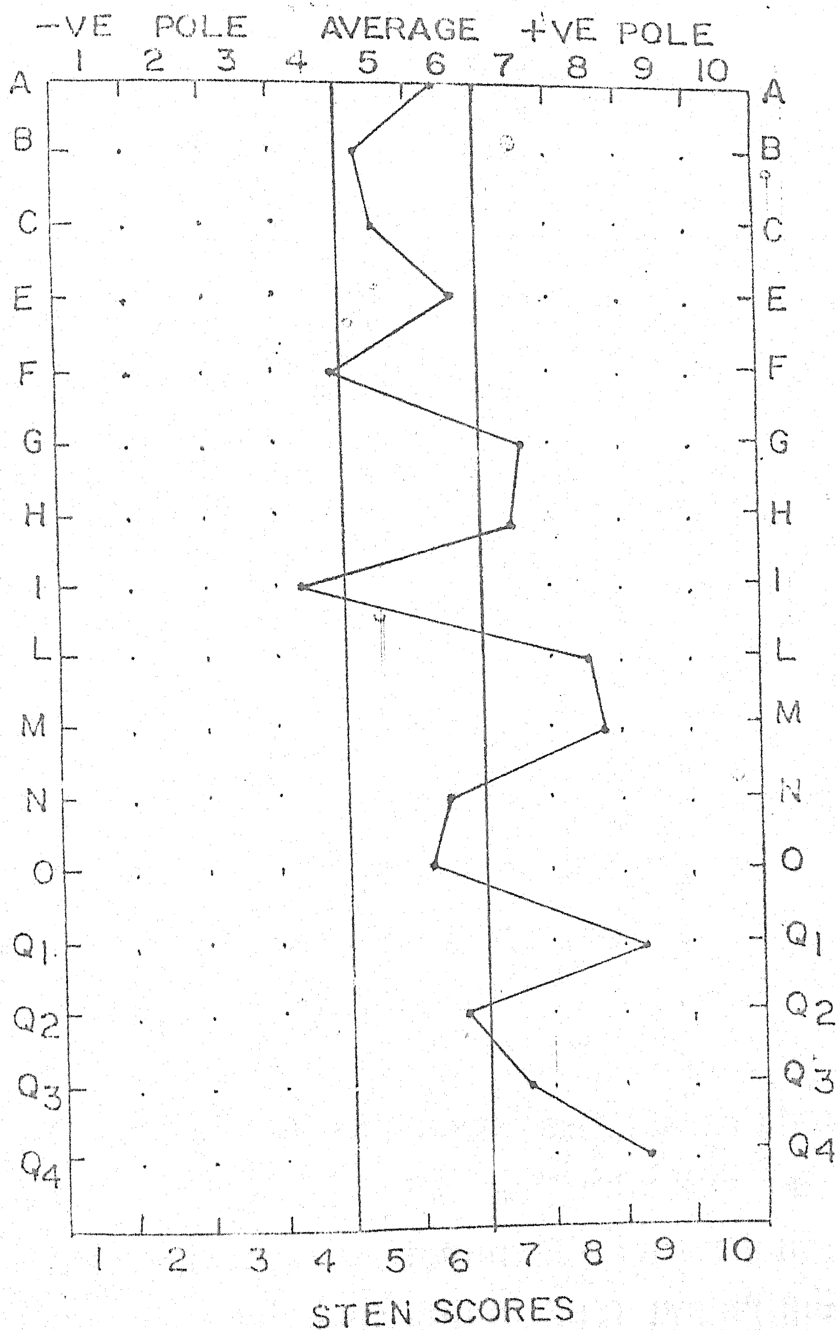


FIG.-1. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT, TEACHERS(GENERAL)

तालिका नं0 4.1 को देखने से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणरत अध्यापक/अध्यापिकाओं में ऋणात्मक विचलन §व्यक्तित्व विशेषताओं§ तत्व "बी , सी, एफ और आई", आदि में पाया गया है । इनके स्टैन्स क्रमशः 4.2 , 4.3 , 3.9 , और 3.2 रहे हैं । रेखाकृति से स्पष्ट होता है कि तत्व "बी" सामान्य स्तर से ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । यह तत्व अध्यापकों की बुद्धि क्षमता को प्रगट करता है । इस तत्व का ऋणात्मक विचलन स्पष्ट करता है कि या तो व्यक्ति नवीन कार्य के सीखने में धीमा है या उसमें बुद्धि की कमी है , या वह मस्तिष्क रोग के कारण अपनी क्रियाओं में कमजोर होता है । वर्तमान तथ्य संकलन प्रवेश परीक्षण पास किये छात्र/छात्रा अध्यापिकाओं पर किया गया है , अतः तत्व "बी" का ऋणात्मक विचलन बुद्धि की कमी तथा मानसिक रोग न होकर नवीन परिस्थिति के साथ समायोजन न कर पाने के कारण है । शिक्षण क्षेत्र की यह बिडम्बना है कि बी0 एड0 प्रशिक्षण के समय जिस प्रकार का शिक्षण बताया जाता है , प्रायः अध्यापक, अध्यापन व्यवसाय से जुड़ने पर उसको नहीं अपनाते हैं और रूढ़िगत को ही व्यवहार में लाते हैं । अतः इनके मन में कई प्रश्न उठते रहते हैं । यही जिज्ञासायें उनकी क्रियाशीलता को प्रभावित करती रहती हैं जिससे औसत से निम्न स्तर पर उनका तत्व "बी" रहा है । इससे उनकी अपरिपक्वता प्रगट होती है §विगी एवं हण्ट 1907§ जब कोई प्रशिक्षणकर्ता अपने पर्यावरण से तादात्म स्थापित नहीं कर पाता है तो उसमें नाड़ी सम्बन्धी विकार आने की सम्भावना होने लगती है §कैटिल , 1957 बी§ ।

इसके साथ ही इनमें तत्व "सी" स्टैन §4.3§ स्पष्ट करता है कि प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा अध्यापक भाव प्रधान होते हैं । इन पर निराशाओं का प्रभाव कम पड़ता है । ये असन्तोषजनक परिणामों के फलस्वरूप परिस्थिति से भयभीत रहते हैं , निन्दाओं से परेशान होते हैं , और मनोवैज्ञानिक अवरोधों पर विजय प्राप्त नहीं कर पाते हैं । अतः शिक्षक का भावनात्मक होना

समस्याजन्य होता है । इसी को "थार्नडायक" महोदय ने "सुख-दुःख" की मनःस्थिति माना है । "एफ" तत्व का स्टैन्स {3.9} है । इस तत्व से व्यक्तियों की गम्भीरता और चतुरता , आदि विशेषताओं का पता लगाया जाता है । ऐसे अध्यापक अन्तर्मुखी , स्वनिर्णयी और नियंत्रित व्यवहार वाले होते हैं । इनको अच्छा और विश्वसनीय व्यक्तित्वों के रूप में माना जाता है । एक अध्यापक अपने भविष्य की योजनाओं को बनाता है , अपनी बौद्धिकता में परिवर्तन लाता है और शिक्षण कौशल को कलात्मक रूप प्रदान करके निखार लाता है , ताकि वह अच्छा शिक्षक बन सके । तत्व "आई" स्टैन्स {3.2} रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र/छात्रा अध्यापक प्रशिक्षण से व्यवहारिक, यथार्थवादी , प्रभुत्वशाली , आत्मनिर्भर , और उत्तरदायी गुणों को अपने व्यक्तित्व में धारण करते हैं ताकि वे शिक्षा के क्षेत्र को अपना योगदान दे सकें । इसीलिये कभी-कभी किसी अध्यापक के बारे में सुनने को मिलता है कि वह शनकी है , जड़ है , लेकिन पढ़ाने में अच्छा है । तत्व "आई" का ऋणात्मक विचलन ही अध्यापक के विकास के लिये उपयुक्त माना जाता है । इससे बच्चों में यथार्थ के प्रति रुचि , आत्मनिर्भरता के प्रति लगन , और अनुशासन के प्रति प्रभुत्वशीलता आदि गुणों का विकास होता है जो उनके समग्र एवं संतुलित व्यक्तित्व विकास का आधार बनते हैं ।

धनात्मक विचलन का प्रमुख व्यक्तित्व तत्व "क्यू1 और क्यू4" है । इनके स्टैन्स क्रमशः 8.2 , 8.2 हैं । तत्व क्यू1 का धनात्मक विचलन स्पष्ट करता है कि अध्यापक बौद्धिक मामलों में रुचि लेता है । वह पुराने और नवीन नियमों में साम्यता खोजता है ताकि जो उपयुक्त और सार्थक हों उनको ग्रहण किया जाये । ये लोग स्वतन्त्र विचारों के सहृदयी होते हैं । इसका प्रमुख कारण है अध्यापक का अस्तित्व । अध्यापक एक चेतनात्मक , भाव प्रधान प्राणी होता है जो कल्पनाओं में नहीं जीता है बल्कि प्रयोगवादी बनकर जीता है । इस

प्रकार से समस्याओं का समाधान , शिक्षानीति या विधि को लागू करना बच्चों के हित में होती है । तत्व क्यू4 का धनात्मक होना स्पष्ट करता है कि अध्यापक परिश्रमी है , लेकिन तनावयुक्त है । इसका कारण है वर्तमान और पुरातन मूल्यों में समायोजन की कमी । शिक्षक कभी-कभी व्यक्तित्व की प्राचीन धारणा को लेकर तनावग्रस्त हो जाता है । वह वर्तमान को स्वीकार करने और उसके साथ सामंजस्य करने में असफल रहता है । इसी कारण वह अपनी शक्ति का प्रयोग वर्तमान में नहीं कर पाता है । तत्व "एल" स्टैन्स §7.5§ तथा तत्व "एम" स्टैन्स §7.8§ से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अपनी राय को पसन्द करता है और स्वयं के आत्म को ही सन्तुष्ट करना चाहता है । वह आन्तरिक आकाँक्षाओं का दास होता है । इसका मुख्य कारण है कि अध्यापक का अपना विचार , जिसके तहत वह भविष्य में एक "अध्यापक व्यक्तित्व" विकसित करना चाहता है । अध्यापक को स्वचिन्तन करना, अपनी राय पर कायम रहना , कक्षा के विकास की दिशा निर्धारित करना और सामूहिकता में विश्वास न करना , आदि विशेषताओं में निष्णात होना पड़ता है । तत्व क्यू3 स्टैन्स §6.8§ , तत्व "जी" स्टैन्स §6.7§ , तथा तत्व "एच" स्टैन्स §6.4§ , आदि का धनात्मक विचलन रहा है । इसका मुख्य कारण है कि अध्यापक कक्षा में अनुशासन स्थापित करके ज्ञान देता है ताकि बालक शारीरिक और मानसिक रूप से ज्ञान को ग्रहण करने के लिये तत्पर रहे §थार्नडायक , 1923§ । इसी तरह से वह बच्चों के जीवन में अनुशासन स्थापित करना भी आवश्यक मानता है । तत्व "जी" का धनात्मक विचलन स्पष्ट करता है कि अध्यापक चरित्रवान हो , कर्तव्यपरायण हो , उत्तरदायी हो , और सादा जीवन उच्च विचार का पालन करने वाला हो । इन सभी विशेषताओं का वर्णन "ब्रे" महोदय ने भी किया है । तत्व "एच" की प्रधानता का प्रमुख कारण शिक्षण क्षेत्र की समस्याओं के साथ लड़ना , नियमों पर दृढ़ रहना , स्वतन्त्र विचार स्थापित करना , क्रियाशीलता में विश्वास करना, आदि से है । अतः अध्यापक को बच्चों के अचेतन मन से समाज के विश्वासों से, साथियों के चिन्तन से और स्वविवेक , आदि के साथ लड़ना होता है ताकि

TABLE: 4.2 Students-Teachers(Male) on cattels 16 P.F. and their categories:

16 P.F.	DESCRIPTION	STUDENT-TEACHERS	
		Stens	Categories
A	Reserved v/s outgoing.	5.4	Average
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.1-	Slt. Devt.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	4.3-	Slt. Devt. Av.
E	Humble v/s assertive.	5.5	Av.
F	Sober v/s happy go lucky.	4.9	Av.
G	Expedient v/s conscientious.	6.2	Av.
H	Shy v/s venturesome	6.8	Slt. Devt.
I	Tough minded v/s Tender minded.	7.8	Slt. Devt.
L	Trusting v/s Suspicious.	5.5	Av. Sl.D.
M	Practical v/s Imaginative.	6.2	Av. Sl.D.
N	Forthright v/s shrewd.	6.7	Slt. Dev.
O	Placid v/s Apprehensive.	5.1	Av. -Sl.D.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.8	Av. -Sl.D.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.3	Av. -Sl.D.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	8.1	Stg.Devt. Av.
Q4	Relaxed v/s tense.	7.2	Stg.Devt. Av.

AV. = Average (+) Indicates above average

SLT.DEVT. = Slightly deviaent. (–) Indicates below average

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

शिक्षा का विकास सही रूप में विकसित किया जाता रहे ।

स्टैन्स तालिका 4.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषता तत्व "ए , ई , एफ , जी , एल , एम , ओ , क्यू1 और क्यू2 , आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । तत्व आई , क्यू3 और क्यू4 में सबसे अधिक विचलन रहा है । इन तत्वों में "बी और सी"में ऋणात्मक विचलन रहा है । यानी व्यक्तित्व के ये तत्व सामान्य स्तर से नीचे स्तर पर रहे हैं । इसके साथ ही तत्व "एच , आई , एन , क्यू3 , और क्यू4 आदि में धनात्मक विचलन रहा है , यानी सामान्य स्तर से उच्च स्तर पर पाये गये हैं । इन तत्वों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुरूष वर्ग में व्यक्तित्व विशेषतायें - गम्भीरता , पृथकता, चतुरता , शांतिप्रियता , मिलनसारिता , स्नेहीपन , सरलता , प्रतिस्पर्धा , चेतनता , नियमबद्धता , यथार्थवादिता , अग्रगामी , स्वाभाविकता , विचारशीलता और घमण्डी , आदि का स्तर सामान्य रहा है । जबकि सामान्य से कम स्तर पर भावात्मकता , स्वार्थपरता , निराशा , परिपक्वता, कम बौद्धिकता , आरामतलबी , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें पाई गई हैं । साथ ही साथ इनमें सामान्य स्तर से अधिक स्तर पर , साहसिकता , क्रियाशीलता , स्वच्छंदता , बौद्धिक लचीलापन , निर्भरता , अति सुरक्षा , भावात्मकता , चतुरता , साँसारीपन , मर्मज्ञ , आत्मनिर्भर , स्वनिर्णयी , शक्तिशाली , समाज प्रिय , तनावयुक्त , परिश्रमी , और वासनाओं के वशीभूत रहने , आदि सम्बन्धी व्यक्तित्व विशेषतायें पाई गई हैं ।

पुरूष अध्यापकों का रेखाचित्र नं0 2 देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य से उच्च स्तर का विचलन अधिक पाया गया है । इसका मुख्य कारण प्रभुत्व के भाव की अधिकता हो सकती है । प्रत्येक पुरूष किसी न किसी रूप में अपने पुरूषत्व के द्वारा आत्म सम्मान को स्थापित करता है । परिणाम स्वरूप सबसे अधिक धनात्मक विचलन तत्व क्यू3 में रहा है जिसका स्टैन्स

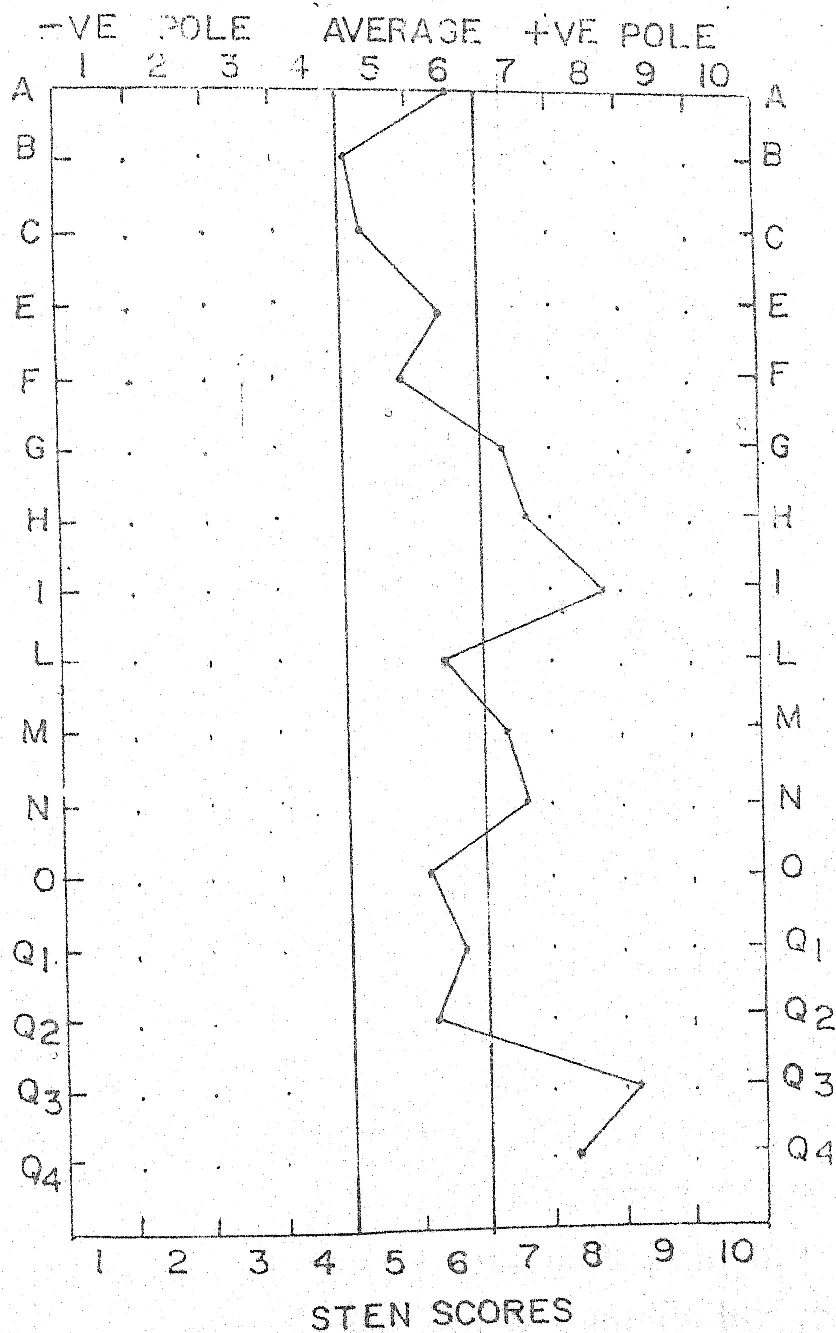


FIG.-2. PESONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS (MALE)

समाजप्रियता , आत्म सम्मान , स्वविवेक , नेतृत्व क्षमता , आदि व्यक्तित्व गुणों का विकास पाया जाता है । प्रस्तुत शोध में पुरुष छात्र-अध्यापकों में कक्षा नियन्त्रण , जीवन नियन्त्रण (अनुशासन), आदि का भाव आत्म सम्मान को स्थापित करने के लिये पाया गया है । जीवन को अच्छा बनाने के लिये छात्रों को शारीरिक व मानसिक संयम का पालन करना आवश्यक होता है । बिना इसके उनकी आदतें , रूचियाँ और मनोवृत्तियों की स्थापना सही दिशा में नहीं हो पायेगी। इसके साथ ही तत्व क्यू4 स्टैन्स (7.2) भी धनात्मक रूप से सामान्य से उच्च स्तर पर पाया गया है । इसका मुख्य कारण है कि अध्यापक व्यवसाय के योग्य स्वयं को स्थापित करना तथा राष्ट्र के नागरिकों को सही दिशा देना । भौतिकवादी युग का प्रभाव अध्यापक को तनावग्रस्त बनाता है । वर्तमान शिक्षा की विधियाँ , सुधारात्मक अनुशासन , दण्ड का अभाव व प्रशासन का शिक्षा की ओर उचित ध्यान न देना , आदि समस्याओं का सामना अध्यापक को करना पड़ता है । अतः उसमें क्षणिक रूप से निराशा , तनाव, पलायनवादिता , आदि विकार उपस्थित हो जाते हैं । तत्व "आई" स्टैन्स (7.8) , तत्व "एच" स्टैन्स (6.8) , और तत्व "एन" स्टैन्स (6.7) , आदि से स्पष्ट होता है कि अध्यापक स्वनिर्णयी होता है , फिर भी वह सरकारी नियमों - विद्यालयों के नियमों तथा प्रबन्ध तन्त्र के नियमों , आदि पर निर्भर रहता है । अतः वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करता है जिससे उसका पद असम्मान या अपमान प्राप्त करें । फिर भी , वह साहस के साथ अपने कार्य को पूरा करता है । वह क्रियाशीलता , और रचनात्मक कार्यों में स्वयं को संलग्न रखता है जिससे उसमें चतुरता और सांसारिक व्यवहारिकता आ जाती है । इसके विपरीत तत्व "बी" एवं "सी" में ऋणात्मक विचलन रहा है। इसका मुख्य कारण प्रशिक्षण का भय तथा नवीन ज्ञान को सीखने में धीमी गति का होना है । बौद्धिकता का पूर्ण

TABLE: 4.3 Students-Teachers(Female) on cattels 16 P.F. and their categories:

16 P.F.	DESCRIPTION	STUDENT-TEACHERS	
		Stens	Categories
A	Reserved v/s outgoing.	4.7	Av.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	7.2	Slt. Devt.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	5.6	Av.
E	Humble v/s assertive.	5.4	Av.
F	Sober v/s happy go lucky.	5.6	Av.
G	Expedient v/s conscientious.	6.2	Av.
H	Shy v/s venturesome.	7.3	Slt. Devt.
I	Tough minded v/s Tender minded.	6.7	Slt. Devt.
L	Trusting v/s Suspicious.	4.5-	Slt. Devt.
M	Practical v/s imaginative.	6.9	Slt. Devt.
N	Forthright v/s Shrewd.	7.2	Stg. Devt.
O	Placid v/s Apprehensive.	3.2-	Stg. Devt.
Q1	Conservative v/s experimenting.	3.6-	Stg. Devt.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	4.2-	Slt. Devt.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	5.6	Av.
Q4	Relaxed v/s tense.	6.1	Av.

AV. = Average

SLT. DEVT. = Slightly deviaent.

STG. DEVT. = Strongly deviaent.

(+) Indicates above average

(-) Indicates below average

प्रगटीकरण व्यक्ति तभी कर पाता है जब वह किसी क्रिया में परिपक्वता हासिल कर लेता है । अतः शिक्षणकार्य को सीखते समय मानसिक अस्थिरता का होना , रूचि का अभाव होना , उद्देश्य प्राप्ति में देरी होना , आदि के कारण प्रशिक्षणरत अध्यापकों में निराशा के लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं । जैसे-जैसे वे सीखने में अग्रसर होते जाते हैं तो अपने कार्य में परिपक्व भी होते रहते हैं । अतः पुरूष छात्र अध्यापकों में बौद्धिकता का सही प्रयोग न होना और संवेगात्मक अस्थिरता का होना स्वाभाविक है ।

स्टैन्स तालिका नं0 ४.3 स्त्री छात्र-अध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषताओं की स्थिति को प्रगट करती है । इनके तत्व "सी , ई , एफ , जी , और क्यू3 , क्यू4 , आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । सामान्य से कम स्तर पर "ए , एल , ओ , क्यू1 , क्यू2 आदि तत्व रहे हैं जो ऋणात्मक विचलन प्रगट करते हैं । साथ ही सामान्य से अधिक स्तर पर तत्व "बी , एच, आई , एम , एन , आदि रहे हैं जो सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन स्थापित करते हैं ।

सम्पूर्ण संसार में स्त्री-पुरूष समानता को सिद्धान्त रूप में स्वीकार किया जा चुका है । आज के शिक्षा शास्त्री छोटी कक्षाओं यानी प्राथमिक स्तर पर स्त्री-अध्यापिकाओं पर ही जोर देते हैं । शिक्षा रिपोर्ट §1986§ का भी यही मत रहा है । अतः व्यवसाय और नौकरी के क्षेत्र में स्त्री समुदाय भी साहस के साथ प्रारम्भ हो चुका है । प्रस्तुत शोध कार्य में प्रशिक्षणरत अध्यापिकाओं में सबसे अधिक ऋणात्मक विचलन तत्व "ओ" और "क्यू1" में पाया गया है । तत्व "ओ" में सामान्य स्तर से कम स्तर प्राप्त करने से व्यक्ति में गम्भीरता , प्रसन्नचित्त , विश्वासी , निर्मल , और स्वविवेकी , आदि विशेषतायें

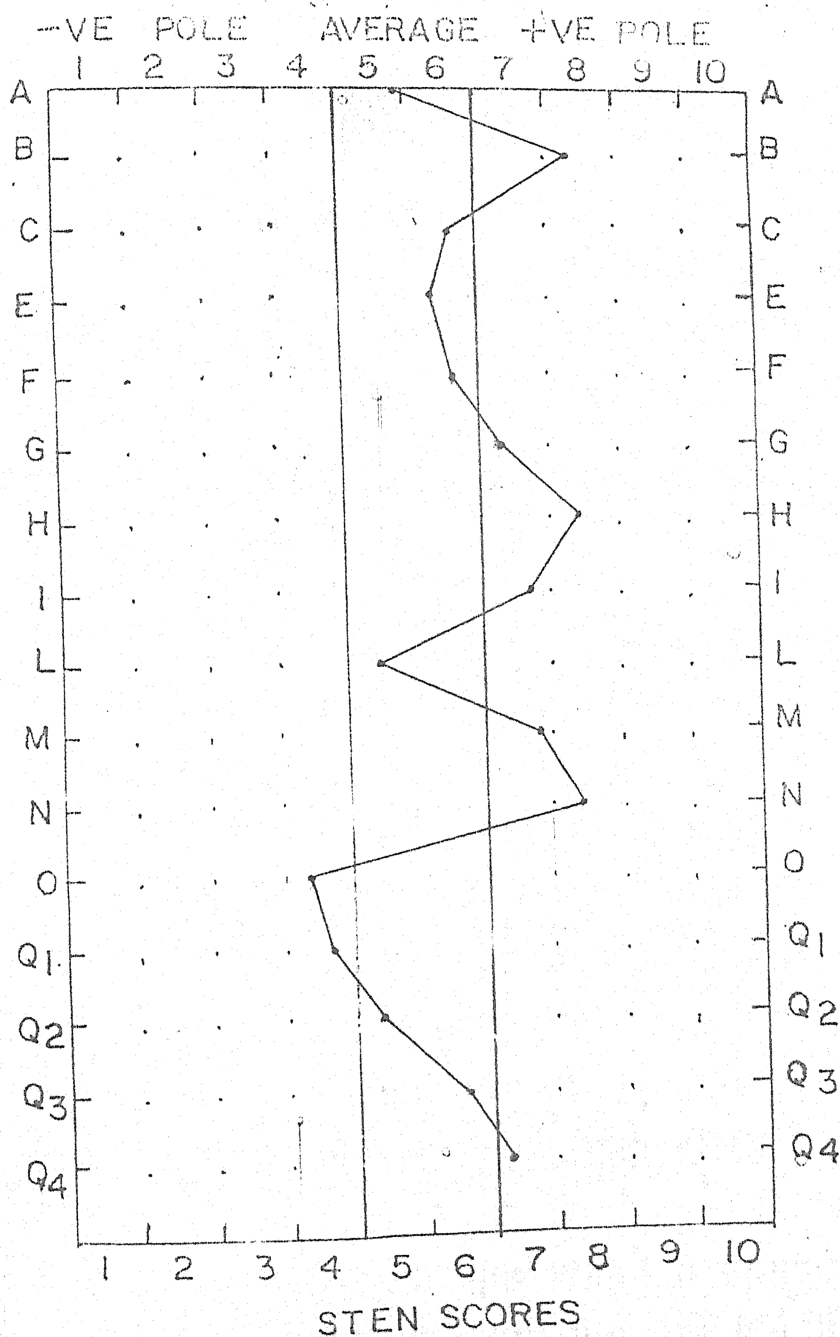


FIG.-3. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS (FEMALE)

आवश्यक होती हैं क्योंकि उन्होंने अपने को नौकरी के लिये मानसिक रूप से तैयार कर लिया है , वह स्वयं को नौकरी करके ही सुरक्षित और सम्मानीय महसूस करती है । इसीलिये वे विश्वास के साथ अपने कार्य को भली प्रकार से करने को तैयार हुई हैं । तत्व "क्यू।" स्टैन्स {3.6} का तात्पर्य "रूढ़िवादी बनाम रैडिकलिज्म" से है । स्त्री-अध्यापिकाओं में रूढ़िवादिता , सम्मानीय विचार , प्रथाओं से उत्पन्न समस्याओं को सहन करना आदि विशेषतायें होती हैं । ये लोग धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों में बौद्धिक चिन्तन नहीं करती हैं बल्कि जैसा चल रहा है, ठीक ही है, मानकर क्रियाशील रहती है । इसका कारण उनका स्वभाव और पारिवारिक प्रशिक्षण हो सकता है । स्त्रियाँ कभी भी आलोचना का शिकार नहीं बनना चाहती हैं क्योंकि वे स्वभाव से शालीन और मर्यादायुक्त रही है । भारतीय परिवार की स्त्री का प्रशिक्षण सीमाबद्ध रहा है । वह अपनी सीमा को जानती है और उसको तोड़कर कोई भी कार्य नहीं करती हैं । अतः उनका रूढ़िवादी होना आवश्यक प्रतीत होता है । तत्व "क्यू2" स्टैन्स {4.2} रहा है । इसका अर्थ है - समूह निर्भरता । इसका तात्पर्य है कि ये लोग स्वय को समूह का एक हिस्सा मानती हैं , एक ही आवाज को सहायता देती हैं , न कि स्वयं की बौद्धिकता को प्रगट करके समूह निर्भरता को भंग करें । इसका मुख्य कारण है समाज की शिक्षा । भारतीय समाज में स्त्री को देवी का सम्मान दिया गया है । उसकी रक्षा का भार पिता , भाई , पति पर होता है । इसीलिये प्रत्येक स्त्री स्वयं को आत्म निर्भर होते हुये भी शालीनता के कारण समाज पर , समूह पर , समुदाय पर स्वयं को मानती है । इसके अलावा वे स्वतन्त्रता को उच्छृंखलता मानती हैं जो उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाती है । इसके साथ ही तत्व "एल" स्टैन्स {4.5} का अर्थ होता है विश्वसनीयता । ऐसे लोगों में

विश्वसनीयता , ईर्ष्यामुक्ति , प्रसन्नता , समूह में विश्वास करना , किसी से प्रतिस्पर्धा न करना , आदि विशेषतायें देखने को मिलती हैं । स्त्री अध्यापिकाओं में ये विशेषतायें वातावरण को अच्छा बनाने के लिये विकसित होती हैं । क्योंकि "थार्नडायक" §1925§ ने उन्नति के लिये सहयोग और प्रतिस्पर्धा को मूलमन्त्र माना है । शोध प्रयुक्त स्त्री प्रशिक्षणार्थियों में दोनों ही बातों का विकास किया जाता है । इस प्रकार से आपस में विश्वास भी स्थापित होता है और भाई-चारे का भाव भी विकसित होता है । साथ ही अपनी-अपनी उन्नति सहयोग के साथ करते हैं , न कि ईर्ष्या के साथ ।

स्त्री-अध्यापिकाओं में सबसे अधिक धनात्मक विचलन व्यक्तित्व तत्व "एच" §7.3§ ,"बी" §7.2§ , तथा "एन" §7.2§ , आदि में रहा है । इस का तात्पर्य है कि वे अध्यापन व्यवसाय में साहस का परिचय दे रही हैं, अपनी बौद्धिकता का सही प्रयोग कर रही हैं , तथा चतुरता के साथ अधिक व्यवहारिक हो रही हैं । इसका मुख्य कारण अपने मन से असुरक्षा की भावना को निकाल देना तथा समस्याओं पर विजय प्राप्त करने का साहस जुटाना जो उनको आत्मबल प्रदान करता है । संसार के परिवर्तन स्पष्ट करते हैं कि किसी देश की स्त्री बौद्धिकता में पुरूष से कम नहीं हैं, अतः उसको अपनी मानसिक क्षमता का प्रयोग करके अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहिये ताकि समाज , राष्ट्र , और संसार का भला हो सके । इसी लिये उनको प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिये अधिक उपयुक्त माना गया है । इसके साथ-साथ वे अधिक चतुर एवं व्यवहारिक इसलिये होती जा रही हैं कि उनमें चिन्तन एवं तार्किक योग्यता अधिक होती है । वे किसी भी समस्या पर धैर्य के साथ विचार करतीं हैं और सही हल को खोज कर समस्या समाधान करती हैं । वे भावात्मक होती हैं लेकिन बच्चों की अच्छाई के लिये भावात्मक पक्ष का प्रयोग नहीं करती हैं । वे तनावपूर्ण पर्यावरण को सहज में ही सामान्य बनाने में समर्थ होती हैं । तत्व "आई" §6.7§ , और तत्व "एम" §6.9§

भी सामान्य से उच्च रहे हैं । इसका तात्पर्य है कि स्त्री-अध्यापिकाओं में रचनात्मक प्रवृत्ति के प्रति सोच, और काल्पनिक विचार धारायें अधिक होतीं हैं तथा वे सौन्दर्यपूर्वक मूल्यों में विश्वास करती हैं और कल्पना जगत में विचरण करती हैं । वे अपने समूह के प्रति चेतनात्मक व्यवहार नहीं रखती हैं बल्कि जो हो रहा है उसी पर विश्वास कर लेती हैं । वे स्वयं को अन्तः प्रेरित पाती है जो उनको सतत क्रियाशील बनाये रखता है ।

स्टैन्स तालिका §4.2 और 4.3§ का अवलोकन करने से पुरुष-अध्यापकों और स्त्री-अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व लक्षणों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है । यदि हम आकृति नं0 2 को देखें तो दोनों समूहों §प्रशिक्षणार्थी§ की व्यक्तित्व विशेषताओं की तुलना स्पष्ट होती है । दोनों वर्गों में व्यक्तित्व तत्व "ए , ई , एफ , जी , सामान्य स्तर पर पाये गये , सामान्य से उच्च स्तर पर तत्व "एच , आई, एन"तथा सामान्य से निम्न स्तर पर तत्व असमान पाये गये हैं । यदि ऋणात्मक विचलन देखें तो पायेंगे कि पुरुष वर्ग तत्व"बी" §4.1§ ,"सी" §4.3§ , आदि में सामान्य से कम स्तर रखता है , जबकि स्त्री वर्ग तत्व "एल" §4.5§ ,"ओ" §3.2§ ,"क्यू1" §3.6§,एवं "क्यू2" §4.2§ में सामान्य से कम स्तर रखता है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों के व्यक्तित्वों में समानता अधिक है और असमानता कम है । स्त्री-अध्यापिकाओं में ऋणात्मक विचलन का मुख्य कारण रुढ़िवादिता , संस्कार भावना , परिवार पर निर्भरता , और दूसरों पर विश्वास न करना आदि का परिणाम है । भारतीय समाज की बनावट , सभ्यता एवं संस्कार तथा स्वतन्त्रता का सीमित भाव उनमें आत्म निर्णय लेने में बाधक होता है जिससे उनके मन को अशाँन्ति मिलती है । वैज्ञानिक युग में पुरुष के व्यक्तित्व की परिभाषा आज भी वही है जो प्राचीन समय में मान्य थी । इसीलिये शीघ्रातिशीघ्र परिस्थिति के साथ समझौता नहीं कर पाता है , और स्वयं को असामान्य महसूस करता है ।

TABLE: 4.4 Students-Teachers (Age 20 to 30 & 31 to 40 years) on cattels 16 P.F. and their categories:

16 P.F.	DESCRIPTION	STUDENTS				Interpretation.
		Stens 20 to 30 years (N=400)	Categories	Stens 31 to 40 years	Categories	
A	Reserved v/s outgoing.	5.3	Av.	5.8	Av.	n.s.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	3.1-	Stg.Devt.	4.3-	Slt.Dev.	0.05
C	Emotionally less stable v/s emotion -ally stable.	4.3-	Slt.Devt.	4.5-	Slt.Dev.	n.s.
E.	Humble v/s assertive.	5.8	Av.	5.7	Av.	n.s.
F	Sober v/s happy go lucky.	3.8-	Stg.Devt.	3.9-	Slt.Devt.	n.s.
G	Expedient v/s conscientious.	4.6-	Slt.Devt.	5.7	Av.	n.s.
H	Shy v/s venture some.	6.5	Slt.Devt.	6.8	Slt.Devt.	n.s.
I	Tough minded v/s Tender minded.	5.6	Av.	5.7	Av.	n.s.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.4	Slt.Devt.	7.2	Slt.Devt.	n.s.
M	Practical v/s Imaginative.	5.8	Av.	5.9	Av.	0.05
N	Forthright v/s shrewd.	5.9	Av.	5.8	Av.	n.s.
O	Placid v/s Apprehensive.	5.4	Av.	6.1	Av.	0.01
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.7	Av.	6.2	Slt.Devt.	n.s.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	6.4	Slt.Devt.	7.1	Slt.Devt.	0.01
Q3	Undisciplined v/s controlled.	7.4	Slt.Devt.	7.2	Slt.Devt.	n.s.
Q4	Relaxed v/s tense.	4.2-	Slt.Devt.	4.3-	Slt.Devt.	0.01

AV. = Average

SLT.DEVT. = Slightly Deviaent.

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

(+) Indicates above average.

(-) Indicates below average.

उदाहरणार्थ कोई छात्र कक्षा में अनुशासनहीनता करता है तो छात्र-अध्यापक उसको शारीरिक दण्ड देता है और उसी पर छात्रा-अध्यापिका उसको सुधारात्मक दण्ड देती है और प्यार एवं सहानुभूति भी दिखाती है । अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि छात्र/छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व लक्षणों में समानता अधिक प्रतीत होती है भिन्नता कम ।

स्टैन्स तालिका नं0 4.4 में आयु की भिन्नता का शिक्षक व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है [और उनमें किन-किन व्यक्तित्व विशेषताओं का विकास होता है [का विश्लेषण किया गया है । इसमें आयु 20 वर्ष से 30 वर्ष तक का एक समूह और आयु 31 वर्ष से 40 वर्ष तक का द्वितीय समूह स्थापित किया गया है तथा प्रत्येक के व्यक्तित्व लक्षणों को स्पष्ट किया गया है ।

छात्र/छात्रा अध्यापकों के आयु के प्रथम समूह में तत्व "ए" , ई , आई , एम , एन , ओ , क्यू1 आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं जबकि तत्व बी , सी , जी , क्यू4 आदि ऋणात्मक विचलन में हैं तथा तत्व एच , एल , क्यू2 , और क्यू3 , आदि धनात्मक विचलन में रहे हैं । इसमें उच्च ऋणात्मक विचलन तत्व "बी" में तथा उच्च धनात्मक विचलन तत्व "क्यू3" में पाया गया है ।

आयु के द्वितीय समूह में तत्व ए, ई, जी, आई, एम, एन , ओ आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । ऋणात्मक विचलन तत्व, बी , सी , एफ , क्यू4 में पाया गया है । जबकि तत्व क्यू1 , क्यू2 , और क्यू3 में धनात्मक विचलन रहा है । इसमें उच्च ऋणात्मक विचलन तत्व "एफ" स्टैन्स §-3.9§ में रहा है । उच्च धनात्मक विचलन तत्व क्यू3 §स्टैन्स+ 7.2§ में रहा है ।

तालिका 4.4 को देखने से स्पष्ट होता है कि आयु के प्रथम समूह और द्वितीय समूह के व्यक्तित्व शील गुणों में अधिक समानता स्थापित है । दोनों ही समूहों में सामान्य स्तर पर तत्व"ए , ई , आई , एम , एन , ओ" रहे हैं । सिर्फ तत्व "जी" ऐसा है जो प्रथम समूह में सामान्य से ऋणात्मक विचलन लिये हुये है । इसका मुख्य कारण परिस्थिति या समूह का प्रभाव हो सकता है । साथ ही साथ यह आयु उत्तेजना , तनाव तथा हीरोइज्म वाली होती है । इसमें सुपर ईगो कमजोर होता है और आयु की विशेषतायें अपना आक्रामक रुख प्रदर्शित करती है । यही तत्व द्वितीय समूह में सामान्य स्तर पर रहा है । इस तत्व की विशेषतायें-उपयुक्तता, नियमबद्धता, कृतज्ञता, सक्रीयता, उद्यमी, गम्भीर , चरित्रवान , कर्त्तव्यपालन , साफगोई, नैतिकता , मेहनती , आदि होती है । आयु वर्ग 31 वर्ष से लेकर 40 वर्ष के छात्र/छात्रा अध्यापकों में ये विशेषतायें सामान्य रूप से पाई गई हैं , क्योंकि यह आयु वर्ग जीवन की स्थिरता और स्वावलम्बन को प्राप्त करके सामान्य जीवन व्यतीत करने लगता है । उनका लक्ष्य स्पष्ट एवं स्थिर हो जाता है । वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एक ही दिशा में लगाना प्रारम्भ करता है । इसी लिये वह सन्तुष्ट एवं स्वतन्त्र दिखाई पड़ता है ।

छात्र/छात्रा अध्यापकों की आयु में दोनों समूहों में ऋणात्मक विचलन में समानता है , लेकिन एक तत्व में भिन्नता स्थापित हुई है । प्रथम समूह में उच्चतम ऋणात्मक विचलन तत्व "बी" में पाया गया जिसका स्टैन्स (3.1-) रहा है । यह तत्व बौद्धिक एवं मानसिक क्षमता से सम्बन्ध रखता है । तत्व "बी" के अन्तर्गत लक्षण विस्तार कम बौद्धिकता से अधिक बौद्धिकता तक आते हैं । बुद्धि जन्म से प्राप्त होती है । इसका प्रयोग सकारात्मक या नकारात्मक उपादेयता प्रदान करता है ।जब यह तत्व कम बौद्धिक क्षमता प्रगट करता है तो व्यक्ति के अन्तर्गत सीखने की क्षमता कम होती है , वह धारणा

में भी कमजोर हो जाता है । प्रस्तुत रूप में यह तत्व कमजोर स्थिति में पाया गया है । इसके कारण आयु वर्ग , असुरक्षा , रुचि अनुसार व्यवसाय न मिलना , आदि भी हो सकते हैं । आयु वर्ग 20 से 30 वर्ष ऐसी होती है जिसमें युवावर्ग अपने व्यवसाय को चुनता है और अपनी रुचि अनुसार , उसको स्थापित करता है । यह आयु अस्थिरता , असुरक्षा , उद्वेगों , आदि के झंझावातों से भरी होती है । इसलिये मानसिक एकाग्रता का अभाव या अस्थिरता भी उसे चिन्तन में , मानसिक कार्यों में सुस्त बना सकती है । इसके साथ ही द्वितीय समूह में उच्च ऋणात्मक विचलन तत्व "एफ" में रहा है । इस तत्व का नाम "डेसरजैन्सी बनाम सरजेन्सी" है । इसका स्टैन्स §-3.9§ रहा है । इसके अन्तर्गत मर्यादायुक्त , मितव्ययी , गम्भीर , अल्पभाषी , आदि विशेषतायें आती हैं । इस प्रकार के व्यक्ति अन्तर्दर्शन में माहिर होते हैं । ये ईश्वर के ऊपर ही निर्भर रहते हैं । द्वितीय समूह की आयु 31 से 40 वर्ष रखी गई है । यह स्पष्ट करती है कि इस आयु वर्ग के लोग सांसारिकता के प्रति ईश्वराधीन हो जाते हैं । परिपक्वता के कारण , विचार विनमय में नियन्त्रण , खर्च में मितव्ययता और नियमों का पालन करना , आदि इनकी आदत में आ जाता है । इसके साथ ही बी0 एड0 का प्रशिक्षण और दैनिक कक्षाओं का शिक्षण भिन्नता रखता है । इसका प्रभाव भी उनको मर्यादायुक्त बनाता है । अतः वे चिन्तारहित जीवन पसन्द करते हैं । इसके विपरीत उच्च धनात्मक विचलन प्रथम समूह और द्वितीय समूह में समान रहा है , सिर्फ एक तत्व में असमानता है । वह तत्व क्यू1 है जिसका स्टैन्स §5.7+ , प्रथम समूह§ , तथा §6.2+ , द्वितीय समूह§ में पाया गया है । इसमें सिर्फ अन्तर 0.2 स्टैन्स का है जो इस तत्व को सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन प्रदान करता है । इसका तात्पर्य है कि द्वितीय समूह के छात्र/ छात्रा अध्यापक बौद्धिक चिन्तन में विश्वास करते हैं , वे सिद्धान्तों पर भी

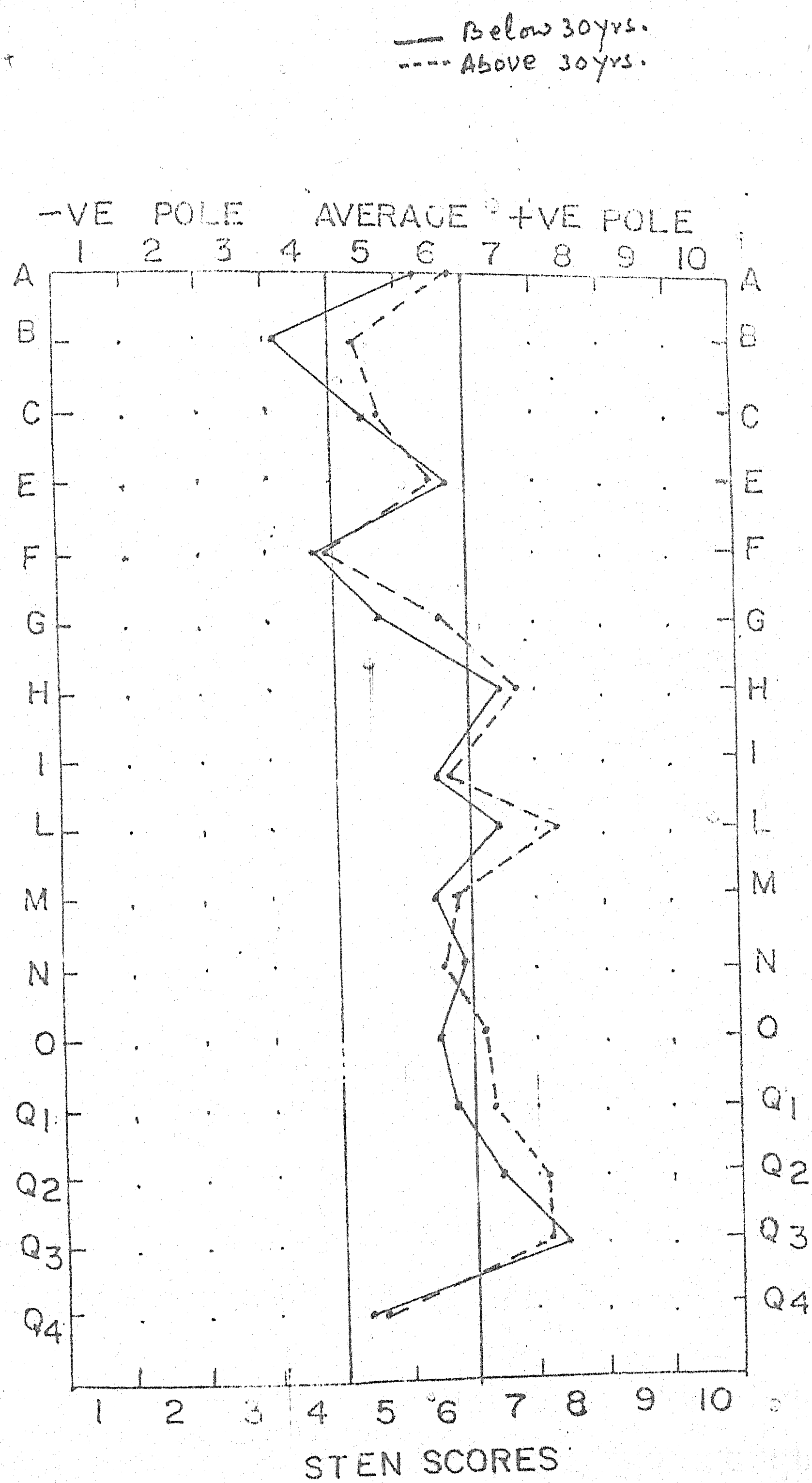


FIG.-4. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS

(Below age 30, and above age 31 years)

सन्देह प्रगट करते हैं । वे प्राचीन एवं नवीन विचारों में भी परिवर्तन लाते हैं । वे जीवन की यथार्थता में विश्वास करते हैं । वे स्वयं को परिवर्तन एवं असुविधाओं के लिये तैयार रखते है । इसीलिये द्वितीय समूह में उच्च धनात्मक विचलन तत्व क्यू। में रहा है ।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि प्रथम आयु वर्ग के अध्यापक अपनी समस्याओं के समाधान में असफल रहे हैं । क्योंकि उनमें बौद्धिकता की अस्थिरता , भावनामयता , नैराश्यता , असन्तोष , आवश्यकता पूर्ति न होना , गम्भीर , अल्पभाषी , निर्भरता , कृतज्ञता , नियमों का पालन न करना , आरामतलब , तनावग्रस्त , सुस्ती , भूलें करना , निष्पादन में ह्रास , आदि विशेषतायें पाई गई हैं । इसके साथ ही द्वितीय समूह ने वास्तविक तथ्यों पर ध्यान दिया तथा सामाजिकता को मान्यता दी । इनमें साहस , मित्र , व्यवहार , सरलता , काल्पनिकता , मृदु भाषी , चतुर , सतर्क , भावी योजना में संलग्न , आदि विशेषतायें पाई गई हैं । इसको व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का चित्र 4.4 स्पष्ट करता है , जिसमें दोनों आयु समूह के व्यक्तित्व लक्षण स्पष्ट होते हैं ।

प्रथम आयु वर्ग तथा द्वितीय आयु वर्ग के व्यक्तित्व लक्षणों में सार्थक भिन्नता तत्व "बी" , एम , ओ , क्यू2 और क्यू4 प्रगट करते हैं । तत्व "बी" का सम्बन्ध मानसिक क्षमता से हैं । इसमें 0.05 स्तर पर सार्थक भिन्नता प्रगट हुई है । इससे स्पष्ट होता है कि बुद्धितो जन्मजात शक्ति है , लेकिन आयु स्तर उसके प्रयोग द्वारा अपने ज्ञान , कौशल और सीखने की क्षमता में अन्तर स्थापित करता है । अत: बौद्धिक क्रियायों में अमूर्त चिन्तन, उचित् निर्णय , दूरदर्शिता अन्तर्दृष्टि , आदि विशेषताओं में तीव्रता आयु के कारण ही से मानी है । तत्व "एम" का नाम "प्रैक्टिकल बनाम इमेजिनेटिव"

है । इसमें भी सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर प्रगट हुई है । इस कारक की विशेषतायें-व्यवहारिकता, चेतनता , रूढ़िवादिता , यथार्थता , काल्पनिक , सृजनशीलता , आदि होती है । इस तत्व में भिन्नता का स्थापित होना छात्र/छात्रा अध्यापकों की परिपक्वता (अनुभव) के द्वारा सम्भव हो सकता है । व्यक्तित्व की परिपक्वता सही व्यवहार करना , नियम पालन करना , प्रयत्न करके भूलों का निरसन करना , सीखने के नियमों का पालन करना , आदि से होती है । आयु , बुद्धि , अनुभव , शिक्षक समूह का प्रभाव आदि ने द्वितीय समूह को प्रथम समूह से भिन्न स्थापित किया है । तत्व "ओ" का स्टैन्स (5.4 , 6.1) क्रमशः रहा है । इसमें सार्थक भिन्नता 0.01 स्तर पर प्रगट हुई है । यह कारक प्रसन्न चिन्तता , आत्मविश्वासी , सरल एवं निर्मल स्वभाव वाला , दंभी , चिन्तायुक्त , शंकालु , आदि विशेषताओं को प्रगट करता है । यह विशेषतायें क्लीनिकल समूहों में सामान्य रूप से पाई जाती हैं । इस तत्व में भिन्नता का कारण व्यवसायिक अभिरूचि का न होना और शिक्षण कार्य इतना सरल नहीं है , जितना ऊपर से दिखलाई देता है आदि भी हो सकते हैं । अतः प्रशिक्षण , अभिरूचि को परिपक्व बनाता है और शिक्षण सफलता के तरीकों को स्पष्ट करता है । तत्व "क्यू4" में सार्थक भिन्नता 0.01 स्तर पर प्रगट हुई है । इसका कारण प्रथम समूह का तनावयुक्त होना हो सकता है । जैसे-जैसे शिक्षण-प्रशिक्षण आगे बढ़ता है , नवीन ज्ञान एवं क्रियाओं को धारण करना होता है , जैसे-बालक को समझना , शिक्षण विधियों का प्रयोग, शिक्षण वातावरण तैयार करना , कक्षा अनुशासन प्रेरणा का प्रयोग , आदि । अतः उनमें उत्तेजना की वृद्धि होती है , साथ ही निराशा में भी । इसका अन्य कारण अपरिपक्व आयु का प्रभाव और विषयों में मन का कम लगाव भी हो सकता है । तत्व "क्यू2" में 0.01 स्तर पर सार्थक भिन्नता प्रगट हुई है ।

TABLE: 4.5 Students-Teachers Teaching experience on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	LESS THAN 5YR.T.EXP. (N=45)		MORE THAN 5YR.EXP. (N=40)		INTERPRETATION.
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	6.5	Slt.Dev.	6.2	Av.	N.S.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	7.2	Stg.Dev.	6.9	Slt.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	5.6	Av.	6.1	Av.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	6.2	Av.	6.2-	Slt.Dev.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	4.5-	Slt.Dev.	4.6-	Slt.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	4.5-	Slt.Dev.	5.6	Av.	N.S.
H	Shy v/s venture some.	6.40	Slt.Dev.	6.42	Slt.Dev.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	4.8-	Slt.Dev.	6.8	Slt.Dev.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	5.5	Av.	5.6	Av.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	6.5	Slt.Dev.	5.3	Av.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	5.6	Av.	5.4	Av.	0.05
O	Placid v/s Apprehensive.	5.3	Av.	5.7	Av.	0.05
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.6	Av.	5.7	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficent.	6.8	Slt.Dev.	5.8	Av.	N.S.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.7	Slt.Dev.	7.9	Stg.Dev.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	3.90-	Stg.Devt.	3.95-	Stg.Dev.	0.01

AV. = Average.

SLT.DEVT. = Slightly deviaent.

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

(+) Indicates above average.

(-) Indicates below average.

इसका मुख्य कारण प्रथम समूह का अपने समूह पर निर्भर रहना तथा द्वितीय समूह का आत्म निर्भर होना मात्र हो सकता है । प्रथम समूह अनुकरण के द्वारा तथा प्रयत्न और भूल के द्वारा सीखता है जबकि द्वितीय समूह अनुकरण और सूझ के द्वारा सीखता है । इसके साथ ही कक्षा की समस्याओं का सामना प्रथम समूह प्रशिक्षण के द्वारा करता है तथा दूसरा समूह स्वनिर्णय , परिस्थिति का आँकलन , और पर्याप्त सुविधाओं के आधार पर करता है । अतः दोनों में अन्तर होना स्वाभाविक है ।

निष्कर्षात्मक रूप से कहा जा सकता है कि प्रथम समूह तथा द्वितीय समूह के बीच सार्थक भिन्नता कारक "बी , एम , ओ , क्यू2 और क्यू4" के कारणों में प्रमुखतः आयु के शारीरिक परिवर्तन ,मानसिक परिवर्तन और शिक्षण व्यवसाय के प्रति समर्पण के भाव के गुणात्मक एवं गत्यात्मक पहलू हो सकते हैं ।

तालिका नं0 4.5 में स्टैन्स के द्वारा शिक्षण अनुभव के प्रभाव का शिक्षक व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य के विकास को स्पष्ट किया गया है । इसमें शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष तक को प्रथम अनुभव समूह तथा शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष से ऊपर वालों को द्वितीय अनुभव समूह में रखा गया है ।

शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष तक के प्रथम अनुभव समूह के कारक- सी , ई , एल , एन , ओ एवं क्यू1 सामान्य स्तर पर रहे हैं । कारक- एफ , जी , आई तथा क्यू4 , आदि सामान्य से ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । जबकि कारक- ए , बी , एच , एम , क्यू2 तथा क्यू3 , सामान्य से धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । व्यक्तित्व विशेषता कारक "एफ" ॅसोबर बनाम हैपी गोलॅ की है । इसके अन्तर्गत- चतुरता , मितव्ययिता , गम्भीरता , नियंत्रित ,

अल्पभाषी , निर्भरता , उत्साही , आदि विशेषतायें आती हैं । शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष तक के छात्र-अध्यापक/अध्यापिका में ये विशेषतायें व्यवसाय प्रवेश , नये परिवेश, स्वयं का समायोजन स्थापित होना आदि के कारण उत्पन्न हो सकती है । व्यक्तित्व तत्व "जी" को "एक्सपीडिएन्ट बनाम कन्साइंचियस" के नाम से जाना जाता है । इसके अन्तर्गत उद्देश्य के प्रति असावधान , कृतज्ञ , अशांत , नियमों से भागना , मेहनती , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें आती हैं । यह आयु समूह सीखने में जल्दबाजी करता है , कार्य का बोझ रहता है , मानसिक दबाब रहता है , नियम पालन में असावधानी होती है , धारण में अस्थिरता होती है , आदि विशेषताओं के कारण ऋणात्मक विचलन स्वाभाविक होता है । कारक "आई" का स्टैन्स ॥4.8॥ रहा है जो सामान्य से थोड़ा सा कम है । यह व्यक्तित्व तत्व "टफ माइन्डडनैस बनाम टैण्टरमाइन्डडनैस" से जाना जाता है । इसमें व्यवहारिकता , यथार्थवादी , प्रभुत्व सम्पन्नता , स्वनिर्भर , उत्तरदायी, आदि विशेषतायें होती हैं । इसका मुख्य कारण नवीन व्यवसाय के नियमों तथा शिक्षण अनुभव के बीच टकराव का होना हो सकता है । वर्तमान शिक्षण कार्य और प्रशिक्षण की उपादेयता को व्यवहार में न देखकर खिंचा होता है। अतः अनुभव के प्रथम समूह में मानसिक असन्तोष पाया गया है जिसने उसके व्यक्तित्व तत्व "आई" , में ऋणात्मक विचलन उत्पन्न किया है । कारक "क्यू4" में भी ऋणात्मक विचलन रहा है । यह कारक "रिलैक्सड बनाम टैन्स" से जाना जाता है । इस कारक में ऋणात्मक विचलन से आराम-तलबता , क्षोभ , कम निष्पादन , उच्च तनाव , प्रेरकों का अभाव , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें विकसित हो सकती हैं । बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों में पाँच वर्ष के शिक्षण अनुभव के समूह में यह तत्व ऋणात्मक विचलन प्रगट करता है । इसका मुख्य कारण बी0 एड0 प्रशिक्षण को आसान समझना और स्वयं को शिक्षण अनुभव

स्थानान्तरित करने में माहिर मानना , आदि हो सकता है ।

शिक्षण अनुभव प्रथम समूह के व्यक्तित्व कारक- ए , बी , एम , क्यू2 और क्यू3 , आदि सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । इससे स्पष्ट होता है कि छात्र/छात्रा अध्यापकों का व्यक्तित्व सामान्य से उच्च स्तर का होता है । कारक- "ए" व्यक्तित्व के व्यवहारिक पक्ष , पर बल देता है । समाज प्रियता , अतिस्नेही , सरलताप्रिय , प्रतिस्पर्धी , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें इस समूह में पाई गई हैं । ये सभी विशेषतायें अध्यापक की विशेषताओं या गुणों के अन्दर मानी जाती हैं §के0 एस0 ई0 213§ । तत्व "बी" का सम्बन्ध मानसिक क्षमता से है । इसका स्टैन्स §7.2+§ धनात्मक विचलन उच्च स्तर का रहा है । इस तत्व की उच्चता से स्पष्ट होता है कि ये तीव्र बुद्धि वाले हैं , अमूर्त चिन्तन प्रिय है , नये ज्ञान को ग्रहण करने में सफल हैं , और प्रतिभा सम्पन्न , आदि लक्षणों से युक्त होते हैं । इस कारक ने उच्च धनात्मक विचलन शायद इसलिये पाया है कि बी0 एड0 की चयन प्रणाली कम्पूटरायज्ड और वस्तुनिष्ट के विभिन्न योग्यता परीक्षणों पर आधारित होती है । इससे पहले चयन में अनियमिततायें रहतीं थीं और प्रशिक्षणार्थी प्रतिभा सम्पन्न नहीं आ पाते थे । अब प्रतिभा सम्पन्न लोगों का ही चयन सम्भव हो पाया है । कारक "एच" "शर्मीलापन बनाम साहसिकता" के नाम से जाना जाता है । इसमें क्रियाशीलता, सामाजिक हठी , क्रियाशील , और स्वेच्छाचारी , आदि विशेषतायें आतीं हैं । शिक्षण में नये तरीकों को सीखना , स्वाभाविकता का विकास करना , और भावों का पर्याप्त प्रदर्शन करना आवश्यक माना जाता है । इसी तत्व के कारण शिक्षक कक्षा समय के अलावा भी पाठ्य वस्तु का छात्रों को ज्ञान देता रहता है । कारक "एम" को व्यवहारिक बनाम काल्पनिक के नाम से जाना जाता है । ये सामान्य से थोड़ा उच्च धनात्मक स्तर लिये हुये हैं ।कक्षा शिक्षण

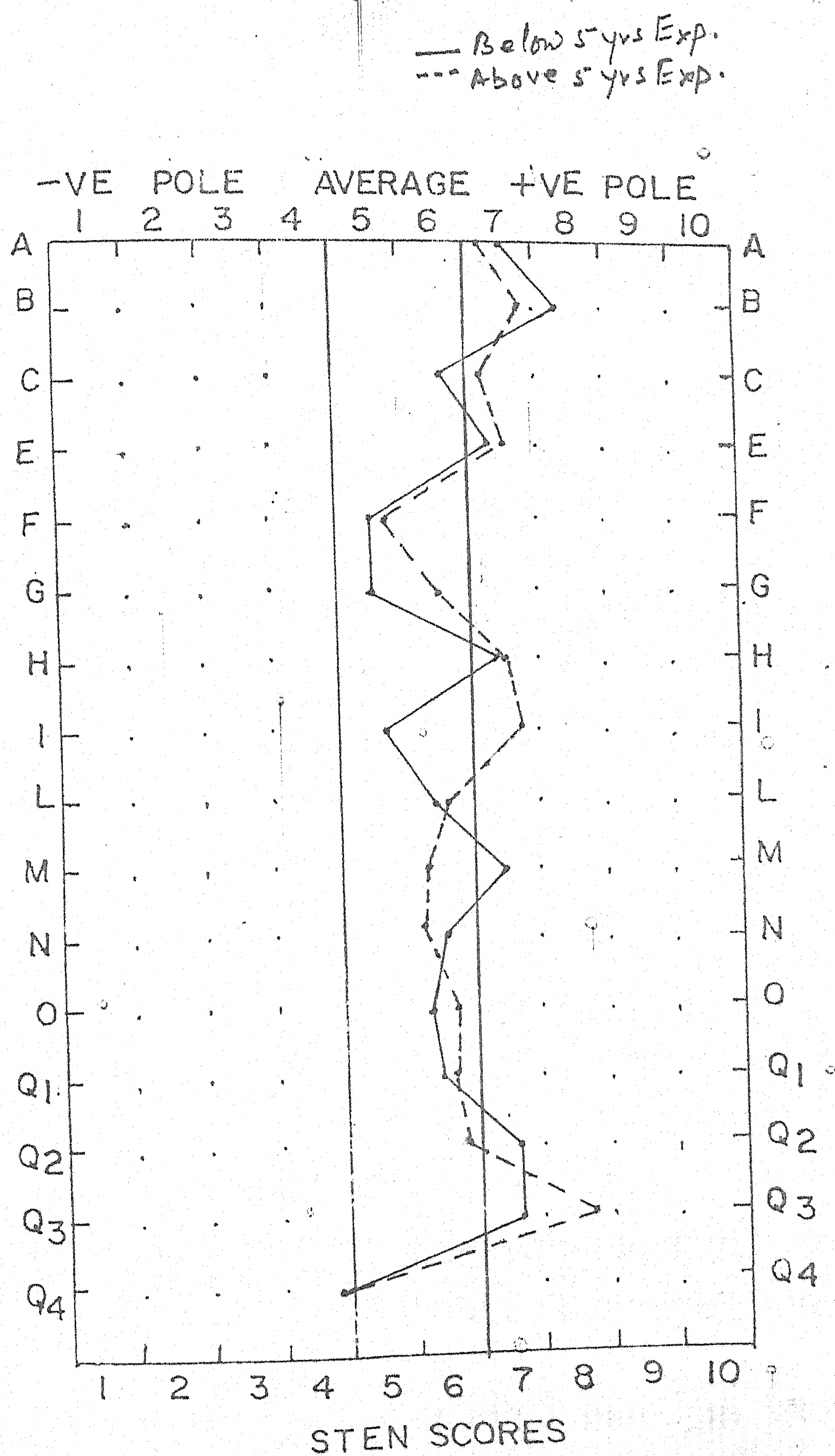


FIG.-5. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS (Below 5 and above 5 years experence)

कल्पना के बिना नहीं चल पाता है । शिक्षक को समस्याओं का निराकरण कल्पना शक्ति के द्वारा ही करना होता है । अतः शिक्षक की व्यवहारिकता, काल्पनिक विचारों की सकारात्मकता पर निर्भर करती है । ये लोग अपने उद्देश्य से ही सम्बन्ध रखते हैं ताकि अच्छे शिक्षक बन सकें । यही कारक इनको अच्छा, आदर्श शिक्षक बनने की प्रेरणा भी देता है । व्यक्तित्व कारक "क्यू2" को "समूह निर्भरता बनाम आत्मनिर्भरता" से जाना जाता है । इस कारक के उच्च स्तर वालों में मानसिक एवं भावात्मक निर्भरता होती है । ये लोग प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त मार्ग का ही अनुशासन करते हैं । इसीलिये इनमें साधन-सम्पन्नता , स्वनिर्णय क्षमता , प्रभुत्व सम्पन्नता , आदि विशेषतायें पाई जाती है । इस समूह में ये विशेषतायें पर्याप्त लगन , व्यवसाय में रुचि और आदर्श अध्यापक बनने की तमन्ना के कारण हो सकती है । कारक "क्यू3" का भी धनात्मक विचलन रहा है । यह समूह के नियन्त्रण , अनुशासन को प्रगट करता है । नये शिक्षक में आत्म सम्मान , समाजप्रियता , स्वाभिमान , नियंत्रित व्यवहार , आदि की विशेषतायें साथी प्रति-स्पर्धा के द्वारा विकसित होने लगती हैं । शिक्षण अनुभव के द्वारा उन्होंने एक शिक्षक को कैसा होना चाहिये , जान लिया है । अतः पूर्ण अवधारणा के अनुसार ही वे अपने शिक्षक व्यक्तित्व के पार्श्वदृश्य का तैयार करने में जुटे रहते हैं । इसीलिये शिक्षक को प्रभावशाली नेता भी माना जाता है ।

आकृति नं० 4.5 को देखने से शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष से अधिक के छात्र/छात्रा-अध्यापक समूह के ऋणात्मक और धनात्मक विचलन स्पष्ट होते हैं । ऋणात्मक विचलन में तत्व ई , एफ और क्यू4 आये हैं । तत्व "ई" को "हम्बल बनाम असरटिव" से जाना जाता है । इस तत्व का प्रगटीकरण विनम्रता, कोमलता , उपकारी , और मिलनसारिता , आदि व्यक्तित्व विशेषताओं में होता है । ऐसा व्यक्तित्व अपने लिये कार्य न करके परोपकार के लिये करता है । वह अपनी गल्तियों में सुधार की कोशिश करता है और अन्य लोगों पर

निर्भर भी रहता है । इस तत्व की विशेषता से स्पष्ट होता है कि शिक्षण का अधिक अनुभव व्यक्ति को विनम्र , परोपकारी तथा सहृदय बना देता है । शिक्षक का स्थान इसी लिये हमारी संस्कृति में सर्वोपरि माना गया है । अतः इसी भावना के अन्तर्गत यह तत्व ऋणात्मक विचलन लिये हुये हो सकता है । तत्व "एफ" को "सोबर बनाम हैपी गोलकी" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व की विशेषतायें-मर्यादायुक्त , अल्पभाषी, गम्भीर , मितव्ययिता , आदि है । इस तत्व के व्यक्ति अंतरदर्शन में माहिर होते हैं । ये दब्बू प्रकार के तथा ईश्वर पर विश्वास करने वाले होते हैं । ये अपनी राय को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं । इन विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि अधिक शिक्षण अनुभव व्यक्ति को शारीरिक , मानसिक , आर्थिक आदि क्षमताओं में मितव्ययी बना देता है । सारगर्भित वार्तालाप ही शिक्षक को सामान्य से भिन्न रूप में स्थापित करता है । अतः तत्व "एफ" की विशेषताओं का प्रगटीकरण व्यवसाय की प्रकृति के कारण हो सकता है । कारक "क्यू4" को "रिलैक्जड बनाम टैन्स" के नाम से जाना गया है । ऐसे तत्व वाले व्यक्ति समाज से सन्तुष्ट रहते हैं , उन्हें कोई चिन्ता नहीं रहती है । कभी-कभी अधिक सन्तुष्टि व्यक्ति को निकम्मा बना देती है , जिससे क्रियाशीलता में गिरावट आ जाती है । इन लोगों में आरामतलबी , क्षोभरहित , जड़ता एवं निराशा से दूर आदि विशेषतायें पाई जाती हैं । प्रशिक्षण के द्वितीय अनुभव समूह में इस तत्व का ऋणात्मक होना "आत्मसात" के भाव को प्रगट करता है । किसी भी कार्य को प्रतिदिन करने से व्यक्ति को आदत पड़ जाती है और वह सम या विषम परिस्थिति में सामान्य रहता है। वह सभी समस्याओं के समाधान आराम से निकालता है और निराशा पर विजय प्राप्त करता है । उसमें जलन , बदले का भाव , न होकर सुधारात्मक भाव विकास होकर स्थायित्व प्राप्त कर लेता है । ये सब शिक्षण प्रकृति व व्यवसाय की शुद्धता का परिणाम माना जा सकता है ।

तालिका 4.5 से धनात्मक विचलन भी स्पष्ट होता है । कारक बी , एच , आई , और क्यू3 में सामान्य से धनात्मक विचलन रहा है । व्यक्तित्व कारक "बी" को मानसिक क्षमताओं के लिये जाना जाता है । इस तत्व की प्रबलता से व्यक्तित्व में बौद्धिक तीव्रता , अमूर्त चिन्तन , और प्रतिभा सम्पन्नता प्रगट होती है । ऐसे लोग समस्या समाधान और सीखने में तीव्रता दिखलाते हैं । इनमें अधिक क्रियाशीलता , और सतर्कता जैसी विशेषतायें पाई जाती हैं । पाँच वर्ष से अधिक अनुभव वाले बी0 एड0 छात्र/छात्रा-अध्यापकों की बौद्धिक तीव्रता स्वत: बढ़ जाती है । वे विभिन्न प्रकार की समस्याओं से गुजर चुके होते हैं , अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं , ज्ञान की गरिमा को समझते हैं और शिक्षण व्यवसाय का व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान भी रखते हैं । अत: उनमें बौद्धिक तीव्रता का विकास शिक्षण प्रतिभा के रूप में विकसित माना जा सकता है । व्यक्तित्व तत्व "एच" को "शाय बनाम वैन्चरसम" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व की अधिकता से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति में साहसिकता , हठीलापन , क्रियाशीलता , और स्वेच्छाचारिता , आदि विशेषतायें पाई जाती हैं । ऐसे व्यक्ति नवीन क्रियायों के सीखते रहने में विश्वास करते हैं । उन पर भावात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है । ये लोग सक्रियता में विश्वास रखते हैं और थकान महसूस नहीं करते हैं । इसका मुखय कारण शिक्षा क्षेत्र का अनुभव, शिक्षा प्रशासन करना हो सकता है । आज का शिक्षण वर्तमान परिवर्तनों और पुरातन नियमों के तालमेल से ही चल पा रहा है । शिक्षक वही सफल माना जाता है जो शैक्षिक पर्यावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में सफल होता है । व्यक्तित्व कारक "आई" को "टफ माइन्डडनैस बनाम टैन्डरमांडडनैस" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व की प्रखरता से व्यक्ति में शालीनता , कलात्मकता , भावात्मकता , कल्पनात्मकता , आदि गुण विकसित हो जाते हैं । परिणामस्वरूप वह दण्डात्मकता को नापसन्द करता है और शिक्षण क्षेत्र में अपरिपक्व लोगों को पसन्द नहीं करता है । साथ ही वह शिक्षकों के नैतिक मूल्यों के बहिष्कार से

दु:खी भी होता है । द्वितीय शिक्षण अनुभव समूह में इस तत्व की प्रखरता का कारण जीवन की यथार्थता को जान लेना तथा अपने जीवन दर्शन को निश्चित कर लेना मात्र हो सकता है । तत्व "क्यू3" अनुशासन से सम्बन्धित है । इस तत्व का धनात्मक विचलन शिक्षकों के दैनिक जीवन तथा व्यवहार को अनुशासनमय मानता है । अधिक शिक्षण अनुभव अध्यापकों में शिक्षण के प्रति निश्चित मानदण्ड विकसित करने में सफल होता है तथा वे उसी लय के वशीभूत होकर शिक्षण कार्य में लिप्त रहते हैं । ये लोग समाज प्रिय , स्वाभिमानी , व्यवहारिक , आदि विशेषताओं को धारण करने वाले होते हैं । इनकी आदतें , क्रियायें तथा भावनायें नियंत्रित होती हैं । ये अपने क्षेत्र में प्रभावशाली नेतृत्व स्थापित करने में भी सफल रहते हैं । प्रस्तुत शोध कार्य में इस कारक का प्रखर होना शिक्षक की गरिमा , मान्यता , सम्मान और गुरु की महिमा के भाव के आत्मसात के कारण हो सकता है ।

चित्र नं0 4.5 से शिक्षण अनुभव प्रथम समूह एवं शिक्षण अनुभव , द्वितीय समूह का तुलनात्मक व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य स्पष्ट होता है । प्रथम , एवं द्वितीय समूह में तत्व "एफ एवं क्यू4" ने ऋणात्मक विचलन में समानता पाई है । प्रथम समूह का तत्व "जी" स्टैन्स{4.5-} तथा द्वितीय समूह का स्टैन्स {5.6} रहा है । इस तत्व का विचलन बहुत ही कम है । प्रथम समूह का शिक्षण अनुभव कम होने के कारण शिक्षक का जीवन दर्शन स्थापित नहीं हो पाया है । वह शैक्षिक नियमों का पालन करता है , लेकिन किस परिस्थिति में कैसे करना है { अभी स्थापित नहीं कर पाया है । वह अपने व्यवसाय के प्रति चिन्तित भी रहता है , जिससे साथियों के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करनी होती है । द्वितीय समूह में कारक "ई" ऋणात्मक विचलन प्रदर्शित करता है जबकि यही कारक प्रथम समूह में सामान्यस्तर पर रहा है । इसका कारण

अनुभव द्वारा ग्रहण किये गये आदर्श एवं गुण हैं जो शिक्षक को आदर्श बनाते हैं । इसीलिये अनुभव के साथ-साथ इनमें विनम्रता , कोमलता, उपकार , सहृदयता , आदि सामाजिक एवं मानवीय गुण विकसित हो जाते हैं तथा आक्रामकता और स्वच्छन्द व्यवहार से बचते रहते हैं । जबकि प्रथम समूह में ये दोनों प्रकार की विशेषतायें प्रगट होती रहती हैं जो उनको आदर्श शिक्षक बनने में रूकावट पैदा करती है । कारक "आई" प्रथम समूह में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं जबकि द्वितीय समूह में धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । इसका मुख्य कारण विकास की अवस्थायें और उनकी विशेषतायें एवं अनुभव का प्रभाव मात्र हो सकता है । चूँकि प्रथम अनुभव समूह की आयु और शिक्षण अनुभव कम है तो ज्ञान की धारणा और बौद्धिक प्रखरता भी कम होगी , अत: ये "टफ माइन्डडनैस" की विशेषताओं से ग्रसित रहते हैं जबकि द्वितीय समूह में आयु एवं अनुभव अधिक है तो वे शाँत मन से क्रियाशील रहते हैं । शिक्षक के क्षेत्र में युवा वर्ग अधिक आक्रामक पाया जाता है , अपेक्षाकृत अनुभवी शिक्षकों के । अनुभव हमें सहनशीलता , शाँतिप्रियता सिखलाता है , जबकि युवा वर्ग तनावग्रस्त एवं हठीपन को प्रदर्शित करता है ।

शोधकर्ता ने तुलनात्मक आँकलन में पाया कि दोनों ही समूहों में कारक "सी , एल , एन , ओ , क्यू।"सामान्य स्तर पर आये तथा कारक "एफ और क्यू4" ऋणात्मक विचलन में रहे तथा कारक "बी , एवं क्यू3" धनात्मक विचलन में रहे । अत: व्यक्तित्व के 16 तत्वों में से 10 तत्व सामान्यस्तर स्थिति में पाये गये । जिन 6 तत्वों में विचलन पाया गया उनमें मुख्य तत्व "आई" रहा , जो एक में ऋणात्मक स्तर पर है और द्वितीय समूह में धनात्मक स्तर पर है । इसका कारण शिक्षक मनोवृत्ति को स्थायित्वता प्रदान करना

और आदर्श शिक्षक के चरित्र का विकास करना मात्र हो सकता है । इसके लिये आयु एवं अनुभव दोनों परिवर्तियों की मात्रा एवं गुणात्मकता का विकास आवश्यक माना जाता है ॥पी० रोहनर., 1978॥ ।

शोधकर्ता ने दोनों ही समूहों की भिन्नता की सार्थकता का भी आँकलन किया तो पाया कि तत्व "एन", "ओ" 0.05 स्तर पर तथा तत्व "क्यू4" 0.01 स्तर पर रहे । कारक "एन" को "फोर्थराइट बनाम श्रुरुड" से जाना जाता है । इस तत्व में सार्थक भिन्नता का कारण शिक्षकों की विकास की अवस्था में, परिपक्वता, लगन, समायोजन, ज्ञान का स्थानांतरण और अनुभव, आदि के प्रभाव हो सकते हैं । आज शिक्षण को प्रशिक्षण का मनोवैज्ञानिक आधार दे दिया गया है । इससे अग्रगामी होना और व्यवहारिक बनना आवश्यक बन जाता है । इसके साथ ही भूल प्रभावी तथा पूर्व प्रभावी अवरोध ॥वुडवर्थ, 1952॥, तथा स्थानान्तरण ॥थार्नडायक, 1930॥ आदि के प्रभाव भी सार्थक भिन्नता को प्रगट कर सकते हैं । कारक "ओ" को "प्लेसिड बनाम एपरीहैंसिव" के नाम से जाना जाता है । इसकी सार्थकता 0.05 स्तर प्रगट हुई है । इसका मुख्य कारण शिक्षण के प्रति चिन्तित रहना, तनावग्रस्त रहना, तथा शिक्षण की पवित्रता का विकास करना, आदि हो सकते हैं । दोनों ही समूह आदर्श अध्यापक बनना चाहते हैं लेकिन आयु, अनुभव, और बौद्धिक क्षमताओं के प्रयोग से विकास में अन्तर आ सकता है । कारक "क्यू4" 0.01 स्तर पर भिन्नता स्थापित करता है । इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षण एक तनाव उक्त प्रक्रिया है या शान्त प्रक्रिया । दोनों ही समूहों में तनाव की स्थिति व स्तर कम अनुभव वालों में होता है । जैसे-जैसे व्यक्ति के अनुभव में वृद्धि होती जाती है कार्य सरल एवं सुगम होता जाता है । अतः निराशा, परिश्रम आदि के प्रभाव भिन्नता स्थापित करते हैं । शिक्षण प्रशिक्षण में प्रयत्न और भूल,

TABLE: 4.6 Students-Teachers S.E.S. on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	Ist Grade (N=35)		IInd Grade (N=125)		Inter preta tion
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.8	Av.	5.7	Av.	N.S.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.2-	Slt.Dev.	4.1-	Slt.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	4.7-	Slt.Dev.	4.6-	Slt.Dev.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	5.2	Av.	5.7	Av.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	4.3-	Slt.Dev.	3.9-	Slt.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	5.2	Av.	5.3	Av.	N.S.
H	Shy v/s venturesome.	6.7	Slt.Dev.	6.2	Slt.Dev.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	6.2	Av.	5.8	Av.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.3	Av.	6.0	Av.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	5.6	Av.	5.8	Av.	N.S.
N	Forthright v/s Shrewd.	6.4	Slt.Dev.	5.9	Av.	N.S.
O	Placid v/s Apprehensive.	4.8-	Slt.Dev.	5.2	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.4	Av.	5.7	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.5	Av.	6.3	Slt.Dev.	N.S.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.9	Slt.Dev.	6.7	Slt.Dev.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	3.9-	Slt.Dev.	3.5-	Slt.Dev.	N.S.

Av. = Average.

SLT. DEVT. = Slightly deviaent.

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

(+) Indicates above average.

(-) Indicates below average.

अनुकरण , सूझ , साहचर्य , आदि सभी सीखने के प्रकारों का सहारा लिया जाता है । इनमें सूझ का प्रयोग भिन्नता स्थापित करने में सर्वोत्तम माना गया है । सूझ के द्वारा नवीन स्थिति को ग्रहण किया जाता है और शिक्षण में अभिस्थापन दिखाते हैं §हिलगार्ड , 1962§ ।

सामान्य , आयु , शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यक्तित्व विश्लेषण करने के बाद सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का आँकलन किया गया है । इनके व्यक्तित्व तत्वों का आँकलन सामाजिक-आर्थिक स्तरों-उच्च स्तर , उच्च मध्यम स्तर , निम्न मध्यम स्तर , निम्न स्तर , तथा निम्नतम स्तर , आदि गुणात्मक रूपों में किया गया है । प्रस्तुत शोध कार्य हेतु प्रदत्तों को साँख्यकीय विश्लेषण में वर्गीकरण के पंचम स्तर पर कोई छात्र/छात्रा-अध्यापक नहीं आया है । अतः शोधकर्ता ने सिर्फ चार स्तरों पर ही व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन किया है । यहाँ पर प्रथम स्तर , द्वितीय स्तर , तृतीय स्तर एवं चतुर्थ स्तर के आधार पर व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत की जाती है ।

स्टैन्स तालिका 4.6 सामाजिक-आर्थिक स्तरों के प्रथम स्तर तथा द्वितीय स्तर के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का विश्लेषण प्रगट करती है । शोधकर्ता दोनों स्तरों पर आये हुये छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का तुलनात्मक अध्ययन §विश्लेषण§ प्रस्तुत करता है । प्रथम स्तर पर तत्व "बी , सी , एफ , ओ , क्यू4"में तथा द्वितीय स्तर पर तत्व "बी , सी , एफ , क्यू4", आदि में ऋणात्मक विचलन रहा है । इस प्रकार के विचलन में तत्व "बी , सी , एफ , और क्यू4" दोनों में समान हैं तथा तत्व "ओ" भिन्नता लिये हुये है । इससे स्पष्ट होता है कि तत्व "बी" §मानसिक योग्यता§ का

सम्बन्ध पर्यावरणीय न होकर वंशानुक्रमीय होता है । मनोवैज्ञानिकों का मत है कि पर्यावरण मानसिक योग्यताओं में तीव्रता लाती है , उनके स्तरों में वृद्धि नहीं करती हैं । बुद्धि का विकास नहीं होता है । वह तो जन्मजात है । उसके स्वरूप में तीव्रता , अभ्यास के द्वारा लाई जा सकती है §स्टैनफोर्ड, 1926§ ।एक अन्य मान्यता भी है जो बुद्धिमान और मेहनती को एक ही स्तर पर लाकर स्थापित कर देती है । यदि कोई व्यक्ति लगातार अपनी मेहनत एवं लगन से क्रियाशील रहता है तो वह प्रतिभाशील लोगों के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है । अन्तर सिर्फ अधिक मेहनत और अधिक समय लगने का होता है । प्रतिभाशाली लोग थोड़ी सी मेहनत में जिस लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं , डिलीजेन्ट लोग उसी लक्ष्य को अधिक मेहनत व अधिक समय लेकर पूरा कर लेते हैं । "ओडेन , 1959§ । अतः दोनों ही स्तरों पर तत्व "बी" एक ही स्तर पर रहा है । तत्व "सी" को संवेगात्मक मनःस्थिति से नामाँकित किया गया है । इस तत्व की ऋणात्मक स्थिति छात्र/छात्रा-अध्यापकों की मूल प्रवृत्यात्मक स्थिति को स्पष्ट करती है । इस तत्व का ऋणात्मक विचलन अध्यापकों की सहनशीलता , व्यवहार परिवर्तनता , लचीलापन , निराशा , मानसिक थकान, परिस्थिति से भागना , आदि विशेषताओं को प्रगट करता है । इससे ग्रसित व्यक्ति में अकारण भय , निद्रा व्यतिक्रम और मनोविग्रह , आदि की क्षणिक असामान्यतायें विकसित हो जाती है । प्रस्तुत शोध के तथ्यों में इनका पाया जाना स्वाभाविक हो सकता है । क्योंकि नवीन परिस्थिति के अनुकूलन में प्रत्येक व्यक्ति को परेशानी होती है । बी0 एड0 प्रशिक्षण आदर्श-शिक्षक के विकास की मान्यता को विकसित करते हैं । प्रत्येक छात्र/छात्रा-अध्यापक का लक्ष्य बनाये गये आदर्श को आत्मसात करना होता है । इसी कल्पनात्मक भय को वे सहनशीलता , लचीलापन , व्यवहार परिवर्तनता , निराशा , मानसिक थकान , अनिद्रा , मानसिक भय , सन्ताप , आदि असामान्यताओं के रूप में

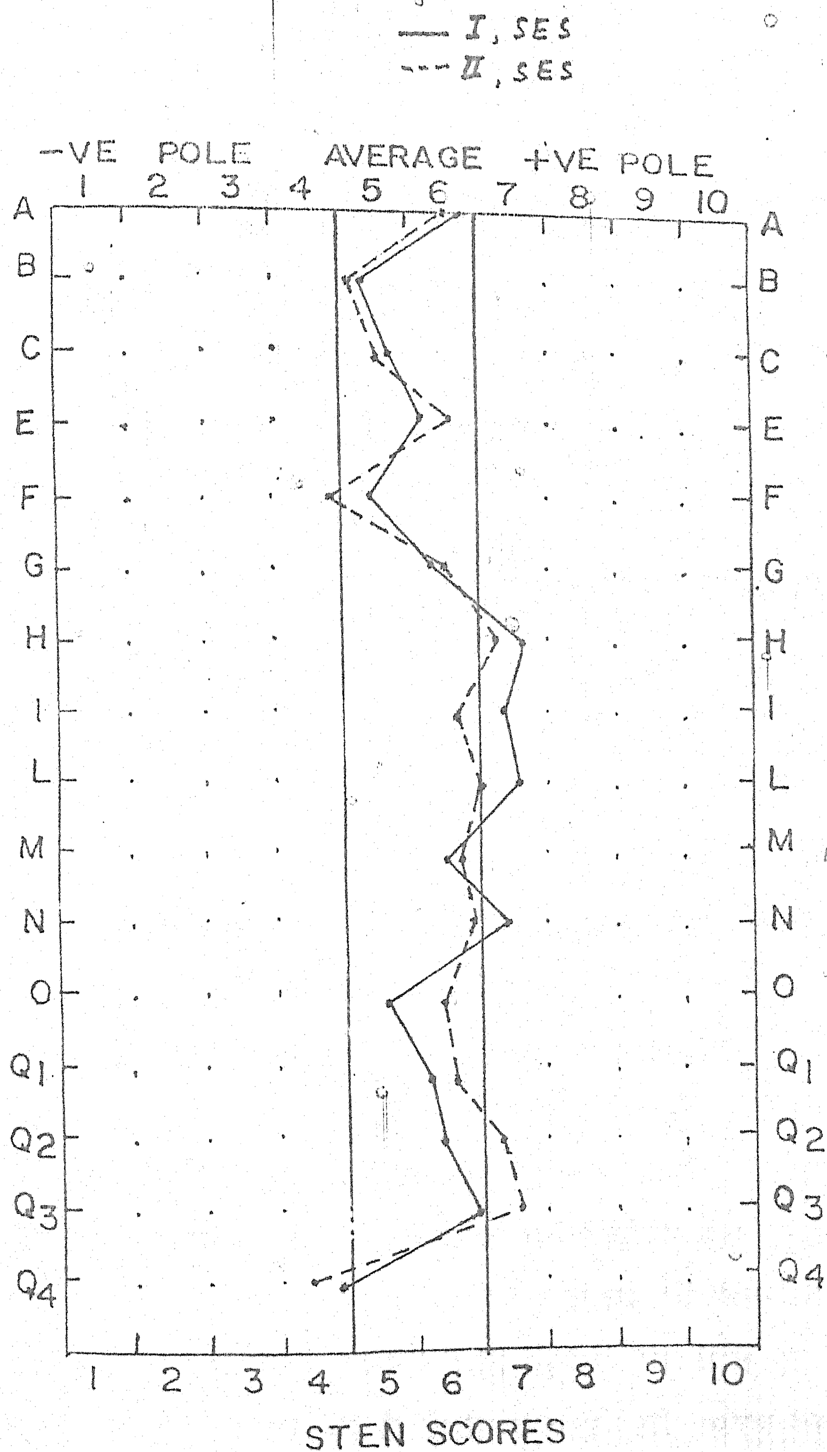


FIG.-6. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS (Ist. grade & IInd grade)

विकसित कर लेते हैं । अभ्यास के द्वारा शिक्षण विकास उनकी इन असामान्यताओं का स्वतः ही निराकरण या उन्मूलन करता जाता है । अतः यह तत्व अपनी समानता को शिक्षण विकास का एक क्रम मानता है, व्यतिरेक नहीं । तत्व "एफ" - "सोबर बनाम हैपीगोलकी" से जाना जाता है । इस तत्व की विशेषताओं में सीमाबद्धता , अल्पभाषी , अन्तरदर्शी , दब्बूपन , आत्मसंयमी , आदि होती है । सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह में तथा द्वितीय समूह में इस तत्व का ऋणात्मक विचलन इसलिये प्रगट हुआ है कि शिक्षक का व्यक्तित्व भारतीय परम्परा के अनुसार ईश्वर से भी बड़ा माना जाता है । अतः उसमें मर्यादायुक्त व्यवहार का पालन करना , गम्भीरतापूर्वक निष्कर्ष निकालना तथा मितव्ययिता का जीवन में पालन करना अति आवश्यक गुण विद्यमान होना चाहिये । इन्हीं गुणों के विकास का प्रयत्न व्यक्तित्व के इस तत्व में प्रगट हुआ है । तत्व "क्यू4" को "सामान्य स्थिति बनाम तनावग्रस्त स्थिति" के नाम से जाना जाता है । अध्यापक वर्ग की स्थिति नवीन परिस्थिति में तनावपूर्ण होनी चाहिये जबकि वह विपरीत §शांत§ प्राप्त हुई है । इस तत्व के ऋणात्मक विचलन से व्यक्तित्व में शांतप्रियता , सन्तोष , सुस्ती या थकान, कम कोशिश करना , आदि विशेषतायें विकसित होने लगती हैं । इसका मुख्य कारण व्यवसाय के प्रति समर्पण का भाव हो सकता है । बी0 एड0 प्रशिक्षण का तात्पर्य है शिक्षक व्यवसाय को धारण करना ताकि अपनी रुचि तथा राष्ट्र नियमानुसार के अनुसार नवयुवकों को दिशा दी जा सके । इस कार्य के सम्पादन में शांत मन से क्रियाशील रहना ही उत्तम माना जाता है । आदर्श शिक्षक एक दिन में तैयार नहीं होता है , अतः उसके लिये तनावयुक्त रहना उचित नहीं है ।

व्यक्तित्व मापन के सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन लिये हुये सिर्फ तीन तत्व पाये गये हैं । इनमें तत्व "एच , क्यू3", आदि दोनों ही समूहों में समान रहे हैं । सिर्फ तत्व "एन" प्रथम समूह में और तत्व "क्यू2" द्वितीय समूह में भिन्नता स्थापित करते हैं । व्यक्तित्व तत्व "एच" का दोनों ही समूहों में धनात्मक विचलन का कारण शिक्षक व्यवसाय में रुचि , एवं दृढ़ निश्चय का भाव हो सकता है । क्योंकि इस तत्व के प्रभाव से व्यक्तित्व में साहसिकता , दृढ़ता , क्रियाशीलता , तथा स्वच्छंद व्यवहार , आदि विशेषतायें विकसित होती हैं । परिणामस्वरूप शिक्षक को अपने व्यक्तित्व निखारने तथा उभारने का उपयुक्त वातावरण मिलता है । वह नवीनता को ग्रहण करता है तथा प्रचलित में सुधार करता है ताकि सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक अनुकूलन सही तरीके से हो सके । व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" को अनुशासन के रूप में माना जाता है । दोनों ही समूहों का धनात्मक विचलन स्टैन्स §6.9 , 6.7§ के रूप में रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि धनात्मक विचलन के स्तर में कोई अधिक भिन्नता नहीं है । इस तत्व की विशेषताओं में-अनुशासनप्रियता , संयमी , समाजप्रिय , स्वाभिमानी , आदि मानी जाती है । ऐसा व्यक्ति अपने संवेगात्मक प्रदर्शन एवं सामान्य व्यवहार पर पूर्ण नियन्त्रण रखता है । वह समाज के प्रति जागरूक रहता है । वह अपने सही कार्यों के द्वारा समाज में सम्मान प्राप्त करता है । वह एक प्रभावशाली नेतृत्व की क्षमता वाला जाना जाता है । इस तत्व की उच्च स्तरता दोनों ही समूहों में चारित्रिक विशेषता को प्रगट करती है । क्योंकि शिक्षक का आदर्श उसके संयम , नियम , और अध्ययन होते हैं § ब्रे , पृष्ठ 213§ । इसी के वशीभूत होकर शिक्षक अपना सम्मान समाज में स्थापित करता है ।

बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह

का व्यक्तित्व विशेषता तत्व "ओ" ऋणात्मक विचलन स्टैन्स §4.8§ में रहा है जबकि द्वितीय स्तर समूह में यह तत्व सामान्य स्तर पर रहा है । इसका कारण अभ्यास का प्रभाव हो सकता है । शिक्षण में जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ता जाता है शिक्षक में व्यवसाय के प्रति गम्भीरता का विकास स्वतः ही होने लगता है । वह प्रयत्न और भूल पद्धति के द्वारा सीखता है और गल्तियों का निरसन करता जाता है । इस प्रकार से उसमें व्यवसाय के प्रति आत्म-विश्वास बढ़ता जाता है । इसी के साथ प्रथम समूह का तत्व "एन" धनात्मक विचलन लिये हुये है जबकि द्वितीय समूह में सामान्य स्तर पर है । इसका प्रमुख कारण व्यवसायिक अभिवृत्ति का स्थायी होना हो सकता है । अध्यापन के क्षेत्र में उच्च स्तर §सामाजिक-आर्थिक§ के शिक्षक स्वयं को चतुर, मर्मज्ञ मानते हैं क्योंकि उनके पास जीवन के उत्तम साधन होते हैं, जबकि द्वितीय स्तर समूह के लोग अपनी मेहनत एवं लगन से उनके समान सम्मान पाते हैं । वे अधिक क्रियाशीलता में विश्वास करते हैं ताकि शिक्षक समूह में सम्माननीय स्तर पा सकें । द्वितीय समूह का तत्व "क्यू2" धनात्मक विचलन लिये हैं जबकि प्रथम समूह में सामान्य स्तर पर रहा है । इस तत्व को "समूह निर्भरता बनाम आत्मनिर्भरता" से जाना जाता है । द्वितीय समूह सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर प्रथम समूह से कमजोर होता है । अतः उसका सम्मान आत्मनिर्भर बनने या स्व पैरों पर खड़े होने से ही होगा, यह वह जानता है । इसलिये वह आत्म सम्मान पाने के लिये विभिन्न क्षेत्रों में क्रियाशील रहता है । यही अतिरिक्त कार्यक्षमता उसको धनात्मक विचलन प्रदान करने में सहायक होती है । जिसको "एस0ई0 ब्रे" महोदय ने शिक्षक का गुण भी माना है ।

तालिका नं0 4.6 में दोनों ही समूहों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य

TABLE: 4.7 Students-Teachers S.E.S. on Cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	Ist Grade (N=35)		IIIrd Grade (N-180)		Interpretation.
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATAGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.8	Av.	5.2	Av.	N.S.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.2-	Slt.Dev.	3.2-	Stg.Dev.	0.01
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	4.7-	Slt.Dev.	5.1	Av.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	5.2	Av.	6.4	Slt.Dev.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	4.3-	Slt.Dev.	3.4-	Stg.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	5.2	Av.	6.1	Av.	N.S.
H	Shy v/s venturesome.	6.7	Slt.Dev.	7.0	Slt.Dev.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	6.2	Av.	6.8	Slt.Dev.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.3	Av.	6.2	Av.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	5.6	Av.	6.5	Slt.Dev.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	6.4	Slt.Dev.	5.5	Av.	0.01
O	Placid v/s Apprehensive.	4.8-	Slt.Dev.	5.1	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.4	Av.	6.0	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.5	Av.	5.9	Av.	N.S.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.9	Slt.Dev.	6.5	Slt.Dev.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	3.9-	Slt.Dev.	4.6-	Slt.Dev.	0.05

AV. = Average.

SLT.DEVT. = Slightly deviaent.

STG.DEVT. = Strongly Deviaent.

(+) Indicates above average.

(-) Indicates below average.

भिन्नता को भी स्पष्ट किया गया है । व्यक्तित्व के 16 तत्वों में से किसी भी तत्व में सार्थक भिन्नता नहीं पाई गई है । इसका कारण सामाजिक मनोवृत्ति में परिवर्तन होना हो सकता है । आज का समाज मेहनती , आत्मनिर्भर तथा संयमी व्यक्ति को उच्च वर्ग से कमजोर नहीं मानता है । ये लोग साहसी , मिलनसार , और परोपकारी होते हैं । अतः दोनों ही समूहों में अत्यधिक समानता प्रगट हुई है ।

तालिका नं0 4.7 छात्र/छात्रा-अध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह स्तर तथा तृतीय समूह स्तर के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का स्टैन्स के आधार पर विश्लेषित करती है । इसमें प्रथम स्तर समूह में तत्व "बी , सी , एफ , ओ , क्यू4" तथा तृतीय समूह स्तर में तत्व "बी , एफ , क्यू4" , आदि सामान्य से ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं तथा तत्व "एच , एन , क्यू3" तथा तत्व "ई , एच , आई , एम , क्यू3", आदि सामान्य से धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । शेष तत्व सामान्य स्तर पर पाये गये हैं ।

प्रथम समूह स्तर तथा तृतीय समूह स्तर के व्यक्तित्व तत्वों में ऋणात्मक विचलन पर पाये गये तत्वों "बी , एफ , क्यू4" दोनों में सम्मिलित हैं जबकि तत्व "सी , ओ , भिन्नता लिये हुये हैं । प्रथम समूह स्तर पर तत्व "सी , ओ , ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं जबकि तृतीय समूह स्तर पर ये तत्व सामान्य स्तर पर रहे हैं । तत्व "सी" को "भावना मय बनाम संवेगात्मक" नाम से जाना जाता है । इस तत्व के कम स्तरीय होने से व्यक्ति में निराशाओं को सहने की क्षमता में कमी हो जाती है , वह स्वयं को परिवर्तनीय व्यवहार से वंचित कर लेता है , वह नाड़ीय थकान

महसूस करता है , और असंतोष प्रगट करता है । उच्च वर्ग का सामान्य विश्लेषण भी उनकी इस मनःदशा को प्रगट करते हैं । बी0 एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रायें इस वर्ग की विशेषताओं से पीड़ित रहती हैं । इसका मुख्य कारण उनकी उच्चता भाव ग्रन्थि §सुपीरियोरिटी काम्पलेक्स§ का प्रभाव मात्र हो सकता है । उच्चता भाव ग्रन्थि से हमारे समाज का उच्च वर्ग पूर्ण रूप से ग्रसित है । वह अपने अहं की पूर्ति करने के लिये रूढ़िवादी बना हुआ है और स्वयं में परिवर्तन लाना अहं को ठेस लगाना समझता है । जब इसी वर्ग के छात्र/छात्रा शिक्षण क्षेत्र में आते हैं तो स्वयं को ही श्रेष्ठ मानते हैं लेकिन होते नहीं हैं । शैक्षिक तकनीक में दूसरों से पिछड़ जाते हैं फिर भी उनमें व्यवहारिकता का विकास तथा सामाजिकता का विकास नहीं हो पाता है । अंततः वे सुस्त तथा अशान्त रहने लगते हैं । वे अपने अहं की तुष्टि के लिये एकान्त प्रिय होने लगते हैं । जबकि तृतीय समूह स्तर के छात्र/छात्रा अध्यापक अपनी क्रियाशीलता को तीव्र कर देते हैं ताकि वे स्व-सम्मान को अर्जित कर सकें और आदर्श अध्यापक कहलायें । ये लोग ऐसा इसलिये करते हैं कि पूर्वजों को सम्मान न मिला तो वे तो सम्मान अर्जित कर लें । अतः ये §तृतीय स्तर समूह§ तत्व "सी" में सामान्य स्तर पर रहे हैं । इसी प्रकार से दोनों ही समूहों में तत्व "ओ" ने भी भिन्नता प्राप्त की है । इस तत्व का नाम "प्लेसिड बनाम एपरीहैंसिव" जाना जाता है । सामान्य से ऋणात्मक विचलन वाले व्यक्तियों में गम्भीरता , विश्वास , मन की निर्मलता , प्रसन्नचित्तता , आदि विशेषतायें पाई जाती हैं । शिक्षण व्यवसाय की तकनीकि , आदर्श , पारिवारिक विरासत , आदि ने प्रथम समूह को इन गुणों के प्रगट करने के लिये प्रेरित किया ताकि वे अपने शिक्षण व्यवसाय में उच्चता स्थापित करके अपने अहं की तुष्टि कर सकें । यह समूह अपने स्तर को बनाये रखने के लिये कोशिश करता है जबकि तृतीय समूह को उच्च स्तर प्राप्त करने के लिये

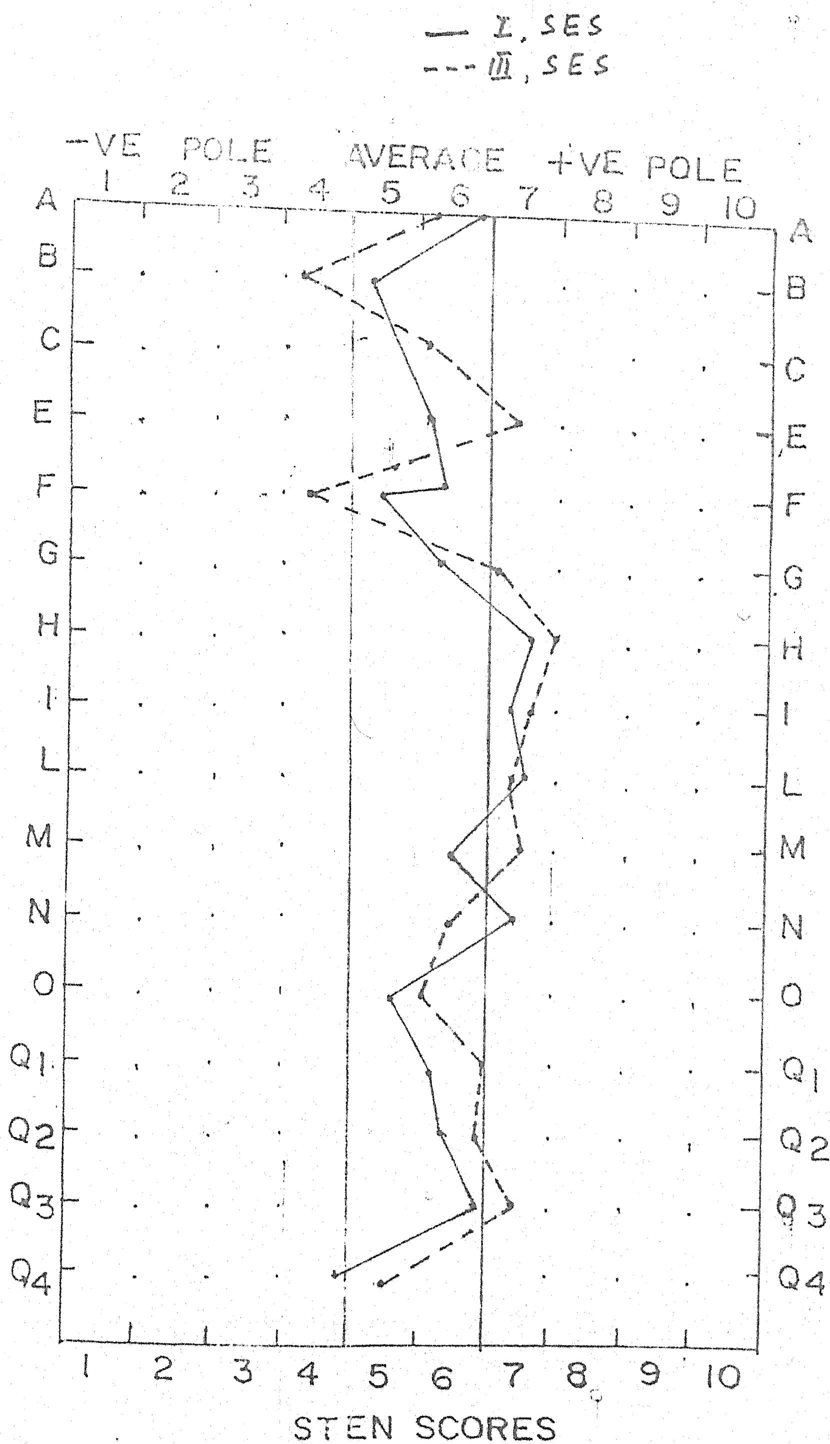


FIG.-7. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT - TEACHERS (Ist. grade & IIIrd grade)

शिक्षण तकनीक , आदर्श गुण , और सामाजिक सम्मान, आदि का विकास करना होता है । इसीलिये वे लोग स्वयं की वंशानुक्रमीय धरोहर का वर्तमान पर्यावरण में प्रयोग करके सामान्य स्तर को ही प्राप्त कर पाये । अतः दोनों ही समूहों में प्रयत्नों , प्रेरणाओं और क्रियाशीलता के कारण तत्व भिन्नता स्पष्ट हो रही है ।

सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन दोनों ही समूहों में तत्व एच , तथा क्यू3 में समान रहा है । तत्व "एन" प्रथम समूह में धनात्मक विचलन स्टैन्स (6.4) पर रहा , जबकि तृतीय समूह में तत्व "एन" सामान्य स्तर पर रहा है । इसका मुख्य कारण वंशानुक्रमीय विशेषता प्रभाव हो सकता है । ऐसा देखा गया है कि उच्च वर्ग के व्यक्तियों में कुछ विशेषतायें स्वाभाविक रूप से विकसित होती है जो उनकी उच्चता , साधन सम्पन्नता , दूरदर्शिता , आदि को स्पष्ट करती है और समाज में उच्च स्थान प्रदान कराती हैं । ये लोग चतुरता से कार्य सम्पादन करते हैं , व्यवहारिक होते हैं , समस्या समाधान विश्लेषण के आधार पर करते हैं और पूर्ण बुद्धिमत्ता का परिचय देते हैं । अतः इस तत्व में प्रथम समूह का धनात्मक विचलन और तृतीय समूह का सामान्य स्तर तक स्थापित होना स्वाभाविक प्रतीत होता है । सामाजिक-आर्थिक स्तर का तृतीय समूह व्यक्तित्व तत्व "ई , आई , एम" में धनात्मक विचलन लिये हुये हैं और प्रथम समूह में सामान्य स्तर पर रहे हैं । तत्व "ई" को "हम्बल बनाम असरटिव" से जाना जाता है । इस तत्व की अधिकता से व्यक्तित्व में स्वतन्त्र भाव , आक्रामकता , प्रतिस्पर्धा और हठीपन , आदि विशेषतायें विकसित होती हैं । छात्र/छात्रा-अध्यापकों के तृतीय समूह स्तर पर इस तत्व की प्रधानता व्यवसायिक गम्भीरता को प्रगट करती है , जो प्रत्येक शिक्षक का आवश्यक गुण माना जाता है । इसका मुख्य कारण जीवन में उच्चता प्राप्त करने की तीव्र

इच्छा और शिक्षण के प्रति समर्पण का भाव माना जा सकता है । इच्छा शक्ति पर हुये अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि लक्ष्य प्राप्ति करने में सरलता , स्पष्टता एवं स्वाभाविकता दृढ़ इच्छा शक्ति §विल पावर§ का ही परिणाम होती है । यदि हम सामाजिक-आर्थिक स्तर माँपनी के मैनुअल के पृष्ठ §9§ पर बनी तालिका को देखें तो प्रस्तुत कार्यका तथ्य प्रतिशत उच्च वर्ग §10%§ , उच्च मध्यम वर्ग §20%§ , निम्न मध्यम वर्ग §60%§ , तथा निम्न वर्ग §10%§ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय समूह सबसे बड़ा समूह है जिसमें §60%§ केसस रहते हैं । अतः यह वर्ग अपनी इच्छा शक्ति , मेहनत , लगन , और समर्पण के भाव को स्थापित करके आदर्श अध्यापक बनने की कोशिश करते हैं । परिणामस्वरूप इनका विकास सकारात्मक रहता है और इसीलिये इनका धनात्मक विचलन रहा है । उच्च वर्ग ने स्वयं को इस कार्य के लिये वंशानुक्रमीय आधार पर ही उपयोगी मान लिया तथा विशेष रूचि नहीं दिखलाई , अतः उनका विकास इस तत्व में सामान्य स्तर पर ही रहा है । तत्व "आई" का भी तृतीय समूह में धनात्मक विचलन पाया, गया है । इस तत्व को "टफ माइण्डड बनाम टेण्डर माउण्डड" के नाम से जाना जाता है । अध्यापकों में इस तत्व की प्रखरता से मानसिक लचीलापन , निर्भरता , अति सुरक्षित , भावात्मक , आदि व्यक्तित्व विशेषताओं का विकास माना जाता है । इस प्रकार के लोग रचनात्मक प्रवृत्ति के होते हैं । वे कल्पनात्मक विचारों से ग्रस्त रहते हैं । ये शालीन व्यवहार को पसन्द करते हैं न कि अव्यवहारिकता को । प्रस्तुत शोध में तृतीय समूह सामान्य स्थिति को स्थापित करता है , अतः वे स्वयं को शालीन बनाने के लिये , रचनात्मक कार्यों को सम्पादित करने के लिये नवीन योजनाओं का निर्माण करते रहते हैं ताकि स्वयं को शिक्षक के रूप में स्थापित कर सकें । इनके मन में व्यवसायिक सुरक्षा का भाव तीव्र होता है । अतः कुछ

विशेष कार्य करके ही वे स्वयं को सुरक्षित मानते हैं । इसके विपरीत प्रथम समूह अपनी सुरक्षा को उच्च वर्ग के कारण मानता है , अत: वह नवीन योजनाओं को बनाना और उन पर अमल करने का प्रयास ही नहीं करता है । इसीलिये इस तत्व में वह सामान्य स्तर पर रहा है । व्यक्तित्व तत्व "एम" का स्टैन्स ¿6.5+¿ रहा है जो सामान्य से धनात्मक विचलन स्थापित करता है । इस तत्व को "व्यवहारिक बनाम काल्पनिक" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व की प्रधानता से व्यक्तित्व में आँतरिक शक्ति का व्यवहार पर प्रभाव स्पष्ट होता है । ऐसा व्यक्ति अपने क्षेत्र में नवीनता स्थापित करता है । वह अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा रचनात्मक कार्यों को स्पष्ट करता है जो सामान्य लोगों की समझ में नहीं आते हैं और वह व्यक्ति अपने समूह से कट सा जाता है । लेकिन यही रचनात्मकता एक दिन उसको विख्यात करती है । महान शिक्षाशास्त्री इसी मार्ग पर चलकर प्रसिद्ध हुये हैं। प्रशिक्षण के दौरान यह स्पष्ट किया जाता है कि अध्यापक को अपनी समस्या का समाधान स्वविवेक के आधार पर करना चाहिये ताकि छात्रों का अहित न हो । परिणामस्वरूप उनमें काल्पनिक दृष्टिकोण का विकास स्वाभाविक रूप से हो जाता है । इसी विशेषता को "टी0 पी0 नन" महोदय ने "स्वाभाविकता" ¿ओरजिनलिटी¿ माना है जो अन्य लोगों से व्यक्ति को सैद्धान्तिक व व्यवहारिक रूप से भिन्न रूप में स्थापित करती है । उच्च वर्ग अपने अहं के कारण और समर्पण के अभाव के कारण स्वयं को इस तत्व में सामान्य स्तर का पाता है । जबकि तृतीय समूह अपनी उच्चाकांक्षा के कारण , समर्पण के कारण धनात्मक विचलन पर आया है ।

शोध कर्ता ने प्रथम समूह व तृतीय समूह के बीच भिन्नता की सार्थकता को जानने का प्रयास किया । व्यक्तित्व के 16 तत्वों में से सिर्फ तत्व "बी , एन , क्यू4" में ही भिन्नता की सार्थकता स्पष्ट हुई है । तत्व "बी" में सार्थक भिन्नता 0.01 स्तर पर स्थापित हुई है । यह तत्व छात्र/

जन्मजात योग्यता (स्पियरमैन , आदि) माना जाता है । अभ्यास के द्वारा इसमें तीव्रता , तेजी लाई जा सकती है , लेकिन कम या अधिक नहीं (मात्रा) किया जा सकता है । शिक्षा के क्षेत्र में बुद्धि के प्रयोगों से स्पष्ट हो चुका है कि समाज के उच्च वर्ग में मानसिक योग्यताओं के समूह अधिक तीव्र होते हैं (एनास्टेसी , 1934) अपेक्षाकृत मध्य वर्ग स्तर के । अतः बौद्धिक रूप से दोनों ही समूहों में जो अन्तर प्रगट हुआ है वह उचित ही प्रतीत होता है । व्यक्तित्व तत्व "क्यू4" में सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर पर प्रगट हुई है । इस तत्व को मानसिक उत्तेजना के रूप में जाना जाता है । उच्च स्तरीय समूह का अहं समाज में उच्चता के भाव के कारण तनाव विकसित करने में सहायक होती है जबकि सामान्य स्तरी वर्ग सोच-समझ कर कार्य करता है ताकि उसका सम्मान बना रहे । वह असामान्य दशा में भी आराम से सोच-समझ कर कार्य करता है , जल्दी तनावग्रस्त नहीं होता है । परिणामस्वरूप शिक्षण व्यवसाय में वह सफल होता है तथा उसका छात्र , समाज , सहयोगियों में सम्मान होता है । अतः दोनों समूहों की भिन्नता इस तत्व में स्पष्ट होती है । सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह तथा तृतीय समूह छात्र/छात्रा-अध्यापकों में तत्व "एन" में सार्थक भिन्नता 0.0 स्तर पर स्थापित हुई हैं । इस तत्व को "अग्रगामी बनाम चतुर" के नाम से जाना जाता है । अध्यापन के क्षेत्र में विषय की गहनता , ज्ञान को देने का तरीका तथा कक्षा समस्याओं का समाधान , आदि को शालीनता , चतुरता, और मर्मज्ञता के साथ करना माना जाता है । जो अध्यापक अभ्यास के दौरान तकनीकों का सही प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते हैं , वे अन्य शिक्षकों की अपेक्षा अधि कुशल (स्किल्ड) हो जाते हैं । इसीलिये इस तत्व में दोनों समूहों में भिन्नता की सार्थकता स्पष्ट हुई है ।

TABLE: 4.8 Students-Teachers S.E.S. on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	Ist Grade (N=35)		4th Grade (N=160)		Inte- tati
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.8	Av.	5.7	Av.	0.05
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.2-	Slt.Dev.	3.2-	Slt.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotion -ally stable.	4.7	Slt.Dev.	3.5-	Slt.Dev.	N.S.
E	Humble v/s asser- tive.	5.2	Av.	5.5	Av.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	4.3-	Slt.Dev.	3.8-	Slt.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	5.2	Av.	5.8	Av.	0.05
H	Shy v/s venture- some.	6.7	Slt.Dev.	5.6	Av.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	6.2	Av.	5.7	Av.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.3	Av.	7.2	Slt.Dev.	0.01
M	Practical v/s Imaginative.	5.6	Av.	6.1	Av.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	6.4	Slt.Dev.	5.9	Av.	N.S.
O	Placid v/s Apprehensive.	4.8-	Slt.Dev.	5.8	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.4	Av.	6.1	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.5	Av.	5.9	Av.	0.01
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.9	Slt.Dev.	6.1	Av.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	3.9-	Slt.Dev.	6.5	Slt.Dev.	N.S.

AV. = Average.
SLT.DEVT. = Slightly deviaent.
STG.DEVT. = Strongly deviaent.

(+) Indicates above average.
(-) Indicates below average.

तालिका नं0 4.8 छात्र/छात्रा-अध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह तथा चतुर्थ समूह के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का स्टैन्स के आधार पर विश्लेषित करती है । ऋणात्मक विचलन में तत्व "बी , सी , एफ , दोनों ही समूहों में समान स्थिति में पाये गये हैं । इसके प्रमुख कारण शिक्षण व्यवसाय के लिये आवश्यक विशेषताओं को ग्रहण करना मात्र हो सकता है । तत्व "बी" मानसिक , बौद्धिक योग्यता तथा क्षमता से सम्बन्धित है , जिसकी आवश्यकता दोनों ही समूहों को शिक्षा प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिये होती है । इस क्षमता का विकास अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा ही किया जा सकता है । इसमें वृद्धि सम्भव नहीं हो सकती है । अतः दोनों समूहों के अध्यापकों के लिये यह तत्व समान स्थिति में रहा है । व्यक्तित्व तत्व "सी" अध्यापक के भावात्मक पहलू से सम्बन्ध रखता है । कक्षा शिक्षण में छात्रों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान में समस्या के आ जाने पर , समस्यात्मक छात्रों के समाधान पर अध्यापक को भावात्मक स्तर पर समान रहना होता है ताकि छात्र का किसी भी रूप में अहित न हो सके । अतः दोनों ही समूहों में स्थिति एक समान रही है । तत्व "एफ"को "शोबर बनाम हैपीगोलकी" से जाना जाता है । इसका ऋणात्मक विचलन व्यक्तियों को शालीनता की ओर ले जाता है अध्यापन कार्य ऐसा ही व्यवसाय माना गया है । इससे व्यक्ति के स्वभाव में नियन्त्रण , मितव्ययिता , गम्भीरता , अल्पभाषीपन आदि विशेषताओं का विकास होता है , जो शिक्षक के लिये आवश्यक मानी जाती है §ब्रे , एस ई0 पृष्ठ 213§ । इसीलिये दोनों समूहों में व्यवसायिक प्रशिक्षण के कारण विकसित योग्यतायें समान रूप में स्थापित हुई हैं ।

प्रथम समूह तथा चतुर्थ समूह में तत्व "ओ तथा क्यू4" में भिन्नता

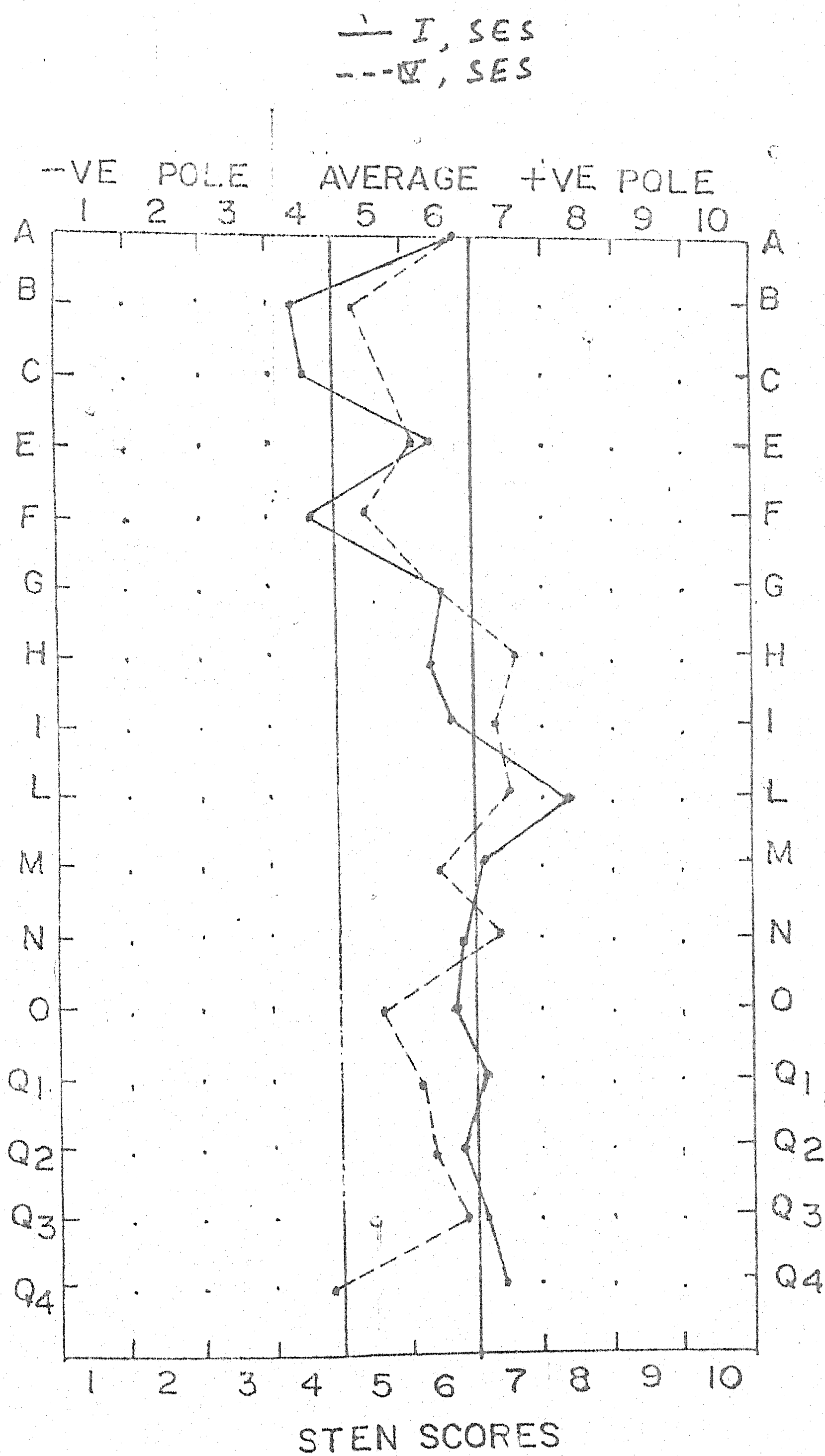


FIG. - 8. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT - TEACHERS (1st. grade & IVth grade)

भी प्रगट करते हैं । इनमें तत्व "ओ" प्रथम समूह में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं , जबकि चतुर्थ समूह में सामान्य स्तर पर रहा है । इसका मुख्य कारण आत्मविश्वास ॥व्यवसाय के प्रति॥ हो सकता है । प्रथम समूह में किसी नवीन कार्य के प्रति जन्मजात आत्मविश्वास प्राप्त है जबकि चतुर्थ समूह को आत्मविश्वास को अभ्यास के द्वारा प्राप्त करना होता है । अतः प्रथम समूह के अध्यापक प्रसन्नचित्त रहकर अपने कार्य को करते हैं जबकि चतुर्थ समूह के अध्यापक चिन्तित और सहमें-सहमें से दिखाई देते हैं । अतः दोनों ही समूह तत्व "ओ" में भिन्नता रखते हैं । इसके साथ ही तत्व "क्यू4" प्रथम समूह में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं जबकि चतुर्थ समूह में धनात्मक विचलन लिये हुये है । इसका मुख्य कारण समायोजन का अभाव हो सकता है । इस तत्व को "शांत बनाम तनाव" से जाना जाता है । इस तत्व का ऋणात्मक विचलन व्यक्ति में शांतप्रियता , आरामतलबी पसंद करता है और धनात्मक विचलन अशांत , चिन्तित , तनाव , आदि विशेषताओं से युक्त रहता है । शोधकर्ता का प्रथम समूह उच्च स्तरीय है । अतः इनमें आत्मविश्वास होता है जो प्रत्येक परिस्थिति में शांतपूर्वक रहकर व्यवसाय में क्रियारत रहते हैं जबकि चतुर्थ समूह के अध्यापकों में आत्म विश्वास की कमी होती है । वे किसी भी कार्य को विश्वास पूर्वक करने की इच्छा का विकास नहीं कर पाते हैं । फिरभी उनमें शिक्षा कार्य को सीखने की तीव्र लालसा होती है , लेकिन गलत करने का भय भी लगा रहता है जिससे वे स्वयं को चिन्तित , तनावपूर्ण स्थिति में स्थापित करते हैं । यही कारण है कि दोनों समूहों में तत्व क्यू4 की विपरीत स्थिति रही है । इसी प्रकार से तत्व "एल" का चतुर्थ समूह में धनात्मक विचलन रहा है जबकि प्रथम समूह में सामान्य स्तर रहा है । इस तत्व को "ट्रस्टिंग बनाम सस्पिसस" नाम से जाना जाता है । इस तत्व में जब

धनात्मक विचलन होता है तो कार्य के प्रति शंकायें विकसित होती हैं । ये लोग एकाग्री होते हैं । समूह के सदस्य अपने के योग्य स्वयं को नहीं पाते हैं , क्योंकि प्रत्येक कार्य को शंका की दृष्टि से देखते हैं । अतः चतुर्थ समूह में इस तत्व का धनात्मक विचलन उनकी मनःस्थिति को स्पष्ट करता है । शिक्षण अभ्यास के दौरान सही क्रिया-कौशल को भी सन्देह के रूप में लेते हैं , जो आत्मविश्वास की कमी को स्पष्ट करती है । प्रथम समूह में ये तत्व सामान्य स्तर पर है जो अभ्यास के द्वारा विश्वास प्राप्त करने में सक्षम् होते हैं ।

बी0 एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के प्रथम समूह में तत्व "एच , एन , क्यू3" आदि ने धनात्मक विचलन पाया है जबकि ये तत्व चतुर्थ समूह में सामान्य स्तर पर रहे हैं । व्यक्तित्व तत्व "एच" को "शाय बनाम वेन्चरसम" के नाम से जाना जाता है । इसके प्रभाव से व्यक्ति में दृढ़ता , सामाजिकता , नवीन कार्य को करने को तैयार रहना, स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करना , संवेगों पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित करना , आदि विशेषतायें विकसित हो जाती है । सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह में साहसिकता , स्वतन्त्रता और क्रियाशीलता इसलिये पायी गई कि वे स्वयं को उच्च स्तर का मानते हैं । इन पर भौतिकता का प्रभाव पड़ा , जिसने इनके मानसिक सोच को ही बदल दिया । इसके साथ ही चतुर्थ समूह के लोग अपना सम्बन्ध , साहचर्य अपने वर्ग स्तर से न तोड़ पाये । दोनों ही अध्यापक समान प्रशिक्षण ले रहे हैं , फिर भी मानसिक तौर पर चतुर्थ समूह स्वयं को विगत पारिवारिक स्थिति से विलग नहीं कर पाया । अतः ये लोग सामान्य स्तर से ऊँचे न उठ सके । व्यक्तित्व तत्व "एन" को "फोर्थ राइट बनाम श्रुरुड" से जाना जाता है । प्रथम समूह का इस तत्व में

धनात्मक विचलन अभ्यास के द्वारा ग्रहण किये गये तकनीकी ज्ञान के कारण अध्यापक व्यक्तित्व में आये परिवर्तन से है । इस तत्व के प्रभाव से व्यक्तित्व में चतुरता , गहनता , मर्मज्ञता , समयबद्ध क्रियाशीलता , आदि विशेषताओं का प्रगटीकरण होता है जो छात्र/छात्रा-अध्यापकों को व्यवसायिक , सांसारिकता तथा व्यवहार करने योग्य बनाती है । यह वर्ग जन्मजात रूप से पाये गये विशिष्ट तत्वों के कारण सामान्य स्तर से उच्च तो होता ही है , साथ ही साथ शिक्षण अभ्यास का प्रभाव उसे और उच्च बनाने में सहयोग देता है । जबकि चतुर्थ समूह के पास पारिवारिक धरोहर नाम की विशेषतायें कम होती हैं । वे सिर्फ शिक्षक-प्रशिक्षण में कौशल प्राप्त करके स्वयं को आदर्श अध्यापक के रूप में स्थापित करते हैं । अतः ये लोग सामान्य स्तर तक ही तत्व "एन" में आ पाये हैं । व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" में भी प्रथम समूह ने धनात्मक विचलन पाया है । इस तत्व को अनुशासन के सन्दर्भ में स्थापित किया गया है । इसमें चतुर्थ समूह के छात्र/छात्रा-अध्यापक सामान्य स्तर पर रहे हैं जबकि प्रथम समूह धनात्मक पर रहा है । इसका मुख्य कारण पारिवारिक पर्यावरण का प्रभाव मात्र हो सकता है । दोनों ही समूहों में पारिवारिक , वंशानुक्रम , आदि विशेषताओं के आधार पर काफी भिन्नता होती है । इस तथ्य को सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी के मैनुअल से स्पष्ट किया गया है ताकि प्रथम वर्ग और चतुर्थ में केवल क्रिया-शीलता में ही अन्तर नहीं होता है बल्कि पर्यावरणीय अन्तर भी होता है । शोधकर्ता स्वयं एक शिक्षक है । वह ऐसे बच्चों के अनुशासन को प्रतिदिन कक्षा में देखता है । कुछ छात्रों को बैठने के तरीकों को सिखाना नहीं पड़ता है बल्कि कुछ को बार-बार सिखाना पड़ता है ताकि उनका स्वास्थ्य सही रहे । इसी लिये प्रस्तुतकार्य में प्रथम समूह में संवेगात्मक , और

सामान्य व्यवहार में विशेष अनुशासन देखने को मिला है । वे सामाजिक सम्मान पाने के लिये स्वयं के सम्मान को नियंत्रित करते हैं , ताकि स्वयं अच्छे नेतृत्व के गुणों का विकास कर सकें । ऐसे लोगों में जन्मजात प्रभुत्व के गुण होते हैं , साथ ही शिक्षण-प्रशिक्षण के द्वारा उनको सही दिशा में स्थापित किया जाता है । अतः दोनों समूहों में तत्व "क्यू3" में विकासात्मक भिन्नता स्वाभाविक है ।

बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के प्रथम बनाम चतुर्थ समूह को व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य को स्टैन्स के आधार पर विश्लेषण करने के पश्चात् व्यक्तित्व के 16 तत्वों में भिन्नता की सार्थकता को जानना आवश्यक हो जाता है ताकि व्यक्तित्व विशेषताओं को स्पष्ट किया जा सके । अध्ययन के 16 तत्वों में से सिर्फ चार तत्व "ए" , और "जी" 0.05 स्तर पर तथा तत्व "एल , क्यू2" 0.01 स्तर पर सार्थक भिन्नता प्रगट करते हैं । व्यक्तित्व विशेषता तत्व "ए" को "रिजवर्ड बनाम आउट गोइंग" से जाना जाता है । दोनों समूहों में भिन्नता का कारण पारिवारिक परिवेश तथा वंशानुक्रम की विशेषतायें हो सकती हैं । प्रथम समूह जिसे सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी मैनुअल में उच्च वर्ग माना गया है , वह स्वयं में वंशानुक्रमीय क्षमता तथा पारिवारिक समृद्धता से प्रभावित है जबकि चतुर्थ वर्ग दोनों में ही कम है । अतः स्वभाव या व्यवहार की गम्भीरता और उच्छृंखलता का विकास पारिवारिक पृष्ठ भूमि पर आधारित हो सकता है । तत्व "जी" में 0.05 स्तर पर सार्थक भिन्नता प्रगट हुई है । तत्व "जी" को चेतनात्मकता के रूप में जाना जाता है । इसमें परम अहं का कमजोर होने या सशक्त होने का आँकलन होता है । इस तत्व में भिन्नता का कारण नैतिकता में मात्रात्मक विश्वास

करना, और धर्म परायणता से व्यवहार करना हो सकता है । प्रथम समूह उच्च वर्ग होने के कारण धार्मिक विश्लेषण में विश्वास करता है । इस पर भी उनके पारिवारिक सोच का स्थायी प्रभाव परिलक्षित होता है । अतः दोनों समूहों में भिन्नता की सार्थकता स्पष्ट हुई है । व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एल" ने 0.01 स्तर पर सार्थक भिन्नता स्थापित की है । इसको "ट्रस्टिंग बनाम सस्पिसस" के नाम से जाना जाता है । इस विशेषता के कारण व्यक्तित्व पार्श्व दृश्य में प्रभुत्व पक्ष का विकास सम्पन्न होता है । व्यवसाय में विश्वास स्थापित करना , आदर्श व्यक्तित्व का गठन करना तथा सन्देहात्मक स्थिति से उबर कर वास्तविकता को आत्मसात करना अध्यापक के लिये आवश्यक माना गया है । शिक्षक-प्रशिक्षण इनके विकास के लिये उचित् वातावरण तैयार करता है , तकनीकों के द्वारा समस्यात्मक निदान बताता है , और सुधारात्मक अनुशासन की स्थापना सिखाता है । परिणाम स्वरूप प्रत्येक समूह अपनी योग्यता और क्षमतानुसार इस प्रशिक्षण को धारण करता है । अतः धारणा शक्ति की भिन्नता ही तत्व "एल" के प्रभाव में भिन्नता स्थापित करने में सक्षम हो सकती है । सार्थकता स्तर 0.01 पर तत्व क्यू2 ने भी भिन्नता स्थापित की है । इस तत्व को निर्भरता के रूप में जाना जाता है । जब इस तत्व का प्रभाव कम होता है तो व्यक्ति समूह पर निर्भर रहता है , और जब प्रभाव अधिक होता है , तब वह आत्म निर्भर हो जाता है । प्रथम समूह वंशानुक्रम और पर्यावरण के आधार पर सक्षम होता है , अतः उसमें आत्मनिर्भरता स्वतः ही आ जाती है । लेकिन चतुर्थ समूह सभी प्रकार से कमजोर होता है , इसलिये उसमें समूह निर्भरता रहती है । अतः व्यक्तित्व में आक्रामकता , स्वतन्त्रता , प्रति स्पर्धा और हठी होना , आदि विशेषताओं का विकास सार्थकता {भिन्नता} को स्पष्ट करते हैं । समाज में तीन प्रकार के व्यक्ति होते हैं -{अ} अकेले चलने वाले {ब} समूह

TABLE: 4.9 Students-Teachers S.E.S. on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	2nd Grade (N=125)		3rd Grade (N=180)		Interpre-tation.
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.7	Av.	5.2	Av.	N.S.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.1-	Slt.Dev.	3.2-	Stg.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotion ally stable.	4.6-	Slt.Dev.	5.1	Av.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	5.7	Av.	6.4	Slt.Dev.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	3.9-	Slt.Dev.	3.4-	Stg.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	5.3	Av.	6.1	Av.	N.S.
H	Shy v/s venture some.	6.2	Slt.Dev.	7.0	Slt.Dev.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	5.8	Av.	6.8	Slt.Dev.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.0	Av.	6.2	Av.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	5.8	Av.	6.5+	Slt.Dev.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	5.9	Av.	5.5	Av.	0.05
O	Placid v/s Apprehensive.	5.2	Av.	5.1	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.7	Av.	6.0	Av.	0.05
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	6.3	Slt.Dev.	5.9	Av.	N.S.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.7	Slt.Dev.	6.5	Slt.Dev.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	3.5-	Slt.Dev.	4.6-	Slt.Dev.	N.S.

AV. = Average.

SLT.DEVT. = Slightly deviaent.

STG.DEVT. = Strongly deviaent.

(+) Indicates above average.

(-) Indicates below average.

के साथ चलने वाले §ख§ पीछे चलने वाले । अत: इनमें कभी भी एकता , समानता , आदि स्थापित नहीं हो पाती है ।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि प्रथम तथा चतुर्थ समूह में भिन्नता कम और समानता अधिक स्पष्ट हुई है । इसका आधार सभी व्यक्तित्व विशेषताओं का प्रत्येक व्यक्ति में होना तथा प्रगटीकरण में अन्तर होना मात्र हो सकता है । इसके लिये पर्यावरण अपनी अहं भूमिका अदा करता है ।

स्टैन्स तालिका 4.9 में छात्र/छात्रा-अध्यापकों के द्वितीय समूह तथा तृतीय समूह का सामाजिक-आर्थिक स्तर पर व्यक्तित्व पाश्र्व-दृश्य का विश्लेषण किया गया है । इसमें द्वितीय समूह में सामान्य स्तर पर तत्व "ए , ई , जी , आई , एल , एम , एन , ओ , क्यू1 ", आदि रहे हैं तथा तृतीय समूह में तत्व "ए , सी , जी , एल , एन , ओ , क्यू1 , क्यू2" आदि रहे हैं । ऋणात्मक विचलन के लिये तत्व "बी , सी , एफ , क्यू4" , आदि तथा तत्व "बी , एफ , क्यू4",आदि रहे हैं । द्वितीय समूह में धनात्मक विचलन लिये तत्व "एच , क्यू2 तथा क्यू3" रहे हैं तथा तृतीय समूह में व्यक्तित्व तत्व "ई , एच , आई , एम , क्यू3, आदि रहे हैं । इस प्रकार से द्वितीय समूह में व्यक्तित्व तत्व 16 में से सिर्फ 07 में ही विचलन स्थापित हुआ है जबकि तृतीय समूह में 08 तत्वों में विचलन रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों की व्यक्तित्व पाश्र्वदृश्य विकास की स्थिति समान सी है । फिर भी शोध कर्ता को विचलनों की स्थिति का वर्गीकरण करना आवश्यक हो जाता है ।

छात्र/छात्रा-शिक्षकों के दोनों ही समूहों में व्यक्तित्व तत्व "बी" की स्थिति ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । इस तत्व को "कम मानसिक निष्पादन क्षमता बनाम अधिक मानसिक निष्पादन क्षमता" के नाम से जाना जाता है । यह कार्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बुद्धि से सम्बन्ध रखता है । इस तत्व में ऋणात्मक विचलन स्पष्ट करता है कि दोनों ही समूह के शिक्षक नवीन कार्य के सीखने तथा धारण करने में धीमी गति रखते हैं । वे तथ्यात्मक तथा साहित्यक व्याख्या में सुस्त होते हैं । इन के पीछे बुद्धि की कमी भी हो सकती है और मस्तिष्क रोग के कारण निष्पादन में कमी भी । प्रस्तुत तथ्यात्मक विश्लेषण से दोनों समूहों में बुद्धि की मात्रा की कमी इसलिये प्रतीत नहीं होती है कि बी0एड0 चयन पद्धति परीक्षणों पर आधारित है । दोनों ही सही रूप से चयन होकर आये हैं । अतः इनके ऋणात्मक विचलन में मनोवैज्ञानिक कारणों की सम्भावना हो सकती है । नवीन कार्य को सीखने एवं समझने में धैर्य , विश्वास , सीखने की उन्नति का प्रभाव , प्रशिक्षण का पर्यावरण , प्रशिक्षणकर्ताओं का व्यवहार आदि अपना प्रभाव छात्रों पर स्थापित करते हैं । इनके साथ समायोजन स्थापित न होने पर निष्पादन में गिरावट आ जाती है । इसको अभ्यास के द्वारा दूर किया जाता है । इसीलिये बी0एड0 प्रशिक्षण में सिद्धान्त तथा शिक्षण क्रिया का अभ्यास अलग-अलग करवाया जाता है । तत्व "सी" द्वितीय समूह में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । इस तत्व को संवेगात्मक स्थिति से जाना जाता है । इस तत्व का अध्यापकों में ऋणात्मक विचलन उनकी मानसिक दशा की गत्यात्मकता को प्रगट करता है । ऐसा व्यक्ति असंतोषजनक स्थिति में निराशा को सहन करने में कमजोर होता है । वह वास्तविकता से दूर रहता है । सुस्ती को महसूस करता है और उसमें मानसिक विकार उत्पन्न हो जाते हैं । शोधकर्ता ने स्वयं बी0एड0

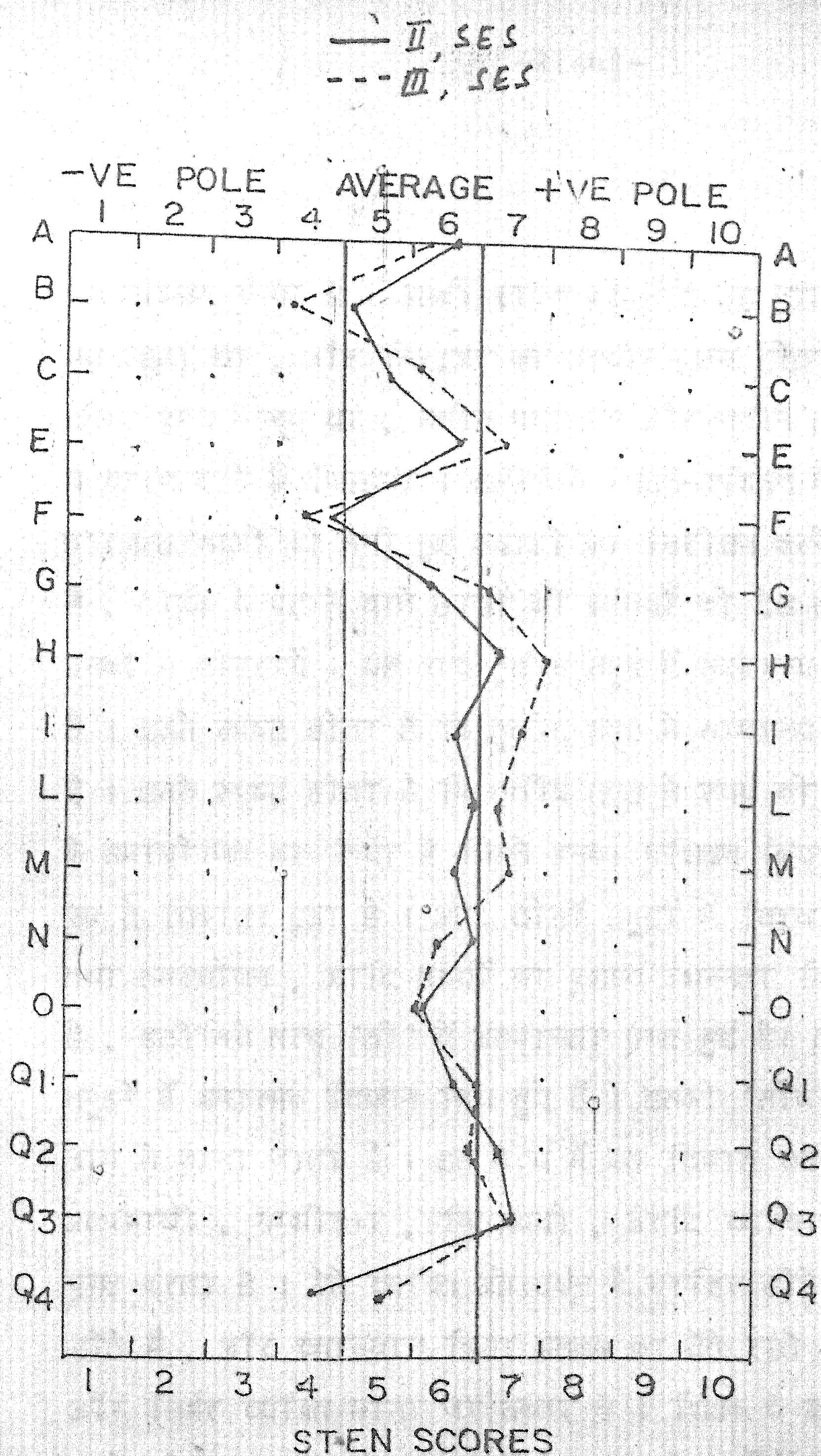


FIG.- 9. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT - TEACHERS (2nd grade & 3rd grade)

का प्रशिक्षण लिया है । उसकी रात्रि की नींद उड़ जाती थी , मानसिक भय रहता था , और निराशा का उत्थान-पतन होता रहता था । इनका प्रमुख कारण था , नवीन पर्यावरण और नवीन तकनीक को ग्रहण व धारण करने में पिछड़ना । इसीलिये शिक्षण-प्रशिक्षण के समय खाली छात्र/छात्राओं को लगी हुई कक्षाओं का निरीक्षण करने को कहा जाता है , ताकि वे पढ़ाने वाले छात्रों की कमियों को देख सकें और स्वयं उनको न दोहरायें । यह तत्व तृतीय समूह में सामान्य स्तर पर आया है । इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय समूह में सामान्य स्तर पर आया है । इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय समूह ने स्वयं को बिना किसी शंका के समायोजित कर लिया है जिससे उनका प्रशिक्षण क्रियाओं में विकास सही रूप से विकसित हुआ है । अतः दोनों समूहों में विश्वास , तर्क , विश्लेषण तथा समायोजन , आदि तथ्यों का प्रभाव भिन्नता लिये हुये दिखाई देता है , इसीलिये तत्व "सी" में असमानता प्रगट हुई है। तत्व "एफ" दोनों ही समूहों में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । इसको "सोबर बनाम हैपीगोलकी" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में कम विकास व्यक्तियों में सीमाबद्धता, अल्पभाषी , गम्भीरता , मितव्ययी , आदि व्यक्तिगत विशेषताओं को प्रगट करता है । ऐसे व्यक्ति अंतरदर्शन में माहिर होते हैं , निराशावादी होते हैं , और व्याख्यान बिना मतलब का देते रहते हैं । इनको शालीन और निर्भर व्यक्ति माना जा सकता है । शिक्षक के व्यक्तित्व को देखा जाये तो वह अन्तरदर्शन विचारों से युक्त होता है , व्यवहार में शालीनता, मितव्ययिता §श्रम , धन , शक्ति§ तथा बोलने में ज्ञान की गम्भीरता झलकती रहती है । अतः इन व्यक्तित्व विशेषताओं का विकास प्रत्येक प्रशिक्षणकर्ता स्वयं में करना आवश्यक समझता है । इस तत्व का ऋणात्मक प्रभाव दोनों ही छात्र/छात्रा-अध्यापक समूहों पर परिलक्षित हुआ है । तत्व "क्यू4" का भी ऋणात्मक विचलन दोनों ही समूहों में रहा है । इस तत्व को

"रिलैक्सड बनाम टैन्स" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व की कमी से व्यक्तियों में आरामतलबी , क्षोभरहित , जड़ , उत्साह , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें विकसित होती हैं । एक अध्यापक को आराम से यानी शांत मन से कार्य करना चाहिये , निराशाओं के प्रभाव से दूर रहना चाहिये और प्रत्येक कार्य को उत्साह के साथ पूरा करना चाहिये । ये लोग शिक्षण कार्य के प्रति इतने संतुष्ट हो जाते हैं कि इनका निष्पादन ही गिर जाता है । अतः इन लोगों के लिये प्रेरक तत्वों की सदैव आवश्यकता रहती है । अध्यापक को उच्च तनाव में कभी भी नहीं आना चाहिये । अन्यथा विधालय तथा कक्षा कार्यों में अन्तरावरोध उत्पन्न हो जाता है । परिणाम स्वरूप दोनों ही समूहों में तत्व "क्यू4" ऋणात्मक स्तर पर रहा है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर पर आधारित द्वितीय एवं तृतीय समूह का सामान्य से धनात्मक विचलन तत्व "एच , क्यू4 , क्यू 3 , ई , आई , एम ," आदि में रहा है । दोनों ही समूहों में तत्व "एच" और "क्यू3" समान स्तर पर रहे हैं । द्वितीय समूह में तत्व "क्यू2" धनात्मक स्तर पर रहा है और यही तत्व तृतीय समूह में सामान्य स्तर पर रहा है । इस तत्व को निर्भरता के भाव से जाना जाता है । इस तत्व के अधिक होने से व्यक्ति में आत्मनिर्भरता , स्वनिर्णय की क्षमता , और साधन सम्पन्नता , आदि विशेषतायें विकसित होती हैं । ये लोग स्वभाव से आत्मनिर्भर , अपने पथानुरागी , और अपने निर्णय स्वयं करने वाले होते हैं । इसलिये इनको अन्य लोगों की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती है । द्वितीय समूह के स्तर और तृतीय समूह के स्तर में मौलिक भिन्नता है , अतः शिक्षक के गुणों के विकास में अन्तर होना स्वाभाविक हो जाता है । तृतीय समूह में तत्व

"ई" धनात्मक स्तर पर रहा है जबकि द्वितीय समूह में सामान्य स्तर पर रहा है । इस तत्व को "[illegible]मिसिवनैस बनाम डामीनैन्स" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व का अधिक प्रभाव व्यक्ति में प्रभुत्व के भाव का विकास करता है । अध्यापक वर्ग का प्रभुत्व , अनुशासन , प्रतिस्पर्धी भाव विकास , और स्वाभाविक चिन्तन के द्वारा प्रगट होता है । सामान्य तौर पर द्वितीय समूह में यह भाव स्वतः ही रहता है , अतः वे प्रशिक्षण के दौरान इसके विकास की कोशिश नहीं करते हैं , जबकि तृतीय वर्ग हमेशा से दब्बू रहा है । अतः वह प्रशिक्षण के दौरान अध्यापक प्रभुत्व का विकास तत्परता के साथ करता है । परिणाम स्वरूप तृतीय समूह में प्रभुत्व का भाव अधिक तीव्र पाया गया है । व्यक्तित्व विशेषता तत्व "आई" का प्रभाव तृतीय समूह में अधिक रहा है । इस तत्व की प्रबलता से व्यक्तित्व में रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास होता है । वह कलात्मक क्रियाओं में अधिक रूचि दिखलाता है । वह निर्दयी व्यक्तियों को और रूखे व्यवसायों को पसन्द नहीं करता है । इसलिये इनमें सुरक्षा का भाव तथा निर्भरता अधिक मात्रा में देखने को मिलती है । इसका प्रमुख कारण व्यवसाय से प्राप्त सम्मान को सुरक्षित रखने का भाव हो सकता है । अतः इस प्रकार के लोग §शिक्षक§ अपने प्रशिक्षण काल में ऐसे रचनात्मक , स्वाभाविक कार्य करते हैं जो उनको तथा उनके व्यवसाय को सम्मान तथा सुरक्षा प्रदान कर सके । तत्व "एम" का धनात्मक विचलन तृतीय समूह में रहा और द्वितीय समूह में सामान्य स्तर पर रहा । इस तत्व को "व्यवहारिक बनाम कल्पनात्मकता" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व का अधिक प्रभाव शिक्षकों में कल्पना शक्ति का विकास , आकांक्षाहीन बनाना , अव्यवहारिक बनाना तथा विस्मरण करना , आदि विशेषताओं को परिलक्षित करता है । ये लोग दैनिक जीवन की क्रियाकलापों से अनभिज्ञ रहते हैं । स्वप्रेरित होते हैं , रचनात्मकता में विश्वास करते हैं । अतः इनको

सामूहिक क्रियाओं से विलग किया जाता है । बी०एड० प्रशिक्षण प्राप्त छात्र/छात्रा-अध्यापकों में इस तत्व का प्रभाव इसलिये रहा है कि वे शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान देना चाहते हैं । परिणाम स्वरूप उनमें काल्पनिक विचार विकसित होते हैं जिनका दैनिक शिक्षण में प्रयोग करके स्वयं को विशिष्ट मानते हैं । जबकि द्वितीय समूह परिवर्तन के लिये किये गये काल्पनिक विचारों को व्यवहारिक नहीं मानता है । जैसे कक्षा पढ़ाते समय बोर्ड पर दिनाँक बाँई ओर , लिखने का प्रचलन है यदि उसे दायीं ओर लिख दें , तो क्या प्रभाव पड़ेगा ? आदि कल्पनात्मक परिवर्तन आज का अध्यापक लाना चाहता है, जो सामयिक भी है ।

द्वितीय एवं तृतीय समूह की व्यक्तित्व विशेषताओं से परिलक्षित पार्श्वदृश्य का विश्लेषण करने के पश्चात शोधकर्ता दोनों समूहों की विशेषताओं में भिन्नता की सार्थकता को जानने की कोशिश करता है । दोनों समूहों में तत्व "एन" तथा "क्यू।" में भिन्नता की सार्थकता 0.05 स्तर पर प्रगट हुई है । तत्व "एन" को "फोर्थराइट बनाम शुरूड" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में कम स्कोर पाने वाले व्यक्ति निष्कपट , भावनाप्रद , और सादा जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं । ये लोग कभी-कभी कठोर एवं असहनीय भी हो जाते हैं । यह एकदम प्रसन्न भी हो जाते हैं और स्वतन्त्र विचार वाले होते हैं । इस तत्व का प्रभाव जिन व्यक्तियों में तीव्रता लिये हुये होता है , उनमें व्यक्तित्व की विशेषतायें-चतुरता , मर्मज्ञता , सूक्ष्म बुद्धि , सांसारिकता , आदि पाई जाती है । ये कभी-कभी दृढ़ विचार और विश्लेषणवादी भी दिखते हैं । ये प्रत्येक परिस्थिति को तथ्यात्मकता के आधार पर देखते हैं , न कि भावात्मक आधार पर , क्योंकि तथ्यात्मकता में बौद्धिक पहलू अधिक होता है । बी०एड० प्रशिक्षणरत दोनों ही समूहों में

अभ्यास के प्रभाव से उत्पन्न परिवर्तन तथा शिक्षण व्यवसाय को आत्मसात करके आदर्श शिक्षक के भाव का विकास ही भिन्नता स्थापित करने में समर्थ प्रतीत होता है । एक आदर्श अध्यापक के लिये सांसारिकता का विकास , ज्ञान का मर्मज्ञ होना , प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन स्थापित करना, आदि आवश्यक होते हैं । प्रशिक्षण में दोनों समूहों को विकास के समान अवसर प्रदान किये गये , फिर भी व्यक्तिगत क्षमताओं के आधार पर इन विशेषताओं को धारण करने में अन्तर आना स्वाभाविक है । व्यक्तित्व तत्व "क्यू।" से भी सार्थक भिन्नता स्थापित हुई है । इस तत्व को "पुरातनवादी बनाम् नवीनवादी" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में दोनों समूहों में 0.05 स्तर पर सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है । इसके द्वारा व्यक्ति विशेष के पुरातनपंथी विचारों , व्यवहारों और आधुनिक व्यवहारों का आंकलन किया जाता है । इस तत्व का जब स्कोर कम होता है तो व्यक्ति में पढ़ाये गये ज्ञान के प्रति विश्वास उत्पन्न होता है तथा कोशिश के द्वारा सही को ग्रहण किया जाता है । वे नवीन ज्ञान के प्रति विनम्र होते हैं , लेकिन परिवर्तन को धारण करने का विरोध करते हैं । इस प्रकार से ये लोग सदैव रूढ़िवादी रहते हैं और बौद्धिक विचारों का तार्किक विश्लेषण नहीं करते हैं । जब यह तत्व प्रखर मात्रा में होता है तो व्यक्ति बौद्धिक मामलों में रूचि लेता है , और आधारभूत सिद्धान्तों में भी सन्देह व्यक्त करता है । ऐसे लोग विचारों के प्रति जागरूक रहते हैं चाहे वे नवीन हों या पुराने । ये लोग अधिकांश सूचनायें रखते हैं और व्यवहारिक होते हैं तथा परिवर्तन की कठिनाइयों को सहन करने में सक्षम होते हैं । प्रस्तुत शोध में दोनों समूहों के 16 व्यक्तित्व तत्वों में से तत्व "क्यू।" की सार्थक भिन्नता से प्रतीत होता है कि हमारे प्रशिक्षणकारी जीवन

TABLE: 4.10 Students-Teachers S.E.S. on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	2nd Grade (N=125)		4th Grade (N=160)		Interpre-tation.
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.7	Av.	5.7	Av.	0.05
B	Less intelligent v/s more intelligent.	4.1-	Slt.Dev.	3.2-	Slt.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	4.6-	Slt.Dev.	3.5-	Slt.Dev.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	5.7	Av.	5.5	Av.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	3.9-	Slt.Dev.	3.8-	Slt.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	5.3	Av.	5.8	Av.	N.S.
H	Shy v/s venture some.	6.2	Slt.Dev.	5.6	Av.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	5.8	Av.	5.7	Av.	0.05
L	Trusting v/s Suspicious.	6.0	Av.	7.2	Slt.Dev.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	5.8	Av.	6.1	Av.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	5.9	Av.	5.9	Av.	N.S.
O	Placid v/s Apprehensive.	5.2	Av.	5.8	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	5.7	Av.	6.1	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	6.3	Slt.Dev.	5.9	Av.	0.01
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.7	Slt.Dev.	6.1	Av.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense	3.5-	Slt.Dev.	6.5	Slt.Dev.	N.S.

AV. = Average.
SLT.DEVT. = Slightly deviaent.
STG.DEVT. = Strongly deviaent.

(+) Indicates above average.
(-) Indicates below average.

मूल्यों के प्रति रूढ़िवादी हो सकते हैं और शिक्षण के आधुनिक तरीकों को व्यवहारिक बनाने के प्रति आधुनिक । अतः सामाजिक प्रथाओं को कितना ग्रहण किया गया , कितना नहीं , नवीन विचारों की कितनी ग्राहयता हुई और कितनी नहीं , शिक्षण प्रक्रिया को प्रायोगिक बनाकर ग्रहण किया जाये और कितना छोड़ा जाये , तथा स्वतन्त्र विचार कितने लाभदायक हैं या नहीं , आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षणार्थियों की मनोदशा , सोच , आदि का निर्णय ही दोनों समूहों में सार्थक भिन्नता स्थापित करने में समर्थ प्रतीत होता है । आज शिक्षण क्षेत्र में यह समस्या बनी हुई है कि बी0एड0 प्रशिक्षण से मिला आधुनिक मनोवैज्ञानिक विधियों, तकनीकी का ज्ञान कितना दैनिक शिक्षण में प्रयोग किया जाता है ?

द्वितीय और तृतीय समूह के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों में समानता अधिक प्रतीत होती है, भिन्नता कम । क्योंकि व्यक्तित्व की 16 विशेषताओं में से सिर्फ 02 में ही सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है । यह भी वर्तमान परिवेश के परिणाम स्वरूप हो सकती है । क्योंकि शिक्षा को सरकार ने एक अलग विभाग न मानकर मानव संसाधन विभाग के अन्तर्गत माना है । इस कारण शिक्षा का विकास अवरूद्ध ही हुआ है ।

तालिका संख्या 4.10 बी0एड0 छात्र/छात्रा अध्यापकों को सामाजिक-आर्थिक स्तर के द्वितीय समूह तथा चतुर्थ समूह के व्यक्तित्व पार्श्व दृश्यों का स्टैन्स के आधार पर विश्लेषण प्रगट करती है । इसमें व्यक्तित्व विशेषता तत्व 16 में से द्वितीय समूह में तत्व "ए , ई ,जी , आई , एल , एम , एन , ओ , क्यू1", आदि सामान्य स्तर पर , तथा तत्व "बी ,

सी , एफ , क्यू4 "ऋणात्मक विचलन पर , तथा तत्व "एच , क्यू2 , तथा क्यू3" आदि धनात्मक स्तर पर रहे हैं । इसी प्रकार से "चतुर्थ समूह में तत्व "ए , ई , जी , एच , आई , एम , एन , ओ , क्यू1 , क्यू2 , क्यू3", आदि सामान्य स्तर पर तथा तत्व "बी , सी , एफ" ऋणात्मक स्तर पर , तथा तत्व "एल , क्यू4" धनात्मक स्तर पर रहे हैं ।

ऋणात्मक विचलन में तत्व "बी" का प्रदर्शन निम्न स्तर का रहा है । इस तत्व को बौद्धिकता के प्रभाव से पाना जाता है । जब किसी व्यक्ति की मानसिक निष्पादन क्षमता में कमी आने लगती है तो उसकी सीखने की क्षमता धीमी होती है और स्मरण करने की शक्ति कमजोर पड़ जाती है । इस स्थिति में सही एवं साहित्यक व्याख्यायें स्पष्ट नहीं होती हैं । सीखने में सुस्ती का कारण बुद्धि में कमी हो सकती है या किसी मस्तिष्कीय बीमारी के प्रभाव का कारण । लेकिन प्रस्तुत शोध के लिये यह कारण स्पष्ट नहीं मालूम पड़ते हैं क्योंकि वैज्ञानिक चयन प्रक्रिया के द्वारा चयनित छात्र/छात्रा-अध्यापक आते हैं जिसमें बुद्धि की कमीं या मस्तिष्कीय बीमारी को कोई भी स्थान नहीं हो सकता है । इनका चयन कम्प्यूटर के द्वारा पूर्ण विश्वसनीयता पर आधारित होता है । अतः तत्व "बी" का दोनों समूहों में ऋणात्मक विचलन शिक्षण व्यवसाय प्राप्त करने की उपादेयता पर निर्भर हो सकता है । वे जानते हैं कि शिक्षकों की रिक्तियाँ बहुत ही कम होती हैं और अभ्यर्थी बहुत अधिक । चयन प्रक्रिया में साधन सम्पन्नता का प्रभाव प्रतिभा या विशेषता को दबा देता है । इस प्रकार से व्यवसाय में सही चयन नहीं हो पाता है । इसलिये वे लोग भविष्य में यह प्रशिक्षण काम आ सकता है , इस धारणा के वशीभूत होकर प्रशिक्षण पूरा करते हैं जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता एकाग्रता की परिधि से बाहर चली जाती है । परिणामस्वरूप

वे लोग तत्व "बी" में ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं । तत्व "सी" को "अहं भाव" की उच्चता तथा निम्नता से जाना जाता है । इस तत्व में कम प्रभाव अर्जित करने वाले व्यक्ति में तनाव , निराशा, असफलतायें , व्यवहार परिवर्तन , आदि से उत्पन्न निराशाओं को सहन करने की शक्ति कमजोर हो जाती है । वह आवश्यक कार्यों से भी दूर रहना प्रारम्भ कर देता है और नाड़ीय थकान से उत्पीड़ित रहता है । वह आसानी से संवेगावस्था में अस्थिरता के कारण असंतोष में आ जाता है । ऐसा प्रतीत होता है कि वह नाड़ी सम्बन्धी विकारों से तथा मनोविकारों से पीड़ित हैं । दोनों ही समूहों में तनाव , निराशा , व्यवहार परिवर्तन , असफलता , आदि से मानसिक पीड़ा होनी स्वाभाविक है , क्योंकि नया पर्यावरण , नई तकनीकि , सीखने की धीमी गति और प्रशिक्षण की अव्यवहारिकता , आदि व्यक्ति को प्रभावित करते हैं । इससे वह अपना समायोजन स्थापित करने में सफलता महसूस नहीं करता है । परिणामस्वरूप उसका ऋणात्मक विचलन प्रारम्भ हो जाता है । व्यक्तित्व तत्व "एफ" भी ऋणात्मक विचलन पर रहा है । दोनों ही समूहों में इसका स्टैन्स स्तर §3.9 , 3.8§ रहा है । इससे दोनों ही समूहों में इस तत्व की अप्रभावी स्थिति स्पष्ट होती है । इस तत्व को "सोबर बनाम हैपीगोलकी" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व के कम प्रभावी होने से व्यक्ति में अल्पभाषीपन , सीमाबद्धता , निराशावादी और अन्तरदर्शन प्रवृत्ति आदि विशेषताओं का प्रगटन होता है जो इसे आत्मनिर्भर बनने से रोक देता है । दोनों ही समूह के प्रशिक्षणरत अध्यापकों में अभ्यास के कारण गम्भीरता , अनुशासन प्रियता और अन्तरदृष्टि का विकास होना स्वाभाविक है ताकि वे सामान्य से भिन्न स्थापित हो सकें और समाज में अपना स्थान पा सकें । अतः प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षक व्यक्तित्व का विकास करने के लिये इन विशेषताओं का धारण करना आवश्यक प्रतीत होता है ।

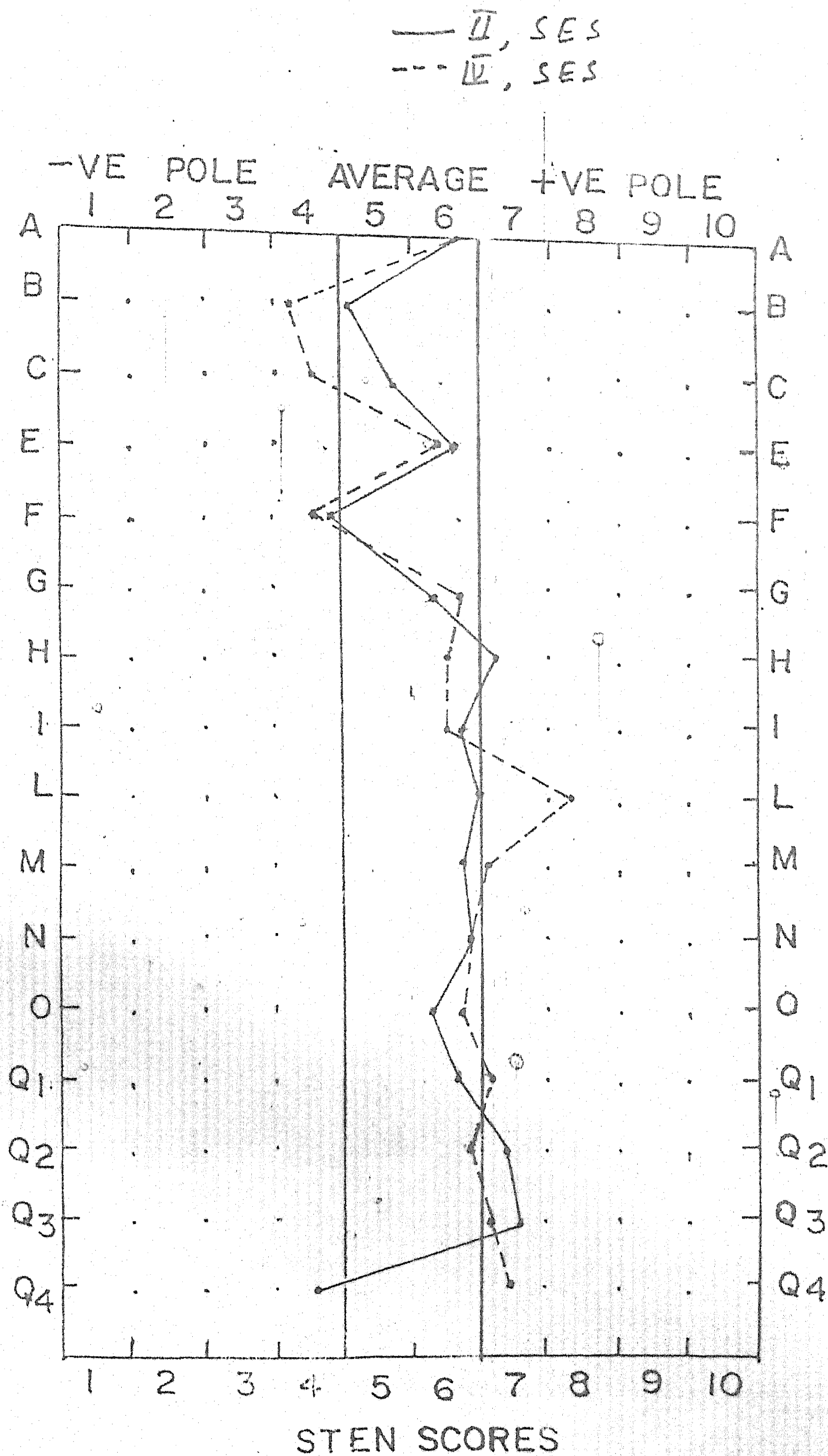


FIG.-10. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS

(2nd. & 4 th. grade)

व्यक्तित्व तत्व "क्यू4" चतुर्थ समूह में धनात्मक विचलन स्टैन्स §6.5+§ स्तर पर रहा है जबकि द्वितीय समूह में ऋणात्मक विचलन स्टैन्स §3.5-§ स्तर पर रहा है । इस तत्व को "रिलैक्सड बनाम टैन्स" के नाम से पुकारा जाता है । इसमें कम स्कोर पाने वाले व्यक्ति में तनावरहित तथा सन्तोषजनक मानसिक दशा पाई जाती है । कभी-कभी इसका अधिक सन्तोषी होना सीखने की वृद्धि में धीमी गति उत्पन्न कर देता है । क्योंकि , कम प्रेरणा प्रयत्नों एवं भूलों की क्रिया में कमी लाती है । यही जब उच्च तनाव की अवस्था में होता है तो विद्यालय और कार्य निष्पादन को प्रभावित करता है । इसका मुख्य कारण द्वितीय समूह की पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव और शिक्षण व्यवसाय के प्रति विश्वास का होना हो सकता है । क्योंकि ये लोग उच्च और मध्यम परिवारों के समृद्ध वंशानुक्रम से आये होते हैं जो पारिवारिक समृद्धशाली परिवेश को स्वतः ही पा लेते हैं , जिसमें तनावरहित जीवन यापन किया जा सकता है । इसके साथ ही इनको यह भी मालूम है कि प्रशिक्षण के पश्चात् वे कार्यरत हो जायेंगे । अतः उनसे व्यवहार में आरामतलबी , शान्तप्रियता तथा सन्तोषी आदि प्रकार की विशेषतायें देखने को मिलती हैं । इसके विपरीत तत्व "क्यू4" चतुर्थ समूह में धनात्मक विचलन स्टैन्स §6.5+§ स्तर पर रहा है । जब कोई व्यक्ति इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त करता है तो उसके व्यवहार में अत्यधिक तनाव , उत्तेजना , बेचैनी , अधैर्य , आदि देखने को मिलता है । वे कभी-कभी थकान महसूस करते हैं । यह लोग समूहबद्ध कार्यों में आस्था नहीं रखते हैं । इनकी निराशा व्यवहार को असामान्य बनाने में सहयोग देती है । इसीलिये चतुर्थ समूह प्रस्तुत शोध में तनाव की तीव्रस्थिति में पाया गया है । इसका प्रमुख कारण प्रशिक्षण के पश्चात् भी नौकरी §शिक्षक§ को प्राप्त करने की

लालशा व उमंग का होना है जिसका पूरा होना भाग्य या साधनों पर निर्भर करता है । ये दोनों ही इस निम्न स्तर समूह के पास नहीं आते हैं । अतः इनमें विश्वास का अभाव , साधन सम्पन्नता का अभाव और आदर्श शिक्षक बनकर समाज को कुछ देने की तीव्र लालशा आदि उनमें उत्तेजना , बेचैनी , और थकान , आदि विशेषताओं को पैदा कर देती है । इसी तरह से चतुर्थ समूह में व्यक्तित्व तत्व "एल" का भी धनात्मक प्रभाव रहा है । इस तत्व का स्टैन्स §7.2+§ रहा है । इस तत्व को "ट्रस्टिंग" बनाम "सस्पिसस" नाम से जाना जाता है । इस तत्व का उच्च स्कोर व्यक्ति को अविश्वासी और सन्देहात्मक बनाता है । वह अपने अहं की तुष्टि में लगा रहता है , साथ ही वह अपने सोच के साथ स्वराय निर्माण में रुचि प्रगट करता दिखाई देता है । वह समूह का अच्छा सदस्य नहीं बन पाता है । प्रस्तुत समूह में संदेहात्मक विचार निरन्तर मस्तिष्क में बने रहते हैं । अतः व्यवसाय का प्राप्त होना , सफलता मिलना , प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ सकना , आदि रूपों में सन्देह बना रहता है जो इसको मानसिक रूप से कमजोर करता है तथा अध्यापक समूह से बिलग सोचने को बाध्य कर देता है ।

बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर समूहों में स्थापित द्वितीय समूह में तत्व "एच , क्यू2 , क्यू3" आदि सामान्य स्तर से धनात्मक विचलन लिये हुये हैं हैं । इनमें तत्व "एच" को "शर्मीला बनाम साहसी" नाम से जाना जाता है । इसमें उच्च स्कोर प्राप्त करने वालों में सामाजिक , साहसिकता , नवीन क्रियाओं की लगन , स्वच्छंदता , और संवेगात्मक प्रतिक्रिया में अधिकता , आदि विशेषतायें पाई

जाती हैं । ये लोग बिना किसी थकान व चिन्ता के दैनिक समस्याओं का सामना आसानी से कर लेते हैं । ये लोग किसी प्रकार के खतरे से चिन्तित नहीं होते है । द्वितीय समूह में साहसिकता का कारण उनकी पारिवारिक विरासत से मिली विशेषतायें , विश्वास , साहस , स्वच्छंदता , आत्मनिर्भरता , आदि होती है । साथ ही इनके अन्दर यह भाव भी विद्यमान रहता है कि यदि नौकरी न मिली तो भी घर में साधन सम्पन्नता है जिससे सामाजिक सम्मान में कोई भी कमी नहीं आयेगी । अतः ये लोग चतुर्थ समूह की अपेक्षा धनात्मक विचलन लिये हुये पाये गये हो सकते हैं । इसी की तरह तत्व "क्यू2" में भी धनात्मक विचलन रहा है । इस तत्व को "निर्भरता" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त व्यक्ति में मानसिक स्थिरता तथा स्वतन्त्रता , अपनी राय पर चलना , और स्वनिर्णयों में लिप्त रहना , आदि व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषतायें पाई जाती हैं । वह जनमत में विश्वास नहीं करता है , वह अन्य व्यक्तियों के निर्णयों को पसन्द नहीं करता है और न उनकी सहायता को चाहता है । अतः शिक्षक वर्ग स्वयं स्वतन्त्र , आत्मनिर्भर रहना पसन्द करता है । द्वितीय समूह में इन विशेषताओं के पाये जाने का प्रमुख कारण अध्यापकों द्वारा स्वजीवन दर्शन को विकसित कर लेना मात्र हो सकता है । जब कोई व्यक्ति अपने जीवन दर्शन को निश्चित कर लेता है , तो आत्मनिर्भर बनना आवश्यक होता है तथा अपने ज्ञान , प्रभाव और व्यवहार से वह अनुकरणीय बनता है , जिसमें अन्य लोग उससे कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। द्वितीय समूह का धनात्मक विचलन "क्यू3" में भी रहा है । इसके स्टैन्स §6.7+§ से स्पष्ट होता है कि छात्र/छात्रा-अध्यापक समूह व्यवहार के नियंत्रण में विश्वास करते हैं । इस तत्व को "अनुशासनहीन बनाम नियंत्रित" नाम से

जाना जाता है । नियंत्रण के अन्तर्गत बाह्य एवं आंतरिक दोनों ही प्रकार का नियंत्रण आता है । द्वितिय समूह का शिक्षक स्वयं को अनुशासनप्रिय , समाजप्रिय , स्वाभिमान , शुद्ध , व्यवहार , आदि से परिलक्षित कर लेता है ताकि अपने व्यवहार से छात्र , समाज , सहयोगी , आदि को प्रभावित करता रहे । वह समाज एवं राष्ट्र की माँग को ध्यान में रखकर छात्र/छात्राओं को व्यक्तित्व विकास में सहयोग देता है । प्रस्तुत अध्ययन में , द्वितीय समूह में इस तत्व की प्रधानता का कारण "स्वसम्मान" के भाव की प्रबलता तथा पारिवारिक अनुशासन,और शिक्षा का प्रभाव आदि माना जा सकता है । अध्यापक व्यवसाय को श्रेष्ठ , और सम्मानीय माना जाता है । अतः इस भाव की प्रबलता ने ही इनमें बाह्य तथा आंतरिक अनुशासन को ग्रहण करने और लागू करने को उपयुक्त माना है ।

द्वितीय समूह तथा चतुर्थ समूह के सामाजिक-आर्थिक स्तर पर व्यक्तित्व पार्श्व दृश्यों का विश्लेषण करने के पश्चात् व्यक्तित्व विशेषताओं में सार्थक भिन्नता स्थापित हुई है , या नहीं को भी जानना आवश्यक हो जाता है । इन दोनों समूहों में व्यक्तित्व विशेषता तत्व "ए , आई" 0.05 स्तर पर तथा "क्यू2" में 0.01 स्तर पर भिन्नता की सार्थकता प्रगट हुई है । तत्व "ए" को "रिजर्व्ड बनाम आउटगोइंग" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में जब कम स्कोर प्राप्त होता है तो व्यक्ति में गम्भीरता शांत ; अकेलापन , विश्लेषण , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें विकसित हो जाती हैं । वह वस्तुओं में रुचि लेता है न कि व्यक्तियों में , अकेला कार्य करता है , दूसरों की राय के साथ समझौता नहीं करता है । वह अपने द्वारा स्थापित मानकों पर क्रियान्वित रहता है और इसी को जीवनदर्शन बनाकर व्यवहार करता है । जब इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त होता है तो व्यक्ति में अच्छा

स्वभाव , सरलता , प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग के भावों का विकास होता है । वह व्यवसाय को व्यक्तियों के लिये , समाज के लिये मानता है न कि व्यक्ति एवं समाज को व्यवसाय के लिये । वह समूहों के गठन में तत्पर रहता है , तथा वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापना को महत्व देता है न कि आलोचना से डरता है । अतः इस तत्व की अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी विशेषताओं को धारण करने के कारण बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापक अपने समूहों में भिन्नता स्पष्ट करते हैं । कुछ लोगों का मानना है कि अध्यापन व्यवसाय, गंभीरता , चतुरता और एकांत सेवी का व्यवसाय है , जबकि कुछ की मान्यता है कि यह व्यवसाय व्यवहार कुशलता का है , प्रतिस्पर्धा का है , सहयोग एवं सहानुभूति का है । शोधकर्ता मनोविज्ञान से एम0ए0 है , और शिक्षक है , अतः शिक्षण को पुरातन विचारों से देखना तथा मनोवैज्ञानिक विचारों से देखना आदि के सोच में भिन्नता स्थापित करता है । द्वितीय एवं चतुर्थ समूह के प्रशिक्षणकर्ताओं ने अपने सोच को कैसा स्थापित किया है । और उसके अनुसार ही प्रशिक्षण को धारण किया हैं , आदि मानकों पर अन्तर की सार्थकता प्रगट हो सकती है । अन्य विचार के अनुसार द्वितीय समूह का सम्मान समाज में है जबकि चतुर्थ को अर्जित करना है , यह भाव भी दोनों में भिन्नता स्थापित करने में सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है ।

व्यक्तित्व विशेषता तत्व "आई" ने 0.05 स्तर पर भिन्नता की सार्थकता प्रगट की है । इस तत्व को "मस्तिष्क की कठोरता बनाम मस्तिष्क के लचीलेपन" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में कम स्कोर आने पर व्यक्ति में मस्तिष्कीय दृढ़ता , विश्वास , स्वविवेक , यथार्थवाद , आदि विशेषताओं का विकास होता है । वह कभी-कभी जिद्दी भी हो जाता है , लेकिन अपनी सार्थकता को प्रमाणित करके ही दम लेता है । इसके

विपरीत इस तत्व में अधिक स्कोर अर्जित करने पर व्यक्तित्व विशेषतायें सृजनशीलता , कल्पनात्मकता , दिवास्वप्न , कलात्मकता , आदि विकसित हो जाती हैं । यह कभी-कभी दूसरों की सहायता चाहते हैं , लेकिन क्रूर पुरुषों तथा व्यवसायों को पसन्द नहीं करते हैं । इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक वर्ग प्रशिक्षण के दौरान सामान्य क्रियाओं को ग्रहण करता है ताकि उसका शिक्षण व्यवसाय सही रूप से चलता रहे । इसके साथ ही वह अपने को सुधारवादी , या यथार्थवादी रूप में भी विकसित करता है ताकि उसकी भिन्नता अन्य सहयोगियों से स्थापित हो सके । इसके साथ ही सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव कि बच्चों को कठोरता के साथ ही शिक्षित किया जा सकता है [और उनको प्यार के द्वारा सृजनशील बनाया जा सकता है , आदि का प्रभाव भी द्वितीय एवं चतुर्थ समूह के अध्यापकों में सार्थक भिन्नता स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं ।

द्वितीय समूह तथा चतुर्थ समूह में तत्व "क्यू2" में 0.01 स्तर पर सार्थक भिन्नता पाई गई है । इस तत्व को "निर्भरता" की विशेषता को जानने के लिये प्रयोग किया जाता है । इसमें कम स्कोर प्राप्त होने पर व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ कार्य करना तथा निर्णय स्थापित करना पसन्द करता है । वह सामाजिक सम्मान और स्वीकृति के लिये क्रियाशील रहता है । इस प्रकार से वह अपनी भूमिका समूह के सदस्य के रूप में निभाता है , अकेले नहीं । इसके साथ ही जब व्यक्ति में इस तत्व का उच्च स्कोर पाया जाता है , तो उसमें आत्मनिर्भरता स्पष्ट होती है । वह भावात्मक रूप से , स्वभाव से स्वतन्त्र , अपने रास्ते पर चलना , और स्वनिर्णयों को लागू करना आदि आत्मविश्वास से क्रियाशील होता है । बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापकों में समूह निर्भरता और आत्मनिर्भरता दोनों ही विशेषताओं का

TABLE: 4.11 Students-Teachers S.E.S. on cattels 16 P.F. stense and their categories.

16 P.F.	DESCRIPTION	3rd Grade (N=180)		4th Grade (N=160)		Interp tation
		STENS	CATEGORIES	STENS	CATEGORIES	
A	Reserved v/s outgoing.	5.2	Av.	5.7	Av.	N.S.
B	Less intelligent v/s more intelligent.	3.2-	Stg.Dev.	3.2-	Slt.Dev.	N.S.
C	Emotionally less stable v/s emotionally stable.	5.1	Av.	3.5-	Slt.Dev.	N.S.
E	Humble v/s assertive.	6.4+	Slt.Dev.	5.5	Av.	N.S.
F	Sober v/s happy go lucky.	3.4-	Stg.Dev.	3.8-	Slt.Dev.	N.S.
G	Expedient v/s conscientious.	6.1	Av.	5.8	Av.	N.S.
H	Shy v/s venture some.	7.0+	Slt.Dev.	5.6	Av.	N.S.
I	Tough minded v/s tender minded.	6.8+	Slt.Dev.	5.7	Av.	N.S.
L	Trusting v/s Suspicious.	6.2	Av.	7.2+	Slt.Dev.	N.S.
M	Practical v/s Imaginative.	6.5+	Slt.Dev.	6.1	Av.	N.S.
N	Forthright v/s shrewd.	5.5	Av.	5.9	Av.	N.S.
O	Placid v/s Apprehensive.	5.1	Av.	5.8	Av.	N.S.
Q1	Conservative v/s experimenting.	6.0	Av.	6.1	Av.	N.S.
Q2	Group dependent v/s self sufficient.	5.9	Av.	5.9	Av.	N.S.
Q3	Undisciplined v/s controlled.	6.5+	Slt.Dev.	6.1	Av.	N.S.
Q4	Relaxed v/s tense.	4.6-	Slt.Dev.	6.5+	Slt.Dev.	N.S.

AV. = Average.
SLT.DEVT. = Slightly deviaent.
STG.DEVT. = Strongly deviaent.

(+) Indicates above average.
(-) Indicates below average.

प्रचलन होता है । इसका मुख्य कारण उनके शारीरिक-मानसिक विकास, आयु, शिक्षण अनुभव, सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव, आदि हो सकते है । दोनों ही समूहों में आयु की भिन्नता, शिक्षण अनुभव की भिन्नता, पर्याप्त पाई गई है । यह लोग अपने सीखे गये अनुभवों को स्थानान्तरित करके किसी कार्य को शीघ्रता से सीख लेते हैं और अन्य लोग उनके अनुभवों को प्राप्त करने के लिये उन पर निर्भर हो जाते हैं । अतः दोनों ही समूहों में इस तत्व में सार्थक भिन्नता हो सकती है । अतः सीखने में परिपक्वता और अनुभव दोनों का प्रभाव सार्थक सिद्ध हुआ है {मारगेन, 1956, पृष्ठ 42} ।

तालिका नं0 4.11 में स्टैन्स के द्वारा विश्लेषित प्रोफाइल्स को स्पष्ट किया गया है । इसमें बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर के तृतीय समूह तथा चतुर्थ समूह के व्यक्तित्व विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है । तृतीय समूह के 16 व्यक्तित्व तत्वों में से तत्व "बी, एफ, क्यू4", आदि ने ऋणात्मक विचलन पाया है तथा तत्व "ई, एच, आई, एम, क्यू3", आदि ने धनात्मक विचलन पाया है । इसी तरह से चतुर्थ समूह में तत्व "बी, सी, एफ" ने ऋणात्मक विचलन पाया और धनात्मक विचलन पर तत्व "एल व क्यू4" रहे हैं । अन्य सभी 11 तत्व सामान्य स्तर पर रहे हैं । इससे स्पष्ट होता है कि इनके व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों में समानतायें अधिक हैं ।

ऋणात्मक विचलन पर दोनों समूह के छात्र/छात्रा-अध्यापक तत्व "बी, एफ" में समानता स्थापित करते हैं । इसमें तत्व "बी" को अध्यापकों की मानसिक क्षमता यानी बुद्धि से माना जाता है । जब कोई व्यक्ति इस तत्व में कम स्कोर प्राप्त करता है तो उसकी सीखने की क्षमता तथा निष्पादन में गिरावट आ जाती है । वह सही तथा उचित् विवेचना करने में अपने को

कमजोर पाता है । इसका एक कारण उसकी बुद्धि लब्धि की गिरावट भी हो सकती है , और मानसिक सम्मान की कमी भी । प्रस्तुत शोध में दोनों ही में दोनों ही समूहों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि सामान्य स्तर से निम्न स्तर की है , उनके पास वंशानुक्रम से हस्तांतरित विशेषतायें भी कम क्षमता वाली होती है । उनकी मानसिक दृढ़ता , व्यवसाय व जीवन दर्शन के प्रति स्थायित्व वाली नहीं होती है । अतः इनका सामान्य स्तर से ऋणात्मक विचलन हो सकता है । तत्व "एक" का भी दोनों समूहों में ऋणात्मक विचलन रहा है । इनके स्टैन्स (3.4-, 3.8-) आदि रहे हैं जो सामान्य स्तर से काफी कम हैं । इस तत्व को "डैसरजेन्सी बनाम सरजेन्सी" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में कम स्कोर प्राप्त करने वाले व्यक्ति में , शालीनता , मितव्यायिता , गम्भीरता , अल्पभाषीपन आदि विशेषतायें देखने को मिलती हैं । ये लोग निराशावादी नियंत्रण पसंद, तथा शालीनता में विश्वास करने वाले होते हैं । शिक्षकों के दोनों ही समूहों में यह शालीनता पाई गई है । इस का कारण शिक्षक की विशेषतायें व शिक्षण परिवेश को जैसा का तैसा ग्रहण कर लेना प्रतीत होता है । इन समूहों को सामाजिक सम्मान परिवार से कम मिला , अतः ये लोग प्रशिक्षण को धारण करके सम्मान पाने में जुट जाते हैं । फलस्वरूप इनमें इस तत्व की विशेषतायें एक स्तर तक प्राप्त होती है ।

व्यक्तित्व विशेषता तत्व "क्यू4" तृतीय समूह में ऋणात्मक विचलन स्टैन्स (4.6-) पर रहा है तथा चतुर्थ समूह में धनात्मक विचलन स्टैन्स (6.5+) पर रहा है । तत्व "क्यू4" को "रिलैक्सड बनाम टैन्स" के नाम से जाना जाता है । जब कोई व्यक्ति इस तत्व में कम स्कोर प्राप्त करता है तो उसमें व्यक्तित्व विशेषतायें-आरामतलबी , क्षोभ रहित , उत्साही , जड़ ,

आदि पाई जाती हैं । ये लोग हर परिस्थिति में अपने को शांत बनाये रखते हैं । इससे इनकी निष्पादन क्षमता में भी गिरावट आती है । ऐसा प्रतीत होता है कि आरामतलबी का भाव इनमें क्रियान्वित रहने के लिये कम प्रेरणा देता है । ये आंतरिक रूप से विकल रहते है वाह्य रूप से शांत । अतः इनकी आंतरिक उत्तेजना इनके विद्यालय कार्य तथा व्यवहार को प्रभावित करती रहती है । इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त करता है तो उसमें चिन्ता , निराशा, अधिक मेहनत , तनाव , आदि व्यक्तित्व विशेषतायें प्रगट होती हैं । वह कभी-कभी थकान महसूस करता है फिर भी , सक्रिय रहता है । ऐसे लोग समूह की एकता , आज्ञापालन तथा नेतृत्व , आदि के लिये सक्षम नहीं होते हैं । इस प्रकार से इस तत्व की क्षमता को समझने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि वैयक्तिकता §क्षमताओं§ के आधार पर व्यक्ति स्वयं में अध्यापक व्यक्तित्व को विकसित करता है । मानसिक सोच के कारण , प्रेरणा के कारण , जीवन दर्शन के कारण , व्यक्ति की व्यवसायिक रुझान , आदि के कारण तत्व "क्यू४" में ऋणात्मक तथा धनात्मक विचलन पाया जा सकता है । व्यक्तित्व तत्व "एल" का विचलन सामान्य स्तर से धनात्मक रहा है । इस तत्व के "विश्वास बनाम सन्देह" के नाम से जाना जाता है । इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त करने वाले व्यक्ति में शिक्षण के प्रति सन्देह बना रहता है । वह अपने अहं के वशीभूत होकर स्वराय के अनुसार कार्य करता है । वह अन्तर्मुखी व्यवहार को पसन्द करता है , इसीलिये वह समूह का अच्छा सदस्य नहीं बन पाता है । प्रस्तुत शोधकार्य में चतुर्थ समूह का संन्देहास्पद व्यवहार होना स्वाभाविक सा लगता है क्योंकि प्रशिक्षण के पश्चात् नौकरी का मिलना, शिक्षण में उन्नति , पारिवारिक पृष्ठभूमि और सिद्धान्त तथा व्यवहार में अन्तर आदि के प्रति उसका विश्वास दृढ़ता लिये हुये नहीं है । इस प्रकार से

इस तत्व में उच्चता आना स्वाभाविक है । चतुर्थ समूह का तत्व "सी" ऋणात्मक विचलन पर रहा है , जबकि तृतीय समूह सामान्य स्तर पर । इस तत्व मे कम स्कोर पाने वाले व्यक्ति में परिस्थिति के प्रति असंतोष , एवं लचीलापन अधिक रहता है । वह वास्तविकता का सामना करना नहीं चाहता है , उसमें थकान या नाड़ीय दुर्बलता रहती है । इसीलिये नैराश्यपूर्ण व्यवहार को करता है । उसको रात्रि स्वप्न परेशान करते हैं और असामान्य भय सताते रहते हैं । चतुर्थ समूह में इन विशेषताओं का पाया जाना सामाजिक शोषण व पिछड़ापन के कारण माना जा सकता है । इस वर्ग में सामाजिक सम्मान का अभाव साधनहीनता के कारण रहा है । ये लोग आर्थिक रूप से गरीब रहे हैं । अतः कार्य के प्रति असन्तोष , निराशा, आदि का पनपना स्वाभाविक सा लगता है । ऐसे लोग मनोविकारों से भी ग्रसित पाये जाते हैं । कभी-कभी ये लोग मानसिक रूप से क्षमता वाले होते हैं फिर भी स्वयं का स्तर नहीं उठा पाते हैं , जिससे इनमे चिन्ता , क्षोभ, निराशा आदि विकारों का विकास हो जाता है जो विद्यालय कार्यों को प्रभावित करता है ।

बी0एड0 प्रशिक्षणरत तृतीय समूह का धनात्मक विचलन तत्व "ई , एच , आई , एम , क्यू3" , आदि में रहा है जबकि चतुर्थ समूह में ये तत्व सामान्य स्तर पर रहे हैं । तत्व "ई" को "हम्बल" बनाम असरटिव" के नाम से जाना जाता है । जब इस तत्व में उच्च स्कोर प्राप्त होता है तो व्यक्ति के व्यवहार में निश्चिंतता , स्वतन्त्रता , आक्रामकता , प्रतिस्पर्धा तथा दृढ़ता , आदि विशेषतायें प्रगट होती है । वह स्वतन्त्र चिंतन में विश्वास करता है । वह स्वयं के बनाये नियमों को मानता है तथा मैनेजिंग कमेटी के नियमों को अव्यवहारिकता के आधार पर विरोध करता है । तृतीय समूह का सामाजिक , बौद्धिक , आर्थिक स्तर चतुर्थ की अपेक्षा अच्छा होता है ,

अतः वे प्रशिक्षण के दौरान विश्लेषण , तर्क , आदि का प्रयोग करके ज्ञान को सीखते हैं । वे अन्धविश्वास में कार्य नहीं करना चाहते हैं । शिक्षक व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाकर समाज एवं विद्यालय में अपने प्रभुत्व या धाक को जमाना प्रारम्भ करते हैं । परिणामस्वरूप उनका विश्वास, रुझान और व्यवसायिक लगन उनको चतुर्थ स्तर समूह से विलग करने में अहं भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं ।

तत्व "एच" का स्टैन्स §7.0+§ रहा है जो तृतीय समूह को चतुर्थ समूह की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली बनाता है । इस तत्व को "शर्मीला बनाम साहसी" नाम से जाना जाता है । इस तत्व की प्रखरता व्यक्ति में सामाजिक निडरता , नवीन कार्यों के सीखने में तत्परता , स्वछंद व्यवहार , और संवेगात्मक प्रतिक्रिया में प्रचुरता आदि विशेषताओं का विकास होता है । व्यक्तियों के बीच वह अपनी निडरता के कारण सफल रहता है । वह कार्य के समय कभी भी थकान को महसूस नहीं करता है । तृतीय समूह के प्रशिक्षणार्थी संघर्षात्मक व्यवहार करना पसन्द करते हैं । उनमें यह विश्वास प्रतीत होता है कि जितना परिश्रम और परिस्थितियों का सामना करेंगे , उतना ही अच्छा समाज में स्थान बना पायेंगे । अतः इनका साहस तथा परिश्रम इनकी उच्चता तथा प्रखरता का कारण बन सकती है जो चतुर्थ समूह में उपलब्ध न हो सकी । तत्व "आई" का धनात्मक विचलन स्टैन्स §6.8+§ रहा है जबकि चतुर्थ समूह का सामान्य स्तर पर रहा है । इस तत्व को "टफ माइन्डड बनाम टेण्डर माइण्डड" के नाम से जाना जाता है । ऐसे व्यक्तियों में इस तत्व , की प्रखरता , कलात्मक तथा सृजनशील विचारों को विकसित करती है । ये लोग बड़े ही शालीन , निष्कपट , अन्यौन्याश्रित होते हैं । प्रशिक्षणरत तृतीय समूह के शिक्षक निम्न

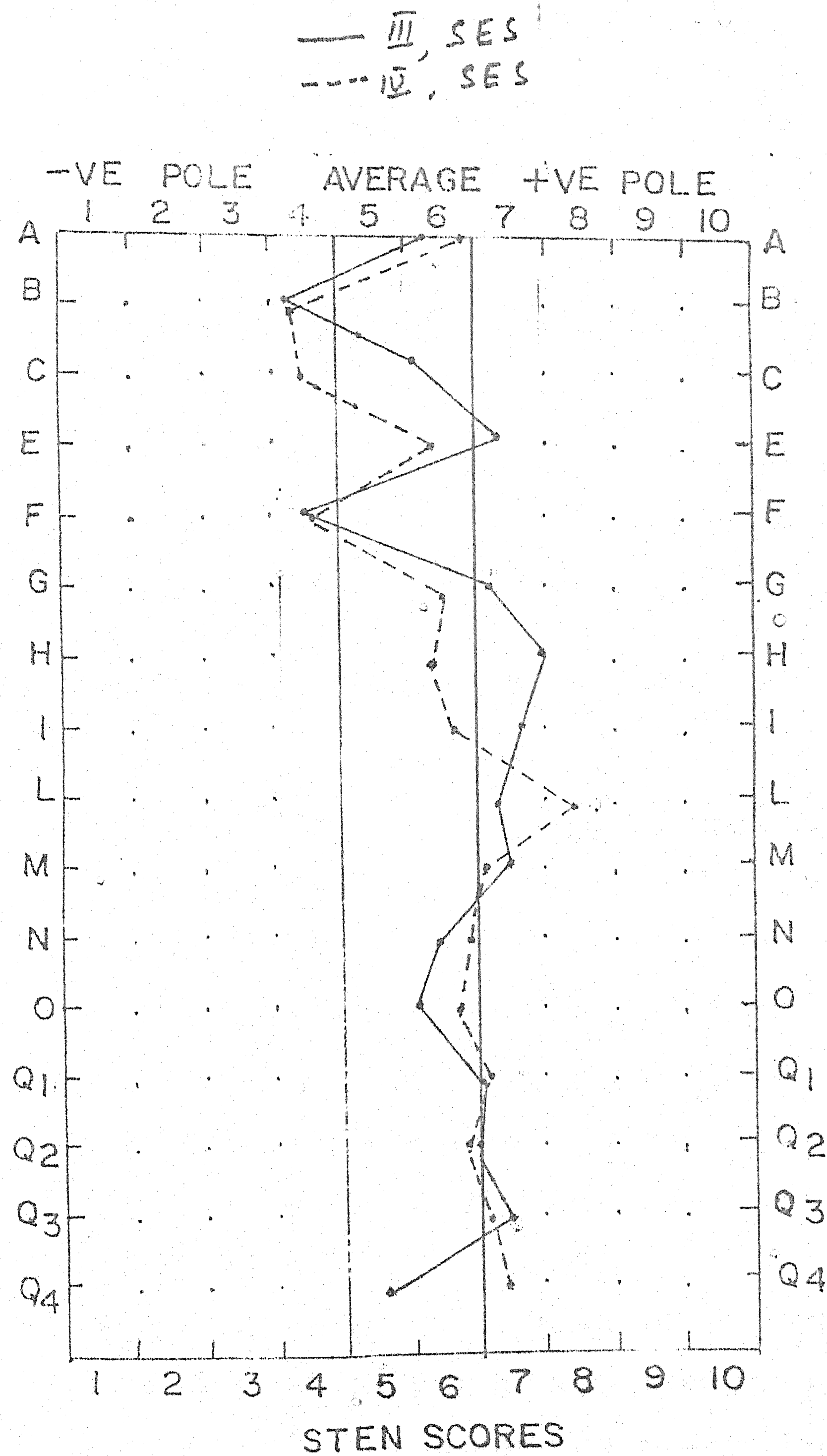


FIG.- II. PERSONALITY PROFILES OF STUDENT-TEACHERS (3rd grade & 4th grade)

मध्यम श्रेणी स्तर के होते हैं । अतः वे स्वंय को कुछ करके दिखाने में विश्वास प्रगट करते हैं । वे कल्पनात्मक व्यवहार के द्वारा स्वयं को उच्च बनाना चाहते हैं, लेकिन बना नहीं पाते हैं, अतः उनकी आत्मनिर्भरता स्वतन्त्र नहीं बन पाती है । इस प्रकार से उनके व्यक्तित्व विकास में और चतुर्थ समूह स्तर के व्यक्तित्व विकास में अन्तर आना स्वाभाविक होता है ।

प्रशिक्षणरत बी०एड० अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य विकास पर तत्व "एम" का उच्च प्रभाव पड़ा है । तृतीय समूह तथा चतुर्थ समूह में थोड़ा सा ही अन्तर आया है । फिर भी तृतीय समूह में इस तत्व की उच्चता "कल्पना" पर अधिक आधारित मानी गई है । जब किसी व्यक्ति का उच्च स्कोर इस तत्व में आता है तो वह यथार्थवाद से विलग होकर, स्वप्रेरित होकर, काल्पनिक सृजनशीलता को अधिक महत्व देने वाला होता है जिससे वह अपने दैनिक व्यवहार से अलग सा लगता है । वह आंतरिक प्रेरणाओं से निर्देशित व प्रेरित होकर असामान्यता को पैदा करता है । परिणामस्वरूप वह शिक्षक समाज से स्वयं को भिन्न महसूस करता है । तृतीय समूह का शिक्षक अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होकर प्रशिक्षण ले रहा है । वह प्रशिक्षण को ही सर्वोपरि मानकर ग्रहण कर रहा है । लेकिन जब उनका प्रयोग वह कक्षा शिक्षण में करता है तो अव्यवहारिक पाता है । परिणामस्वरूप वह स्वप्रेरणा के कारण कल्पना के द्वारा समस्या समाधान, तथा प्रचलित रीतियों को तोड़कर नई व्यवस्था की कामना करता है ताकि उसका समायोजन कक्षा के साथ हो जाये । इसके साथ ही सीखने में स्थानान्तरण का प्रभाव भी उसके नये कार्य को नये आयाम प्रदान करता है । इससे प्रेरित होकर वह अपनी क्षमता का प्रदर्शन शिक्षण में करता है ।

परिणामस्वरूप वह स्वयं को चतुर्थ समूह से भिन्न पाता है । व्यक्तित्व विशेषता तत्व "क्यू3" को "अनियंत्रित बनाम नियंत्रित" से जाना जाता है । यह तत्व तृतीय समूह में |6.5+| स्टैन्स पर रहा है जबकि चतुर्थ समूह में |6.1| स्टैन्स पर रहा है । दोनों में थोड़ी सी भिन्नता है । इसका प्रमुख कारण "स्व आदर" भाव में विकास की तीव्र इच्छा हो सकती है । इस तत्व की प्रखरता से व्यक्ति में संवेगात्मक , तथा दैनिक व्यवहार का नियंत्रण करने की क्षमता स्पष्ट होती है । वह समाज के लिये चिन्तित रहता है , और वैसा ही कार्य करता है जिससे उसे सामाजिक सम्मान मिल सके ।एक शिक्षक भी सामाजिक आदर का आकांक्षी होता है । वह अनुशासन के द्वारा कक्षा तथा कक्षा के बाहर स्वयं का सम्मान स्थापित करता है जिससे उसे समाज की स्वीकृति मिलती है । इस तत्व में तृतीय एवं चतुर्थ समूह में भिन्नता का कारण स्वग्राही होना व समाजग्राही होना मात्र माना जा सकता है । तृतीय समूह समाज के लिये चिन्तित अधिक होता है जबकि चतुर्थ समूह कम चिन्तित होता है । अतः व्यवहार में अन्तर्मुखी होना या बहिर्मुखी होना का स्तर भी दोनों में भिन्नता प्रगट कर सकता है ।

निष्कर्षों का विवेचन |डिसक्शन ऑफ रिजल्ट्स|

वर्तमान शोध बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य को जानने के लिये किया गया है , जिसके अध्ययन में रूचिमय तथ्य प्रगट हुये हैं । इन पर व्यक्तित्व तत्व "ए , बी , सी , ई , एफ , जी , एच , आई , एल , एम , एन , ओ , क्यू1 , क्यू2 , क्यू3 और क्यू4" , आदि के प्रयोग द्वारा व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य जानने का

प्रयास किया गया है । इन तत्वों में सामान्य स्तर से विचलन तत्व "बी-, सी-, एफ-, आई-, जी-, एच+ , एल+ , एम+ , क्यू1+ , क्यू3+ , तथा क्यू4+ , आदि में रहा है । इसका तात्पर्य है कि ये सामान्य व्यक्तियों से व्यक्तित्व भिन्नता में अन्तर स्थापित करते हैं। विचलन तत्वों से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणरत अध्यापकों पर प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ा जो उनमें शिक्षक विशेषताओं को विकास करने में सहयोग कर रहा है । ये लोग अपनी मानसिक क्षमता , संवेगात्मक प्रभाव , शालीन व्यवहार , मानसिक दृढ़ता , आदि का प्रयोग सही तरीके से नहीं कर पा रहे हैं । साथ ही साथ ये लोग परिश्रम , साहस, स्वराय गठन , कल्पना शक्ति , व्यवहारिकता , अनुशासन , तथा तनाव, आदि का प्रदर्शन प्रचुर मात्रा में कर रहे हैं । परिणामस्वरूप अमूर्त समस्याओं को सुलझाने में असफल रहते हैं । क्योंकि ये लोग अपनी मेहनत और लगन से समाज में अच्छा स्थान पाना चाहते हैं । यह तभी सम्भव है जब कक्षा शिक्षण तथा कक्षा समस्या में अपनी पूरी क्षमता का सही प्रयोग कर पायें । प्रशिक्षण के द्वारा प्रत्येक संवेगात्मक , और अनुशासनात्मक समस्याओं का सामना शिक्षक को कैसे करना होता है?, बताया जाता है , ताकि वह तनाव की अवस्था से निकलकर सामान्य अवस्था में रहे और छात्रों का विकास करें । इसी प्रकार के निष्कर्ष "झा" §1990§ ने अपने शोध कार्य में प्रगट किये हैं । आपने पाया कि प्रशिक्षणरत व्यक्तियों और सामान्य व्यक्तियों में व्यक्तित्व तत्व का सामान्य स्तर कम रहता है , ऋणात्मक और धनात्मक विचलन अधिक पाया जाता है ।

2. छात्र-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य के चित्र से स्पष्ट होता है कि तत्व "ए , ई , जी , एल , एम , ओ , क्यू1 , क्यू2" , आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । तत्व "बी , सी", ऋणात्मक विचलन लिये हुये

हैं तथा तत्व "एच , आई , एन , क्यू3 , क्यू4", आदि में धनात्मक विचलन पाया गया है । इनके ऋणात्मक विचलन से स्पष्ट होता है कि नये परिवेश के साथ समायोजन असफलता है जो इनके व्यवसाय चयन में पूर्ण रुचि का प्रदर्शन नहीं करती है । इसी के परिणामस्वरूप मानसिक क्षमताओं का विकेन्द्रित होना और संवेगात्मक रूप की अस्थिरता उनके शिक्षण व्यवहार में प्रदर्शित हो रही है । इसके साथ ही आत्मविश्वास का अभाव भी लक्ष्य प्राप्त में बाधक सिद्ध होता है । इन लोगों में साहसिकता , निर्णय में परिवर्तनता , गम्भीरता , विचारशीलता , अनुशासन , आदि व्यक्तित्व की विशेषतायें उच्च स्तर पर पाई गई हैं जो पुरुषों के प्रभुत्व गुण को प्रदर्शित करती है । ये लोग साहस के साथ सामयिक निर्णय लेकर अनुशासनबद्ध कार्य करते हैं जो इनके लिये तथा विद्यालय के लिये लाभदायक सिद्ध होता है । प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पुरुष छात्र-अध्यापक अपने आत्मविश्वास के साथ होता है कि पुरुष छात्र-अध्यापक अपने आत्मविश्वास के साथ पुरुषत्व §प्रभुत्व§ का प्रदर्शन प्रत्येक कार्य में करते हैं जिससे उनके शिक्षण में विकास स्वतः ही होने लगता है । इसका समर्थन §प्रतिभा , 1983§ ने अपने अध्ययन में भी किया है । आपने पुरुष अध्यापकों को प्रभुत्वशील , साहसी तथा स्वतन्त्र व्यवहार करने वाला पाया है ।

3. छात्रा-अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व पार्श्व दृश्य के विश्लेषण में तत्व "बी , एच , एन" , आदि उच्च धनात्मक स्तर पर रहे हैं । इससे स्पष्ट होता है कि इन लोगों ने स्वयं को पुरुषों के समक्ष अपने पैरों पर खड़े होने का साहस स्थापित किया है जिसके लिये मानसिक क्षमता का

प्रयोग , साहसी होना , गम्भीर होना , आदि व्यक्तित्व गुणों का विकास आवश्यक होता है । इस शोध से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के 16 तत्वों में से 07 तत्व सामान्य स्तर पर रहे हैं जबकि ऋणात्मक विचलन तत्व "एल , ओ , क्यू1 , क्यू2" , में ही आया है । सबसे अधिक ऋणात्मक विचलन तत्व "ओ" में रहा है , जिसका स्टैन्स §3.2§ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री अध्यापिकाओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति विश्वास , परिपक्वता तथा गम्भीरता का विकास हुआ है । व्यवसाय पर मानसिकता की अपनी कसौटी होती है जिस पर प्रत्येक को खरा उतरना होता है , अन्यथा वह शिक्षण में सफल नहीं हो सकता है । शिक्षण को "व्यवहारिकता प्रदान करने के लिये ये लोग अपनी बौद्धिक क्षमता का स्वतन्त्र प्रयोग करती है । प्रत्येक क्षेत्र , कक्षा , प्रशासन , अनुशासन , पाठ्योत्तर क्रियायें , आदि में साहस का प्रदर्शन करती हैं । साथ ही साथ तत्व "एन" की प्रमुखता इनमें विकसित "चतुरता" को भी स्पष्ट करती है । विद्वानों ने शिक्षण को ज्ञान फैलाने की चतुरता या कौशल को अधिक महत्व दिया है । इस तथ्य को समर्थन "जैन §1954§ ने अपने कार्य द्वारा भी दिया है । आपने अपने कार्य में स्त्रियों को आत्मविश्वासी , समायोजित और दिवास्वप्नी पाया है ।

4. शिक्षण के क्षेत्र में आयु , ज्ञान की परिपक्वता का द्योतक माना जाता है । प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 की छात्र/छात्रा-अध्यापकों की आयु 20 से 30 वर्ष तक तथा 31 वर्ष से 40 वर्ष तक , आदि दो भागों में बाँटा गया है । इन दोनों ही आयु वर्गों में समानता अधिक प्रतीत होती है । तत्व 16 में से 07 तत्व सामान्य स्तर पर रहे हैं तथा अन्य मे विचलन

स्थापित हुआ है । यह विचलन सबसे अधिक तत्व "क्यू2" तथा "क्यू3" में देखने को मिलता है । ये दोनों ही समूह आत्मनिर्भरता , और अनुशासन की विशेषताओं को धारण किये हुये हैं । इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को शिक्षण में सफलता पाने के लिये ज्ञान , कौशल में आत्मनिर्भर होना चाहिये तथा अपने व्यवहार में अनुशासनप्रगट करना चाहिये । बच्चों को अपना आदर्श शिक्षक व्यक्तित्व में प्रगट होता दिखाई देता है जिसका वे अनुकरण करते रहते हैं । इस अनुकरण को सही रास्ता समर्पित शिक्षक ही दिखा सकता है । अतः आदर्श और समर्पण के व्यक्तित्व को शारीरिक परिपक्वता के द्वारा ही विकसित किया जा सकता है । स्टैन्स तालिका 4.4 से तथा रेखाचित्रों से स्पष्ट होता है कि आयु की निश्चित सीमा ही सीखने में सार्थक होती है (टरमन , 1925) । इसी प्रकार से (पाण्डेय , 1983) ने अपने शोध में शिक्षकों में विकसित प्रभावशाली इन्हीं विशेषताओं को माना है और आयु का स्पष्ट प्रभाव शिक्षक के व्यक्तित्व के गठन पर पाया गया है । आयु व्यक्ति में धैर्य , गम्भीरता , अनुशासन , आत्मसंयम , आदि विशेषताओं का सही प्रयोग करना सिखा देती है ।

5. शोधकर्ता ने शिक्षण अनुभव के अध्ययन में भी रोचक तथ्यों को पाया है । अध्ययन को शिक्षण अनुभव पाँच वर्ष तक और पाँच वर्ष से अधिक आदि दो भागों में बाँटा गया है । प्रथम वर्ग में उच्चतम विचलन व्यक्तित्व तत्व "बी" (7.2+) में रहा है जबकि द्वितीय वर्ग में तत्व "क्यू3" (7.9+) में रहा है । इसका तात्पर्य यह है कि पाँच वर्ष तक के अनुभव के शिक्षक अपनी बौद्धिक क्षमता का अधिक प्रयोग करते हैं । इनके सामने आने वाली समस्यायें

अनेक होती हैं , और इनका सीधा प्रभाव शिक्षण पर पड़ता है , अतः बौद्धिक कौशल से ही शिक्षक सम्मान को बचाया जा सकता है । इनकी सूक्ष्म चिन्तन शक्ति प्रयत्न और भूल के द्वारा अपने समस्या समाधानों , निदानों को स्थाई बनाते हैं । जैसे एक शारीरिक डाक्टर मर्ज की दवा फौरन निकाल लेता है उसी तरह से शिक्षा के क्षेत्र में निदानों को लागू किया जाता है । अतः समस्यानुसार निदान को लागू करने से समस्या का प्रभाव समाप्त हो जाता है और अन्य लोग भी प्रभावित नहीं होते हैं । इसी के साथ पाँच वर्ष से ऊपर शिक्षण अनुभव के बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थी बौद्धिक कौशल में इतने निष्णात हो जाते हैं कि समस्या का आभास होते ही उसका निदान लागू कर देते हैं । ये लोग अनुशासन प्रिय होते हैं । इनका नियन्त्रण ज्ञान , कक्षा व्यवहार , चारित्रिक , आदि मुख्य क्षेत्रों में इतना अधिक होता है कि छात्र किसी भी प्रकार की उच्छृंखलता नहीं कर पाता । अनुभव के द्वारा ये चपल छात्रों पर उनकी अनुशासन हीनता को दूर करने के लिये निदानों को उपयुक्त रूप से प्रयोग करते रहते हैं । इससे जीवन में नैसर्गिक विकास स्वतः होने लगता है । इसका समर्थन "गुप्ता" §1977§ ने भी किया है ।

6. शिक्षक अनुभव की व्यक्तित्व विशेषताओं से उच्चतम ऋणात्मक विचलन व्यक्तित्व तत्व "क्यू4" §13.9- , 3.95-§ रहा है । यह तत्व शिक्षण कार्य को आराम से करने या तनावयुक्त में करने से सम्बन्ध रखता है । दोनों ही समूह शिक्षण अनुभव से लाभ उठाकर शिक्षण में तनाव रहित रहकर छात्रों का विकास करने का प्रयत्न करते हैं । इसका कारण छात्रों की पाशविक मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहारों को सामान्य बनाने के लिये शिक्षक

शान्त रहना , और शिक्षक व्यवहार में सामान्य स्थिति को बनाये रखना आवश्यक समझता है । शोधकर्ता एक शिक्षक है । वह दैनिक जीवन में छात्रों के असन्तोष का शिकार होता है , लेकिन दूसरे दिन वह उन्हीं से सामान्य रूप से बात करता है तो छात्रों को स्वयं ही अपनी भूल का एहसास होता है और वे सामान्य रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर देते हैं ।

व्यक्तित्व के अन्य तत्वों में अधिकतर समानता देखने को मिलती है । इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षण अनुभव की वृद्धि शिक्षक के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में अपनी तरह का विकास लाता है इसका समर्थन "कौल" ॥1973॥ महोदय ने भी अपने अध्ययन में किया है ।

7. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का विवेचन करने के पश्चात् शोधकर्ता के लिये सामाजिक-आर्थिक स्तर समूहों के आधार पर विकसित व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य की विवेचना करना आवश्यक हो जाता है । इसके लिये सम्पूर्ण निदर्शन को शोधकर्ता ने प्रथम समूह बनाम द्वितीय समूह , प्रथम समूह बनाम तृतीय समूह , प्रथम समूह बनाम चतुर्थ समूह तथा द्वितीय समूह बनाम तृतीय समूह , द्वितीय समूह बनाम चतुर्थ समूह तथा तृतीय समूह बनाम चतुर्थ समूह , आदि स्तरानुसार विभक्त किया और उनके व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का विश्लेषण एवं विवेचन किया ।

स्टैन्स तालिका 4.6 में सामाजिक-आर्थिक स्तर पर निर्मित प्रथम समूह तथा द्वितीय समूह के व्यक्तित्व शील गुणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । इन दोनों ही समूहों में समानता अधिक प्रतीत होती है

क्योंकि दोनों में सार्थक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है । दोनों समूहों में उच्चतम धनात्मक विचलन व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" में रहा है । इनके स्टैन्स क्रमशः [6.9+ , 6.7+] रहे हैं । इस तत्व की विशिष्टता से स्पष्ट होता है कि शिक्षण में अनुशासन अति आवश्यक है । बिना अनुशासन के जीवन के मूल्यों को न प्राप्त ही किया जा सकता है और न लक्ष्यों को पूरा ही किया जा सकता है । अनुशासन के द्वारा ही शिक्षक बच्चों की पशुजन्य मूल प्रवृत्तियों को सामाजिक स्वरूप प्रदान करता है जिससे वे बच्चे समाज के नागरिक बनकर राष्ट्र की सेवा करते हैं । इसके साथ ही इन समूहों का उच्चतम ऋणात्मक विचलन तत्व "क्यू4" में रहा है । ये लोग तनावरहित जीवन व्यतीत करना पसन्द करते हैं । शिक्षण , पवित्र , शान्त , व कोमल प्रकृति का होता है । वह इसी आभार पर छात्रों की उदण्डता व आक्रोश को सहन करके उनको सामान्य बनाता है । वर्तमान समय में "डण्डा छोड़ा और छात्र बिगड़ा" वाली कहावत को शिक्षा में कोई भी स्थान नहीं है । इस का समर्थन "हैडले" [1953] ने भी किया है ।

8. सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह तथा द्वितीय समूह के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि सार्थक भिन्नता तत्व "बी , एन और क्यू4" , में रही है । शेष तत्वों मे सार्थकता स्पष्ट नहीं हुई है । अतः दोनों समूहों में समानता का स्तर अधिक प्रतीत होता है और असमानता का कम । फिर भी असमानता में व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" स्टैन्स [6.9+] प्रथम समूह तथा तत्व "एच" स्टैन्स [7.0+] तृतीय समूह में स्पष्ट हुये हैं । जहाँ पर प्रथम समूह उच्च धनात्मक विचलन प्रगट करता

है वहीं पर तृतीय समूह में तत्व "एच" में प्रगट हुआ है । प्रथम समूह के प्रशिक्षणार्थी अनुशासनमय शिक्षण पर जोर देते प्रतीत होते हैं क्योंकि जीवन में प्रत्येक कार्य नियमों से बंधा रहता है । नियमबद्धता व्यक्ति को सफलता हासिल करने में मदद देती है । इसके साथ हीं तृतीय समूह साहस पर उच्चता प्रगट करता है । साहसी होना , कार्य को साहस से करना, तथा परिस्थिति की जटिलता को साहस से सगाना आदि अच्छे व्यक्तित्व के परिचायक माने जाते हैं । इसका समर्थन "श्रीवास्तव" (1976) ने अपने कार्य में किया है । इसके साथ ही प्रथम समूह का उच्चतम ऋणात्मक विचलन "क्यू4" में रहा है जबकि तृतीय समूह का तत्व "बी" में रहा । इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय समूह के प्रशिक्षणार्थी अपनी मानसिक क्षमताओं का सही प्रयोग प्रशिक्षण में नहीं कर पाये हैं , इससे उनका सीखना , निष्पादन तथा अन्य प्रशिक्षण कार्य भी प्रभावित होते हैं । इसका कारण उनकी मानसिक दशा का केन्द्रित होकर क्रियाशील न हो पाना हो सकता है । इसके साथ ही प्रथम समूह तनाव रहित होकर अपने कार्य को करता है । वह शिक्षण को रोजमर्रा के कार्य के समान करता प्रतीत होता है । इसका कारण विश्वास तथा व्यवसाय में पकड़ हो सकती है । अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर समूहों में भिन्नता कम तथा समानता अधिक स्पष्ट होती है ।

9. प्रथम समूह तथा चतुर्थ समूह की आकृति चित्र को देखने से स्पष्ट होता है कि सामान्य स्तर पर तत्व (8 , 11) रहे हैं । ऋणात्मक विचलन में तत्व (4 , 3) रहे हैं तथा धनात्मक विचलन में तत्व (3 , 2) रहे हैं । इनमें व्यक्तित्व तत्व "ए ,जी , एल , क्यू2", आदि में सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है । इस भिन्नता का कारण पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा

वंशानुक्रमीय विशेषतायें हो सकती हैं । प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी अपने वंश की आठ पीढ़ियों के प्रभाव को लेकर जन्म लेता है । ये विशेषतायें विकासात्मक अवस्था के साथ-साथ विकसित होकर प्रगट होती रहती हैं । अतः सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रथम समूह तथा चतुर्थ समूह में भिन्नता स्पष्ट हो सकती है । प्रथम समूह में उच्च धनात्मक विचलन तत्व "अनुशासनहीनता बनाम नियंत्रण" में पाया गया है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रथम समूह के प्रशिक्षणार्थी छात्र नियंत्रण को ही शिक्षा का पर्याय मानते हैं ताकि ज्ञान का विकास सही तरीके से हो सके । ज्ञान को धारण करना , फिर उसका प्रयोग दैनिक जीवन में करना , यम , नियम और संयम के द्वारा ही सही माना गया है । इसके विपरीत चतुर्थ समूह में उच्च धनात्मक विचलन तत्व "एल" में पाया गया है । इसका मुख्य कारण स्वयं पर विश्वास न होना , साथ ही व्यवसायिक संरक्षण भी हो सकता है । वर्तमान समय में , प्रशिक्षित अध्यापक अध्यापिकाओं को व्यवसाय प्राप्त नहीं हो रहे हैं , परिणामस्वरूप उनमें व्यवसाय के प्रति अरुचि , और मानसिक तनाव विकसित होते रहते हैं । तालिका 4.8 में प्रथम समूह का उच्च ऋणात्मक विचलन तनाव रहित प्रशिक्षण पाना , तथा जैसा है वैसा ही ग्रहण करते जाना के व्यवहार के फलस्वरूप से उत्पन्न हुआ लगता है । जबकि चतुर्थ समूह की मानसिक क्षमता का सही प्रयोग प्रशिक्षण में प्रतीत नहीं हुआ है ।

10. स्टैन्स तालिका 4.9 के द्वारा शोधकर्ता ने सामाजिक-आर्थिक स्तर पर निर्मित द्वितीय समूह तथा तृतीय समूह के बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य की विवेचना प्रस्तुत की है । दोनों समूहों में सार्थक भिन्नता तत्व "एन , तथा क्यू।" में ही सिद्ध

हुई है । इसके अलावा अन्य किसी भी तत्व में सार्थकता स्पष्ट नहीं हुई है । इस स्टैन्स तालिका की आकृति से स्पष्ट होता है कि ये दोनों ही तत्व स्टैन्स में सामान्य स्तर पर रहे हैं । फिर इनकी भिन्नता का कारण भविष्य के प्रति गम्भीर होना तथा रूढ़िवादिता के साथ-साथ व्यवहारिक बनना , आदि हो सकती है । प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी एक आदर्श अध्यापक का सपना मन में संजोकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा होता है । अतः वह प्रत्येक सीढ़ी को सावधानी के साथ चढ़ता है और पूर्ण गम्भीरता का पालन करता है । वह यह भी जानता है कि उसके शिक्षा के क्षेत्र में सफल बनने के लिये प्रचलित शिक्षण प्रणाली के साथ-साथ व्यवहारिक शिक्षा प्रणाली के पक्षों पर भी ध्यान देना होगा,अन्यथा कक्षा व्यवहार में सफलता प्राप्त करना मुश्किल हो जायेगी । परिणामस्वरूप दोनों ही तत्वों में सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर पर प्रगट हुई है । द्वितीय समूह स्तर पर उच्च धनात्मकता विचलन तत्व "एच , क्यू2 तथा क्यू3" में प्राप्त हुआ है । इसका मुख्य कारण शिक्षक प्रणाली का स्वरूप है । आज की शिक्षा प्रणाली का आधार अनुशासन , आत्मनिर्भरता , तथा साहस दिखलाना , आदि प्रतीत होता है । बिना साहस के कक्षा को नियंत्रित करना आसान नहीं होता है । इसके साथ ही तृतीय समूह स्तर में भी साहस को ही महत्व दिया गया है । इनमें अन्तर साहस की प्रवृत्ति एवं व्यवहारिक प्रयोग का हो सकता है । इन दोनों ही समूहों में ऋणात्मक विचलन तत्व "क्यू4" एवं "बी" में रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण का प्रभाव दोनों ही समूहों को प्रभावित कर रहा है । द्वितीय समूह इस समूह को आसानी से आत्मसात कर लेता है । जबकि तृतीय समूह मानसिक रूप से व्यग्र हो जाता है ।परिणामस्वरूप वह अपनी मानसिक क्षमता का प्रयोग सही रूप से नहीं कर पाता है ।

11. स्टैन्स तालिका 4.10 में शोधकर्ता ने द्वितीय स्तर समूह तथा चतुर्थ स्तर समूह के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । अब उसकी विवेचना स्पष्ट की जाती है । इन दोनों समूहों के बीच सार्थक भिन्नता तत्व " ए , आई , तथा क्यू2" में स्थापित हुई है । इनका स्टैन्स आधारित विश्लेषण व्यक्तित्व विशेषताओं के सामान्य स्तर को स्पष्ट करता है । भिन्नता का कारण व्यक्तित्व विशेषताओं के व्यवहारिक प्रयोग तथा उनका प्रगटीकरण हो सकता है । चूँकि द्वितीय समूहों के सदस्यों का सामाजिक-आर्थिक स्तर सामाजिक तौर पर ऊँचा होता है जबकि चतुर्थ का काफी नीचा होता है । वर्तमान जातिभेद , सम्प्रदायभेद , धर्मभेद , आदि कुरीतियों के फलस्वरूप उनका मानसिक सोच भी वैसा ही बनता है । अतः प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक सोच , मनोवृत्ति आदि उसके शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करती है । §अहलूवालिया , 1978§ । द्वितीय समूह स्तर पर 16 तत्वों में से सिर्फ सात तत्वों में ही विचलन रहा है और शेष सामान्य स्तर पर रहे हैं । चतुर्थ समूह स्तर पर 16 तत्वों में से सिर्फ पाँच तत्वों में ही विचलन रहा है । इससे प्रतीत होता है कि द्वितीय स्तर सामान्य से उच्च की ओर प्रगति में कोशिश कर रहा है जबकि चतुर्थ समूह स्तर सामान्य स्थिति बनाये रखने में व्यस्त रहा है । इस प्रकार से दोनो के उद्देश्यों में गुणात्मक परिवर्तन स्पष्ट होता है । इसके साथ ही द्वितीय समूह में उच्चतम धनात्मक स्तर तत्व "क्यू3" में आया है जबकि चतुर्थ समूह में तत्व "एल" में रहा है । यानी द्वितीय समूह के प्रशिक्षणार्थी अपने प्रशिक्षण में नियंत्रण की स्थापना करना पसन्द करते हैं , जबकि चतुर्थ समूह के उसमें सन्देह प्रगट करते हैं । अतः दोनों ही समूहों की मानसिक सोच व सूझ मे अन्तर होना स्वाभाविक सा प्रतीत होता है ।

12. सामाजिक-आर्थिक स्तर का तृतीय समूह व चतुर्थ समूह के व्यक्तित्व पार्श्व दृश्यों की विवेचना सामान्य स्तरीय प्रतीत हो रही है । इनके व्यक्तित्व तत्वों के बीच सार्थक भिन्नता 0.01 तथा 0.05 आदि किसी भी स्तर पर प्राप्त नहीं हुई है । सामान्य तौर पर तृतीय समूह के तत्व आठ सामान्य स्तर पर रहे हैं और तीन तत्वों ने ऋणात्मक विचलन प्राप्त किया है तथा शेष ने धनात्मक विचलन पाया है । इनके बीच विशेष बात यह है कि तत्व "बी" में दोनों ने ही उच्च ऋणात्मक विचलन पाया है । इसका मुख्य कारण मानसिक क्षमताओं का सामान्य स्तरीय होना प्रतीत होता है । साथ ही मनोवैज्ञानिक दबाव भी ध्यान के केन्द्रीभूत होने में रुकावटें पैदा कर सकता है । तृतीय समूह में उच्च धनात्मक विचलन तत्व "एच" स्टैन्स §7.0§ में रहा है जबकि चतुर्थ समूह में व्यक्तित्व तत्व "एल" स्टैन्स §7.2§ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि तृतीय समूह में प्रशिक्षण को मानसिक रूप से ग्रहण कर लिया है जिससे उनमें साहसिकता का भाव संचारित हो गया है । इसके साथ ही चतुर्थ समूह स्तर ने अपने विश्वास को जागृत नहीं कर पाया है । अतः वे लोग अपनी सफलता को सन्देह के दायरे में देखते हैं । दोनों का प्रशिक्षण पर्यावरण एक जैसा ही है , लेकिन वैयक्तिक भिन्नता के परिणामस्वरूप दोनों के विचलनों में पर्याप्त अन्तर प्रतीत हो रहा है । फिर भी दोनों के व्यक्तित्व तत्वों का विस्तार समान स्तरीय तथा सजातीय प्रतीत होता है क्योंकि दोनों के सामाजिक-आर्थिक स्तरों में अधिक भिन्नता नहीं है ।

उपर्युक्त विश्लेषण एवं विवेचन के आधार पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापक जन्मजात नहीं होते हैं बल्कि उनमें अध्यापकीय विशेषताओं को विकसित किया जाता है ।

अतः प्रस्तुत अध्ययन से निम्न तथ्य स्पष्ट हुये हैं :-

§अ§- तत्व "बी" जो मानसिक योग्यता से सम्बन्ध रखता है । सभी प्रशिक्षणार्थियों में कमजोर पाया गया है । इससे सिद्ध होता है कि ये लोग अपनी मानसिक क्षमता का सही प्रयोग शिक्षण क्षेत्र में किन्हीं कारणों से नहीं कर पा रहे हैं । इस पर शिक्षण अनुभव का प्रभाव स्पष्ट होता है ।

§ब§- व्यक्तित्व विशेषता तत्व "सी" को संवेगात्मकता के भाव से सम्बन्धित माना जाता है । इसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों ने ऋणात्मक विचलन पाया है जिससे सिद्ध होता है कि प्रशिक्षण के साथ समायोजन स्थापना आसान नहीं होती है । अतः सभी लोग संवेगात्मक रूप से अस्थिर रहते हैं ।

§स§- तत्व "एच" में सभी प्रशिक्षणार्थी धनात्मक विचलन पर रहे हैं । इसका तात्पर्य है कि सभी ने अपने प्रशिक्षण को साहस के साथ ग्रहण किया है । अतः सभी अच्छे अध्यापक बनना चाहते हैं ।

§द§- व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एम" सामान्य तथा धनात्मक विचलन लिये हुये रहा है । इसका तात्पर्य है कि सभी प्रशिक्षणार्थी अपने शिक्षण में व्यवहारिकता तथा स्वाभाविकता लाने का प्रयास कर रहे हैं । इसी से वे कक्षा शिक्षण में उचित् सम्मान पा सकेंगे ।

§य§- तत्व "क्यू1" को "पुरातन बनाम आधुनिक" से जाना जाता है । इसमें सभी प्रशिक्षणार्थी सामान्य स्तर पर रहे हैं । इससे स्पष्ट है कि न हम अपने पुराने मूल्यों को , शिक्षण तरीकों को पूर्ण रूप से त्याग सकते हैं और न पूर्ण आधुनिक तरीकों को ग्रहण ही कर सकते हैं । अतः छात्र समाज तथा राष्ट्र हित हेतु दोनों का सकारात्मक तथा समन्वात्मक प्रयोग करना आवश्यक मानते हैं ।

§र§- व्यक्तित्व तत्व "क्यू2" निर्भरता से सम्बन्ध रखता है । इसमें सभी प्रशिक्षणार्थी सामान्य स्तर से उच्चता पर रहे हैं । इससे स्पष्ट होता है कि अध्यापक को आत्मनिर्भर बनना चाहिये, लेकिन कभी-कभी सामूहिक सहयोग की क्रियाओं में भी सहयोग करना चाहिये । क्योंकि आज का युग "यूनियन बाजी" का है जो दबाब के द्वारा अपने साथियों के विकास के लिये अवसर प्राप्त करता है । यह कार्य एक व्यक्ति के द्वारा सम्भव नहीं हो पाता है । इसके लिये समूह पर निर्भर रहना होता है ।

§ल§- व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" को सभी प्रशिक्षणार्थियों ने उच्च स्थान दिया है । इसका सीधा सम्बन्ध अनुशासन स्थापना से है । शिक्षक का कार्य यम , नियम , और संयम से शिक्षा देना होता है ताकि वह छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास करने में सफल भूमिका अदा कर सकें ।

§व§- तत्व "क्यू4" ने ऋणात्मक विचलन पाया है । इससे स्पष्ट होता है कि सभी प्रशिक्षणार्थी स्वयं में तनाव महसूस करते हैं । यह तनाव नवीन परिस्थितियों के साथ अनुकूलन न होने के कारण होता है । वे व्यवसाय के प्रति जागरूक होते हैं और आदर्श अध्यापक बनना चाहते हैं । वे व्यवसाय के प्रति जागरूक होते हैं और आदर्श अध्यापक बनना चाहते हैं । अतः यह भाव उनमें तनाव की स्थिति को संचारित करता रहता है । अभ्यास के साथ-साथ वह समाप्त भी हो जाता है । जैसा कि आयु वृद्धि और अनुभव वृद्धि में पाया गया है ।

उपरोक्त व्याख्या एवं विवेचन से स्पष्ट होता है कि शोध में प्रयुक्त व्यक्तित्व विशेषताओं में से "बी , सी , एच , एम , क्यू1 , क्यू2 , क्यू3 और क्यू4 ", आदि का एक आदर्श अध्यापक के विकास के लिये अत्यधिक महत्व है । इसका समर्थन "ओरपैन ," 1976 , श्रीवास्तव , 1974 , त्रिपाठी , 1972 , गोमडर , 1972 , शर्मा , 1975 , प्रतिभा 1983 , झा 1990" , आदि प्रभृति शोधार्थियों ने अपने-अपने अध्ययनों से किया है ।

xXXXx

अध्याय -- पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

१- अध्ययन के निष्कर्ष

२- अध्ययन के विस्तृत निष्कर्ष

३-- शिक्षारत व्यक्तियों के लिये सुझाव

४-- भविष्य के शोधकर्ताओं के लिये सुझाव

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन की प्रथम परिकल्पना, "बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व विशेषताओं के आधार पर निर्मित पार्श्वदृश्य में सार्थक अन्तर नहीं होता है", का परीक्षण किया गया। यह परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकार हो चुकी है। अन्तर सिर्फ इतना है कि व्यक्तित्व विशेषताओं का व्यवहारिक रूप कम या ज्यादा प्रभाव छोड़ रहा है। व्यक्तित्व विशेषता स्टैन्स तालिका 4.2 और 4.3 से स्पष्ट होता है कि तत्व "ए, बी, ई, एफ, जी, एच, आई, एम, एन, आदि दोनों समूहों में समान स्तर पर रहे हैं। तत्व "सी" में संवेगात्मक व्यवहार को स्पष्ट किया गया है। पुरूष वर्ग नवीन परि[ि] के साथ समझौता न कर पाने के कारण संवेगात्मक रूप से अस्थिर हो जाता है जबकि स्त्री वर्ग अपने स्वभाव से शान्त और धीमी गति से लक्ष्य की ओर बढ़ती हैं। अतः ये लोग संवेगात्मक क्षेत्र में अधिक स्थिरता दिखलाते हैं। इसका समर्थन झा §1990§, गोयडर§1972§, प्रतिभा§198 आदि ने अपने अध्ययनों में किया है।

व्यक्तित्व विशेषता तत्व "क्यू1, क्यू2, क्यू3, तथा क्यू4 को देखने से स्पष्ट होता है कि स्त्री और पुरूष अध्यापकों में समानता स्तर अधिक पाया गया है। जो भिन्नता स्थापित हो रही है उसके पीछे स्त्री-पुरूष का जातीय स्वभाव, बनावट, परिवार का प्रशिक्षण, सभ्य एवं संस्कृति आदि परिलक्षित होती है। हमारे देश में स्त्री जाति को स्वतन्त्रतापूर्वक विचारों का प्रदर्शन करना अच्छा नहीं माना जाता है। 3

वे समूह के साथ क्रियाशील रहती है । "पाण्डेय" §1983§ ने अपने अध्ययन में देखा है कि स्त्री अध्यापिकायें मनोवैज्ञानिक भय से पीड़ित रहतीं हैं , साहस नहीं दिखाती हैं । शोधकर्ता ने एक अनुसूची अध्यापक व्यवहार को जानने के लिये उनको दी तो पाया कि जो अध्यापिकायें अपनी प्राचार्या और प्रबन्धतन्त्र की सदैव बुराई करतीथीं , उन्होंने अनुसूची में विरोध प्रगट नहीं किया । ऐसा ही कुछ-कुछ पुरुष वर्ग में भी पाया गया था । अतः स्पष्ट होता है कि तनाव को प्रकट करना और न करना आदि स्तरों पर दोनों में समानता प्रतीत होती है । अनुशासन के सन्दर्भ में भी समानता है । सिर्फ भिन्नता दण्डात्मक स्वरूप में हो सकती है । पुरुष वर्ग अत्यधिक अनुशासन में विश्वास करता है जबकि स्त्री वर्ग सामान्य स्तरीय अनुशासन को ठीक समझती हैं । इसका कारण स्त्री वर्ग का ममत्व और समानता का भाव मालूम पड़ता है । इसी तरह से परिणाम "निगम" §1973§ ,"प्रतिभा"§1983§ , "तिवारी" §1977§ ने भी अपने अध्ययनों में दिये हैं ।

तत्व "बी" मानसिक योग्यता से सम्बन्ध रखता है । छात्र-अध्यापकों में ये ऋणात्मक विचलन लिये हुये हैं जबकि छात्रा-अध्यापिकाओं में धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । इससे स्पष्ट होता है कि पुरुष वर्ग शिक्षण व्यवसाय को एक कौशल के रूप में नहीं लेता है बल्कि साधारण कार्य मानता है । अतः वह इसमें अपनी मानसिक क्षमता का विभिन्न आयामों में प्रयोग नहीं करता है । जबकि छात्रा-अध्यापिकायें शिक्षण व्यवसाय को कौशल मानकर बौद्धिक तथा काल्पनिक चातुर्य के द्वारा क्रियाशील रहतीं हैं । यही क्रियाशीलता उनको धनात्मक विचलन प्रदान करती है । इस प्रकार के

निष्कर्ष "मित्तल" {1990} , "मिश्र" {1988} , आदि के अध्ययन से प्राप्त होते हैं । विद्वान मिश्र ने "सृजनशीलता" पर कार्य किया और पाया कि कला वर्ग के शिक्षण में कौशलों के आधार पर पुरूष वर्ग तथा स्त्री वर्ग में अन्तर होता है । वर्तमान भारत सरकार की शिक्षा नीति {1986} में भी प्राथमिक शिक्षा के लिये स्त्री अध्यापकों के लिये सुझाव दिये गये हैं । ये लोग बालमनोविज्ञान के आधार पर, मातृत्व के भाव के द्वारा प्रत्येक बच्चे के साथ अपनत्व का भाव विकसित करने में सहज होती हैं । परिणामस्वरूप छात्रा-अध्यापिकायें बच्चे का ज्ञान , व्यक्तित्व विकास , अचेतन का प्रभाव , आदि के आधार पर शिक्षा देने का कार्य सरलता से कर लेती है । इस प्रकार से शोध कार्य की प्रथम परिकल्पना छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पाश्र्वदृश्य विशेषताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है , स्वीकृत एवं सिद्ध होती है ।

प्रस्तुत अध्ययन की द्वितीय परिकल्पना-"अध्यापक की आयु व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अन्तर नहीं रखती है, का परीक्षण किया गया । यह परिकल्पना व्यक्तित्व के 16 तत्वों में से 11 में अन्तर स्थापित नहीं करती है और सिर्फ पाँच तत्वों में सार्थक अन्तर स्थापित करती हैं । तालिका 4.4 से तत्व "बी" का स्वरूप स्पष्ट होता है । आयु 20 वर्ष से लेकर 30 वर्ष तक को प्रथम समूह तथा आयु 31 वर्ष से लेकर 40 वर्ष तक का द्वितीय समूह माना गया है । इसमें बौद्धिक क्षमताओं के केन्द्रीकर तथा सही प्रयोग का अन्तर होता है । आयु 20 वर्ष का तात्पर्य किशोराव का समाप्त होना तथा प्रौढावस्था में प्रवेश लेना होता है । इस आयु की विशेषताओं में संवेगात्मक अस्थिरता , अहं भाव की तुष्टि , काम भावना की परिपक्वता , समाज सेवा , लक्ष्य प्राप्ति , व्यवसाय में स्थिरता तथा आत सम्मान प्राप्त करना आदि मानी गई है {रास , 151} । परिणामस्वरूप ये

अतः इनकी लक्ष्य प्राप्त योजना में शिथिलता आ जाती है जो इनके समय , धन , और शक्ति का अपव्यय करती है । साथ ही ये अपने सीखने यानी प्रशिक्षण में भी पिछड़ने लगते हैं । जबकि आयु 31 से 40 वर्ष के लोग प्रत्येक क्षेत्र में स्थिर हो चुकते हैं । उनकी सोच , मनोस्थिति , लक्ष्य , क्रियाशीलता , आदि के मानक निश्चित हो जाते हैं जिनके वशीभूत होकर ये लोग कार्य करते हैं । इनके व्यवहार में परिवर्तन लाना बहुत ही कठिन होता है । इसी प्रकार के निष्कर्ष "ओरपेन" §1976§ , तथा "सी, ए , एस , ई" §1968§ के अध्ययनों से भी प्राप्त हुये हैं ।

आयु व्यक्तित्व विशेषताओं में स्थिरता तथा परिपक्वता लाती है । कम आयु से अधिक आयु वर्ग का व्यक्ति अधिक गम्भीर , चिंतन शील तथा समस्या-समाधान में चतुर पाया जाता है । इसका समर्थन "पाण्डेय" §1983 , "प्रतिभा" §1990§ , आदि ने अपने अध्ययनों के निष्कर्षों द्वारा किया है ।

व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एम" में आयु अन्तर की सार्थकता प्रगट हुई है । इसकी सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर पर है । तत्व "एम" को "व्यवहारिक बनाम कल्पनाशील" के नाम से जाना जाता है । कम आयु के व्यक्ति अधिक भावात्मक एवं कल्पना की उड़ान भरने वाले होते हैं । वे किसी भी कार्य को गम्भीरता से नहीं लेते हैं । वे छोटी सफलता से अपने को बहुत ही योग्य मानने लगते हैं और असफलता के कारण लक्ष्य से विमुख यानी निराश भी होने लगते हैं । वे वास्तविकता और कल्पनात्मकता में भिन्नता नहीं कर पाते हैं । अतः उनका व्यक्तित्व पार्श्वद्वय स्थिरता

वाली विशेषताओं से युक्त नहीं हो पाता है । जबकि अधिक आयु वाले लोग प्रत्येक कार्य को गम्भीरता , लगन और विश्वास के साथ करते हैं और सफलता प्राप्त भी करते हैं । अतः व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एम" में आयु अन्तर की सार्थकता स्पष्ट हुई है ।

तत्व "ओ" में 0.01 स्तर पर सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है । इस तत्व को "प्रसन्नचित्त बनाम विचारशील" से जाना जाता है । शिक्षक का स्वभाव निरन्तर चिन्तन करते रहना ताकि सामयिक समस्याओं का समाधान आसानी से प्राप्त कर लें । लेकिन चिन्तन सकारात्मक होना चाहिये , जिससे स्वयं को प्रसन्न बनाया जा सके और अन्य लोग भी प्रसन्न बने । आयु वर्ग 20 वर्ष से लेकर 30 वर्ष तक का चिन्तन "स्वहित" से सम्बन्धित तथा अन्तर्मुखी होता है और इसमें अस्थिरता तथा कल्पनाशीलता अधिक होती है जबकि आयु 31 वर्ष से 40 वर्ष के समूह में विचार स्थिरता, यथार्थता , और सामाजिक हित का भाव अधिक मिलता है । परिणामस्वरूप दोनों ही समूह तत्व "ओ" में सार्थक भिन्नता रखते हैं ।

व्यक्तित्व तत्व "क्यू2" की स्थिति तालिका 4.4 में धनात्मक विचलन लिये हुये हैं । फिर भी दोनों में गुणात्मक भिन्नता 0.01 स्तर पर स्थापित हुई है । इस तत्व को समूह निर्भरता तथा आत्मनिर्भरता के नाम से जाना जाता है । दोनों ही समूह आत्मनिर्भर हैं , लेकिन आयु 20 वर्ष से 30 वर्ष वाला समूह आत्मनिर्भरता में स्थायित्व प्राप्त करने में लगा है जबकि आयु 31 वर्ष से 40 वर्ष का समूह आत्मनिर्भरता में स्थायित्व प्राप्त कर चुका है । परिणामस्वरूप शिक्षण उनके व्यवहार की निर्भरता से प्रभावित हो रहा

है । अतः दोनों में अन्तर होना स्वाभाविक ही है ।

तत्व "क्यू4" में सार्थक भिन्नता 0.01 स्तर पर प्रगट हुई है । अतः दोनों ही समूह तनाव की स्थिति को आसानी से झेलते हैं । शिक्षण में चेतन को उचित रूप प्रदान करना होता है । इस जीवित छात्र/छात्रा को अन्य तत्व भी प्रभावित करते हैं । अतः अध्यापकों को उनको ढालने, सम्हालने में तनाव का सामना करना स्वाभाविक ही है । इनमें तनाव की स्थिति में गुणात्मक अन्तर प्रतीत होता है । कम आयु के शिक्षक तनावग्रस्त शीघ्र हो जाते हैं जबकि अधिक आयु समूह तनाव स्थिति को व्यवहार में प्रगट नहीं होने देता है । इसी प्रकार के निष्कर्ष "प्रतिभा" §1983§, "ओइपेन" §1976§ तथा "झा" §1990§, आदि के अध्ययनों में भी पाये गये हैं । इस प्रकार से शोध कार्य की यह परिकल्पना कि आयु व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में भिन्नता स्थापित नहीं करती है, कुछ भिन्नता के साथ स्वीकृत एवं सिद्ध हुई है ।

अध्ययन की तृतीय परिकल्पना : शिक्षण अनुभव छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में भिन्नता स्थापित नहीं करते हैं, को परीक्षित किया गया । इनमें समानता अधिक है भिन्नता सिर्फ तीन तत्वों में प्रतीत हुई है । शिक्षण अनुभव का एक समूह 5 वर्ष से कम तथा द्वितीय समूह 5 वर्ष से ऊपर का स्थापित करके अध्ययन किया गया है । सामान्य रूप से माना जाता है कि शिक्षण अनुभव का बी०एड० प्रशिक्षण पर प्रभाव पड़ता है । लेकिन 16 तत्वों में से 13 तत्वों में सार्थक भिन्नता स्पष्ट न होने के कारण इस परिकल्पना को भी स्वीकृत माना जा सकता

है । फिर भी सार्थक भिन्नता स्थापित तीन तत्वों के कारणों को स्पष्ट करना भी शोधकर्ता के लिये आवश्यक हो जाता है ।

व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एन" में सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर पर प्रगट हुई है । इस तत्व को "अग्रगामी बनाम चतुर" के नाम से जाना जाता है । तालिका 4.5 में स्टैन्स स्थिति में दोनों ही समूह सामान्य स्तर पर रहे हैं । फिर भी दोनों में भिन्नता का कारण शिक्षण अनुभव के द्वारा सीखे गये तरीके और उनका व्यवहार में पालन कैसे करना है [का ही आधार हो सकता है । आज का शिक्षण कार्य शिक्षण तकनीकि पर आधारित न होकर शिक्षक की अपनी तकनीकि से परिचालित होता है । जब से लोग बी0एड0 का प्रशिक्षण लेने आते हैं तो उनको अपनी तकनीकि त्यागनी होती है और शिक्षण तकनीक को ग्रहण करना होता है । परिणामस्वरूप उनके कौशल में चतुरता की वृद्धि होती है जिससे भविष्य की कक्षा समस्याओं का समाधान शीघ्र होता है और ज्ञान की धारणा भी बढ़ जाती है । इसमें तकनीक का स्थानान्तरण तथा सीखना, आदि पर पूर्व ज्ञान का सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है । इनको मनोवैज्ञानिक "इनहिबिसन्स" के नाम से पुकारते हैं । अतः दोनों अनुभव समूहों में अन्तर होना स्वाभाविक होता है । हिलगार्ड §1948§ थार्नडायक §1930§, आदि ने भी इसी मनोवैज्ञानिक कारण को अनुभव भिन्नता का आधार माना है ।

व्यक्तित्व तत्व "ओ" ने भी शिक्षण अनुभव समूहों के बीच सार्थक भिन्नता 0.05 स्तर पर प्रगट की है । इस तत्व को "प्लेसिड

बनाम एपरीहैंसिव" के नाम से जाना जाता है । स्टैन्स तालिका में इनका स्तर केवल सामान्य रहा है । फिर भी इनमें सार्थक भिन्नता आई है । इसका कारण शिक्षण अनुभव का प्रभाव मात्र हो सकता है । सामान्य रूप से कम शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों में और अधिक शिक्षण अनुभव प्राप्त शिक्षकों में अन्तर तो होता ही है । फिर भी दोनों समूहों ने शिक्षण को प्रसन्नता के साथ ग्रहण किया और अपने "सोच" के द्वारा आदर्श शिक्षक की विशेषताओं को स्वयं में विकसित करने की कोशिश की है । दोनों में अन्तर व्यवहारिकता का प्रतीक है जिसके द्वारा वे कम और अधिक समय के अन्दर अपने प्रशिक्षण तकनीक को ग्रहण करने में सक्षम् होते हैं । वे स्व-निर्णय लेने में हिचकते हैं तथा समूह के साथ रहना भी पसन्द नहीं करते हैं ।

बी0एड0 प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषता तत्व "क्यू4" में सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है । इस भिन्नता का स्तर 0.01 रहा है । इस का प्रमुख कारण शिक्षण अनुभव के द्वारा समस्याओं का अनुकूलन होते रहना मात्र है । इस तत्व को "शान्त बनाम तनाव" से जाना जाता है । इसमें दोनों समूहों का स्तर सामान्य से कम रहा है । यह सिद्ध करता है कि दोनों ही समूह तनाव से दूर रहकर शान्त मन से अपने प्रशिक्षण को पूरा कर रहे हैं । जबकि प्रशिक्षणकर्ताओं की सामान्य तालिका (4.1) में उच्च धनात्मक विचलन रहा है । साथ ही पुरूष वर्ग तथा स्त्री वर्ग प्रशिक्षणार्थियों में भी धनात्मक विचलन रहा है । इसके विपरीत शिक्षण अनुभव के दोनों समूहों में ऋणात्मक विचलन रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षण अनुभव व्यक्ति को शिक्षक के सभी कौशलों,

तकनीकों, आदि में ढालने का सतत् प्रयास करता रहता है, जिससे उनके तनाव के स्तर में निरसन होने लगता है । ये लोग शान्त मन से शिक्षा के क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करना सीख जाते हैं, और उनमें आराम से कार्य करने की आदत बन जाती है । विद्वत वर्ग "औरपेन" §1976§, "मित्तल" §1990§, "सी ए एस आई" §1968§, "कौल" §1973§, "त्रिपाठी" §1972§, आदि ने अपने अध्ययनों से तत्व "क्यू4" में सार्थक भिन्नता का आभास पाया है । सामान्य धारणा से भी आयु तथा अनुभव का प्रभाव शिक्षणार्थियों पर पड़ता है । अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि तत्व "एन , ओ , क्यू4" आदि में भिन्नता पूर्व अनुभवों के स्थानान्तरण करने के कारण है न कि व्यक्तित्व विशेषताओं के कारण । इस प्रकार से शोधकार्य की यह परिकल्पना कि शिक्षण अनुभव के कारण प्रशिक्षणकर्ताओं के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में अन्तर नहीं होता है , स्वीकृत एवं सिद्ध हुई है ।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य "सामान्य रूप से बी0एड0 छात्र/ छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य को तैयार करने वाले शील गुणों को को जानना"। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता ने डॉ0 कपूर §1970§ द्वारा हिन्दी भाषा में विकसित 16 पी0एफ0 का प्रयोग किया । इसमें व्यक्तित्व विकास के विभिन्न तत्वों को शीलगुणों के संगठन के रूप में मान कर विकसित किया गया है । तालिका 4.1 प्रशिक्षणकारियों के शीलगुणों का वर्णन सामान्य रूप से प्रस्तुत करती है । इसमें 16 तत्वों में से तत्व "ए , ई , एन , ओ , आदि क्यू2" आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । ऋणात्मक विचलन तत्व "बी , सी , एफ , आई ," आदि में रहा है तथा धनात्मक विचलन तत्व "जी , एच , एल , एम , क्यू1 , क्यू3 और क्यू4" में रहा है । उच्च ऋणात्मक विचलन तत्व "आई" §3.2-§ में रहा है जबकि

उच्च धनात्मक विचलन तत्व "क्यू।" § 8.2+§ तथा "क्यू4" §8.2§ , आदि में रहा है ।

अध्ययन के स्टैन्स विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य के विकास में सभी शीलगुणों का महत्व होता है । उनका प्रभाव प्रशिक्षण तकनीक तथा वैयक्तिक क्षमता की साहचर्य स्थापना तथा अनुभवों के सकारात्मक स्थानान्तरण के द्वारा प्रगट होता है । अतः वंशानुक्रमीय विशेषतायें वातावरण की विशिष्टता के द्वारा प्रगट अथवा अप्रगट होती रहती है । अध्ययन में विशेष बात यह देखने में आई है कि भारतीय संस्कार एवं परम्परा को अभी भी शिक्षक समुदाय में आदर तथा सम्मान दिया जा रहा है । इसीलिये सभी प्रशिक्षणार्थी "सोबर" नाम के व्यक्तित्व गुण से उच्च रूप में प्रभावित रहे हैं । तत्व "एफ" से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणार्थी सीमाबद्ध , चतुर , मितव्ययी , गम्भीर तथा अल्पभाषी , आदि विशेषताओं को धारण कर रहे हैं ताकि उनका व्यक्तित्व आदर्श §सोबर§ कहा जाये । इसके साथ ही साथ सभी प्रशिक्षणार्थियों §छात्र/छात्रा§ में तत्व "आई" का प्रभाव ऋणात्मक स्तर पर निम्न स्तरीय रहा है । 16 पी0एफ0 मैनुअल के अनुसार जब प्रशिक्षणार्थी इस तत्व में निम्न स्कोर लाते हैं तो उनमें व्यवहारिकता यथार्थवादिता , स्वतन्त्रता , उत्तरदायित्व , आदि विशेषताओं का प्रगटन हो जाता है । ये लोग कभी-कभी इतने जटिल और दृढ़ हो जाते हैं कि इनको लोग शनकी कहने लगते हैं । ये लोग व्यवहार की वस्तुपरकता के लिये क्रिया शील रहते हैं । इस प्रवृत्ति को अध्यापक का गुण माना गया है §ब्रे , पृष्ठ 213§ ।

इसके विपरीत सभी प्रशिक्षणार्थियों ने तत्व "क्यू।" तथा "क्यू4"

में धनात्मक उच्चता पाई है । तत्व "क्यू1" में धनात्मक उच्चता से तात्पर्य व्यवहारिक या प्रयोगवादी होना है । यह भी अध्यापक के लिये आवश्यक विशेषता मानी जाती है , ताकि वह शिक्षा के क्षेत्र में नवीनता ला सके और कक्षा समस्याओं को सुलझा सके । तत्व "क्यू4" का सम्बन्ध "शान्त बनाम तनाव" विशेषता से है । इस तत्व में धनात्मक उच्चता का अर्थ होता है - तनाव की स्थिति में रहना । प्रशिक्षण के दौरान नवीन तकनीक , नया पर्यावरण , नवीन विषय तथा बालमनोविज्ञान का अध्ययन , आदि छात्र/छात्रा को प्रभावित करते हैं । वे लोग स्वयं में यथारूप परिवर्तन करते हैं , फिर भी परिवर्तन पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है । अतः मानसिक बैचैनी या तनाव में रहना स्वाभाविक हो जाता है । इसका समर्थन "जय गोपाल" {1974} , "सिंह" {1981} , "तारपे" {1963} , "डेविल" {1969} , आदि विद्वानों ने अपने शोध निष्कर्षों के द्वारा किया है ।

प्रस्तुत अध्ययन की अंतिम परिकल्पना-"सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रशिक्षणरत अध्यापकों के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है" का परीक्षण किया गया । बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापक/अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व विशेषताओं का आर्थिक-सामाजिक स्तर पर अध्ययन करना सरल कार्य नहीं है । इस लिये शोधकर्ता ने इस परिवर्ती को "उच्च वर्ग स्तर , उच्च-मध्यम वर्ग स्तर , निम्न-मध्यम वर्ग स्तर तथा निम्न वर्ग स्तर , आदि में विभक्त करके तथ्यों का विश्लेषण तथा विवेचन किया है । इस प्रकार से समस्त प्रशिक्षणार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य पर कैसा प्रभाव पड़ा है , स्पष्ट हो सका है । अतः शोधकर्ता निष्कर्षों में चारों वर्गों के प्रभाव को स्पष्ट करता है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर की स्टैन्स तालिका 4.6 , 4.7 , 4.8 आदि से तथ्यों का विश्लेषण स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में तत्व "ए , ई , जी , आई , एल , एम , एन, ओ , क्यू1 तथा क्यू2 आदि सामान्य स्तर पर रहे हैं । इनमें तत्व "बी , सी , एफ , तथा क्यू4" में ऋणात्मक विचलन पाया गया है तथा धनात्मक विचलन लिये हुये तत्व "एच और क्यू3" रहे हैं । ऋणात्मक विचलन का प्रभाव व्यक्तित्व के नकारात्मक पक्ष को प्रगट नहीं करता है बल्कि वह वर्तमान के शिक्षण व्यवहार को स्पष्ट करता है । प्रत्येक व्यक्ति जब नवीन कार्य को सीखता है तो वह अपनी मानसिक योग्यता तथा क्षमता का प्रयोग करता है । इसमें होने वाली प्रगति से हम बुद्धि का स्तर स्पष्ट नहीं कर पाते हैं" बल्कि सीखने की गति तथा तर्क की प्रगति को जान पाते हैं । इससे वह अपनी लक्ष्यहीनता को प्रगट करता है । प्रस्तुत अध्ययन में बौद्धिक शक्ति में ऋणात्मक होने का कारण रुचि का अभाव , व्यवसाय न प्राप्त होना तथा बी0एड0 प्रशिक्षण और दैनिक विद्यालय शिक्षण तकनीक में अन्तर पाया जाना , आदि भी हो सकता है । तत्व "सी" व्यक्तित्व के "अहं" भाव से सम्बन्धित है । प्रशिक्षण में प्रत्येक छात्र/छात्रा उत्साह से आते हैं । इसकी जटिलता , अत्यधिक नियन्त्रण , आदर्शों का आडम्बर , आदि इनको निराशा देती है जिससे वे स्वयं को थका-थका और उबाऊ सा पाते हैं । वे वास्तविकता से दूर भागना पसन्द करते हैं , और असन्तोष के भाव से कार्यों को सम्पादित करते हैं । तत्व "एफ" एक शालीनता भरे व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखता है । ऐसा लगता है कि सभी वर्गों के अध्यापक स्वयं आदर्श मानने में लगे हुये हैं । यह थोपा गया आदर्श उनको पैसीमिस्टिक बनाता है । इस प्रकार से उनमें आंतरिक रूप से निराशावादी दृष्टिकोण और बाहयरूप से मर्यादायुक्त व्यवहार प्रतीत होता है । तत्व "क्यू4" में भी सभी प्रशिक्षणार्थी

ऋणात्मक विचलन लिये हुये आये हैं । इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक ने एक आदर्श "शान्त रहना" , सीख लिया है । शिक्षा क्षेत्र में शिक्षक को छात्र की प्रत्येक गल्ती को माँफ करना सिखाया जाता है , क्योंकि छात्र पाशविक मूल प्रवृत्तियों से ग्रसित व्यवहार करता है । अतः शिक्षक को पूर्णरूप से तनाव रहित एवं शांत रहना चाहिये । तनाव का प्रदर्शन छात्रहित में सही नहीं माना जाता है । इस निष्कर्ष का समर्थन "गोयडर" §1972§ , "नेगी" §1962§, "कौर" §1961§ , "सिंह" §1974§ , "प्रतिभा" §1983§ , आदि ने अपने शोधों द्वारा भी किया है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के सभी चार वर्गों के विश्लेषण में व्यक्तित्व विशेषता तत्व "एच" तथा "क्यू3" , आदि में धनात्मक विचलन पाया गया है । इससे यह तथ्य स्पष्ट होता है कि सभी वर्ग के छात्र/छात्रा वर्तमान प्रशिक्षण को साहस के साथ तथा अनुशासन के साथ ग्रहण कर रहे हैं । इनमें तत्व "एच" के उच्च होने से व्यक्तित्व विशेषता साहस , दृढ़ता , क्रियाशीलता , स्वच्छता , आदि का प्रभाव विशेष रूप से पाया गया है । प्रशिक्षण के दौरान सिद्धान्त की कक्षायें , कक्षाओं को पढ़ाना , तथा पाठ्योत्तर क्रियायें करना , आदि में प्रशिक्षणार्थी अत्यधिक व्यस्त रहते हैं , फिर भी वे लोग शांत मन से अपने व्यवहार को सामान्य बनाते हैं । इसके साथ ही कक्षा-कक्ष की समस्याओं का सामना साहस के साथ करते हैं , तनिक भी भयभीत नहीं होते हैं । इनमें अन्तर सिर्फ साहस के स्तर का हो सकता है । इसका समर्थन "स्टार्ट" §1966 , 1968§ , "विल्कोक" §1966§ , "ड्रैवडहिल" §1955§ , "सक्सेना" §1969§ , "कौल" §1973§ , "गुप्ता" §1977§ , आदि शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययनों से किया है ।

व्यक्तित्व तत्व "क्यू3" का प्रभाव प्रशिक्षणार्थियों की व्यक्तित्व विशेषता अनुशासन को स्पष्ट करता है । ये लोग अपने संवेगों तथा भावों पर अत्यधिक नियन्त्रण स्थापित रखते हैं । वे समाज के प्रति जागरूक तथा चिन्तित रहते हैं और स्वयं का सम्मान बनाये रखने में समर्थ होते हैं । अनुशासन के द्वारा ही शिक्षक बच्चों का विकास सामान्य रूप से कर पाता है तथा उनमें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण विकसित करने में समर्थ होगा । इस तथ्य का समर्थन "स्टार्ट" §1966 , 1968§ , "ड्रेवडाहल" §1955§ , "कौल" §1973§ , "गुप्ता" §1977§ , "प्रतिभा" §1983§ तथा "झा" §1990§ , आदि विद्वानों ने अपने अध्ययन निष्कर्षों से किया है ।

सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का विवेचन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी छात्र/छात्रा-अध्यापक शिक्षक के आदर्शों को अपनाने में एकमत हैं । वर्तमान समय की माँग के आधार पर मनोविज्ञान का प्रयोग न केवल शिक्षा प्रक्रिया को सुलभ बनाने के लिये किया जाता है बल्कि शिक्षार्थी को सामान्य बनाने तथा समझने के लिये भी किया जाता है । प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री , "एम0एल0 विगी"का मत है कि "जो अध्यापक छात्र को समझकर, उचित प्रेरकों का प्रयोग करके शिक्षा देता है , वह शिक्षा सम्बन्धी युद्ध को आधा पहले ही जीत लेता है ।" अतः शोधकर्ता ने सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव के आधार पर निम्नाँकित निष्कर्ष ज्ञात किये हैं :-

1- छात्र-छात्रा वर्ग अध्यापकों में व्यक्तित्व विशेषतायें समानता लिये हुये पाये गये ।

2- कुछ व्यक्तित्व तत्वों में पुरूष अध्यापक वर्ग प्रमुख रहे और कुछ में स्त्री अध्यापिका वर्ग ।

3- व्यक्तित्व तत्वों में प्रमुखतत्व "बी" ऋणात्मक स्तर पर रहा और धनात्मक स्तर पर तत्व "क्यू3 तथा क्यू4" , आदि रहे ।

4- यह निश्चित है कि "व्यक्तित्व" का अध्ययन जितने व्यवहारों तथा आयामों में किया जायेगा , निष्कर्षों में उतनी ही भिन्नता आयेगी । अतः शोधकर्ता की प्रस्तुत परिकल्पना , "जो सामाजिक-आर्थिक स्तर की बी0एड0 प्रशिक्षणरत अध्यापक/अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है" स्वीकृत एवं सिद्ध होती है ।

शोध के विस्तृत निष्कर्ष :-

शोध कार्य की परिकल्पना की स्वीकृति और अस्वीकृति की सिद्धि का वर्णन करने के पश्चात् अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षों को प्रस्तुत करना शोधकर्ता का प्रमुख कर्त्तव्य हो जाता है । शोध कार्य के कुछ तथ्यात्मक निष्कर्ष निम्नांकित हैं :-

1- प्रस्तुत अध्ययन में बुन्देलखण्ड प्रखण्ड के झाँसी , उरई , बाँदा , तथा अतर्रा क्षेत्रों में प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा-अध्यापकों पर किया गया है । इन महाविद्यालयों में बी0एड0 प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का अध्ययन यौन , आयु , अनुभव , तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर

आधार पर किया गया है । इन परिवर्तियों में पूर्ण सार्थक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है । इसका कारण शिक्षा मानव विकास की प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है तथा इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान और प्रशिक्षण से व्यक्ति का सर्वांगींण विकास होता है ॥महात्मा गाँधी , 1937॥ । यह बात इस अध्ययन से स्पष्ट हो चुकी है कि प्रशिक्षण के द्वारा अध्यापकों को निश्चित राष्ट्रीय उद्देश्यों एवं लक्ष्णों के लिये तैयार करना चाहिये ताकि नागरिक गुणों का विकास आसानी से हो सके । अतः अध्यापक प्रशिक्षण को सकारात्मक बनाने के लिये प्रशासन को निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिये :-

॥अ॥- बी0एड0 प्रशिक्षण को व्यवसायिक शिक्षा घोषित करनी चाहिये तथा प्रशासन सरकार को अपने हाथ में लेना चाहिये ।

॥ब॥- अध्यापक प्रशिक्षण में अधिक महत्त्व कक्षा-शिक्षण प्रक्रिया पर देना चाहिये , ताकि कक्षा के साथ अच्छे सम्बन्ध अध्यापक कैसे बना सकता है [सीख सकें ।

॥स॥- बी0एड0 प्रशिक्षण दो वर्ष का हो तथा इसको पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स घोषित किया जाये , क्योंकि यह ग्रेजुऐशन के बाद प्रारम्भ होता है ।

॥द॥- प्रस्तुत अध्ययन में तत्व "बी" की स्थिति बहुत ही दयनीय रही है । इसका तात्पर्य है कि प्रशिक्षणार्थी अपनी मानसिक योग्यता का पूरा प्रयोग प्रशिक्षण प्राप्त करने में नहीं लगा पाते हैं । अतः

चयन पद्धति में ऐसा परिवर्तन किया जाये कि जो अध्यापन के लिये समर्पित हों उन्हीं का चुनाव प्रशिक्षण के लिये हो सके ।

§य§- बी०एड० प्रशिक्षण में नैतिक शिक्षा को भी स्थान दिया जाये ; ताकि हमारे अध्यापक/अध्यापिकाओं में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के द्वारा प्रदत्त संस्कारों का भी विकास हो सके ।

§र§- एक अध्यापक के लिये व्यक्तित्व तत्व "सी" की मानसिक रूप से अधिक आवश्यकता होती है । शोधकर्ता ने इस तत्व में प्रशिक्षणार्थियों को कम प्रभावशाली पाया है । इससे स्पष्ट होता है कि वे अपने भावों तथा संवेगों के प्रगटीकरण में सामान्य स्तर स्थापित करने में स्वयं को असफल पाते हैं । इसका कारण उनमें विकसित "हीन भावना" हो सकती है । आज के भौतिकवाद तथा ऊपर की आमदनी के कारण एक लिपिक का व्यवसाय अच्छा माना जाता है अपेक्षाकृत एक अध्यापक व्यवसाय के । अतः इस मूल्यात्मक परिवर्तन के कारण प्रशिक्षणार्थी स्वयं को व्यवसायिक तौर पर "हीन" समझते हैं और संवेगात्मक अस्थिरता के शिकार होते रहते हैं । अतः सरकार अध्यापक व्यवसाय को उचित सम्मान प्रदान करे तथा करवाये ।

2- शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य "बालक का सर्वांगीण विकास" माना गया है । हमारा अध्यापक प्रशिक्षण भी इसी लक्ष्य को केन्द्रित मान कर दिया जा रहा है । इसके लिये आवश्यक है कि प्रशिक्षण के दौरान "बाल मनोविज्ञान

तथा शिक्षा मनोविज्ञान" दोनों विषयों का सैद्धांतिक रूप में तथा व्यवहारिक रूप में अध्ययन करवाया जाये । इससे शिक्षक बालक का विकास राष्ट्रीय हितों के अनुरूप कर सकेगा । अतः शोधकर्ता शोध के आधार पर व्यक्तित्व विकास के लिये निम्न बातें आवश्यक मानता है :-

§अ§- छात्र/छात्रा-अध्यापकों को बच्चों में नागरिक गुणों के विकास के लिये तैयार किया जाये, ताकि वे नागरिक चेतना के भाव को विकसित कर सकें ।

§ब§- शैक्षिक वातावरण कैसे तैयार करना चाहिये [ताकि बच्चों का शारीरिक तथा मानसिक विकास आसानी से हो सके ।

§स§- नैतिक शिक्षा के द्वारा चारित्रिक गुणों का, मानवीय संवेदनाओं का तथा भारतीय संस्कृति के विकास आदि का विकास बच्चों में किया जाये ।

§द§- शिक्षा के क्षेत्र में यौन भिन्नता को आधार न मानकर योग्यता तथा क्षमता को आधार माना जाये और शिक्षा दी जाये ।

§य§- प्रशिक्षण के द्वारा ऐसा ज्ञान शिक्षकों को दिया जाये कि वे अपने अन्दर और बाहर एक ही प्रकार के व्यवहार को लागू कर सकें ।

3- बी0एड0 के प्रशिक्षणार्थियों ने समान रूप से सामान्य लोगों के स्तर की व्यक्तित्व विशेषताओं का प्रदर्शन किया है । इनमें तत्व "बी" , "सी" , तथा "क्यू3" , "क्यू4" , आदि में ही भिन्नता पाई गई है । इसका कारण प्रशिक्षणार्थी अमूर्त चिन्तन को ग्रहण करने में सफल नहीं हुये हैं , तथा उनमें निराशा की भावना भरी हुई है जिससे वे संवेगात्मक नियन्त्रण स्थापित करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं । फिर भी वे लोग अनुशासनबद्ध तथा शान्तपूर्वक कार्य करना चाहते हैं । अतः बेरोजगारी की समस्या का समाधान करते ही यह प्रभाव भी सामान्य हो जायेगा ।

4- प्रशिक्षणार्थी , छात्र/छात्रा में 16 तत्वों में एक रूपता तथा सजातीयता देखने को मिलती है । इनमें स्वतन्त्र भाव , प्रभुत्व , सामाजिकता , लचीलापन , चतुरता , अनुशासन , तनाव , आदि विशेषताओं की प्रमुखता है । सामान्यरूप से देखा जाये तो ये विशेषतायें दैनिक जीवन में भी महत्व रखती हैं । अध्यापक का क्षेत्र सामाजिक होता है , अतः वह सामाजिक स्वीकृति , अस्वीकृति पर निर्भर होकर क्रियाशील रहता है । इस प्रकार से उसे अच्छा नेतृत्व वाला भी माना जाता है । अतः भविष्य का नेतृत्व इन्हीं के हाथों में पल्लवित है ।

5- बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी अपने व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य में सामाजिक-आर्थिक स्तर पर भी समानता लिये हुये हैं , अन्तर सिर्फ तत्वों के व्यवहारात परिणाम में आया है । जैसे तत्व "सी , एच , एल , एम , एन , ओ और क्यू2", आदि में चारों स्तरों में से तीन स्तर सामान्य रहे और एक स्तर

विचलन लिये हुये रहा है । इससे उनकी "मानसिकता , सोच" प्रशिक्षण के प्रति स्पष्ट होता है । अतः निष्कर्ष निकलता है कि प्रथम वर्ग तथा द्वितीय वर्ग में काफी समरूपता है और तृतीय तथा चतुर्थ वर्ग में समरूपता है । अन्तर सिर्फ सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के सोच का तथा मानसिक ग्रन्थियों का है । आज का व्यक्ति समय-समय पर निराशाओं का शिकार होता है , जो उनमें तनाव पैदा करती हैं । यही तनाव उनमें मानसिक ग्रन्थियाँ बना देता है जो अचेतन के द्वारा उद्दीपित होकर व्यक्तित्व व्यवहार को प्रभावित करती रहती हैं ।

6- प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण अनुभव का प्रभाव सकारात्मक रूप से स्पष्ट हुआ है । शिक्षण अनुभव के प्रथम समूह तथा द्वितीय समूह में अधिकतर समानता स्पष्ट है । लेकिन सामान्य से भिन्नता स्थापित हुई है । इनमें व्यक्तित्व तत्व "बी", "क्यू2" तथा "क्यू3" का उच्च प्रभाव स्थापित हुआ है । यानी इन लोगों में अमुर्त चिन्तन , सीखने की तत्परता , आत्म-निर्भरता , साधन सम्पन्नता , अनुशासन , समाजप्रियता तथा स्वाभिमान, आदि विशेषतायें प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं । इसी के साथ-साथ तत्व "एफ , तथा क्यू4" आदि में ऋणात्मक विचलन आया है जो सिद्ध करता है कि प्रशिक्षणार्थी "शालीन तथा शान्त" प्रिय व्यक्तित्व के धनी होते हैं , यानी विश्वास करते हैं । उनका विश्वास है कि "शिक्षक व्यक्तित्व" सम्मानीय आदर्शमय और उच्च स्तरीय व्यक्तित्व होता है । इसके विकास की पूर्ण कौशिश अध्ययन में की गई है ।

7- प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों को दोहरी

भूमिका का निर्वाह करना होता है - एक तो वह भविष्य के नागरिकों को तैयार करता है और दूसरी ओर वह शिक्षा तथा समाज के बीच अच्छे सम्बन्ध भी स्थापित करता है ताकि राष्ट्र निर्माण हो सके । इस हेतु निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिये :-

(अ)- सरकार को "प्रतिभा पलायन" को रोकना चाहिये । प्रतिभा सम्पन्न शिक्षकों को प्रचुर सुविधायें प्रदान की जायें ताकि वे अन्य व्यवसायों में न जायें तथा विदेशों की ओर उन्मुख न हों।

(ब)- अध्यापक प्रशिक्षण आवासीय होना चाहिये , ताकि सभी प्रकार का सैद्धांतिक , व्यवहारिक , नैतिक , शारीरिक , पाठ्योत्तर, आदि का प्रशिक्षण सही रूप से दिया जा सके । इस पर किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप निषिद्ध होना चाहिये ।

(स)- बी0एड0 प्रशिक्षण में बाल अपराध , पलायन , निर्देशन एवं परामर्श तथा मनोवैज्ञानिक अवरोधों आदि से निपटने के लिये भी प्रशिक्षण होना चाहिये ताकि शिक्षक अपनी कक्षा की समस्याओं को समय पर स्वयं ही दूर कर सकें । इनका दूरगामी प्रभाव अपव्यय तथा अवरोधन के रूप में शिक्षा में देखने को मिलता है ।

(द)- अध्यापक प्रशिक्षण में आर्थिक निर्भरता को स्थापित करने के लिये कुटीर धंधों का भी प्रशिक्षण शामिल करना चाहिये ताकि मंद

बुद्धि बच्चों को स्वनिर्भरता प्रदान की जा सके और वे अन्य लोगों पर भविष्य में निर्भर न रहें ।

शिक्षारत व्यक्तियों के लिये सुझाव :-

प्रस्तुत अध्ययन नीति निर्धारकों , प्रशासन करने वालों तथा शिक्षकों, आदि के लिये भी उपयोगी हो सकता है । यह अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलिजों के बी0एड0 विभागाध्यक्षों के लिये भी उपयोगिता रखता है क्योंकि ये लोग शिक्षक-प्रशिक्षण योजना को क्रियान्वित करते हैं । अतः शोधकर्ता अपने निष्कर्षों के आधार पर कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है :-

1- शिक्षा का प्रारूप पूर्ण भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर निर्भर होना चाहिये जिससे बालक को केन्द्रित मानकर शिक्षा देने की व्यवस्था की जा सके । अतः अध्यापक प्रशिक्षण में "बालक को समझना , प्रेरित करना , विषयों का ज्ञान देना , वर्तमान भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों को समझना , शास्वत मूल्यों का समावेश करना , पाठ्यचर्या को तैयार करना , छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझना " , आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षण-कर्ताओं को निष्णात होना चाहिये । इस प्रकार से वे अपनी-अपनी कक्षाओं का विकास उचित् रूप से करके उनकी क्षमताओं का प्रगटीकरण करने में समर्थ होंगे ।

2- यदि हम मनोविज्ञान का उपयोग शिक्षा में माने तो प्रतीत होता है कि "सफलता का नियम" मनोविज्ञान के द्वारा ही प्रदान किया गया है । बच्चों की सफलता "सहयोग और प्रतियोगिता" दो बातों पर निर्भर करती है । अध्यापक को प्रशिक्षण में इन दोनों परिवर्तियों के प्रयोग के बारे में सही शिक्षण दिया जाये , ताकि वे छात्रों के मन से "जलन" के भाव का निराकरण करके सकारात्मक सहयोग तथा प्रतियोगिता के भाव का विकास कर सकें ।

3- वर्तमान के राजनैतिक प्रभाव ने छात्रों में उदण्डता तथा उच्छृंखलता पैदा कर दी है । शिक्षक-प्रशिक्षण में अनुशासन स्थापना के सुधारात्मक आयामों की शिक्षा दी जाये । इससे छात्रों की पाशविक मूल प्रवृत्तियों का शोधन , स्व-विकास , समाजीय विकास तथा राष्ट्रीय विकास के क्षेत्रों में निर्वद्धरूप से होगा । प्राचीन कहावत "डण्डा छोड़ा और बालक बिगड़ा" वाली कहावत समाप्त हो चुकी है । आज छात्र को शिक्षक शारीरिक , मानसिक तथा आर्थिक रूप से दण्ड नहीं दे सकता है । अतः सामयिक अनुशासन कैसे स्थापित किया जाये ? आदि का पूर्ण प्रशिक्षण बी0एड0 छात्र/छात्राओं को दिया जाना चाहिये ।

4- शिक्षा सम्बन्धी नीति निर्धारकों को शिक्षा क्षेत्र की आवश्यकताओं तथा समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में

रखकर शिक्षा सम्बन्धी नियम बनाने चाहिये । इनको "जाब ओरियन्टड" तथा सिद्धान्त और व्यवहार में समायोजन स्थापित करने वाले कार्यक्रम प्रारम्भ करने चाहिये ताकि शिक्षक-प्रशिक्षण का परिमार्जित तथा परिवर्तित स्वरूप समाज की वर्तमान आवश्यकता को पूरा करता रहे ।

5- बी0एड0 के चयन में प्रशासन कर्ताओं को शैक्षिक-मनोवृत्ति को जानने के लिये मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग करना चाहिये । इससे अध्यापकों में शिक्षा के व्यवसाय के प्रति समर्पण का भाव कितना है ॄ जाना जा सकता है । इसके साथ ही परीक्षण पास होने वाले छात्र/छात्राओं का साक्षात्कार भी होना चाहिये ताकि उनकी विश्लेषण तथा तर्क करने की क्षमता का पता लग सके । उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रशिक्षण महाविधालयों के लिये "प्रवेश परीक्षा" की व्यवस्था की है; लेकिन साक्षात्कार के अभाव के कारण सही प्रवेश नहीं हो पाता है । अतः शैक्षिक मनोवृत्ति पर बल देना तथा साक्षात्कार का प्रयोग करना बी0एड0 छात्र/छात्रा प्रवेशार्थियों के लिये अति आवश्यक एवं सामयिक जान पड़ता है ।

6- शिक्षक व्यवसाय में एक बार जो शिक्षक बन जाता है उसकी कार्यकुशलता का पुनर्मूल्यांकन समय-समय पर होना चाहिये । इनके पुनर्मूल्यांकन हेतु समय-समय पर आयोजित सेमीनार, वर्कशाप आदि में विद्वानों द्वारा दिये गये सुझावों का प्रयोग

किया जाना चाहिये ताकि ये लोग शिक्षा के लक्ष्यों को पूरा करने में तत्पर बने रहे ।

7- बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय में बी0एड0 प्रवेशार्थियों के चयन के लिये एक कमेटी होती है जिसमें पाँचों प्रशिक्षण §महाविद्यालयों§ विभागों के अध्यक्ष , उप शिक्षा निदेशक का नामाँकित व्यक्ति तथा विश्वविद्यालय का नामाँकित व्यक्ति सदस्य के रुप में होते हैं । ये लोग परीक्षण के द्वारा परीक्षा करवाते हैं तथा परीक्षाफल भी घोषित करवाते हैं । इसमें चयनित अभ्यर्थियों के व्यक्तित्व विकास , अनुशासन स्थापना , शिक्षण तकनीक , तथा पाठ्योत्तर क्रियाओं , आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिये ।

8- प्रशिक्षण महाविद्यालय में समानता और स्वतन्त्रता का वातावरण होना चाहिये । किसी भी प्रकार के सामाजिक-आर्थिक स्तर के , अपंग स्तर , आदि पर छात्र/छात्रों में तनाव उत्पन्न न होने दिया जाये । छात्र वर्ग को वाह्य क्षेत्र की क्रियायें दी जायें तथा छात्रा वर्ग को आँतरिक क्षेत्र की क्रियायें करने को दी जायें ताकि विभाग में सामंजस्य बना रहे । प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया है कि व्यक्तित्व पाश्र्वदृश्य के आधार पर स्त्री , पुरूष अध्यापकों में अधिक भिन्नता नहीं है , अतः दोनों ही वर्गों को विकास के समान अवसर दिये जायें ।

9- विभागाध्यक्षों को अनुशासन स्थापना में सतर्क रहना चाहिये ; क्योंकि जो छात्र इस व्यवसाय को खेल या मजाक समझते हैं , उनको सही प्रशिक्षण मिल सके या वे इस व्यवसाय को त्याग दें । इसके लिये हास्टिल व्यवस्था और हाजिरी आवश्यक होनी चाहिये । आज कुछ छात्र सिर्फ पाठ्योजनाओं को पढ़ा लेते हैं और फिर वार्षिक परीक्षा देने ही आते हैं । ऐसे छात्र बाद में आदर्श अध्यापक नहीं बन सकते हैं । अतः बी०एड० प्रशिक्षण को कक्षा-शिक्षण तक ही सीमित न बनाया जाये ।

10- विभागाध्यक्षों को आदर्श , प्रतिभाशाली छात्र/छात्रा-अध्यापकों को तैयार करने के लिये अच्छा पुस्तकालय , वाचनालय , विज्ञान प्रयोगशाला , मनोविज्ञान कक्ष , भूगोल कक्ष , इतिहास कक्ष , गृह विज्ञान कक्ष और डार्क रूम , आदि की व्यवस्था करनी चाहिये । इस प्रकार से वे लोग "नई तकनीक" और उसका विभिन्न आयामों तथा स्तरों पर प्रयोग करना आसानी से सीख सकेंगे ।

11- बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षा क्षेत्र तथा कक्षा से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर प्रयोग तथा सर्वेक्षण करते रहना चाहिये; ताकि निष्कर्षों का प्रयोग भविष्य में किया जाये । इसमें बी० एड० प्रवक्ताओं तथा विभागाध्यक्षों का सीधा सम्बन्ध छात्र/छात्राओं से होना चाहिये ।

12- प्रशिक्षण में प्रयुक्त पाठ्योत्तर क्रियायें तथा सामाजिक कार्य को महत्त्व स्पष्ट होना चाहिये । इसकी क्रिया विधि प्रवक्ताओं की देखरेख में समूह वितरण के आधार पर होनी चाहिये । इन कार्यों का प्रशिक्षण अध्यापक में दोहरी भूमिका के वहन करने को सकारात्मकता प्रदान करता है । इस प्रकार से प्रशिक्षणार्थियों का , एक अध्यापक के रूप में सर्वांगींण विकास करना ही प्रशिक्षण विभागों की सफलता मानी जाती है ।

शोधार्थियों हेतु सुझाव :-

शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन के द्वारा अध्यापक व्यवसाय हेतु प्रशिक्षणरत छात्र/छात्रा-अध्यापकों में पाये जाने वाले व्यक्तित्व लक्षणों का सही पार्श्वदृश्य (पर्सनेलिटी - प्रोफाइल्स) प्रस्तुत करने की कोशिश की है । किसी भी प्रशिक्षणरत अध्यापक/अध्यापिका का व्यक्तित्त्व पार्श्वदृश्य की संरचना वैयक्तिकता के ऊपर निर्भर करती है । फिर भी उस पर यौन भिन्नता , आयु भिन्नता , अनुभव भिन्नता , तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर भिन्नता , आदि का प्रभाव परिलक्षित होता है । अतः शोधार्थी ने इन्हीं परिवर्तियों के सन्दर्भ में व्यक्तित्त्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्नों को जन्म दिया है , जिनके लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है । इससे अध्ययन क्षेत्र की पूर्णता का भी विकास होगा और नये आयामों पर अध्ययन से भविष्य के शिक्षण-प्रशिक्षण को लाभ भी मिलेगा । अतः भविष्य के शोधार्थियों के लिये शोधकर्ता निम्न तथ्यों की ओर ध्यान आकर्षित करता है :-

1- अध्ययन न्यादर्श सिर्फ 500 छात्र/छात्रा-अध्यापक का है । इसमें अधिक उपयुक्तता और वैधता लाने के लिये बड़े न्यादर्श पर अध्ययन किया जा सकता है ।

2- सामाजिक-आर्थिक स्तर को एक मुख्य परिवर्ती के रूप में मानकर स्वतन्त्र रूप से व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है ।

3- वर्तमान में माध्यमिक स्तर पर गुणात्मक शिक्षा का प्रसार करने वाले "केन्द्रीय विद्यालय , नवोदय विद्यालय तथा विद्या भारती", आदि शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है ।

4- सवर्ण प्रशिक्षणार्थी तथा हरिजन जाति के प्रशिक्षणार्थी छात्र/छात्रा-अध्यापकों के व्यक्तित्व पार्श्वदृश्यों का अध्ययन किया जा सकता है ताकि सामाजिक समानता तथा व्यवसायिक समानता स्थापित की जा सके ।

5- शिक्षण व्यवसाय में समायोजन स्थापना की एक समस्या है । विषय अध्यापकों के अपने विषयों के साथ-साथ कक्षा के साथ समायोजन तथा अनुकूलन का भी अध्ययन किया जा सकता है ।

6- व्यक्तित्व तत्व "बी , सी , एफ" का ऋणात्मक विचलन रहा है । इसके कारण सामयिक या वंशानुक्रमीय क्या हो सकते हैं ।

का अध्ययन किया जा सकता है ।

7- व्यक्तित्व तत्व "क्यू1 तथा क्यू4" में धनात्मक विचलन रहा है । इसके सामयिक तथा तथ्यात्मक कारण क्या हो सकते हैं {, का अध्ययन भी किया जा सकता है ।

8- प्रस्तुत अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के अध्यापक शिक्षण-प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया है । इस अध्ययन को अन्तर विश्वविद्यालयों तथा अन्तर-प्रदेशों में दी जा रही अध्यापक-प्रशिक्षण शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है ।

9- शोधकर्ता ने इस अध्ययन को डॉ0 कपूर द्वारा प्रतिपादित 16 पी0एफ0 प्रयोग के द्वारा व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य का अध्ययन किया है । इसी अध्ययन को व्यक्तित्व निरीक्षण अनुसूची के द्वारा भी किया जा सकता है । इसके द्वारा छात्र/छात्रा-अध्यापकों के द्वारा दिये गये प्रदत्तों, शोधकर्ता द्वारा निरीक्षण प्राप्त प्रदत्तों तथा उनको पढ़ाने वाले प्राध्यापकों द्वारा दिये गये प्रदत्तों के आधार पर भी तुलनात्मक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं ।

10- देहाती क्षेत्रों से आये प्रशिक्षणार्थी, शहरी क्षेत्रों से आये प्रशिक्षणार्थी तथा कस्बों से आये प्रशिक्षणार्थी, आदि की व्यक्तित्व विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिये ताकि सही प्रशिक्षण के प्रभाव का व्यक्तित्व पार्श्वदृश्य पर अध्ययन हो सके ।

11- अध्यापक प्रशिक्षण पर प्राचीन तकनीक और वर्तमान तकनीक के प्रभाव का अध्ययन विभिन्न परिवर्तियों पर किया जा सकता है ।

12- तत्व "एल , ओ , क्यू।", आदि में महिला प्रशिक्षणार्थियों का ऋणात्मक विचलन रहा है । इनके पीछे छिपे कारणों एवं तथ्यों का अलग से अध्ययन किया जा सकता है । जिससे पुरुष या महिला , अध्यापन क्षेत्र में कौन श्रेष्ठ हो सकता है । स्पष्ट हो सके ।

13- वर्तमान समय में आरक्षण नीति का सदुपयोग करने के लिये सामाजिक-आर्थिक स्तर पर एक वृहद अध्ययन किया जाये , जिससे उन व्यक्तित्व विशेषता तत्वों का पता लग सके जो आदर्श अध्यापक के लिये आवश्यक होते हैं और जिनका अभाव आरक्षण के अन्तर्गत आने वाले प्रतिस्पर्धियों में है । इससे आरक्षित जाति के अभ्यर्थियों के सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी और शिक्षा में सही तकनीक का भी प्रयोग शिक्षा जगत में होगा ।

xXXXx

BIBLIOGRAPHY

Anderson, A.W. 'Personality Traits in Reading Ability of Western Australian University Freshmen'. Jour. of Educational Research, Vol. 54(6), 1961, pp. 234-237.

Anderson, D.D. 'Personality Attributes of Teachers in Organizational Clinate'. Journal of Teacher Education, Vol. 62, 1969, pp. 441-443.

Arnold, H. 'A Study of Significance of Student Teachers Personality Characteristics'. Journal of Teacher Education, Vol. 20(2), 1969, pp. 143-147.

Allport, Gordon W. 'Pattern and Growth in Personality' Harvard University, Holti, Rinehart and Winston, New York, Chicago, San Francisco, Toronto, London.

Allport, Personality : A Psychological Interpretation; New York, Holt , 1937.

Barbara, J. Shade. 'Regional Differences in Personality of Afro-American Children'. The Journal of Social Psychology, Vol. 107(1-2), 1979, pp. 71-76.

Beilin, H. 'Factors Affecting Occupational Choice in a Lower Socio-Economic Group'. Unpublished Ph.D. Dissertation, Teachers College, Columbia University, 1952.

Best, J.W.: Research in Education, New Delhi, Printice Hall, 1963.

Bending, A.W. 'Extraversion, Nouroticism and Student Achievement in Introductory Psychology'. Journal of Educational Research, Vol. 5[illegible] 1960, pp. 263-267.

Brickner, 'Observed Classroom Behaviour and Personal[illegible] Types of 178 Beginning Teachers (Edu. T[illegible] Training). Dissertation Abstracts International, Vol. 31(11), 1970, p. 5898-A.

Burk, D.D. 'Personality Characteristics of Student-Teachers and Their Supervisors'. Doctoral Dissertation, University of Minnesota, August 1969.

Burk, D.D. 'Personality Characteristics of Student-Teachers and Their Supervisors'. Doctoral Dissertation, University of Minnesota, 1970.

Cattell, R.B. 'Personality: A Systematic Theoretical and Factorial Study.' New York: McGraw Hill Book Company, 1950.

Cattell, R.B. An Introduction to Personality Study. London: Hutchison, 1950a.

Cattell, R.B. 'Personality: A Systematic, Theoretica and Factual Study. New York: McGraw Hill Co., Inc., 1950b.

Cattell, R.B. and Drevdahl, J.E. 'A Comparison of the Personality Profile (16 P.F.) of Eminent Researchers with that of Eminent Teachers and Administrators and of the

General Population'. Brit. Jour. of Psychology, Vol. V6, 1955, pp. 248-261.

Cattell, R.B. 'The Conceptional and Test Distinction of Nouroticism and Anxiety'. Journal of Clinical Psychology, Vol. 13, 1957 A, pp. 221-233.

Cattell, R.B. Personality and Motivation: Structure and Measurement. New York: World Book House, 1957b.

Cattell, R.B. and Eber, H.W. 'Manual for Forms A and B-Sixteen Personality Factor Questionnaire, "The 16 P F" Young adults and adults (IPAT, Illinois, U.S.A.). Printed in India and Published by The Psychol Centre T 22, Green Park, New Delhi under special arrangement with IPAT, 1962.

Cattell, R.B., Eber, Herbert W. and Tatsuoka, Maurice M. Handbook for the Sixteen Personality Factor Questionnaire (16 P.F.), 1970, Institute for Personality and Ability Testing, Champaign, Illinois.

Chaturvedi, N. 'Personality as a Factor in Teacher Student Deviation', Unpublished Ph.D. Psychology, Agra University, 1970.

Davis, T.N. and Satterly, D.J. 'Personality Profiles of Student-Teachers'. British Journal of Educational Psychology, Vol. 39, 1969, pp. 183-187.

Dwivedi, M.P. 'A Study of Personality Structure of Teachers and Students and Their Relationship'. Unpublished Ph.D. Education, Gorakhpur University, 1970.

Eysenck, H.J. Dimensions of Personality, 1947, 1969. London: Rotledge & Kegan Paul.

Eysenck, H.J. 'Eysenck Body Built Index and Sheldon's Somatotype System'. Jour. of Ment. Science. Vol. 105, 1959a. pp. 1053-1058.

Eysenck, H.J. Manual of the Mandsley Personality Inventory. University of London Press, 1959b.

Engler, Barbara. Personality Theories: An Introduction. Union College Cranford, New Jersey, Houghton Mifflin Co., Boston, Dollas, Geneva, Illinois, Hopewell, New Jersey, Palo, Alto, London.

Febinger, G.N. 'A Study of the Personality Correlates and other Variables Associated with the Openness and Closedness of the Belief Systems of Prospective Teachers at the University of Colorado', Dissertation Abstract, Vol. 26(ii), 1966, p. 6571.

Frend, S: The Basic Writings of Sigmund Frend. New York, 1938.

Gallop, R. 'A Study of the B.Ed. Students'. British Journal of Educational Psychology, Vol. 40, 1970, p. 220.

Gaur, R.S. 'Personality Characteristics of Urban and Rural Adolescent Students'. Indian Educational Review. Jan. 1980, pp. 119-122.

Gopal, A.K. 'Certain Differentiating Personality Variables of Creative and Non-Creative Science and Engineering Students'. Unpublished Ph.D. Edn. Kur. University, 1975.

Gupta, R.N. 'Personality Pattern of Science and Non-Science student Teachers: A Comparative Study'. Teacher Education, Vol. XI(1), Oct. 1976, pp. 11-14.

Gupta, R.C. 'Prediction of Teacher Effectiveness Through Personality Test'. Unpublished Ph.D. Edn., B.H.U., 1976.

Gupta, V.P. 'Personality Characteristics, Adjustment Level, Academic Achievement and Professional Attitude of Successful Teacher'. Unpublished Ph.D. Edn., Punjabi University, 1977.

Gupta, R.N. 'A Study of the Personality Traits of Primary School Teacher'. Journal of Educational Research and Extension, Vol. 14(1), July, 1977.

Gupta, B.S. and Podder, Manju. 'Personality Traits Among Hindi-knowing Indian Students'. The Journal of Social Psychology, Vol. 107, 1979, pp. 279-280.

Haller, A.O. and Thomas, S. 'Personality Correlates of Socio-economic Status of Adolescent Males'. Sociometry, Vol. 25(4), 1962, pp. 398-404.

Hilgard, E.R.; Introduction to Psychology. London, Hart-Davis, 1962.

Jain, K. 'Personality Studies of Adolescent Girls with Specific Reference to the Students in the Girls Colleges of Allahabad'. Ph.D. Edn., Allahabad Univ. 1954 (unpublished).

Jaygopal, R. Personality Profiles of the Under and High Achievers of Some of the Schools in the City of Madras, Dept. of Psy., Madras Univ., 1974 (U.G.C. financed).

Jung, C.G.: Psychological Types. London, R. and Paul, 1923.

Kaul, L. 'Factorial Study of Certain Personality Variables of Popular Teachers in Secondary Schools'. Unpublished Ph.D. Education, Kur. Univ., 1972.

Kaul, Lokesh. 'Personality Differentia of Popular Teachers'. Journal of Education and Psychology, Vol. XXXI(2), July 1973.

Knapp, W.M. 'A Study of Teacher Personality Characteristics and Rated Effectiveness'. Dissertation Abstracts International, Vol. 31(11), 1971, p. 5712-A.

Kuppuswamy, B. Advanced Educational Psychology. University Publishers, Delhi, Jullundur, Ambala Cantt., 1964.

Krishnan, B. 'Personality: Organisation and Development'. Psychological Studies (Half Yearly) Vol. 18(1), Jan. 1973.

Lynn, R. 'Two Personality Characteristics Related to Academic Achievement'. Brit. Journal of Educational Psychology, Vol. 29(ii), 1959, pp. 213-216.

Menon, S.K. 'A Comparative Study of Personality Characteristics of Over Achievers and Underachievers of High Ability'. Unpublished Ph.D. Psy., Kerala Univ., 1973.

Mishra, K.S. 'Personality Traits of Fluent Teachers'. The Indian Teacher, Vol. 1(6), Sept.-Oct. 1979.

Orpen, C. 'Personality and Academic Attainment- A Cross Cultural Study'. The British Journ. of Educational Psychology, Vol. 46(II), June 1976.

Patil, V.D. 'Relationship Between Socio-Economic Status and Academic Achievement of the B.Ed. Students'. Journal of the College of Education, Karnataka University, Vol. IV(1), March 1966, pp. 40-42.

Patil, V.D. 'Socio-Economic Status and Academic Achievement of Students in High School'. Journal of College of Education, Karnataka Univ., Jan. 1967, p. 25.

Pal, J. 'Personality Study of the Student Leaders'. Unpublished Ph.D. Thesis, Sam. Univ., 1976.

Paul, M. Smith. 'Personality Ratings of Students Whose Fathers are Professional or Non-Professional Workers, California'. Journal of Educational Research, Vol. XVIII(1), Jan. 1966.

Prasad, S.N. 'A Study of Relationship Between Personality and Adjustment of Teacher Trainees'. Unpublished M.Ed. Dissertation, B.H.U., 1972.

Report of the University Commission, 1948-49, p. 68.

Report of Education Commission, 1964-68, p. 46.

Rogers, C.R. The Psychology of Adolescence. Meredith Publishing Company, 1962, Chap. 9.

Rushon, J.R. 'The Relationship Between Personality Characteristics and Scholastic Success in Eleven Year Old Children'. Brit. Jour. of Educational Psychology, Vol. 36, 1966, pp. 178-184.

Sharma, S. 'Some Personality Characteristics of Female College Students of Different Socio-Economic Background'. Unpublished Ph.D. Thesis, Pat.

Sharma, K.G. 'Personality Traits of Democratic and Laissez-Faire Type of Teachers'. Indian Educational Review, April 1980.

Singh, S.B. and Nigam Asha. 'A Comparative Study of the Personality Profile of the Male and Female Medical Students'. Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 4(1), 1973, pp. 30-33.

Singh, Om Prakash. Differential Personality Traits of Engineering and Medical Students (Research Monograph)- Studies in Personality of Students. Rupa Psychological Centre. Bhelupur, Varanasi, 1981.

Sheldon, W.H.: The Varieties of Human Physique. New York: Harper, 1940.

Singh, Om Prakash. A Comparative Study of Personality Patterns of Arts and Science Academic Groups (Research Monograph) - Studies in Personality of Students. Rupa Psychological Centre, Bhelupur, Varanasi, 1981.

Soloman, Edith. 'Personality Factors and Attitudes of Mature Training College Students'. Abstract of Thesis submitted for the Degree of M.Ed. in the University of Manchester, 1965.

Sriman, Narayan. Opening the Eleventh Conference of Indian Association of Teacher Education, TATE, 1968, p. 8.

Srivastava, S. 'Personality Patterns of Children of Criminal Tribes of U.P.'. Unpublished Ph.D. Thesis, B.H.U., 1974.

Srivastava, S.S. and Singh, D.R. 'Economic Status and Achievement Motivation among Teacher Trainees'. Jour. of Education and Psychology, Vol. XXXIII(3), Oct. 1975.

Stagner, R. Psychology of Personality. New York: Second Edn. McGraw-Hill Book Co., Inc., 1948.

Start, K.B. 'The Relation of Teaching Ability to Measures of Personality'. Brit. Jour. of Educational Psychology, Vol. 36, 1966, pp. 158-165.

Stephen, E. Cerebral Palsy and Mental Defect in Mental Deficiency, edited by A.M. Clarke and A.B.B. Clarke. London: Methuen, 1958.

Suri, S.P. 'A Study of Differential Personality Traits in Intellectually Superior Average and Below Average and Below Average Students'. Unpublished Ph.D. Thesis, Kurukshetra Univ., 1973.

Tarpey, M. Simeon. 'Personality Factors in Teacher Trainee Selection'. British Journal of Educational Psychology, Vol. 35, 1965, pp. 140-149.

Thangaraj, M.A. 'The Teacher and his Profession'. New Frontiers in Education, Vol. IX(1), Jan.-March.

Tiwari, S.N. 'A Comparative Study of Personality of High School Boys and Girls'. Unpublished Ph.D. Edu., Gorakhpur Univ., 1977.

Terman, L.M.: The gifted Child Grow up. Stanford Uni. Press, 1947.

Trowbridge, N. 'Self Concept and Socio-Economic Status in School Children'. Educational Research Journal Vol. 9(4), 1972, pp. 525-553.

Trevers, M.W.: An Introduction to Educational Research. New York, MacMillan, 1964.

Thorndike, E.L.: Educational Psychology Vol. I 'The Original Nature of Man. New York, Columbia Uni. Press, 1932.

Tripathi, V.K.D. 'A Study of the Personality Profiles of Teachers and Pupil Teachers'. Journal of Education and Psychology, Vol. XXXVI(1-2), April-July, 1978.

Vernon, P.E. The Psychological Traits of Teachers - Year Book of Education, 1953, pp. 51-75.

Venkataiah, N. and Naidu, Jayachandramma, K. 'Teachers Satisfaction with Environment'. EPA Bulletin. Vol. 5(3-4), Oct.-Jan. 1983.

Warburton, F.W., Butcher, H.J. and Forest, G.M. 'Predicting Student Performance in a University Dept. of Education'. Brit. Jour. of Educational Psychology, Vol. 33(8), 1963, pp. 68-79.

Watson, J.B., Psychology from the standpoint of a Behaviourists; Lippincot Company, 1924.

Whitney, F., The elements of Research; Bombay. Asia Pub. House, 1956.

Wordworth; Experimental Psychology. London, Methuen, 1952.

William, R.J.; Biochemical Individuality. New York, Wiley, 1956.

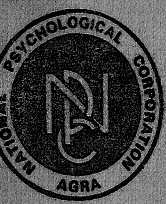
IMPORTANT REFERENCES

Buch, H.B. : "A Survey of Research in Education". I, II, III, IV Volume; Baroda University.

Kapoor, 16 P.F. Hindi Edition, Bhargawa Book House, Agra. 1970.

Srivastava, G.P.: Socio-Economic Status Scale. National Psy. Corporation, Agra. 1978.

W.C. Harris: "Encyclopedia of Educational Research", New York, 1960.



SESS (Urban)

[HINDI VERSION]

GYANENDRA P. SHRIVASTAVA

. M. No. 458715

ाम .... आयु .... यौन .... दिनांक ....

कूल/कॉलेज .... कक्षा .... सैक्शन ....

ल नं० .... घर का पता ....

र्देश—इस प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के कई सम्भावित उत्तर दिये हुये हैं जिनमें से केवल एक उत्तर को चुनकर आप उसके सामने वाले चौकोर घेरे (☐) में गुणा का चिन्ह (×) लगा दें। यदि पिता न हों तो अपने अभिभावक या संरक्षक (guardian) के सम्बन्ध में सूचना दें।

आपके पिता ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की है ? (उत्तीर्ण परीक्षा के आधार पर उत्तर दें)

[a] शोध (रिसर्च) डिग्री (Ph. D., D. Phil , D. Litt. आदि) ☐

[b] मैडीकल, इंजीनियरिंग आदि की टैक्नीकल डिग्री या स्नातकोत्तरीय डिग्री (M. A., M. Sc., M. Com. आदि) ☐

[c] स्नातकीय शिक्षा (B. A., B. Sc., B. Com. आदि) ☐

[d] इण्टरमीडिएट शिक्षा (I. A., I. Sc., I. Com. आदि) ☐

[e] हाई स्कूल (Metric, Higher Secondary, Pre-University आदि) ☐

[f] मिडिल स्कूल ☐

[g] प्राइमरी या अल्पशिक्षित ☐

[h] अशिक्षित या अनपढ़ ☐

आपके पिता का व्यवसाय या पेशा क्या है ?

[a] उच्च प्रशासनिक (गजेटेड) अधिकारी, लेक्चरर, रीडर, प्रोफेसर, प्रिंसीपल, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, समाचार-पत्र के सम्पादक, ऑडीटर, बैंक मैनेजर, विशिष्टता प्राप्त कलाकार, औद्योगिक या व्यवसायिक संस्था के मैनेजिंग डायरेक्टर, किसी फैक्टरी या फर्म के मालिक, अवैतनिक उच्च पदाधिकारी, वैतनिक राजनैतिक नेता (M. L. A., M. L. C., M. P. आदि) ☐

[b] मध्यवर्गीय प्रशासनिक (नौन-गजेटेड) अधिकारी, मध्य श्रेणी के वकील या डाक्टर, हाई स्कूल या इंटरमीडिएट कालेज के अध्यापक, रिसर्च असिस्टेण्ट, प्रयोगशाला प्रदर्शक, कैमिस्ट, जूनियर इंजीनियर, कमीशन एजेण्ट्स, कलाकार, थोक विक्रेता या बड़े दूकानदार। ☐

[c] क्लर्क, टाइपिस्ट, एकाउन्टेण्ट, लेबोरेटरी असिस्टेण्ट, लेबोरेटरी टेक्नीसियन, प्राइमरी या मिडिल स्कूल के शिक्षक, स्टेशन मास्टर, गार्ड, टिकट-कलेक्टर, टी० टी०, संवाददाता, दुकान-सहायक (सैल्स-मैन) या छोटे दूकानदार, टेलीफोन या टेलीग्राफ ऑपरेटर, प्रूफ-रीडर, किसी फैक्टरी या खान के सुपरवाइजर, ड्राफ्टमैन या अन्य सरकारी तृतीय श्रेणी की नौकरी ☐

[d] मोटर-ड्राइवर, इन्जन-ड्राइवर, पेण्टर, कम्पोजीटर, मैकेनिक, निपुण बढ़ई या राजमिस्त्री, तथा अन्य कौशल के कार्य ☐

[e] कार्यालय का सेवक (चपरासी) पिउन या अन्य चतुर्थ श्रेणी की नौकरी, फैक्टरी का मजदूर, खोमचा वाले या चलता-फिरता दूकानदार, खलासी, कृषि-कार्य या अन्य मामूली कौशल के कार्य ☐

[f] पहरेदार, दरवान, घरेलू-नौकर, कुली आदि ☐

[g] बेरोजगार—दूसरों पर आश्रित ☐

3. आपके पिता की आय (कुल आमदनी) प्रति माह कितनी है ? (अन्य स्रोतों से प्राप्त आय को भी सम्मिलित करें)
   [a] 1700 रु० से अधिक
   [b] 1000 रु० से 1700
   [c] 500 रु० से 999
   [d] 200 रु० से 499
   [e] 100 रु० से 199
   [f] 100 रु० से कम

4. क्या आपके घर में अखबार (समाचार-पत्र) लिया जाता है ?
   [a] प्रतिदिन
   [b] कभी-कभी
   [c] कभी नहीं

5. क्या आपके घर में पत्रिकायें (मैगजीन्स) ली जाती हैं ? यदि प्रति सप्ताह और प्रति माह दोनों लागू हों तो प्रति सप्ताह का ही उल्लेख करें।
   [a] प्रति सप्ताह
   [b] प्रति माह
   [c] कभी-कभी
   [d] कभी नहीं

6. क्या आपको भोजन, जलपान के अतिरिक्त प्रति माह कुछ जेब खर्च के लिये मिलते हैं ?
   [a] हाँ
   [b] नहीं

7. क्या आपके पिता किसी क्लब (जहाँ संध्या में मनोरंजन का आयोजन होता है) के सदस्य हैं ?
   [a] हाँ
   [b] नहीं

8. क्या आपके पिता किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक या धार्मिक संस्था के कार्य-क्रम में भाग लेते हैं ? यदि किसी संस्था के सदस्य हों और किसी संस्था के पदाधिकारी (प्रेसीडेण्ट, सेक्रेटरी आदि) हों तो पदाधिकारी का ही उल्लेख करें।
   [a] नहीं
   [b] किसी एक संस्था के सदस्य
   [c] एक से अधिक संस्था के सदस्य
   [d] किसी एक संस्था के पदाधिकारी
   [e] एक से अधिक संस्था के पदाधिकारी

Total Score [ ] **SESS Class** [ ]

Estd. : 1971 Phone : 63551

National

PSYCHOLOGICAL CORPORATION

6 PF

The PSYCHO CENTRE

FORM A

[IPAT's 1967-68 Edition
Revised 1978 Printing]

VSJ 1970 Hindi Edition

Prepared by ; **S. D. KAPOOR, Ph. D.**

आपको क्या करना है : इस पुस्तिका में कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनसे यह पता चलेगा कि आपका मनोभाव कैसा है और आपकी पसन्द किस तरह की है। इनके कोई 'सही' या 'गलत' उत्तर नहीं हैं, क्योंकि हर आदमी को अपना-अपना दृष्टिकोण रखने का अधिकार है। इस जांच के ज़रिये सबसे अच्छा सुझाव पाने के लिये आपको चाहिये कि सभी प्रश्नों का उत्तर ठीक-ठीक और सच्चाई के साथ दें। अगर आपको अलग से एक "उत्तर-पत्र" नहीं दिया गया हो तो इस पुस्तिका को उलटिये और आखिरी पन्ने पर दिये "उत्तर-पत्र" को फाड़कर अलग कर लीजिये।

अपना नाम और अन्य जानकारी की बातें "उत्तर-पत्र" पर दी हुई ऊपर की लाइनों पर लिख दीजिये।

सबसे पहले आपको नीचे लिखे नमूने के चार प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये जिससे आपको पता लग जाय कि जांच शुरू करने के पहले आपको कुछ पूछना तो नहीं है। वैसे आपको सभी प्रश्नों को तो इस पुस्तिका से पढ़ना है, पर उनके उत्तर केवल "उत्तर-पत्र" में ही देना है (जिस नम्बर का प्रश्न पुस्तिका में हो उसी नम्बर के खाने में "उत्तर-पत्र" पर निशान लगाना है)।

हर एक प्रश्न के तीन संभावित उत्तर दिये हुए हैं। नीचे लिखे उदाहरणों को पढ़िये और अपने उत्तरों को "उत्तर-पत्र" के ऊपरी भाग पर, जहां "उदाहरण" छपा है, गुणा या क्रास (×) के निशान के ज़रिये किसी एक खाने (box) में भरते जाइये। अगर आप अपना उत्तर "a" वाले उत्तर के लिये चुनते हैं तो बाएं वाले खाने में (box के अन्दर) निशान लगाइये। अगर आपका उत्तर "b" वाला है तो बीच वाले खाने में निशान लगाइये। इसी तरह से अगर आपका उत्तर "c" वाला है तो दाहिने वाले खाने के अन्दर निशान लगा दीजिये।

उदाहरण :

1. मैं टीम वाले खेलों को देखना पसन्द करता हूँ।
   a. हां, b. कभी-कभी, c. नहीं।
2. मैं ऐसे लोगों को पसन्द करता हूँ, जो :
   a. गंभीर हों,
   b. दोनों के बीच के हों,
   c. जल्दी दोस्त बना लेते हों।
3. रुपया आनन्द (खुशी) नहीं ला सकता।
   a. हां (सच), b. दोनों के बीच का, c. नहीं (गलत)।
4. औरत का बच्चे से वही सम्बन्ध है जो भेड़ का :
   a. मेमना, b. कुत्ता, c. लड़के से है।

आखिरी उदाहरण में एक उत्तर सही है—मेमना। लेकिन, इस तरह के तर्क वाले प्रश्न इस पुस्तिका में बहुत कम हैं।

अब अगर कोई बात आपकी समझ में नहीं आई हो तो अभी पूछ लीजिये। क्योंकि, परीक्षक अब थोड़ी ही देर में आपको पन्ना उलटने के लिए और उत्तर देना शुरू करने के लिए कहेंगे।

प्रश्नों का उत्तर देते समय नीचे लिखी इन चार बातों को अपने मन में रखें :

1. आपको किसी प्रश्न पर ज्यादा सोच-विचार करने की ज़रूरत नहीं है। जो सबसे पहला उत्तर मन में आये उसमें ही निशान लगा दें। यह सच है कि प्रश्न बहुत छोटे हैं और आपको उनसे सारी जानकारी नहीं मिल सकती जिन्हें आप कभी-कभी जानना चाहेंगे। उदाहरण के लिए, ऊपर के पहले प्रश्न में "टीम वाले खेलों" के बारे में पूछा गया है जबकि ऐसा भी हो सकता है कि आप फुटबाल को बास्केटबाल से ज्यादा पसन्द करते हों। लेकिन आपको "औसत या आमतौर के खेल के लिये" उत्तर देना है या उसी तरह की मिलती-जुलती एक आम या औसत अवस्था का ध्यान करके उत्तर देना है। जहां तक हो सके, आप अपना सब से ठीक उत्तर दें। उत्तर देने की रफ्तार एक मिनट में पांच या छै प्रश्नों से कम नहीं होनी चाहिये। ज्यादा से ज्यादा चालिस मिनट में सभी प्रश्नों का उत्तर आपको दे देना चाहिये।
2. बीच वाले "अनिश्चित" उत्तरों का सहारा लेने की कोशिश मत करिये। इन पर तभी निशान लगायें जब किनारे वाले उत्तरों को देना आपके लिये सचमुच ही असंभव हो—शायद ऐसा चार या पाँच प्रश्नों में एक बार हो।
3. इस बात का पक्का ख्याल रखें कि कोई प्रश्न छूटने न पाये, और जैसे भी हो सभी प्रश्नों का उत्तर दें। ऐसा लग सकता है कि कुछ प्रश्न आप पर अच्छी तरह लागू न होते हों, पर आप अपने को उस परिस्थिति में डाल कर अपना उत्तर दें। आपको कुछ प्रश्न अपने निजी मामलों से भी सम्बन्धित लगेंगे, पर याद रखिये कि आपके उत्तर-पत्रों को बिल्कुल गुप्त रखा जाता है और उनको खास तौर से बनाई हुई कुंजियों की मदद के बगैर नहीं जाना जा सकता। साथ ही एक-एक प्रश्न के उत्तर की जाँच अलग-अलग नहीं की जाती है। इसलिए आप बेझिझक अपने मन का उत्तर दें।
4. जो उत्तर आपके लिए सही हैं वही उत्तर सच्चाई और ईमानदारी से दें। परीक्षक पर अच्छा प्रभाव डालने के लिये "यह कहना ठीक होगा" ऐसा सोचकर निशान न लगायें।

जब तक कहा न जाय कृपया पन्ना मत उलटिये

Copyright © 1964, 1970, by The Psycho-Centre, T-22, Green Park, New Delhi-110016, India, and also, 1956, 1962, 1967, by The Institute for Personality & Ability Testing, 1602 Coronado Drive, Champaign, Illinois-61820, U.S.A. All rights reserved. International Copyright in all countries under the Berne Union, Buenos Aires, and Universal Copyright Conventions, and all Bilateral Copyright Agreements. Printed in India.

1. इस जांच के नियम मुझे अच्छी तरह मालूम हैं ।
   a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं ।

2. इन प्रश्नों के उत्तर मैं सच्चाई से देने के लिये तैयार हूँ ।
   a हाँ, b. अनिश्चित, c नहीं ।

3. मैं ऐसा मकान लेना पसन्द करूँगा जो :
   a. शहर के नजदीक अच्छी बस्ती में हो,
   b. दोनों के बीच का,
   c. घने जंगल में अकेला हो ।

4. अपनी कठिनाइयों का सामना करने के लिये मुझ में काफी ताकत है ।
   a. हमेशा, b. आमतौर से, c. कभी-कभी ।

5. मैं जंगली जानवरों से थोड़ा घबड़ा जाता हूँ, भले ही वे मजबूत पिंजड़ों में क्यों न बन्द हों ।
   a. हाँ (सही), b. अनिश्चित, c. नहीं (गलत) ।

6. मैं दूसरे लोगों और उनके विचारों में दोष निकालने से अपने को रोकता हूँ ।
   a. हाँ, b. कभी-कभी, c. नहीं ।

7. मैं उन लोगों पर तीखी फबती कसता हूँ, जिन्हें मैं इसके लायक समझता हूँ ।
   a. आमतौर से, b. कभी-कभी, c. कभी नहीं ।

8. मैं सबको अच्छी लगने वाली (चालू) धुनों (बाजे की आवाज) के बजाय, अर्धशास्त्रीय संगीत अधिक पसंद करता हूँ ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।

9. यदि मैं दो पड़ोसियों के बच्चों को लड़ते देखूं, तो मैं :
   a. उन्हें इसका समझौता स्वयं करने के लिये छोड़ दूंगा,
   b. अनिश्चित,
   c. उन्हें समझाऊँगा ।

10. सामाजिक अवसरों पर, मैं :
   a. तुरन्त सामने आता हूँ,
   b. दोनों के बीच का,
   c. चुपचाप पीछे रहना पसंद करता हूँ ।

11. मेरे लिये यह बात अधिक मन-पसंद होगी :
   a. एक निर्माण अभियंता (इन्जीनियर) बनना ।
   b. अनिश्चित,
   c. नाटकों का एक लेखक बनना ।

12. मैं कुछ लोगों के झगड़े सुनने के बजाय रास्ते में खड़े होकर एक कलाकार की 'पेंटिंग' को देखना अधिक पसंद करूँगा ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।

13. मैं आमतौर से घमंडी लोगों के साथ भी रह सकता हूँ, भले ही वे शेखी मारें या दिखावा करें और अपने आप को बहुत अच्छा समझें ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।

14. जब कोई बेईमानी करता है तो आप करीब-करीब हमेशा ही उसके चेहरे से पता लगा सकते हैं ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c नहीं ।

15. यदि छुट्टियाँ लम्बी हों और उन्हें सभी को लेना पड़े, तो यह सबके लिये अच्छा होगा ।
   a. सहमत, b. अनिश्चित, c. असहमत ।

16. मैं एक निश्चित और कम वेतन वाले काम की अपेक्षा एक अधिक परन्तु असमान आमदनी वाले काम को करने का जोखिम (खतरा) उठाना ज्यादा पसंद करूँगा ।
   a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं ।

17. मैं अपनी भावनाओं के बारे में तभी बात करता हूँ ।
   a. जब यह जरूरी हो,
   b. दोनों के बीच का,
   c. तुरन्त, जब कभी मुझे मौका मिल जाता है ।

18. कभी-कभी मुझे बेकार के खतरे या अचानक डर का आभास होता है परन्तु मैं इनके कारणों को नहीं समझ पाता ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।

19. जब मुझे किसी ऐसी चीज के लिये बुरा-भला कहा जाता है जिसे मैंने नहीं किया, तो मैं :
   a. दोषी होने की भावना नहीं रखता,
   b. दोनों के बीच का,
   c. फिर भी अपने को थोड़ा दोषी समझता हूँ ।

20. रुपये-पैसे से करीब-करीब हर चीज खरीदी जा सकती है ।
   a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं ।

21. मेरे फैसले अधिकतर नियन्त्रित होते हैं, मेरे :
   a. दिल से,
   b. तर्क और भावनाओं दोनों से,
   c. दिमाग से ।

22. बहुत से लोग अधिक खुश होते यदि वे अपने साथियों के साथ ज्यादा रहकर दूसरों की तरह काम करते ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।

23. जब मैं शीशे में देखता हूँ कि कौन मेरा दाहिना है और कौन बायाँ, तो मैं अक्सर परेशान हो जाता हूँ ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।

24. बातें करते समय, मैं :
   a. बातों को वैसे ही कहना पसंद करता हूँ जैसी वे मेरे साथ घटती (या होती) हैं,
   b. दोनों के बीच का,
   c. अपने विचारों को पहले अच्छी तरह संजोना पसंद करता हूँ ।

25. जब कुछ बातें वास्तव में मुझे बहुत क्रोधित कर देती हैं, तो मैं फिर जल्दी ही शांत भी हो जाता हूँ ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।

(उत्तर-पत्र के कालम 1 का अन्त)

26. अगर काम करने के घंटे और तनख्वाह बराबर हों, तो यह बनना ज्यादा दिलचस्प होगा :
a. एक बढ़ई या बावर्ची बनना,
b. अनिश्चित,
c. किसी अच्छे रेस्तरां (या होटल) में एक वेटर बनना।

27. आज से पहले, मैं निर्वाचित (चुना गया) किया गया हूँ :
a. केवल कुछ पदों (पोजीशन) के लिए,
b. अनेकों के लिए,
c. बहुत से पदों के लिए।

28. "फावड़े" का "खोदने" से वैसा ही सम्बन्ध है जैसा "चाकू" का :
a. धार से,
b. काटने से,
c. नोक से है।

29. कभी-कभी मैं सो नहीं पाता क्योंकि एक विचार मेरे दिमाग में घुमता रहता है।
a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

30. अपने निजी जीवन में मैं करीब-करीब हमेशा ही अपनी तय की हुई मंजिलों को पा लेता हूँ।
a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

31. एक पिछड़ा हुआ कानून बदल देना चाहिए :
a. केवल उचित तर्क-वितर्क (सोच-विचार) के बाद,
b. दोनों के बीच का,
c. तुरन्त।

32. मैं ऐसी योजना पर काम करते समय परेशान रहता हूँ जिसे तुरन्त चालू (कार्यान्वित) करना होता है और जिसकी वजह से दूसरों पर असर पड़ता है।
a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

33. ज्यादातर लोग, जिन्हें मैं जानता हूँ, मुझे मजेदार बातचीत करने वाला समझेंगे।
a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

34. जब मैं ओछे (बेढंगे) और भद्दे लोगों से मिलता हूँ, तो मैं :
a. इसे (उनकी बात को) वैसे ही मान लेता हूँ,
b. दोनों के बीच का,
c. नफरत करने लगता हूँ और चिढ़ जाता हूँ।

35. किसी सामाजिक समूह (ग्रुप) में जब सबका ध्यान अचानक मुझ पर जम जाता है तो मैं थोड़ी उलझन में पड़ जाता हूँ।
a हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

36. मुझे एक बड़े जलसे में शामिल होने में हमेशा खुशी होती है, उदाहरण के लिए, एक दावत, नृत्य, या आम-सभा।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

37. मैंने स्कूल में यह पसन्द किया था (या करता हूँ) :
a. संगीत,
b. अनिश्चित,
c. दस्तकारी और शिल्पकला।

38. जब मुझे किसी काम का इन्चार्ज बनाया जाता है तो मैं इस बात पर अड़ जाता हूँ कि मेरी हिदायतों को माना जाय नहीं तो मैं स्तीफा दे दूंगा।
a. हाँ, b. कभी-कभी, c. नहीं

39. माता-पिता के लिए यह बहुत जरूरी है कि :
a. बच्चों को अपना स्नेह (प्यार) बढ़ाने में मदद दें,
b. दोनों के बीच का,
c. बच्चों को उनकी भावनाओं पर काबू रखना सिखाएँ।

40. एक समूह (ग्रुप) में काम करते समय मैं खास तौर से :
a. व्यवस्था को सुधारने की कोशिश करूँगा,
b. दोनों के बीच का,
c. रिकार्ड रखूँगा और देखूँगा कि नियमों का पालन हो।

41. मैं जब-तब अपने को ज्यादा मेहनत वाले काम में लगाने की जरूरत महसूस करता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

42. मैं भद्दे और लड़ने-झगड़ने वाले लोगों के बजाय सरल और नम्र स्वभाव वालों के साथ मिलना जुलना चाहूँगा।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

43. जब लोग मुझे किसी समूह (ग्रुप) में भला-बुरा कहते हैं तो मैं बेहद खिन्न और उदास हो जाता हूँ।
a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

44. यदि मैं अपने अफसर द्वारा बुलाया जाता हूँ, तो मैं :
a. इसे अपने लिए कुछ कहने (माँगने का, जो मैं चाहता हूँ) का एक मौका समझता हूँ,
b. दोनों के बीच का,
c. डरता हूँ कि मैंने कोई गलती कर दी है।

45. इस दुनिया को जिस चीज की जरूरत है, वह है :
a. ज्यादा नियमित और पक्के नागरिक,
b. अनिश्चित,
c. संसार को और अच्छा बनाने वाली योजनाओं के साथ ज्यादा "आदर्शवादी" लोग।

46. मैं जिन चीजों को पढ़ता हूँ (पत्र-पत्रिकाएँ) उनमें प्रचार के लिए की गई कोशिशों से मैं हमेशा सावधान रहता हूँ।
a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

47. किशोरावस्था तक मैंने स्कूल के खेलों में :
a. कभी-कभी भाग लिया है,
b. अनेकों बार,
c. बहुत ही ज्यादा भाग लिया है।

48. मैं अपने कमरे को सजाकर इस तरह रखता हूँ कि सभी चीजें अपनी-अपनी जानी हुई जगहों पर हमेशा रहती हैं।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

49. जब मैं दिनभर की घटनाओं के बारे में सोचता हूँ तब मैं कभी-कभी तनाव और बेचैनी की हालत में पड़ जाता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

50. मुझे कभी-कभी शक पड़ जाता है कि जिन लोगों से मैं बातें कर रहा हूँ क्या वे मेरी बातों में दिलचस्पी भी लेते हैं।
a. सही, b. अनिश्चित, c. नहीं।

(उत्तर-पत्र के कालम 2 का अन्त)

51. अगर मेरे ऊपर छोड़ दिया जाय तो मैं बेशक यह बनना चाहूँगा :
   a. वन विभाग में एक अधिकारी (forester),
   b. अनिश्चित,
   c. हाई-स्कूल का एक अध्यापक (teacher) ।
52. खास-खास त्यौहारों और जन्म-दिनों के लिये मुझे :
   a. सौगात या उपहार निजी तौर पर देना पसंद है,
   b. अनिश्चित,
   c. सौगात या उपहारों का खरीदना एक तरह की बाधा लगती है ।
53. "थकने" का "कार्य" से वही सम्बन्ध है जो "घमण्ड का :
   a. मुस्कराहट, b. सफलता, c. खुशी से है ।
54. नीचे लिखी तीन चीजों में से कौन सी एक चीज दूसरी दो चीजों से अलग है ?
   a. मोमबत्ती, b. चाँद, c. बिजली की रोशनी ।
55. मेरे दोस्तों ने जरूरत के वक्त मेरा साथ छोड़ दिया है :
   a. शायद ही कभी,
   b. कभी-कभी,
   c. अनेकों बार ।
56. मुझमें कुछ ऐसी खास बातें (गुण) हैं जिनसे मुझे ऐसा अवश्य लगता है कि मैं बहुत से लोगों से ऊँचा हूँ ।
   a. हाँ, b अनिश्चित, c नहीं ।
57. घबड़ाहट की दशा में, मैं अपनी भावनाओं (feelings) को दूसरों से छिपाने की पूरी कोशिश करता हूँ ।
   a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत ।
58. किसी फिल्म-शो या मनोरंजन के लिये मैं घर से बाहर जाना पसंद करता हूँ ।
   a. हफ्ते में एक बार से ज्यादा (औसत से अधिक),
   b. हफ्ते में लगभग एक बार (औसत),
   c. हफ्ते में एक बार से भी कम (औसत से कम) ।
59. मैं सोचता हूँ कि अच्छे तरीकों (शिष्टाचार) और कानून की इज्जत के बजाय खूब आजादी देना ज्यादा जरूरी है ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।
60. मैं अपने से बड़े (बुजुर्ग, अनुभवी और ऊँचे पद वाले) लोगों की मौजूदगी में चुप ही रहता हूँ ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
61. किसी बड़े समूह (ग्रुप) में भाषण देना या कोई चीज सुनाना मुझे मुश्किल मालूम पड़ता है ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
62. किसी अनजान या नई जगह होने पर भी मुझे दिशाओं की अच्छी समझ है (मैं आसानी से बता सकता हूँ कि किधर उत्तर, दक्षिण, पूरब या पश्चिम है) ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
63. अगर कोई मुझ पर बौखला पड़े, तो मैं :
   a. उसे शांत करने की कोशिश करूँगा,
   b. अनिश्चित,
   c. चिढ़ जाऊँगा ।
64. जब किसी पत्रिका (मैगजीन) में मैं कोई अनुचित लेख पढ़ता हूँ, तो उसका 'करारा जवाब' देने के बजाय मैं उसे भूल जाना पसंद करता हूँ ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।
65. बहुत सी अनावश्यक और फालतू चीजें, जैसे शहर की गलियों या दुकानों के नाम, मेरी याददाश्त के बाहर हो जाया करती हैं ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
66. जानवरों का इलाज और आपरेशन करते हुये एक पशु-चिकित्सक (animal doctor) का जीवन बिताने में मुझे आनन्द आ सकेगा ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
67. मैं अपना खाना बड़े स्वाद के साथ खाता हूँ, लेकिन हमेशा उतनी सावधानी और सही तरीके से नहीं जितना कि कुछ दूसरे लोग अपनाते हैं ।
   a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत ।
68. बाजे-बाजे वक्त ऐसा भी होता है जब मेरा किसी से भी मिलने के लिये ठीक 'मूड' (मिजाज) नहीं बन पाता ।
   a. शायद ही कभी,
   b. दोनों के बीच का,
   c. अक्सर, कई बार ।
69. कभी-कभी लोग मुझे आगाह कर देते हैं कि मेरे बोल-चाल और बर्ताव में मेरा क्षोभ (गुस्सा, रोष) बहुत साफ झलक जाया करता है ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।
70. अपनी किशोरावस्था (teen-age) में अगर माता-पिता से मेरा मतभेद हो जाता था, तो मैं आमतौर पर :
   a. अपना ही मत (राय) कायम रखता था,
   b. दोनों के बीच का,
   c. उनका अधिकार (मत या सत्ता) मान लेता था ।
71. दूसरे आदमी के साथ शामिल होकर साझा करने के बजाय, मैं अपने लिये एक अलग आफिस का होना ज्यादा पसंद करूँगा ।
   a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं ।
72. अपनी सफलताओं पर तारीफ पाने के बजाय, अपनी जिन्दगी अपने ढंग से शान्ति से बिताने में मुझे ज्यादा आनंद आयेगा ।
   a. सही, b अनिश्चित, c. गलत ।
73. मैं बहुत सी बातों में अपने को परिपक्व (सिद्ध, समझदार) समझता हूँ ।
   a. सही, b अनिश्चित, c. गलत ।
74. जिस तरह का सुझाव (आलोचना) बहुत से लोग जब मुझे देते हैं तो उससे फायदा उठाने के बजाय मैं घबड़ा जाता हूँ ।
   a. अक्सर, b कभी-कभी, c कभी नहीं ।
75. अपनी भावनाओं (feelings) को प्रकट करना हमेशा पूरी तरह से मेरे बश (काबू) में रहा है ।
   a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं ।

(उत्तर-पत्र के कालम 3 का अन्त)

76. एक लाभदायक आविष्कार को चालू करने के लिये, मैं :
a. उस पर प्रयोगशाला (Laboratory) में काम करना चाहूँगा,
b. अनिश्चित,
c. उसे लोगों में बेचना चाहूँगा।

77. "आश्चर्य" का "अजीब" से वही सम्बन्ध है जो "डर" का :
a. बहादुर, b. बेचैन, c. डरावना से है।

78. नीचे लिखी तीन भिन्नों (fractions) में से वह कौन सी एक भिन्न है जो बाकी दो भिन्न की तरह नहीं है ?
a. 3/7, b. 3/9, c. 3/11

79. ऐसा लगता है कि कुछ लोग मेरी उपेक्षा करते हैं या मुझसे किनारा काटते हैं, हालांकि मैं नहीं जानता कि ऐसा क्यों है।
a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

80. मेरे मन के अच्छे इरादों व विचारों के मुकाबले में जितना अच्छा व्यवहार लोगों से मिलना चाहिये, लोग उससे कम मुझे देते हैं।
a. अक्सर, b कभी-कभी, c. कभी नहीं।

81. किसी भी जगह, चाहे वहाँ औरतों व मर्दों का मिला-जुला समूह (ग्रुप) न भी हो, अगर गन्दी भाषा का इस्तेमाल होता है तो मुझे बड़ी ऊब सी मालूम होती है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

82. यह तय बात है कि ज्यादातर लोगों के मुकाबले में मेरे दोस्तों की संख्या कम है।
a. हाँ, b दोनों के बीच का, c. नहीं।

83. मुझे ऐसी जगह जाने में नफरत होगी जहाँ बातचीत करने के लिये ढेर सारे लोग न हों।
a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

84. कभी-कभी लोग मुझे लापरवाह कहते हैं, जब कि वे यह भी मानते हैं कि मैं एक रोचक (पसन्द आने लायक) व्यक्ति हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

85 अनेक सामाजिक अवसरों पर मुझे ऐसी घबराहट महसूस हुई है जैसे मंच (स्टेज) पर पहले-पहल आने पर होती है।
a. अक्सर, कई बार,
b. कभी-कभी,
c. शायद ही कभी।

86. जब मैं किसी छोटे समूह (ग्रुप) में होता हूँ तो मुझे चुपचाप पीछे बैठने में ही संतोष होता है ताकि दूसरे लोग ही ज्यादा बातचीत कर सकें।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

87. मुझे यह पढ़ना ज्यादा पसंद है :
a. सैनिक या राजनैतिक लड़ाइयों का एक जीता-जागता बयान,
b. अनिश्चित,
c. एक असरदार और भावपूर्ण उपन्यास (नावेल)।

88. जब रौब जमाने वाले लोग अपनी मर्जी के मुताबिक मुझे चलाने की कोशिश करते हैं तो मैं उनकी मर्जी के बिल्कुल खिलाफ काम करता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

89. मेरे धन्धे के बड़े लोग या मेरे परिवार के लोग, नियम के अनुसार मेरे अन्दर तभी गलती निकालते हैं जब उसके लिये सचमुच ही कोई वजह रहती है।
a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

90. सड़कों पर या दुकानों के अन्दर, जिस तरीके से कुछ आदमी दूसरे लोगों को घूरकर देखते हैं वह तरीका मुझे नापसन्द है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

91. रेल के एक लम्बे सफर में, मुझे यह ज्यादा पसन्द होगा :
a. किसी गम्भीर मगर दिलचस्प विषय को पढ़ना,
b. अनिश्चित,
c. साथ के मुसाफिर से बीच-बीच में बातचीत करते हुये समय काटना।

92. एक ऐसी स्थिति (दशा) में, जो कि खतरनाक बन सकती है, मैं खुलकर बोलने और हंगामा मचाने में विश्वास करता हूँ चाहे इससे नम्रता और शान्ति क्यों न भंग हो जाय।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

93. अगर जान-पहचान के लोग मुझसे खराब बर्ताव करते हैं और वे यह दिखाते हैं कि मुझे नापसन्द करते हैं, तो :
a. इससे मुझे जरा भी घबड़ाहट नहीं होती,
b. दोनों के बीच का,
c. इससे मेरा दिल बैठने लगता है।

94. मुझे अपने लिये तारीफ और बड़ाई पाने पर बड़ी उलझन या परेशानी मालूम होती है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

95. मैं एक ऐसा धन्धा ज्यादा पसन्द करूँगा, जिसमें :
a. एक निश्चित बँधी हुई तनख्वाह हो,
b. दोनों के बीच का,
c. एक ज्यादा या बड़ी तनख्वाह हो, पर जो इस बात पर मुनासिब हो कि मैं बराबर लोगों से मनवाता रहूँ कि मैं इतनी बड़ी तनख्वाह के काबिल भी हूँ।

96. अपनी जानकारी को बढ़ाने के लिये, मैं :
a. तरह-तरह के विषयों पर लोगों से चर्चा करना पसंद करता हूँ,
b. दोनों के बीच का,
c. छपे हुये समाचार या अखबारों की खबरों पर विश्वास करता हूँ।

97. मैं सामाजिक मामलों और कमेटियों आदि के कामों में सक्रिय रूप से भाग लेना पसन्द करता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

98. किसी दिये हुये काम को पूरा करने में मुझे तब तक संतोष नहीं होता जब तक कि उसकी छोटी-छोटी बातों पर भी गहराई से ध्यान न दिया गया हो।
a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

99. कभी-कभी बहुत छोटी बाधाओं या रुकावटों से भी मुझे बहुत खीझ (गुस्सा) हो जाती है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

100. मैं हमेशा "गहरी नींद" सोने वाला हूँ, और नींद की दशा में कभी भी टहलता या बोलता नहीं हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

(उत्तर-पत्र के कालम 4 का अन्त)

101. किसी व्यापार में काम करते हुए मुझे यह काम ज्यादा दिलचस्प लगेगा :

a. ग्राहकों (Customers) से बातचीत करना।
b. दोनों के बीच का,
c. दफ्तर के कागज-पत्र और हिसाब-किताब रखना।

102. "नाप" का "लम्बाई" से वही सम्बन्ध है जो "बेईमान" का :

a. जेल, b. पाप, c. चोरी से है।

103. AB का dc से वही सम्बन्ध है जो SR का :

a. qp, b. pq, c. tu से है।

104. जब लोग अनुचित (बेतुके) काम करते हैं, तो मैं :

a. चुपचाप शान्त रहता हूँ,
b. अनिश्चित,
c. उनसे नफरत करता हूँ।

105. मेरे गाना सुनते समय अगर लोग जोर-जोर से बातचीत करते हैं, तो भी मैं :

a. अपना मन गाना सुनने में लगाये रख सकता हूँ और लोगों की बातचीत से परेशान नहीं होता।
b. दोनों के बीच का,
c. ऐसा महसूस करता हूँ कि जैसे मेरा आनंद बर्बाद हो रहा है और जिसकी बजह से मुझे लोगों पर गुस्सा आने लगता है।

106. मैं सोचता हूँ कि मेरे बारे में यह ज्यादा ठीक होगा अगर लोग मुझे ऐसा समझें, जैसे :

a. नम्र, सभ्य और शान्त व्यक्ति,
b. दोनों के बीच का,
c. एक प्रबल (बलवान) और प्रभावशाली व्यक्ति।

107. सामाजिक उत्सवों में मैं तभी शामिल होता हूँ जब उनमें मेरा होना जरूरी होता है, नहीं तो मैं अपने को इनसे अलग रखता हूँ।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

108. हमेशा सफल होने की उम्मीद रखने और खुशदिल (प्रसन्न-चित्त) रहने के बजाय यह ज्यादा अच्छा होगा कि उम्मीद कम रखी जाय और हमेशा सावधान रहा जाय।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

109. अपने काम में आने वाली कठिनाइयों पर सोचते समय, मैं :

a. कठिनाइयों के आने से पहले ही उनसे मुकाबला करने की योजना शुरू से ही बनाने की कोशिश करता हूँ,
b. दोनों के बीच का,
c. यही समझ लेता हूँ कि जब कठिनाइयाँ आयेंगी तो उसी समय उनसे निपट लूँगा।

110. किसी सामाजिक सभा में या जलसे के मौके पर, लोगों में घुलमिल जाना मुझे बड़ा आसान लगता है।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

111. जब लोगों पर असर डालकर तुरन्त काम कराने के लिये थोड़ी कूटनीति (दाँव-पेंच) और समझाने-मनवाने की जरूरत पड़ती है, तब अक्सर मुझे ही ऐसा काम सौंपा जाता है।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

112. मेरे लिये यह बनना ज्यादा दिलचस्प होगा :

a. नवयुवकों को काम-धन्धा (नौकरी) पाने में मदद करने वाला एक सलाहकार (मार्ग-दर्शक),
b. अनिश्चित,
c. किसी प्रभावशाली यंत्रालय (इंजीनियरी) का प्रबन्धक (मैनेजर)।

113. अगर मुझे पूरा विश्वास हो जाय कि कोई आदमी स्वार्थी (मतलबी) है और गलत रास्ते पर है, तो थोड़ी परेशानी उठाकर भी मैं उसकी पोल खोलने की कोशिश करता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

114. लोगों को चकित कर देने के लिये और यह देखने के लिये कि वे क्या कहते हैं, मैं कभी-कभी मजाक में बेवकूफी भरी बातें कह देता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

115. नाटक, संगीत-सम्मेलन, नृत्य (ड्रामा, नाच-गाना) आदि पर अखबार में लिखने वाला एक लेखक बनने में मुझे आनंद आयेगा।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

116. जब मुझे किसी मीटिंग में देर तक, चुपचाप शान्त होकर बैठे रहना पड़ता है तो भी किसी तरह की शारीरिक सुस्ती और बेचैनी जैसी अकुलाहट मुझे कभी नहीं महसूस होती।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. गलत।

117. अगर कोई मुझसे कुछ ऐसी बात कहता है जिसे मैं गलत समझता हूँ तो ज्यादातर मैं अपने मन में यही कहता हूँ कि :

a. "वह झूठा है",
b. दोनों के बीच का,
c. "जाहिर है कि उसे गलत जानकारी है"।

118. जबकि मैंने कोई गलत काम न भी किया हो तो भी मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि मुझे कोई सजा मिलने वाली है।

a. अक्सर, b. कभी-कभी, c. नहीं।

119. "बीमारी जितना शारीरिक कारणों से होती है उतनी ही मानसिक कारणों से भी", यह विचार हद से ज्यादा बढ़ाचढ़ा कर बयान किया जाता है।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

120. बड़े-बड़े राजकीय (रियासती) समारोहों की शान-शौकत और तड़क-भड़क भी ऐसी चीजें हैं जिन्हें बनाये रखना चाहिये।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

121. अगर लोग मेरे बारे में यह सोचते हैं कि मैं काफी गैर-रिवाजी (प्रथा-विरोधी) और बेमेल होता जा रहा हूँ, तो इससे मुझे परेशानी होती है।

a. काफी ज्यादा, b. थोड़ा बहुत, c. बिल्कुल नहीं।

122. किसी चीज का निर्माण करने (बनाने) में, मैं ज्यादातर इस तरह काम करूँगा :

a. एक समिति (कमेटी) बनाकर,
b. अनिश्चित,
c. अपने भरोसे, अकेले ही, स्वतंत्र रूप से।

123. मेरी जिन्दगी में ऐसे भी वक्त आते हैं जब मुझे अपने पर ही तरस खाने से खुद को रोकना मुश्किल हो जाता है।

a. अक्सर, b. कभी-कभी, c. कभी नहीं।

124. मुझे अक्सर लोगों पर बहुत जल्द ही गुस्सा आ जाता है।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

125. मैं पुरानी आदतों को, बिना किसी अड़चन के और बिना भूले-चूके, हमेशा छोड़ (बदल) सकता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

(उत्तर-पत्र के कालम 5 का अन्त)

126. अगर दोनों की आमदनी बराबर हो तो मैं बेशक यह बनना चाहूँगा :
a. एक वकील,
b. अनिश्चित,
c. एक नाविक (नेवीगेटर) या विमान-चालक (पाइलट)।

127. "उससे अच्छा" का "सबसे खराब" से वही सम्बन्ध है जो "उससे धीमा" का :
a. तेज, b. सबसे अच्छा, c. सबसे तेज, से है।

128. xooooxxoooxxx अक्षरों की इस लाइन के ठीक बाद में, नीचे लिखे तीनों में से किसे रखा जाना चाहिये ?
a. oxxx, b. ooxx, c xooo

129. किसी ऐसी चीज के लिये, जिसे मैं बड़ी तरकीब से बना कर पूरा करने की उम्मीद कर रहा था, जब मौका आ जाता है तो उसे पूरा करने की कभी-कभी मेरी तबियत नहीं होती।
a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

130. मैं बहुत से कामों को सावधानी से, बिना तंग हुए, कर सकता हूँ, भले ही लोग मेरे चारों ओर काफी शोरगुल क्यों न मचा रहे हों।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c नहीं।

131. कभी-कभी मैं अनजान लोगों को ऐसी बातें बता देता हूँ जो मुझे जरूरी लगती हैं, भले ही वे उनके बारे में न पूछें।
a. हाँ, b दोनों के बीच का, c. नहीं।

132. मैं अपने खाली समय के ज्यादातर हिस्से को अपने दोस्तों के साथ बीती हुई मजेदार सामाजिक घटनाओं पर बातें करने में बिताता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

133. मुझे "केवल खिलवाड़ के लिए" दिलेरी व अक्खड़पन वाले कामों में मजा आता है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

134. मुझे एक बिखरे हुए गंदे कमरे को देखकर बहुत झुंझलाहट होती है।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

135. मैं अपने आपको एक बहुत मिलनसार और बाहर घूमने-वाला (घुमक्कड़) व्यक्ति समझता हूँ।
a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c नहीं।

136. सामाजिक अवसरों पर (या सम्बन्धों में), मैं :
a. अपने मन के भावों को जैसा चाहता हूँ वैसा ही प्रकट कर देता हूँ,
b. दोनों के बीच का,
c. अपने मन के भावों को अपने अन्दर ही रखता हूँ।

137. मैं ऐसा संगीत पसंद करता हूँ, जो :
a हलका, सीधा-सादा और जोशीला हो,
b. दोनों के बीच का,
c. भावपूर्ण व रसपूर्ण हो।

138. अच्छी तरह से बनी हुई एक बन्दूक की तारीफ से ज्यादा तारीफ मैं एक कविता की सुन्दरता की करता हूँ।
a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

139. अगर मेरे द्वारा कही गयी कोई अच्छी बात लोग अनसुनी कर देते हैं, तो मैं :
a. इसका ख्याल नहीं करता,
b. दोनों के बीच का,
c. लोगों को सुनने का एक और मौका देता हूँ।

140. मैं, कुछ शर्तों पर रिहा किए गये अपराधियों के साथ काम करने वाला, एक अधिकारी (प्रोबेशन आफीसर) बनना पसंद करूँगा।
a हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

141. हर तरह के अन्जान लोगों से मिलने-जुलने में होशियार रहना चाहिए क्योंकि इसमें छूत की बीमारी आदि होने का डर रहता है।
a. हाँ, b अनिश्चित, c. नहीं।

142. विदेश यात्रा के समय, मैं अपने आप योजना बना कर अपनी पसंद के स्थानों को देखने के बजाय किसी कुशलतापूर्वक आयोजित "टूर" (सैर-यात्रा) के साथ जाना अधिक पसंद करूँगा।
a. हाँ, b अनिश्चित, c. नहीं।

143. वास्तव में, मुझे सिर्फ एक चाकर (सेवक) व अर्द्ध-सफल व्यक्ति ही समझा जाता है।
a हाँ, b अनिश्चित, c नहीं।

144. अगर लोग मेरी दोस्ती से फायदा उठाते हैं तो मैं बुरा नहीं मानता और इसे जल्दी ही भूल जाता हूँ।
a. सही, b अनिश्चित, c. गलत।

145. अगर एक समूह (ग्रुप) में, लोगों के बीच बात-चीत के दौरान गर्मा-गर्म बहस छिड़ जाय, तो मैं यह चाहूँगा कि :
a. कोई एक "विजयी" हो (जीत जाये),
b. दोनों के बीच का,
c. बहस चुपचाप खत्म हो जाये।

146. मैं अपनी योजना को, बिना बाधाओं और दूसरों के सुझावों के, अपने-आप अकेले ही बनाना पसंद करता हूँ।
a. हाँ, b दोनों के बीच का, c. नहीं।

147. मैं कभी-कभी अपने व्यवहारों को ईर्ष्या (जलन) के दबाव में आ जाने देता हूँ।
a. हाँ, b दोनों के बीच का, c. नहीं।

148. मेरा पक्का विश्वास है कि "अधिकारी हमेशा सही नहीं हो सकता, किन्तु उसे हमेशा अधिकार जताने का अधिकार है।"
a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

149. आगे आने वाले सभी कामों की बात सोचते ही मैं परेशान हो जाता हूँ।
a. हाँ, b. कभी-कभी, c. नहीं।

150. अगर मुझे खेल खेलते समय लोग चिल्ला-चिल्लाकर सुझाव देते हैं तो भी मुझे उससे परेशानी नहीं होती।
a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

(उत्तर-पत्र के कालम 6 का अन्त)

151. मेरे लिये यह बनना ज्यादा दिलचस्प होगा :

a. एक कलाकार/आर्टिस्ट,

b. अनिश्चित,

c. क्लब को चलाने वाला सेक्रेटरी।

152. नीचे लिखे शब्दों में से कौनसा एक शब्द दूसरे दो शब्दों से ठीक-ठीक मेल नहीं खाता ?

a. कोई, b. कुछ, c. ज्यादातर।

153. "लौ" (लपट) का "गर्मी" से वही सम्बन्ध है जो "गुलाब" का :

a. कांटे से, b. लाल पंखुड़ियों से, c. खुशबू से।

154. मुझे इतने सजीव सपने आते हैं कि नींद उचट जाती है।

a. अक्सर,

b. कभी-कभी,

c. कभी भी नहीं।

155. यदि किसी काम के सफल होने में वास्तव में रुकावटें हों, तो भी मैं उसकी जिम्मेदारी लेने में विश्वास रखता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

156. किसी समूह (ग्रुप) को क्या करना है, जब मैं इसे अच्छी तरह जान लेता हूँ तो स्वाभाविक रूप से उस ग्रुप का शासन अपने हाथ में आ जाना मुझे पसन्द है।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

157. लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले निजी ढंग से कपड़े पहनने के बजाय, मैं बिल्कुल सही ढंग से कपड़े पहनना ज्यादा पसन्द करूँगा।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

158. मुझे शाम का वक्त एक चहल-पहल वाली पार्टी में बिताने के बजाय चुपचाप अपने किसी शौकिया काम (हाबी) में बिताना ज्यादा मन को भाता है।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

159. मैं दूसरों के अच्छे मतलब वाले सुझावों को भी नहीं सुनता, हालांकि मैं जानता हूँ कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए।

a. कभी-कभी, b. शायद ही कभी, c. कभी नहीं।

160. किसी भी बात का फैसला करने से पहले मैं हमेशा "सही" और "गलत" के बुनियादी नियमों का सहारा लेता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

161. अगर लोग मेरे काम पर नजर रखते हैं तो मुझे थोड़ा खराब लगता है।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

162. चूंकि सभी कामों का धीरे व ठीक तरीकों से पूरा होना सम्भव नहीं है इसलिये कभी-कभी कड़ाई से काम लेना जरूरी होता है।

a. सही, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

163. स्कूल में मैं यह पढ़ना पसन्द करता था (या हूँ) :

a. हिन्दी (या मातृभाषा, या कोई साहित्य)

b. अनिश्चित,

c. गणित या अंकगणित।

164. बिना किसी आधार (सच्चाई) के, जब लोगों ने मेरे पीछे मेरी बुराई की है तो उसे जानकर कभी-कभी मैं दुखी हुआ हूँ।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

165. आदतों और परम्पराओं (रीति-रिवाजों) से बँधे मामूली लोगों से बात करना :

a. अक्सर बहुत दिलचस्प और मतलब का होता है,

b. दोनों के बीच का,

c. मुझे झुंझला देता है क्योंकि बात सब बेकार की होती है जिसका कोई मतलब नहीं होता।

166. कुछ बातें मुझे इतना नाराज कर देती हैं कि मैं उन पर कुछ न बोलना ही अच्छा समझता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

167. शिक्षा में, यह ज्यादा जरूरी है कि :

a. बच्चे को काफी स्नेह (प्यार) दिया जाय,

b. दोनों के बीच का,

c. बच्चे को ठीक आदतें और उचित दृष्टिकोण सिखाया जाय।

168. मुझे लोग एक ठोस, परेशान न होने वाला, और जीवन के उतार-चढ़ाव (सुख-दुख) की दशाओं में पड़कर न घबड़ाने वाला आदमी मानते हैं।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

169. मैं सोचता हूँ कि समाज को पुरानी आदतों या रूढ़ियों को एक तरफ छोड़कर "ज्ञान और तर्क" के सहारे नए रीति-रिवाजों को अपनाना चाहिए।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

170. मैं सोचता हूँ कि आज की आधुनिक दुनिया में इसे सुलझाना ज्यादा जरूरी है :

a. नैतिक उद्देश्यों की समस्या,

b. अनिश्चित,

c. राजनैतिक समस्याएँ और कठिनाइयाँ।

171. मैं इस तरह से ज्यादा अच्छी तरह से सीखता हूँ :

a. एक अच्छी तरह लिखी हुई किताब को पढ़कर,

b. दोनों के बीच का,

c. एक सामूहिक (ग्रुप) चर्चा में शामिल होकर।

172. माने हुए नियमों पर चलने के बजाय मैं अपने ढंग से काम करना पसन्द करता हूँ।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

173. किसी तर्क को रखने (करने) से पहले मैं तब तक इन्तजार करना पसन्द करता हूँ जब तक मुझे विश्वास नहीं हो जाता कि मैं जो कहने जा रहा हूँ वह ठीक है।

a. हमेशा,

b. आमतौर से,

c. केवल तभी, जब यह व्यावहारिक (काम में आने वाला) हो।

174. यह जानते हुए भी कि वे बिल्कुल मामूली चीजें हैं, कभी-कभी छोटी-छोटी बातें मुझे इतना परेशान कर देती हैं कि बर्दाश्त के बाहर हो जाता हैं।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

175. मैं अक्सर झटपट बातें नहीं कर बैठता कि मुझे ज्यादा पछताना पड़े।

a. सही, b. अनिश्चित, c. गलत।

(उत्तर-पत्र के कालम 7 का अन्त)

176. यदि मुझे चंदा इकट्ठा करने वाले कामों को करने के लिए कहा जाय, तो मैं उसे :

a. मान लूंगा,

b अनिश्चित,

c. मुलायमियत से कहूँगा कि "मैं बहुत व्यस्त हूँ"।

177. नीचे लिखे शब्दों में से कौन सा एक शब्द दूसरे दोनों शब्दों से अलग है ?

a. चौड़ा, b. टेढ़ा-मेढ़ा, c. सीधा।

178. "जल्दी" का सम्बन्ध "कभी नहीं" से वैसे ही है जैसे "नजदीक" का :

a. कहीं नहीं से, b. दूर से, c. दूरी से।

179. यदि मैं कोई भद्दी सामाजिक गलती कर बैठूं तो मैं उसे जल्दी ही भूल सकता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

180. मैं एक "आदर्श व्यक्ति" के रूप में जाना जाता हूँ जो करीब-करीब हमेशा हर समस्या पर कुछ विचार सामने रखता है।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

181. मैं सोचता हूँ कि इन मैं बातों में ज्यादा कुशल हूँ :

a. चुनौतियों का दिलेरी से सामना करने में,

b. अनिश्चित,

c. दूसरे लोगों की इच्छाओं को निभा लेने में।

182. मैं एक बहुत उत्साही व्यक्ति समझा जाता हूँ।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

183. मैं एक ऐसा धंधा पसंद करता हूँ जिसमें नयापन, विभिन्नता और यात्रा करने का मौका मिलता हो, भले ही उसमें कुछ खतरा क्यों न हो।

a. हाँ, b. दोनों के बीच का, c. गलत।

184. मैं एक बहुत सख्त आदमी हूँ, जो हमेशा जहाँ तक हो सकता है सही ढंग से काम करने के लिये जोर देता है।

a. सही, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

185. मुझे उस काम को करने में आनन्द आता है जिसमें विवेक (चेतना) और काम करने की क्षमता (कुशलता) की जरूरत पड़ती है।

a हाँ, b. दोनों के बीच का, c. नहीं।

186. मैं एक क्रियाशील (हमेशा काम करने वाला) व्यक्ति हूँ जो अपने को हमेशा व्यस्त (मशगूल) रखता है।

a. हाँ, b अनिश्चित, c नहीं।

187. मुझे यकीन है कि मैंने बीच में कोई भी प्रश्न नहीं छोड़ा है और न ही किसी का ठीक-ठीक उत्तर देने में असमर्थ रहा हूँ।

a. हाँ, b. अनिश्चित, c. नहीं।

(परीक्षा का अन्त)